गोर्की की आत्मकथा

[तीनों भाग]

अनुवादक

ओंकार शरद

मूल्य : सात रुपया

प्रकाशक : जन साहित्य
२७, शिवचरण लाल रोड—प्रयाग

मुद्रक : प्रगति प्रेस
४३, कल्यानी देवी : प्रयाग

पहला भाग

— :०:०:०:—

बचपन

एक

एक छोटे से कच्चे मकान के कमरे की खिड़की के नीचे, जमीन पर, मेरा पिता लेटा था। काफी लम्बा, सफेद कपड़ों में लिपटा। उसके नंगे पाँवों की उँगलियाँ बुरी तरह फैल गई थीं। और [illegible] प्यारे हाथों की उँगलियाँ उसके कलेजे पर थीं। उसकी [illegible] सी आँखें बंद थीं और चेहरा नीला हो गया था। उसके दाँतों की जमी हुई पंक्तियों को देखकर मैं भयभीत हो रहा था।

मेरी माँ लाल कपड़े पहने उसपर झुकी उसके बालों को पीछे की ओर काढ़ रही थी। उसी कंघी से जिससे मैंने भी पहले अपने बाल काढ़े थे। वह बहुत धीमे स्वर में कुछ गुनगुना सी रही थी। उसकी भूरी आँखें फूल आई थीं और मानो आँसू के रूप में पिघल कर बह रही थीं।

मेरी नानी मेरा हाथ पकड़े थी। मेरी नानी एक गोल, मोटी औरत जिसका सिर काफी बड़ा था, आँखें भी और नाक काफी फूली थी। वह भी रो रही थी। लेकिन उसका रोना अजीब था कि वह मेरी माँ को समझा भी रही थी। वह हर ओर [illegible] मुझे पिता की ओर धकेल रही थी परन्तु मैं पीछे [illegible] रहा था।

उसके लँहगे में अपने को छुपा रहा था। मैं तनिक भयभीत और परेशान सा था।

मैंने इसके पूर्व इतने उम्र वालों या बुढ़ियों को रोते न देखा था। और नानी की वह बातें भी पूरी तरह समझ में न आ रही थीं।

'जा अपने पिता को अन्तिम प्रणाम कर। अब तू उसे फिर न देख पाएगा। वह मर गया है, मेरा प्यारा, अभी उम्र ही क्या थी...'

मैं एक कठिन बीमारी से अभी ही उठा था और मुझे याद है कि बीमारी में मेरा पिता आकर मेरे साथ खेला करता था, मुझे हँसाता था। लेकिन अचानक एक दिन वह गायब हो गया और उसकी जगह मेरी नानी मेरे पास आई। मैंने पूछा था,

'तुम कहाँ से आ रही हो?'

'उत्तर निजनी से। मैं चल कर नहीं, सवारी पर आई हूँ।' उसने कहा था। फिर वह हँसी भी थी। उसके बोलने का ढंग बहुत प्यारा था। वह काफी दयालु और अच्छी लगी थी। और उस पहले दिन से ही हम दोनों में खूब दोस्ती हो गई थी।

माँ को देख कर मैं परेशान था। उसके आँसू और उसका दुःखी चेहरा देख कर मेरे मन में भयानक चिन्ता उपज रही थी। मैंने इसके पूर्व उसे इतनी द्रवित कभी नहीं देखा था। यों वह तो ऐसे ही स्वभाव की थी कि व्यर्थ के लिए एक शब्द भी न बोलती थी। वह काफी गम्भीर, साफ और मजबूत थी। परन्तु आज उसकी अजीब हालत थी। उसके कपड़े फटे थे और उसके बाल जो सदा ही काफी साफ रहते और [illegible] अच्छी तरह ढके रहते थे। जूड़ा बँधा रहता, वही बाल आज उसके नंगे कंधों पर और आँखों पर झुके थे और मुख

लट मेरे पिता के शान्त, निद्रामग्न चेहरे पर भी भूल रही थी। मैं काफी देर तक कमरे में खड़ा रहा परन्तु एक बार भी उसने मेरी ओर न देखा। वह लगातार रोती हुई पिता के बाल काढ़ रही थी।

जो सिपाही बाहर पहरे पर था भीतर घूर कर बोला, 'जल्दी, जल्दी, और उसे पड़ा मत रहने दो।' भयंकर तरह से चीख कर उसने कहा था।

खिड़की पर शाल का परदा पड़ा था जो इस समय पाल की तरह फहरा रहा था। एक बार मेरा पिता जब एक छोटे जहाज पर मुझे सैर को ले गया था तब रास्ते में बिजली चमकने लगी थी। मेरा पिता डर गया था। मुझे अपने घुटनों में छुपा कर चीख पड़ा था।

'डरो मत बेटे, बैठे रहो। सब ठीक हो जाएगा।'

कि एकाएक मेरी माँ तेजी से उठी और फौरन ही पीठ के बल गिर पड़ी। उसके बाल धरती पर फैल गए। उसका निर्जीव सा चेहरा नीला होने लगा। उसके दाँत भी पिता की तरह भींचे चिपक गए थे।

'दरवाजा बन्द कर दो और एलेक्सी को बाहर निकाल ले लो।' नानी गरज उठी।

हमें एक बगल करके नानी दरवाजे की ओर लपकी।

'भले आदमी! डरो मत।' वह चीखी, 'उसे मत छूना। भागो। खुदा के लिए हटो। यह [illegible] का दौरा नहीं है। यह तो प्रसव का दर्द शुरू हो रहा है।'

एक अँधेरे कोने में रखी थी सन्दूक के पीछे मैं छिप गया जहाँ से मैं आसानी से माँ को धरती पर तड़पते और दाँत चबाते देख सकता था जब कि नानी चारों ओर खुशी से शोर करती दौड़ रही थी।

'बाप और बेटे के नाम पर इसे सही बरखुर !'

मैं डर गया था। लोग पिता के चारों ओर घूम घूम कर बहुत सी बातें और राय मशविरा कर रहे थे परन्तु वह अचल पड़ा था मानों जल्दी ही उठ कर हँसने वाला है। यह क्रम काफी देर तक चला। माँ उसके पाँव पर अपने सिर को रगड़ती और नानी आकर उसे अलग करती कि अचानक उसी अँधेरे कमरे में बच्चे के रोने की आवाज उठी।

'खुदा का शुक्र !' सांस लेकर नानी ने कहा, 'लड़का है।' और उसने एक और मोमबत्ती जला दी।

फिर शायद उसी कोने में मैं सो गया था क्यों कि और कुछ भी मुझे याद नहीं।

और जो दूसरी धुंधली सी याद है वह है बरसाती दिनों के कब्रगाह का वह सूना सा हिस्सा। मैं थोड़ी खिसकनेवाली ऊँची सी ऊबड़ जमीन पर खड़ा उस खुदे हुए गड्ढे को देख रहा था जिसमें बहुत लोग पिता का ताबूत रख रहे थे। उस गड्ढे का [illegible] आधा और पानी से गीला और मेढ़कों से भरा था—[illegible] बस गई संदूक पर कूदे भी थे।

कब्र के पास केवल इतने लोग थे—वहाँ का पहरेदार, दो मजदूर फावड़ा लिए हुए, मेरी नानी और मैं। हम सभी वर्षा की सुन्दर फुहार से नहा गए थे।

'उसे गाड़ दो।' पहरेदार ने कहा और चला गया।

मेरी नानी रो पड़ी, अपने शाल के किनारे से अपना मुँह छुपा लिया। मजदूर झुक गए, उन्होंने एक फावड़ा मिट्टी कब्र पर झोंकी। पानी हिल गया और मेंढक कब्र की दीवालों पर चढ़ने उछलने लगे परन्तु दीवाल उन्हें पुनः गिरा देती।

'दूर हटो, अलेक्सी !' नानी ने कहा और मुझे बाहों में भर

लिया। परन्तु मैं उससे दूर हो गया क्योंकि मैं अभी जाना न चाहता था।

'या खुदा!' उसने कुछ इस तरह से शंका के स्वर में कहा कि मैं न जान पाया कि वह मेरी या खुदा की शिकायत कर रही है। थोड़ी देर तक सिर झुकाए वह वहीं खड़ी रही। यहाँ तक कि जब कब्र पूरी तरह मुंद गई तब भी वह खड़ी ही रही।

मजदूरों ने फावड़े के दूसरे छोर से जमीन को पीट कर बराबर और मजबूत कर दिया। हवा का एक तेज झोंका आया और वर्षा को उड़ा ले गया। मेरी नानी मेरा हाथ पकड़ कर मुझे दूर झास के वन में अंधेरे गिरजा की ओर ले चली।

'तुम रोए क्यों नहीं?' कब्रगाह के बाहर आकर उसने प्रश्न किया, 'तुम्हें रोना चाहिए था।'

'मुझे रुलाई नहीं आई न ऐसा कुछ लगा।' मैंने कहा।

'अगर रुलाई नहीं आई तो अब न रोना।' उसने धीरे से कहा।

कितने अचरज की बात है। उसे पहले ही कहना चाहिए था कि मुझे रोना चाहिए। मैं कठिनाई से रोया—जब मेरी भावनाओं को चोट लगी। मेरे रोने पर मेरा पिता सदा हँसता था और माँ डाँटती थी—

'खबरदार जो रोए!'

फिर हम लोग अपने लाल मकानों के बीच कीचड़ भरी गलियों से लौटने लगे।

'क्या वे [illegible] नहीं निकल पावेंगे?' मैंने पूछा।

'नहीं वे नहीं निकलेंगे। उन्हें खुदा [illegible]!' उसने उत्तर दिया।

मेरी माँ व मेरे पिता ने कभी भी खुदा का नाम इस ढंग से और इतने प्यार से नहीं लिया था।

कुछ दिनों बाद मेरी माँ, नानी और मैं छावनीवाली एक छोटी नाव पर यात्रा कर रहे थे। मेरा छोटा भाई मैक्सिम मर गया था जिसकी लाश सफेद कफन में लिपटी और लाल फीतों में बँधी कोने की मेज पर रखी थी।

मैं संदूकों व बिस्तरों पर बैठा बाहरी छटा देख रहा था और मुझे लग रहा था जैसे मैं घोड़े पर सवार होऊं। कभी-कभी जब नाव में थोड़ा भी पानी भर आता तो मैं कूदने-कूदने हो जाता।

'डरो मत!' कह कर नानी अपने मुलायम हाथों का सहारा दे मुझे पुनः बिस्तरों पर जमा देती। कभी-कभी एक [illegible] सा भूरे रंग का मेंढक पानी के ऊपर आता जो लगता कि पानी का एक भाग उठ आया है जो दूसरे ही क्षण विलीन हो जाता। यह सभी काफी चीजें हमें भुलाए थीं। केवल मेरी माँ बहुत गम्भीर और अचल बनी खड़ी थी। अपने सिर के पीछे हथेलियाँ रखे, कस कर आँखें बन्द किए वह दीवाल के सहारे खड़ी थी। उसका चेहरा काला और निष्प्रभ था। वह एक शब्द भी न बोली और बिल्कुल नई तथा बदली हुई औरत मालूम होती थी। कपड़े भी वो जो पहने थी मेरे लिए [illegible] थे।

और हर क्षण के बाद नानी उसे बहुत कोमलता से [illegible] करती, 'कुछ न खाओगी तो कैसे होगा, वारवरा?'

लेकिन माँ वैसी ही खामोश और अविचल बनी रही।

नानी मुझसे फुसफुसा कर बोलती और माँ से अधिक जोर से। लेकिन दबी आवाज में ही। इससे मुझे लगा मानो नानी माँ से डर रही थी। इस भावना से मैं नानी के और पास आ गया।

'सारातोव,' अचानक माँ ने तेज व कड़ी आवाज में कहा, 'मल्लाह कहाँ है ?'

उसके शब्द भी मुझे अजीब लगे, 'सारातोव,' 'मल्लाह ।'

तभी उस नाव के उस छावनीवाली झोपड़ी में एक लम्बे कंधों, भूरे बालों वाला व्यक्ति जो नीले कपड़े पहने था एक संदूक लेकर आया । नानी ने उसे लेकर उसमें मेरे भाई के मृत शरीर को रखना शुरू किया । और जब यह क्रिया वह समाप्त कर चुकी तब संदूक को लेकर वह झोपड़ी के बाहर चली लेकिन वह इतनी मोटी थी कि बिना घूमे उस दरवाजे से न निकल सकती थी इसलिए वह वहीं रुक गई परन्तु इस समय वह मुझे हास्य की प्रतिमा सी दिखाई पड़ी ।

'ओह, माँ !' अधीर होकर माँ चीख उठी और ताबूत अपनी बाहों में ले लिया । और फिर दोनों चली गईं । झोपड़ी में मैं केवल नीले कपड़े वाले व्यक्ति के साथ रह गया ।

'तो तुम्हारा भाई हमें छोड़ गया ।' मुझ पर झुक कर उसने कहा ।

'तुम कौन हो ?'

'एक मल्लाह ।'

'सारातोव क्या है ?'

'एक शहर, जरा देखो बाहर ।'

मैंने बाहर देखा । जमीन पीछे छूट रही थी ।

'नानी कहाँ गई हैं ?'

'अपने पोते को गाड़ने ।'

'क्या उसे जमीन के नीचे गाड़ेंगी ?'

'हाँ ।'

मैंने मल्लाह से बताया कि किस तरह बाप को गाड़ते वक्त मेंढ़कों को भी गाड़ दिया गया था। उसने मुझे अपनी बाहों में कस कर उठाया और चूम लिया।

'ओह बेटे! तुम यह सब अभी न समझोगे।' उसने कहा, 'उन मेंढ़कों पर रहम नहीं खाना है। अपनी माँ का दुःख देखो!'

अचानक स्टीमर जोरों से हिला। फिर भी मैं डरा नहीं, समझा नाव की आदत है। तभी मल्लाह ने मुझे नीचे उतार दिया और भाग कर बाहर गया। कहता गया।

'भागना पड़ेगा।'

मैं भी भागा। झोपड़ी के बाहर आया। उस अंधेरे में कोई न दिखाई पड़ा। केवल सीढ़ी का पीतल चमक रहा था। तभी मुझे लगा कि लोग अपना असबाब लिए जा रहे हैं। अब पता लग गया कि सभी इस नाव को छोड़ रहे थे। इसके बाद मुझे भी छोड़ना पड़ेगा।

परन्तु जब मैं मजदूरों व मल्लाहों के बीच डेक पर पहुंचा तो सभी एक साथ चीखने लगे.

'तुम कौन हो? किसके साथ हो?'

'मैं नहीं जानता।'

देर तक वे मुझे धक्का देते रहे, झकझोरते रहे। अन्त में नहीं भूरे बालों वाला मल्लाह आया और उसने कहा,

'यह अफ़गान से आया है—अपनी झोपड़ी के बाहर……' मुझे उठाकर वह झोपड़ी में वापस आया। मुझे बिस्तरे पर बैठा दिया और उँगली दिखा कर कहा,

'तुम छिपोगे।' बाहर जाते हुए उसने मुझे समझाया।

थोड़ी देर मैं बैठा रहा। आखिर झोपड़े में मुझे ही अकेले छोड़कर सब क्यों भाग गए?

मैं दरवाजे तक गया। वह बन्द था, कसकर। मैं पीतल की सिटकनी न खिसका सका। एक बोतल से दूध भरा था। मैंने उसे उठा लिया और अपनी पूरी शक्ति भरकर कुंडी पर मारा बोतल टूट गई और दूध मेरे हाथों और जूतों पर फैल गया।

अपनी हार पर खीझ कर मैं उन्हीं बिस्तरों पर लेट कर सोने की कोशिश करने लगा।

जब मैं जगा तब नाव फिर हिल रही थी। लहरें उछल रही थीं और सूरज की तरह ही खिड़की चमक रही थी। मेरी नानी पास में बैठी बुदबुदाती हुई अपने बालों में कंघी कर रही थी। उसके बाल काफी बड़े और कुछ नीले व काले से थे, सभी उसके कंधों पर, छाती पर, घुटनों पर छा गए, कुछ जमीन भी चूमने लगे। एक हाथ से उन्हें समेट कर उसने पकड़ा, दूसरे हाथ से एक बड़ी काठ की कंघी उसने उसमें डाल कर खींचा, दर्द से उसी का चेहरा फैल गया। आंखों में लालिमा आ गई और बालों की भीड़ में उसका चेहरा छोटा दिखाई पड़ने लगा।

आज उसका मन कुछ चिढ़ा सा था। परन्तु जब मैंने पूछा कि बाल इतने लम्बे कैसे हुए तो वह पहले दिन की तरह मुलायम और सरल होकर बोल उठी।

'कंघी करने से। पहले मुझे अच्छे लगते थे परन्तु अब बुढ़ापे में बुरे लगते हैं—लेकिन तुम सो जाओ। अभी समय काफी है।'

'मैं नहीं सोना चाहता।'

'अच्छा न चाहो मत सोओ।' वह मान गई। अपना जूड़ा ठीक करती हुई माँ की ओर देखा जो उसके पीछे ही फर्श पर [illegible] टेढ़ी हो कर सोती थी। 'तुमने वह बोतल कैसे तोड़ी, ठीक-ठीक बताना।'

[illegible]

बात पूछने का उसका अजीब तरीका था। साफ और सुन्दर शब्द जैसे फूल। और जब वह हँसती तो उसकी आँखें फैल जातीं और उनमें चमक भर जाती। उसके सफेद दाँतों की पंक्तियाँ खिल उठतीं और गालों पर झुर्रियों के बावजूद भी वह काफी जवान और तेज मालूम होती। उसकी सारी सुन्दरता में केवल एक ही खराबी थी—उसकी लाल फूली हुई नाक। और नाक के फूले हुए नथुने। वह सदा एक चाँदी की डिबिया में सुंघनी अपने साथ रखती।

ऐसा लगता है कि उसके आने तक मैं खूब गहरी नींद में सोता रहा होऊँगा। तभी तो आकर उसने रोशनी जलाई और मुझे जगाया। वही तो मेरी एक मात्र मित्र थी जो मुझे भी बहुत प्यारी थी तथा मुझे समझती थी। उसी के अटूट प्यार ने मुझे वह शक्ति दी जिसके बलपर मैं अपने कठोर भविष्य के लिए तैयार हो सका।

चालीस साल पूर्व वे नावें बहुत धीरे चलती थीं। निजनी नोवगोरोद पहुँचने में बहुत समय लगा और मुझे वहाँ का वह सुन्दर व पहला दिन अब भी खूब याद है।

मौसम सुहाना था, और सुबह से रात तक मैं अपनी नानी के साथ डेक पर ही रहता था। वोल्गा के सुन्दर पहाड़ी, किनारे पर बने फूलों के किनारों पर, आसमान के नीचे ही सारा समय बीतता। नीली चमकदार लहरों पर भूरे रंग की नावें सदा तैरती रहतीं। सब कुछ नया नया सा लगता। हरी पहाड़ियाँ जैसे धरती पर बिछ गई थीं। दूर दूर पर बसे गाँव ऐसे लगते जैसे पानी की सतह पर तैरती हुई सुनहरी पत्तियाँ।

डेक पर एक ओर से दूसरी ओर जाते हुए नानी कहती—'देखो कैसा अद्भुत दृश्य है!' उसका चेहरा खिला रहता आँखें खुशी से फैली रहतीं।

कभी-कभी मेरी उपस्थिति को भूल कर वह अनमनी सी किनारों पर खड़ी होकर उत्तर की ओर घूरा करती। अपनी छाती पर हाथ मोड़ कर रख लेती। एक फीकी मुस्कुराहट से ओंठ फैले हुए होते। और आँखों में आँसू छलकते होते। और तब मैं खीझकर उसका फूलों वाला काला लंहगा खींच लेता।

'ओह!' वह भी चिढ़ जाती, 'क्या मैं सो रही थी या सपना देख रही थी जो यों जगा रहा है।

'तुम रो क्यों रही हो?'

'यह तो खुशी के कारण हैं, बेटे,' वह हँसी बना कर कहती, 'मैं अब कितनी बूढ़ी हो गई—कितनी गर्मियाँ मैंने देखीं।'

तब सुँघनी की एक चुटकी लेकर वह मुझे, अजीब भयानक, साधुओं, जानवरों और डाकुओं की कहानियाँ सुनाने लगती।

वह अपनी कहानी बड़े रहस्यमयी वाणी में सुनाती। उसका चेहरा बिल्कुल मुझसे सटा होता। वह मेरी आँखों में घूरती रहती जैसे कोई जादू भरा रस मेरे हृदय में उँडेल रही हो। जब वह आत्ममग्न होती तो लगता कि वह गा रही है। और उसका [illegible] प्रतिक्षण अधिक रहस्यमय होता जाता। उसकी ऐसी बातें सुनना बहुत आनन्दप्रद था और जब वह कहानी समाप्त कर [illegible] तो मैं कह उठता :

'कहे चलो!'

'फिर राजा ऐसा हुआ कि......चूल्हे के नीचे पंजों के बल छुपा बैठा रहा।'

यह कहते हुए खुद भी पंजों के बल बैठ कर सफल अभिनय करने लगती। जैसे उसकी यह आदत हो।

उसे देखने-सुनने को मल्लाहों की भीड़ लग जाती। अच्छे

स्वभावों वाले। दाढ़ी वाले बूढ़े, और जवान वे सुनते और हंसते। खुश होते और, और सुनाने की प्रार्थना करते।

'हाँ कहे चलो। दूसरी कहानी भी।'

और वे फिर कहते।

'आज मेरे ही साथ खाना खाओ।'

और खाने में नानी को वे लोग वोद्का भेंट करते और मुझे तरकारियों पर ही टाल देते क्योंकि वहाँ एक व्यक्ति ऐसा था जो किसी को फल न खाने देता। और अगर कोई खाता तो उसे वह पानी में फेंक देता। वह पहरेदारों का कपड़ा पहने था परन्तु उसके बटन पीतल के थे और वह सदा ही शराब पिए रहता था। लोग उससे छिपते और बचते थे।

मेरी माँ डेक पर बहुत कम आती और सदा ही हम लोगों से कतराती थी। सदा की भाँति ही वह शांत रहती थी। आज भी मुझे उसकी लम्बी, सुन्दर आकृति और हंसमुख चेहरा याद है।

एक दिन उसने नानी से अचानक कहा था।

'माँ, तूने तो अपने को हंसी का खजाना बना लिया है।'

'अगर वे हंसना चाहते हैं तो,' नानी ने अपनी स्वाभाविक सरलता से कहा, 'संसार में हंसने के लिए काम ही होते हैं।'

और मुझे याद है जब बिजली की पहली झांकी देख कर बच्चों की तरह चीख उठी थी, 'देखो, कितना सुन्दर है।' और मुझे भी घसीट कर रेलिंग के पास ले गई थी।

'देखो, यह तुम्हारा सुन्दर शिकागो है। देखो गिरजों के गुम्बदों को। जैसे वे जल रहे हैं।' वह माँ की ओर घूमी। उसकी आँखें तर थीं, 'मारीयुशा, एक बार तो देख। तू तो इसे बिलकुल भूल गई। एकबार तो खुशी पी ले।'

माँ ने उदासी में हंसी लाने की कोशिश की।

उस प्यारे शहर के सामने स्टीमर रुका। नदी के बीचों बीच रुका जहाँ हजारों नावों की भीड़ लगी थी। तभी एक बड़ी नाव जिसमें खूब आदमी भरे थे आकर हमारे स्टीमर के पास रुकी और उसके लोग कूद-कूद कर मेरी स्टीमर के डेक पर आने लगे। सब से पहले थोड़ा झुक कर चलने वाला एक बूढ़ा आया जो लम्बा काला कोट पहने था। उसकी आँखें हरी थीं। उठी हुई नाक थी और लाल दाढ़ी सोने की तरह चमकती थी।

'पापा!' मेरी माँ ने तेजी से कहा और उसकी बाहों में समा गई। उसने माँ का सिर अपने छोटे-छोटे लाल हाथों से उठाया और तनिक उत्सुकता से उसके गालों को थपथपाने लगा।

'अरे, तू आ गई। अरे...रे...। क्या बात है?'

तभी नानी आगे बढ़ कर सभी आगन्तुकों को चूमने व प्यार करने लगी। फिर मुझे उनके आगे बढ़ा कर कहने लगी 'जल्दी देख, देख यह तेरा मामा है माइक, और यह तेरा मामा जैक है, यह मामी नातालिया है, यह दोनों उनके बच्चे हैं, दोनों के नाम शाश्का हैं और मामा की लड़की कता-रिना है। यही मेरा पूरा परिवार है—देखो कितने लोग हैं?'

'क्या तुम अच्छी हो?' मेरे नाना ने पूछा। और नानी ने उसे तीन बार चूमा। फिर नाना ने मुझे भीड़ में से खींच लिया और सिर पर हाथ रख कर पूछा, 'और तुम कौन हो?'

'मैं अस्त्राखान से आ रहा हूँ।'

'यह क्या कह रहा है?' मेरी माँ की ओर घूम कर नाना ने पूछा और उत्तर का इन्तजार किए बिना ही कहा, 'हड्डी तो बिल्कुल बाप की ही तरह है।' फिर रुक कर कहा, 'चलो नाव में उतरो।'

हम नाव के सहारे किनारे पर उतरे। वहाँ हरी पीली घास का गलीचा बिछा था।

मेरा नाना माँ के साथ आगे आगे चला। नाना, मेरी माँ के कंधों तक ही ऊँचा था और जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाता था। माँ ने ऊँचाई से उसे ताका तो लगा उसे हवा उड़ाए चल रही है उनके पीछे मेरा मामा माइक चुपचाप चल रहा था, वह भी नाना की तरह दुबला था और उसके बाल लम्बे थे। जैक के बाल घुँघराले थे। तब फिर छ बच्चों के साथ एक काली औरत चमकदार कपड़े पहने हुए आई। सभी बच्चे मुझसे बड़े थे। मैं अपनी नानी व मामी नातालिया के साथ बढ़ रहा था। वह पीली थी—आँखें नीली थीं और कुछ मोटी भी। हर कदम पर कहती थी—

'आह, अब एक कदम भी मैं नहीं चल सकती।'

'तो फिर तू साथ के सब आई क्यों, नालायक?' क्रुद्ध कर नानी डाँटतीं।

मुझे न तो वे बच्चे अच्छे लगे न वे बड़े लोग ही। उनके बीच में मैं अजनबी सा बन गया था। खास तौर पर मुझे अपना मामा अच्छा न लगा। मुझे उसमें शत्रु की झलक दिखाई पड़ी।

हम लोग पहुँच गए। सामने एक छोटा सा मकान दिखाई पड़ा। यह गहरे पीले रंग से पुता था और उसकी छतें भी झुकी हुई थीं। बाहर से देखने में मकान बड़ा सादा लगता था परन्तु भीतर कमरे छोटे, अंधे और भरे हुए थे। सड़ी सी हल्की गंध भी आ रही थी।

मैं भाग कर आँगन में आ गया पर वह भी अच्छा न लगा जहाँ बड़े बड़े पौधों में गहरा रंग भरा था और चारों ओर

कपड़े सूख रहे थे। एक कोने में लकड़ी का एक चूल्हा जल रहा था—कुछ उबल भी रहा था और कोई चीख रहा था—

'संतालिन—नीला—तेजाब.......'

दो

इस प्रकार, एक संघर्ष-पूर्ण, घटना पूर्ण और अजीब जिन्दगी का आरम्भ हुआ। और मुझे यह सब लगता कि जैसे कोई कहानी किसी ने बहुत दर्द भरे दिल से सुनाई हो। आज जब मैं सब कुछ याद करता हूँ तो विश्वास भी नहीं होता कि ऐसी घटनाएँ भी घटी होंगी। बहुत सी बातों को मैं खुद नहीं मान सकता। परन्तु सचाई को मानना ही पड़ेगा। यह मैं अपना ही जीवन चरित्र नहीं लिख रहा, बल्कि यह एक दुखित परिवार का नक्शा है जिसमें साधारणतः सभी रहते थे और अब भी रहते हैं।

मेरे नाना के परिवार में गृह कलह की भयानक बीमारी शुरू हो गई थी। सभी बड़ों पर उसका पूरा प्रकोप था और बच्चे भी प्रभावित थे। क्योंकि मैं नानी से सुन चुका था कि मेरे राजा मामा उसी दिन से जिस दिन से मेरी माँ आई थी इस बात को जिक्र करते थे, कि परिवार की जायदादों का बँटवारा ही बँट-वारा हो जाना चाहिये। माँ के अचानक वापस आते ही उन्होंने बँटवारे की बातें शुरू कर दी थीं। उन्हें इस बात का डर था कि माँ अपने दहेज का भाग माँगेगी जो नाना ने दबा रखा था। क्योंकि माँ ने ऐसे व्यक्ति से शादी की थी जो नाना को नापसन्द था। मेरे मामा दहेज का धन नहीं देना चाहते थे ताकि उसमें उनको

भी भाग मिल जाए। इस झगड़े से उनके बीच में पहले से जारी बहस बन्द हो गई थी—वे चाहते थे कि रंगसाजी की एक दूकान और खोली जाए, चाहे शहर में या ओक नदी के किनारे कुनाविन गाँव में।

हम लोगों के आने के कुछ दिन बाद ही खाने के समय झगड़ा उठ खड़ा हुआ। मेरे मामा उछलने लगे और लम्बी गरदन हिला-हिला कर कुत्तों की तरह टेबिल पर झुक गये तथा नाना की ओर भूँकने लगे और नाना का चेहरा लाल हो गया। उसने टेबुल पर अपना चम्मच पटकते हुए गरज कर कहा।

'मैं तुम्हें घर से निकाल दूँगा—गलियों में भीख माँगने के लिए।'

नानी का चेहरा व्यथा से भर गया और उसने कहा,

'वे जो चाहते हैं उन्हें दे दो, यदि घर में शांति रखना चाहते हो?'

'अपना मुँह बंद कर, बेवकूफ!' नाना ने डाँटा। उसकी आँखों से आग बरस रही थी।

इस पर मेरी माँ चुपचाप उठी और खिड़की पर जाकर सबों की ओर पीठ किये खड़ी हो गई।

एकाएक मामा माइक ने अपनी उल्टी हथेली से अपने भाई के चेहरे पर बहुत कस कर चपत लगाई। दूसरा मामा उस पर पिल पड़ा। दोनों जमीन पर एक दूसरे को गालियाँ देते हुए धक्कमधुक्का करने लगे। मामी नातालिया जो गर्भवती थी फूट-फूट जोरों से चिल्लाकर रो पड़ी। फिर बच्चे भी चीखने लगे। माँ ने बढ़कर नातालिया को लिपटा लिया और बाहर की ओर ले चली। इवोनिया, एक गरीब नौकरानी ने बच्चों को कमरे के बाहर किया। फिर दोनों लड़नेवाले भाइयों को अलग करते

हुए जो कुर्सियों के बीच फंस गए थे, दूकान का एक नौकर सीगान मामा माइक की पीठपर सवार हो गया। जब दूसरे नौकर ग्रेगरी ने जिसके सिर के बाल उड़े थे और दाढ़ी थी, और वह काला चश्मा लगाता था ने आकर उसका हाथ तौलिया से कस कर बाँध दिया।

काली दाढ़ी वाला मामा माइक बुरी तरह गालियाँ बक रहा था। तभी मेज की ओर बढ़ कर बूढ़े नाना ने कहा, 'ये दोनों भाई हैं, एक खून के। कितने शर्म की बात है।'

जब लड़ाई शुरू हुई थी तब मैं डर कर चूल्हे पर सवार हो गया था। वहीं से मैंने देखा कि नाना एक भींगे कपड़े से मामा जैक का चेहरा पोंछने लगे। मामा जैक पाँव पटकता हुआ रो रहा था कि तभी बहुत व्यथा पूर्ण आवाज में नानी ने कहा।

'ये दुष्ट, जैसे जंगली जानवरों का परिवार हो। जाने इन्हें कब सुबुद्धि होगी।'

अपनी बाहों को सिकोड़ कर नाना ने कहा, 'कमबख्त बूढ़ी औरत, तू ही इन जानवरों को दुनिया में लाई।'

और जब मामा जैक चला गया तब नानी कमरे में गई और कोने में खड़ी होकर प्रार्थना करने लगी, 'ऐ देवी देवताओ, इन नालायकों को सुबुद्धि दो।'

नानी ने फिर टेबिल की सभी टूटी और उल्टी पुल्टी चीज़ों को देख कर कहा, 'इनको देखो और बेचारी आरतार को देखो जिसपर ये सभी इतने क्रुद्ध हैं ....ऐसी जिसका दिल महान है!'

'खुदा के लिए अब हमें चुप ही रहना चाहिए। कमीज की मरम्मत होनी चाहिए उसे उतार डालो।' कहते हुए जब वह नानी की ओर झुका तो उसका चेहरा नानी के पाँव से छू

गया । वह इतना छोटा था कि नानी को झुक कर उसका माथा चूमना पड़ा ।

'अब सब ठीक है ।' उसने कहा ।

'हाँ सब योंही ठीक हो जाएगा ।'

यह उस संधि वार्ता का प्रारम्भ था । परन्तु बात करते करते दूसरे ही क्षण नाना जमीन पर यों रेंगने लगा जैसे लड़ाई के लिए तैयार होता हुआ कोई मुर्गा । नानी के चेहरे की ओर उँगली उठा कर उसने रोष के साथ कहा, 'मैं तुम सबों को खूब जानता हूँ । तुम मुझसे अधिक उन सबों के लिए विचार करती हो और मुझसे अधिक उनका ख्याल रखती हो ।' कहते-कहते उसकी आवाज़ तेज़ हो गई । तुम्हारा माइक बिल्कुल बेइमान है ! और तुम्हारा जैक—पूरा नास्तिक है झूठा ! मेरी कमाई पर ही उनका पेट पलता है, कोढ़ी हैं वे । मेरे पास जो भी है वे हज़म कर जाएँगे ।'

तभी मैंने अपनी बाँह घुमाई । चूल्हे पर रक्खा लोहे का ढक्कन उलट गया और झनझना कर जमीन पर गिरा । दौड़ कर नाना आया । चूल्हे के किनारे खड़े होकर मुझे घसीट कर खींचा और यों घूरने लगा जैसे मुझे जीवन में पहली बार देख रहा हो ।

'तुझे किसने चूल्हे पर चढ़ाया ? तेरी माँ ने ?'

'मैं खुद चढ़ आया था ।'

'झूठा !'

'नहीं नहीं, मैं खुद आया था । मैं डर गया था ।'

उसने मुझे खींचा और माथे पर एक चपत लगाई फिर घृणा से कहा, 'बिल्कुल अपने बाप की तरह है ! दूर हो मेरी आँखों के सामने से !'

मैं भाग कर रसोई घर के बाहर आया। काफी खुश था कि जान छूटी।

नाना की तेज चमकदार हरी आँखें सदा ही मुझ पर गड़ी रहती थीं जिनके कारण मैं सदा ही डर से काँपा करता था। मुझे याद है कि किस तरह सदा ही मैं उन तेज आँखों से बचने के लिए छिपता फिरता था। मुझे उसके कृत्य बड़े नीचता पूर्ण मालूम होते थे। वह हर आदमी से इस प्रकार बात करता था कि सभी को कष्ट होता, तथा सबों को वह बातों में क्रोधित कर दिया करता था। वह सदा कहता, 'अरे तू!' और इस अरे में वह 'रे' को इतनी दूर तक खींचता कि सुन कर सदा ही मेरे रोंगटे, घृणा और बेचैनी से खड़े हो जाते। शाम को दूकान बन्द होने पर नाना मेरे मामाओं तथा दूकान में काम करने वालों को रसोई घर में चाय पीने के लिए लिवा लाता। वे थके होते, उनके हाथों पर धुलाई की दवाइयों से जले हुए निशान होते, अपने बालों को फीतों द्वारा वे पीछे को खींच कर बाँधे रहते। उनके चेहरे काले होते जैसे रसोई घर में ही रहे हों। और आतंक की इस घड़ी में नाना मुझे अपने सामने बैठाता और दूसरे लड़कों को अपने आस-पास तथा पूरे समय तक मेरे ऊपर ही नजर गड़ाए रहता तथा औरों से अधिक मुझसे ही बातें भी करता।

नाना बहुत तेज और साफ आदमी था। उसकी रोगनी कालगाली साटन का वेस्टकोट फटा था और सूती रंगीन कमीज़ साफ बताती थी अधिक से ज्यादा धुलाई उसकी हो चुकी है। पाजामे के घुटनों पर पैबन्द थे—लेकिन वह देखने में काफी साफ सुथरा तथा सुरुचि पूर्ण व्यक्ति मालूम होता था जब कि उसके बेटे जो टाई बाँधते थे वे वैसे न लगते थे।

मेरे आने के कुछ दिनों बाद से उसने हमें प्रार्थना सिखानी

शुरू किया। दूसरे बच्चे मुझसे बड़े थे इसलिए पढ़ना लिखना सीखते थे।

उन्हें उस्पेस्की गिरजा का पादरी पढ़ाता था। मेरी शिक्षिका थी, वह महीन आवाज वाली डरपोक मामी नातालिया। उसकी शक्ल भी बच्चों जैसी थी और उसकी आँखों में देखकर मैं जान सकता था कि उसके खोपड़े में क्या घूम रहा है। मुझे उसकी खूनी आँखों में लगातार घूरना अच्छा लगता। और मैं यही किया करता इससे वह बेचैन हो जाती और उसकी पुतलियाँ हिलने लगती, वह आँखें घुमा लेती, सिर झटकती और फुसफुसाहट के स्वर में कहती, 'बस करो...कहो, 'मेरे पिता जो स्वर्ग में हैं...' मैं पूछता, 'इसके क्या माने? पिता स्वर्ग में...।' वह घबड़ा कर, अपने चारों ओर देखती फिर सहम कर कहती, 'ऐसे सवाल करना बुरा है, अशुभ है। केवल मेरे कहे को दुहराओ—'मेरे पिता.....।'

ऐसी बातों से मैं चिढ़ जाता। सवाल पूछना क्यों बुरा है? मामी जो दुहराने को कहती उसके अर्थ मैं समझ न पाता। बेचारी मामी, पीली, थकी हुई परन्तु हिम्मत न हारती, अपना गला साफ करके कहती—'ऐसा नहीं—समझ कर कहो—काफी आसान है।'

परन्तु न तो वह ही न उसके बताए शब्द ही मुझे अच्छे लगे न समझ में आए। इससे मैं पूरी तरह ऊब गया मेरे लिये पढ़ना और लिखना भी बहुत कठिन हो गया।

एक दिन नाना ने मेरी इस हरकत पर [illegible] कहा :

'अच्छा अलेक्सी? तुम दिन रात क्या किया करते हो? बोलो? तेरे चेहरे पर लोगों के निशान नहीं बताते हैं। ये श्लोक याद करना आसान है परन्तु हमारे पिता-परमात्मा के लिए क्या? कुछ आदर तेरे दिमाग में नहीं घुसता?'

'इसकी याददाश्त अच्छी नहीं है।' मेरी भली मामी ने धीरे से कहा। इसे सुनकर लगा जैसे नाना खुश हुआ। वह अट्टहास कर उठा और अपनी बरौनियों को ऊपर किया। 'यह कुछ नहीं। वह मार खाएगा फिर सब ठीक हो जाएगा।' फिर मेरी ओर घूम कर उसने कहा, 'क्या कभी तूने अपने बाप से मार खाई है ?'

वह क्या कह रहा था मेरी समझ में न आया, इसलिए मैं खामोश रहा। तभी माँ ने कहा, 'मैक्सिम ने कभी उसपर हाथ भी नहीं उठाया, और वह सदा मुझे भी न मारने की ही सलाह देता था।'

'ऐसा क्यों ?'

'वह कहता था कि मार से बच्चे कभी कुछ नहीं सीखते।'

'तेरा मैक्सिम ! वह पूरा बुद्धू था।' क्रोध से तेज शब्दों में नाना ने कहा, 'मृतक के लिए ऐसे शब्दों के प्रयोग के लिए खुदा मुझे क्षमा करे।'

उसके इन शब्दों से मैं क्रुद्ध हुआ और नाना ने यह देख लिया।

'तू अपना मुँह ऐसे क्यों बना रहा है ? अरे.....तू !' कह कर अपने चाँदी जैसे बालों को हिला कर वह कहता गया, 'अगले शनिवार को देखना। इसी निगाह के लिए साशा पर बेंत पड़ेगी।'

'यह बेंत क्या ?' मैं पूछ बैठा।

मेरी बात से सभी हँस पड़े और नाना ने कहा, '[illegible] न खुद जान जाएगा।'

मैं बेंत के बारे में लगातार सोचता रहा। मैं जान गया कि वह मार खाने जैसी ही कोई चीज है। मैंने घोड़ों, कुत्तों और बिल्लियों को मार खाते देखा है। और अस्त्राखान में मैंने पार-

सियों को पुलिस द्वारा पिटते देखा है परन्तु यहाँ केवल यही छोटे बच्चों को पिटते देखा। यहाँ मैंने देखा कि मामा अपने ही बच्चों को सिर पर कंधों पर मारता है और बच्चे भी खामोश सहते हैं। वे आसानी से हाथ रगड़ कर दर्द भूलते हैं और जवाब देते हैं। और जब मैंने एक पिटने वाले लड़के से पूछा कि कितनी चोट लगती है तो उसने कहा, 'नहीं, बिल्कुल नहीं!' और यह सुन कर मैं अजीब अनुभव करता।

दोपहर के बाद और शाम के पूर्व हमारे मामा और दूकान का मिस्त्री ग्रेगरी सूखे कपड़ों को जोड़ते और उनपर ग्राहक के नाम की चिट खोंसते। उस समय ग्रेगरी जिसकी आँखें कम-जोर हो गई थीं और जो लगभग अँधा हो गया था उसकी अंगुलियाणा को मामा और उसका भतीजा शास्का मोमबत्ती की लौ से गरम कर के ग्रेगरी के पास रख देते और सभी चूल्हे के पीछे छिप जाते। उसी समय नाना आता और काम शुरू करने को अंगुलियाणा उठाता तो उसकी उँगलियाँ जल जाती और वह चीख पड़ता, 'किस बदमाश ने यह शरारत की है?'

नाना की उस समय की हास्यास्पद स्थिति मैं अभी नहीं भूल पाता। चीख सुन कर मामा जैक भी आ जाता परन्तु वह कोने में ही खड़े होकर हँसी का सुख प्राप्त करता तथा बहुत कोशिश करके नानी अपने को आलू छीलने में व्यस्त रखती और ग्रेगरी अपना काम दत्त चित्त होकर करता रहता।

तभी टेबिल के नीचे से निकलकर मामा माइक कहता, 'जैक के बेटे शास्का ने यह किया है।'

'झूठा!' चीख कर जैक डाँटता। तभी चूल्हे के पीछे से प्रकट होकर शास्का कहता, 'नहीं पिता, इसकी बात गलत है। इसने ही मुझे ऐसा करने को कहा और सिखाया भी।'

इस झगड़े के बीच सभी एक स्वर से मामा माइक को ही

दोषी घोषित करते तो मैं पूछता कि अब क्या मामा को बेंत लगेगी । तब नानी कहती, 'लगना तो चाहिये ।'

इस प्रकार की ऐसी शरारतों का मैं आदी होता गया और मुझे शाश्का ही इसमें साथी मिला । उसकी शक्ल भी बिल्कुल शैतान लड़कों की सी थी । उसे देखकर तो लगता जैसे यह बड़ी शाँत प्रकृति का हो और उसकी मुस्कान बिल्कुल उसकी माँ की तरह ही थी । उसके दाँतों में ऊपर की पंक्ति नीचे की पंक्ति से दूनी बड़ी थी । वह सदा ही अपनी उँगलियाँ भी मुँह में डाले रहता । इससे प्रत्येक देखने वाले की पहली दृष्टि उसके मुँह पर ही टिकती थी । और शाश्का के लिए यही काफी खुशी की बात थी । वह दिन को कमरे के किसी अंधेरे कमरे तथा रात को किसी खुली खिड़की पर घंटों चुपचाप बैठना अधिक पसन्द करता था ।

शाश्का, भी कभी कभी नवजुओं के लहजे में बोलता । फिर एक दिन जब मैंने उसके सम्मुख अपनी उत्सुकता प्रकट की कि यह जान लूँ कि कपड़ों के भिन्न भिन्न रंगों में रंगने का क्या रहस्य है तब उसने सलाह दी कि सफेद मेजपोश को नीले रंग में डुबाऊं । उसने कहा, 'सफेद कपड़े पर रंग अच्छा चढ़ता है ।' उसने बहुत अधिकार के स्वर में कहा था ।

मैंने वह बड़ा सा सफेद मेजपोश खींच लिया और दौड़ कर सैंदल के पास पहुँचा और मेजपोश का केवल एक भाग ही नीले रंग के टब में डुबो पाया था कि सिगान ने दौड़ कर वह मेजपोश मेरे हाथ से खींच लिया और उसे अपनी हथेलियों से निचोड़ते हुए शाश्का से कहा जो दूर खड़ा यह सब देख रहा था, 'दौड़कर अपनी दादी को बुलाओ !'

फिर मेरी ओर मुड़ कर कहा, 'तुम इसके लिए भरपूर सजा पाओगे ।'

जब नानी ने आकर यह सब देखा तो उसकी आँखों में आँसू झलक आए और उसने अपने भद्दे ढंग से मुझे घुड़का और कहा, 'तुम्हें इसके लिये अच्छी चपत लगेगी।'

तभी सिगान से उसने कहा, 'नाना से कहने की जरूरत नहीं। मैं इसका सब प्रबन्ध कर लूँगी।'

अपने बहुत गंदे व रंगीन लबादे पर हथेलियाँ रगड़ते हुए सिगान ने कहा, 'हाँ, वह मुझसे तो कम से कम इसके बारे में कुछ भी न सुन पाएगा परन्तु उस शाश्का से कहो कहीं वह चुगली न खाए।'

'मैं उसे ठीक कर लूँगी।' नानी ने कहा और मुझे घर के भीतर ले गई।

शनिवार की रात को, प्रार्थना के पहले मैं रसोई घर में बुलाया गया जहाँ इस समय खामोशी और अँधेरा छाया था। मुझे अबतक याद है कि तब खिड़कियाँ व दरवाजे इस तरह कस कर बन्द थे कि मुझे बाहर पानी का बरसना भी नहीं सुनाई पड़ रहा था। चूल्हे के सामने सिगान बैठा मुझे इस प्रकार घूर रहा था कि उसकी ऐसी दृष्टि मैंने पहले कभी न देखी थी। चिमनी के किनारे बैठ कर नाना पानी में भीगी हुई बेंतों की परीक्षा कर रहा था। वह एक एक को हवा में उड़ाता, सीटी की सी आवाज होती और [illegible] एक दूसरे के पास रखता। नाना [illegible] अँधेरे में मानो [illegible] हो रही थी, 'निर्दयी, अपने [illegible]'

लड़के के बीचोंबीच शाश्का बैठा था और एक बूढ़े भिखारी की तरह रटता जा रहा था, 'ख़ुदा के लिए मुझे छोड़ दो, माफ़ कर दो।'

कुएँ के पास [illegible] के लड़के व लड़कियाँ भी पास पास खड़े थे।

'बेंत खा लो फिर तुम्हें माफ करूँगा।' लम्बी बेंत को उठाते हुए नाना कहा, 'चलो, कपड़े उतार लो।'

फिर न तो कोई आवाज सुनाई पड़ी, न तो शाश्का के कुर्सी छोड़ने की आवाज आई, न नानी के ही हिलने की आवाज सुनाई पड़ी। अन्त में शाश्का उठा। उसने अपना पाजामा खोला और घुटने तक गिरा कर पकड़ लिया फिर नाना के सामने बेंच पर झुक गया। मुझे यह देख कर हार्दिक कष्ट हुआ और मेरे पाँव काँपने लगे।

उसके बाद जो भी हुआ वह नहीं देखा जा सकता था। सीमान ने एक बड़ी सी तौलिए से कंधे व गले के पास से उसे बेंच में बांध दिया।

'देखो अलेक्सी,' मुड़कर नाना चीखा, 'इधर आओ, पास में, क्या तुम मेरी बात नहीं सुन रहे? आज तुम जान जाओगे कि बेंत लगना क्या होता है! चलो...एक...'

कुछ धीरे से नाना ने शाश्का की नंगी पीठ पर बेंत रखी और शाश्का चीख पड़ा।

'नहीं।' नाना ने कहा, 'इससे चोट न लगी होगी। अब इस बार पता लगेगा।'

इस बार बेंत अपने साथ लहू निकाल लाई। पीठ पर [illegible] धारी! ओफ, शाश्का चीखता जा रहा था।

'वाह, बहुत अच्छे!' नाना ने कहा और उसके हाथ बराबर चलते जा रहे थे। 'अब मजा लो।'

खून से सनी छड़ी देख कर मेरा कलेजा फटने लगा। ओह! इस बार छड़ी नीची हुई कि लगा मेरे भीतर का सब कुछ अब बाहर आ जाएगा।

'मैं अब ऐसा कभी न करूँगा।' शाश्का ने चीख कर कहा। उसकी आवाज इतनी धीमी थी कि [illegible] मालूम होता था,

'मैंने ही तो मेजपोश के बारे में बताया था, मुझे छोड़ दो।'

'बड़बड़ाने से नहीं छुटकारा मिलेगा। अभी तो यों ही था अब मेजपोश के लिए लो।' नाना ने कहा।

तभी दौड़ कर नानी मेरे पास आई, मेरा हाथ पकड़ा। 'मैं तुम्हें अलेक्सी को न छूने दूँगी। नहीं . राक्षस।' और वह पुकारने लगी, 'वारवरा, वारवरा।'

नाना ने लपक कर उसे धक्का देकर गिरा दिया। मुझे खींच कर बेंच पर डाल दिया। मैंने उसे घूँसा मारा, धक्का दिया, उसकी दाढ़ी नोची, उँगलियों में दाँत काटा। उसने मुझे पटक कर मुँह पर धक्का दिया।

उसकी वह खूँखार चीत्कार मैं कभी न भूलूँगा। 'इसे कस कर बाँधो। मैं इसे मार ही डालूँगा!' और न मैं माँ का भावना शून्य चेहरा और उसका दौड़ कर बेंच के पास आना ही भूल सकता जब उसने कहा था, 'नहीं, पिता! माफ कर दो। इसे मेरे हवाले कर दो।'

नाना ने मुझे इतना मारा कि मैं बेहोश हो गया और कई दिनों तक बीमार रहा। मैं एक बड़े और चिकने बिछौने पर लेटा था जो एक छोटे कमरे में था जिसमें केवल एक खिड़की थी। कमरा धुँए से पीला हो गया था क्योंकि कोने में [illegible] के चित्र के सामने सदा ही रोशनी जलती रहती थी।

शायद ये मेरे जीवन के अत्यन्त भयानक दिन थे। उन दिनों मुझ में यह भावना पैदा हो गई थी कि मैं सबों को अपने सा समझने लगा; दूसरों के कष्ट का मुझको भी पूरा अनुभव होता था।

इसी भावना के फलस्वरूप माँ और नानी के बीच हुई एक लड़ाई ने मेरे मन पर बहुत असर किया। उस छोटे कमरे में

माँ को उस पूजा के चित्र के पास खींच लाकर नानी ने कहा था, 'तू ने उसे अलग क्यों नहीं किया।'

'मैं डरी हुई थी।'

'ओफ, तू इतनी स्वस्थ है! तुझे यह कहने में लाज नहीं आती। मैं जो इतनी बूढ़ी हूँ सो मैं नहीं डरी थी।'

'माँ, मुझे छोड़ दे। मैं इन सबों से ऊब गई हूँ।'

'मुश्किल तो यह है कि तेरे मन में उसके लिए प्यार नहीं है न तू इस अनाथ पर दया ही करती है।'

माँ ने इस पर एक बहुत लम्बी साँस खींचकर बहुत दुःखी शब्दों में कहा 'मैं खुद जीवन भर अनाथ रही हूँ।'

कोने में बैठी दोनों काफी लड़ीं, रोईं। अन्त में माँ ने कहा, 'अगर अलेक्सी के लिए नहीं है तो मैं कहीं चली जाऊँगी। यहाँ रहना नरक में रहने के बराबर है। अब मुझमें यह सब सहने की शक्ति नहीं है माँ।'

'ओफ, मेरे खून मांस की बेटी!' नानी फुसफुसाई।

यह सब मेरे दिमाग में गहरे उतरा। मैं जान गया कि माँ भी कमज़ोर है और सभी की तरह वह भी नाना से डरती है और सब से बड़े अपमान का कारण तो मैं था जिसके कारण माँ को इस नरक जैसे घर में रहना पड़ रहा था। इसके बाद ही माँ कहीं चली गई—शायद कहीं घूमने।

अचानक एक दिन नाना आया, लगा कि वह कहीं छत में से तो नहीं चू पड़ा। उसने अपने बर्फीले हाथ को मेरे माथे पर रख दिया।

'क्या हाल है तुम्हारा, बच्चे! हमें जवाब दो। मन में नाराज़ मत रखना। कहो क्या कहते हो!'

मेरे मन में हो रहा था कि मैं उसे उठ कर पीटूँ। पर जिसके से मुझे दर्द होता था। वह अपना मुंह फिर सिकोड़ा रहा

था जैसे कि कुछ अधिक परेशानी में हो । उसकी आँखें दिवाल पर जमीं थीं । अपने जेब से उसने कुछ खिलौने व सेब निकाल कर मेरे तकिये के बगल में रखे और कहा तेरे लिए यह सब उपहार है ।'

वह झुका और उसने मेरा माथा चूम लिया । फिर माथा थपथपाते हुए उसने कहा, 'तो उस दिन तुझे कुछ ज्यादा पड़ गई । तू तो पागल हो गया था, तूने ही मुझे काँटा खरोंचा कि मैं भी पागल हो गया । परन्तु अगली बार हिसाब ठीक हो जायगा तुझे कम पड़ेगी । जब परिवार में मार पड़े तो उसे मार नहीं समझना चाहिए । यह तो तुम्हारे पालन पोषण का एक भाग है । अलेक्सी, यह न समझना कि मुझे यह सब नहीं सहना पड़ा । मुझे जैसी मार पड़ी है उसकी तू कल्पना भी नहीं कर सकता । या खुदा, मैं खुद वह मार नहीं देख सकता । लेकिन देखो उससे मेरा लाभ ही हुआ । मुझे देखो, एक गरीब विधवा का अनाथ बेटा था और आज मेरी स्थिति देखो, एक होशियार कारीगर, रंगसाजी का उस्ताद !'

फिर बहुत प्रभावोत्पादक शब्दों में उसने अपने बचपन के किस्से बताए । उसकी हरी आँखें चमक रही थीं । उसकी आवाज अत्यधिक तेज थी और उसकी साँस मेरे चेहरे पर पड़ रही थी ।

'तुम तो यहाँ [illegible] पर आए हो न ! परन्तु जब मैं बच्चा था तभी अपने [illegible] के वोल्गा में नाव खेता था । कभी कभी नाव पानी में रहती और किनारे से मैं खींचा करता नंगे पाँव, तेज पत्थरों पर फिर भी मैं नहीं रुकता । मेरी देह के हड्डी हड्डी में दर्द होने लगता परन्तु मैं रो भी न पाता ! अलेक्सी, तुम समझो कि इसकी चर्चा भी कठिन है ।'

'इसी तरह हम लोग रहते थे। तीन बार वोल्गा को नाप डाला कि सबिर्स्क से राइबिस्क और फिर साराटोप, वहाँ से अस्त्राखान फिर मारकारेव के मेले तक। लगभग दो हज़ार मील का चक्कर चार साल लगातार और मैं बहुत होशियार नाविक बन गया था।'

कहते हुए ठीक मेरे आँख के पास उसने धुआँ फेंका और लगा कि मेरे चारों ओर बादल उठ आए हैं। उसने कई बार मेरी खाट हिलाया, बताया कि किस तरह उसने किनारे से नाव खींची। उसने अपने भद्दे गले से एक मल्लाही गीत भी गाया। वह काफी उत्तेजित हो गया था। वह कहता गया,

'गर्मी की एक शाम थी एलेक्सी। हम लोगों ने भिगुलिआख में डेरा डाला था। रात को खाने का समय था। नाविक जी खोलकर गा रहे थे। वोल्गा की लहरें घोड़े की तरह दौड़ रही थीं।'

वह अपनी कहानियाँ कहता गया। जब अँधेरा हो गया तो बहुत प्यार के साथ वह विदा हुआ। और मैंने सोचा कि सचमुच वह इतना बुरा और क्रूर नहीं है। फिर भी मैं यह न भूल पाया कि उस दिन उसने कैसी पिटाई की थी।

नाना के आगमन ने तो जैसे किसी जुलूस का आरम्भ किया। उसके जाने के बाद एक एक करके सभी लोग, आते और मुझे खुश करने की कोशिश करते। सब से अधिक नानी आतीं जो रात को मेरे साथ ही सोती थी। परन्तु इस समय [illegible] ने ही मुझ पर सब से अधिक प्रभाव डाला। घुँघराले बालों वाला वह युवक था बहुत अच्छा, दुबली कमर की कमीज पहने था और बेलबॉटम का पाजामा, नया जूता।

'देखो!' अपनी बाँह ऊपर कर लाल निशान दिखाता हुआ वह बोला, 'देखो कितना फूला है। इस से बहुत अधिक

था। जब तुम्हारा नाना तुम्हें मार डालने को ही उतारू था तो मैंने अपना हाथ बढ़ाकर छड़ी रोक ली ताकि वह टूट जाए। तभी नाना ने दूसरी उठाई। इतनी देर में तुम्हारी माँ या नानी तुम्हें छिपा सकती थीं। परन्तु मैं कुछ समझ नहीं पा रहा हूँ।' कि धीमी हंसी हँसकर उसने कहा, 'तुम्हारी मार देखकर हमें शर्म आ रही थी।' तभी उसकी बातों पर रीझ कर मैंने बताया कि मुझे वह बहुत अच्छा लगता है। उसने उत्तर दिया था, 'मैं भी तुम्हें चाहता हूँ तभी तो तुम्हारी मार सह ली। मैं इतना मूर्ख नहीं कि किसी और के लिए यह चोट खाता।'

तभी दरवाजे की ओर सतर्कता से देखकर उसने धीरे से मुझे यह सलाह दी, 'भविष्य में कभी भागने या सामना करने की कोशिश न करो। झगड़ने से दूनी मार पड़ती है। उसे उसके मन पर छोड़ दो। उस पर थूकना भी मत। इतना याद रखो तो मदद मिलेगी।'

'वह फिर मुझे न मारेगा।'

'जरूर मारेगा।' अधिकार से उसने कहा, 'बार बार।'

'लेकिन क्यों?'

'इसलिए कि तुम्हारे नाना की तुम पर सख्त नजर है। जब वह छड़ी चलाता है, अगर चुपचाप पड़े रहोगे तो धीरे से छड़ी पड़ेगी। उसी कमरे में मेरे ऊपर भी काफी पड़ी है इससे मैं खूब जानता हूँ।'

उसके चेहरे की चमक से मुझे नाना ने जो कहानियाँ बताई थीं याद आ गईं।

तीन

जब मैं अच्छा हो गया तो मालूम हुआ कि इस घर में सीगान का क्या महत्व है। अन्य मामाओं की तरह नाना उस पर नहीं बिगड़ता था और उसके सूने में कहता भी था, 'अच्छा कारीगर है, सीगान। मैं जानता हूँ कि वह कहीं भी जाए तो उसे अच्छा काम मिल सकता है।'

यहाँ तक कि मामा लोग भी उससे वैसा व्यवहार न करते थे जैसा वे ग्रेगरी के साथ करते थे। कभी कभी वे उसकी कैंची की हैंडिल गरम कर देते, उसकी कुरसी में कीलें बिछा देते। कभी कभी वह उसके सिलने वाले कपड़ों में बेकार के टुकड़े मिला देते और लगभग अंधा होने के कारण वह उन बेकार टुकड़ों को भी सिल जाता और नाना की गाली का भागी बनता।

एक रात खाना खाने के बाद ग्रेगरी जब सो रहा था तो मेरे मामाओं ने उसके चेहरे पर बैंगनी रंग पोत दिया। फलस्वरूप वह कई दिनों तक उसी भयानक शक्ल में घूमता रहा।

मामा लोग उनकी ही इस तरह की धूर्तता करते रहते और ग्रेगरी बिना एक भी शब्द कहे सब कुछ सहता। हाँ अब वह

कैंची लोहा या सूइयाँ बहुत होशियारी से छूता । यह उसकी आदत बन गई थी और खाना खाने के समय छुरी या काँटा छूने के पूर्व भी वह उसी तरह अपनी उंगलियाँ पहले भिगो लिया करता था, इससे बच्चे बहुत हँसते थे । और जब कभी वह धोखा खा जाता तो उसके चेहरे पर रेखाएँ खिंचती जो अपने आप ही मिट भी जातीं ।

मैं नहीं जानता कि नाना अपने बेटों की इस शरारत को किस तरह सहता था । परन्तु नानी घूँसा तान कर चिल्ला पड़ती थी, 'जानवरो, क्या तुम्हें शरम नहीं आती ?'

सीगान के सूने में मामा लोग उसे भी न छोड़ते । वे उसे अवारा व चोर घोषित करते तथा उसकी भरसक खूब निन्दा करते । मैं नानी से इसका कारण पूछता तो वह कहती, 'इसलिए कि अलग दूकान खोलकर सभी सीगान को अपने साथ रखना चाहते हैं । इसीलिए एक दूसरे के सामने उसकी कस के निन्दा होती है । यह भी उनकी शरारत ही है क्योंकि वे जानते हैं कि सीगन तुम्हारे नाना को छोड़ कर कहीं न जाएगा । संभव है कि नई खुलने वाली तीसरी दूकान में सीगन को नाना साझीदार बना लें । इससे तुम्हारे दोनों मामा की हानि होगी । अब समझे ?' फिर तनिक हँस कर उसने कहा, 'नाना सब समझता है, तभी तो कभी कभी मामाओं को चिढ़ाने को वह कहता है— मैं सीगन को अपना गुलाम बना लूँगा ताकि कोई उस पर अधिकार न कर सके ।'

अब मैं लगातार नानी के साथ रहता था । अटारी पर ही वह मुझे कहानियाँ सुनाती थी । उसी से मुझे ज्ञात हुआ कि सीगन को उन लोगों ने पड़ा पाया था । एक बरसाती रात को घर के बाहर बेंच पर वह पड़ा था । नानी ने देख कर कहा था, 'इतनी ठण्डक में भी जिन्दा पड़ा है ।'

'लोग अपने बच्चे क्यों छोड़ जाते हैं ?'

'शायद माँ के दूध न होता हो और कोई दूसरा तरीका बच्चे का पेट भरने का न रहा होगा।'

फिर सिर हिलाकर छत की ओर घूर कर वह कहती, 'अलेक्सी इसका कारण गरीबी ही होती है और एक और गरीबी होती है जिसकी चर्चा कम होती है वह यह कि अगर किसी बिना ब्याही लड़की के लड़का हो गया तो वह छिपाती है। क्योंकि इसकी उसे सजा मिल सकती है। तेरे नाना तो सीगन को पुलिस के सुपुर्द करने जा रहे थे पर मैंने रोका, कहा कि हमारे बच्चों में एक और सही। मेरे अट्ठारह बच्चे हुए और यदि सभी जीवित रहते तो अट्ठारह परिवार होते, एक पूरा टोला। मैं अट्ठारह की थी तभी मेरी शादी हुई थी।'

खाट के किनारे पर बैठकर उसने अजीब स्वर में कहा, 'खुदा ने सभी अच्छों को बुला लिया और दुष्टों को छोड़ दिया इसीसे सोगन को पाकर मैं खुश हुई थी। इसी घर में वह पला और अच्छा लड़का निकला। तुम उससे मिलते रहना। वह अच्छा है।'

नानी की आज्ञा मैंने मानी। सीगन को प्यार किया, आदर किया। उस दिन शनिवार की शाम को जब सब बच्चों की साप्ताहिक मार पड़ चुकी थी और नाना गिरजा जा चुका था, रसोईघर में सीगन के साथ मेरी खूब गुजरी।

सीगन ने अपने एक पालतू चूहे का मुझे खेल दिखाया। वह छोटा सा जीव उसके कहने पर अपने पिछले पाँवों से चलता फिरता था। सीगन ने कई चूहों से अपनी दोस्ती करली थी। उन्हें पकड़ कर वह अपने कपड़ों में छिपा लेता, फिर चीनी भी खिलाता।

'चूहे भी आदमियों की तरह चतुर होते हैं।' उसने बड़े ढंग

से कहा। वह सिक्कों व ताश के पत्तों का जादू वाला खेल भी कर सकता था। खेल कूद में वह बच्चों से भी ज्यादा शोर किया करता था। सचाई यह थी कि हममें कोई भी अन्तर न था। एक दिन ताश के खेल में वह खूब हारा। फिर खिसिया कर उसने पत्ते पटक दिए। 'लोगों ने बेइमानी की है। टेबिल के नीचे से पत्ते बदल लिए हैं। क्या इसी को खेल कहते हैं? अगर बेइमानी पर ही उतारू हैं तो मैं भी कुछ करके दिखा सकता हूँ।' वह उन्नीस वर्ष का था यानी चारों बच्चों के उम्र के जोड़ से भी बड़ा।

छुट्टियों की और दावतों की विशेष याद मुझे नहीं है। परन्तु उसमें भी सीगान ही सबसे अच्छा रहता था।

बूढ़ा मेगरी अपने रङ्गीन चश्मे के भीतर से झांकता आ जाता। एजेनिआ भी आयी जो घर की नौकरानी थी। उसकी अजीब शक्ल थी, अजीब आवाज। सबों ने वोद्का पी परन्तु बच्चों को गिलासों में शरबत दिया गया। जैक के गाने ने सब को खामोश रखा। लगता था जैसे उसके गाने की आवाज घास के झरने से आ रही हो। फिर तो [illegible] भी गाने की इच्छा हुई उसने गाया। इससे एक घुटन का अनुभव हुआ परन्तु बूढ़े भी बच्चों की तरह ही विवश थे। मामा माइक का [illegible], मामा जैक के बगल बैठा था जो कुछ खाने पीने की चीजों को देख कर बहुत [illegible] का मुँह बनाता था।

बाकी हम सब भी खामोश बैठे थे जैसे दफ़्न के आदमी हों। या जैसे किसी भूत का इन्तजार कर रहे हों जो आकर खामोशी तोड़ेगा? क्योंकि घर की दो खिड़कियों से रोशनी बाहर अँधेरे में आ रही थी। और दो पीले भालों की तरह एक मेज पर दो मोम बत्तियाँ जल रही थीं।

अकस्मात् मामा जैक का शरीर काँपने लगा मानों उसे नींद

आ रही हो और उसके दोनों हाथ यों अलग अलग रहे जैसे दोनों दो शरीर के हाथ हैं उसकी उँगलियाँ कभी तो चिड़ियों की तरह उड़ती सी लगतीं कभी अपने बाजे पर होतीं । जब भी वह शराब के नशे में गाता तो ऐसे ही उबा देने वाले गाने गाता मानों आवाज उसके दातों के बीच से आ रही हो ।

उसके गाने का प्रभाव सीगान पर भी हम लोगों जितना ही पड़ा परन्तु सुनते समय वह दिवाल के एक खास भाग को देख रहा था । ओह—अपनी उँगलियाँ अपने बालों में डाल कर चला रहा था । और कभी कभी वह कह उठता—'बहुत अच्छी आवाज है ।'

नानी माँ कहती, 'तो क्या जैक तुम हम सबों को रुला कर ही छोड़ोगे ? अच्छा हो सीगान हमें कोई नाच दिखाए ।'

फिर सीगान अपनी पीली कमीज हिलाता हुआ उठता । और बीच में उपस्थित होता । वह चूल्हे से एक जलती लकड़ी निकाल कर ऊँची कर के नाचता जैसे हवा में कोई आग का पतंग हो । और वह खुद सुनहली चिड़िया सा लगता ।

मेज पर बैठे सभी एक दूसरे को घूरते । दाढ़ी वाला मेगरी अपनी गफाचट चाँद को हिलाता । एक बार वह मुझ पर झूमता हुआ गिर पड़ा । उसकी रेशमी दाढ़ी मेरे कंधे पर रगड़ खाकर कान में घुस गई तब उसने कहा, 'ओह, ओलेग्सा अगर तेरा बाप यहाँ होता ! तब तुम मजा देखते वह भी क्या शख्स था । सदा शरारतों से भरा पुरा । क्या तुम्हें याद नहीं ?'

'नहीं ।'

'नहीं ! अच्छा तो सुनो । एक बार वह और तेरी नानी — अच्छा जाने दे—'.

वह उठ खड़ा हुआ । आकर नानी के सामने झुक गया और प्रार्थना की, 'वर दो माँ । हमलोग आज तुम्हारा नहीं नाच

देखना चाहते हैं जो एलेक्सी के बाप के साथ एक बार तुम नाची थीं।'

'अरे तुम क्या कह रहे हो ग्रेगरी ?' नानी ने कहा, 'तुम्हें क्या हुआ है ? क्या तू मुझे हँसी का कारण बनाना चाहता है ?'

परन्तु दूसरे ही क्षण वह उछल पड़ी और नाच के लिए तैयार हो कर बोली, 'अच्छा तो तुम सब हंसना चाहते हो तो हँसो।'

मामा जैक व सीगान ने बाजे उठा लिए। मुझे उसकी आकृति देखकर हँसी आ गई। इससे ग्रेगरी ने उंगली के इशारे से डांटा तथा दूसरे वृद्धों का घूरना भी सहना पड़ा।

एजेनिया गाने लगी। और नानी नाचने लगी। उसका नाच, ओफ, उसका भारी भरकम शरीर हिलता तो जाने कैसा लगता।

जब नाच गाना समाप्त हुआ तो एजेनिया ने कहा, 'काश कि खुदा मुझे सुरीली आवाज देता ! मैं लगातार दस वर्ष तक गाती रहती।'

तब तक ग्रेगरी लगातार वोद्का पीता जा रहा था। तब नानी ने टोका, 'बस करो, यह तुम्हारे आँख की दवा नहीं है।'

परन्तु ग्रेगरी ने उधर ध्यान न देकर मेरे पिता की चर्चा मुझी से की, 'बड़े भारी कलेजे का आदमी था वह !'

'अवश्य था।' नाना ने समर्थन किया।

पिता की इन बड़ाइयों से मेरा जी भर आया।

मामा जैक पर वोद्का का असर हो गया था। वह अपने बाल, नाक, भूरी मूँछें, और ओंठ नोचने लगा। तभी उसने अपने गालों पर तमाचे मारना शुरू किया। उसके आँसू आ

गए। वह बोला, 'मैं यहाँ क्यों समय गवाँ रहा हूँ। पापी! मैंने क्या कर डाला!'

'ठीक कहते हो।' बूढ़े मेंगरी ने कहा।

नानी को भी थोड़ा नशा हो गया था। अपने बेटे का हाथ पकड़ कर उसने कहा, 'बस करो जैक। खुदा हमें रास्ता दिखाएगा!'

नशा ने नानी के सौंदर्य में वृद्धि कर दी थी। उसकी आँखें चमक चमक कर सभों को खुश कर रही थीं।

मामा के आँसुओं से सचमुच मैं पिघल गया। नानी से मैंने पूछा, 'तुम जानती हो नानी।'

'तुम्हें भी जल्दी ही पता लग जाएगा।' नानी ने जवाब दिया।

इससे मेरी उत्सुकता पूरी तरह समाप्त न हुई तब मैंने सीगान से पूछा परन्तु उसने भी संतोषप्रद उत्तर न दिया। हाँ हँसी के बीच, मेंगरी को घूर कर उसने उत्तर दिया, 'उसे आराम करने दो। मेरे साथ भागो, भागो नहीं तो मैं तुम्हें रङ्ग के कंडाह में डुबा दूँगा।'

मेंगरी चूल्हे के पास जाकर रंगों की देख भाल करने लगा रंगीन चश्मे के भीतर से अपनी लाल आँखों से घूर कर मेंगरी ने सीगान से कहा, 'तुम्हें लोग पुकार रहे हैं, सुनते नहीं!'

जब सीगान चला गया तो मेंगरी ने जो एक बोरे पर बैठा था। मुझे अपने पास बुलाया। मुझे अपने पास खींचकर अपनी दाढ़ी मेरे गालों पर रगड़ कर उसने कहा, इस ढंग से मानों कोई रहस्योद्घाटन कर रहा हो, 'तुम्हारे मामा ने अपनी बीवी को इतना पीटा कि वह मर गई है। इसीलिए जानने की ज्यादा कोशिश करोगे तो पागल हो जाओगे।'

मेंगरी भी नानी की तरह ही सीधी बातें करता था परन्तु उसकी बातें सदा निष्फल होती थीं।

'और जानते हो कैसे उसकी हत्या की ?' बहुत वास्तविकता का रंग लाकर उसने कहा। 'ऐसा कैसे हुआ ? दोनों साथ सो रहे थे जब उसने तेरे मामी के चेहरे पर तकिया फेंक कर उसे पीटना शुरू किया और अगर इसका कारण पूछोगे वह भी न बता सकेगा।'

तभी हाथों में बहुत से कपड़े लिए हुआ सीगन आ गया। उसकी अवहेलना करके मेंगरी चूल्हे की आग से अपना हाथ सेंकता रहा और कल्पना करता रहा, 'हो सकता है कि मामा ने देखा हो कि मामी अच्छी थी। ये काशीरिन्स गोर्की ? (नाना के परिवार का जातीय नाम)। अच्छों को बर्दाश्त नहीं कर सकते। अपनी नानी से पूछना कि इन्होंने तुम्हारे बाप के साथ क्या क्या किया था। वही बतावेगी। वह अच्छे दिल की बुढ़िया है।'

फिर उसने मुझे कमरे से बाहर कर दिया और आश्चर्य से मैंने देखा कि मैं आ गया था। मैं आगे जाता कि तभी सीगान आ गया और उसने कहा, 'उससे डरा मत करो। वह अच्छा आदमी है बस उसकी आँखों में सीधे देखा करो। तुम्हें वह पसन्द करता है।'

मैं विवश होकर अपने माँ व बाप के जीवन के बारे में सोचने लगा। मुझे याद आया उनका बात करने का अपना ढंग था। उनकी खुशी भी अपने ही ढंग की थी। जागते वक्त या बैठे रहने पर भी वे दोनों एक दूसरे के काफी पास रहते थे। वे खूब हँसते थे। शाम को अपनी खिड़की पर बैठ कर दोनों गाना गाते। अक्सर गली के लोग इकट्ठे होकर उन्हें सुनते। यहाँ के लोगों को हंसी बड़ी अस्वाभाविक और साथ ही दुर्लभ थी।

वह सभी एक दूसरे से जलते हैं और कोनों में खड़े होकर चुपचाप गालियाँ देते हैं। बच्चे भी यहाँ केवल गालियाँ ही खाते रहते हैं। इससे मुझे हर बात चपत की तरह लगती। फलस्वरूप मैं हर चीज की ओर से सतर्क हो गया।

सीगान के साथ मेरी मित्रता, बढ़ती गई। वह हर समय कामों में फँसा रहता तथा मैं उसके चारों ओर डोलता रहता। जब भी नाना मुझे पीटता तो वह छड़ी को अपनी पीठ पर रोक लेता तथा दूसरे दिन मुझे छड़ी का निशान दिखा कर कहता, 'इसके कोई माने नहीं। इससे मार बढ़ तो सकती नहीं। अच्छा यह अन्तिम बार था। मैं कहे देता हूँ।' परन्तु जब भी दूसरी बार मार पड़ती वह पहले की तरह दर्द का साझीदार बन जाता।

'मैं समझता था कि इस बार तुम मुझे न बचाओगे?'

'हाँ मैंने सोचा था कि नहीं, परन्तु मेरे अधिक सोचने के पूर्व ही......'

हर शुक्रवार को सुबह अपनी रोयेंदार टोपी पहन कर वह नाना के बहुत प्रिय परन्तु बहुत बदमाश घोड़े पर चढ़कर बाजार जाता कि हफ्ते भर का घर का समान लाये। यों तो वह दोपहर तक लौट आता था परन्तु कभी कभी जब बहुत देर हो जाती तब बेचैनी से सभी एक एक बार खिड़की पर आकर चिन्तित हो पूछता।

'दिखाई भी नहीं पड़ रहा?'

'नहीं।'

नानी सब से अधिक चिंतित रहती थी। नाना व अपने बेटों पर खिसियाती, 'तुमने उसे उस घोड़े के साथ मरने को भेजा है। तुम सबों के भीतर आत्मा तो है ही नहीं। तुम लोगों को शर्म आनी चाहिये। तुम सभी, [illegible], मूर्ख व निर्दयी हो। खुदा तुम्हें इसकी सजा देगा।'

'बस, बहुत हुआ।' नाना रोकते, 'मैं कहे देता हूँ यह अन्तिम बार है।'

और जब सीगल आ जाता तो नाना मामा सभी बच्चों के साथ बाहर आकर सामान उतारने लगते।

नाना ने सभी वस्तुओं को गौर से देख कर पूछा, 'जो चीजें कहीं थीं सभी आ गईं ?'

'हाँ रह रहीं सब।' सीगल कहता और हाथ कोट पर रगड़ता।

'इन कपड़ों में पैसे लगते हैं।' नाना कहता, 'क्या कुछ पैसे बचे हैं ?'

'नहीं।'

सभी चीजों को देख कर नाना धीरे से कहता, 'तू बहुत चीजें ले आया। समझा!' कहकर भीतर चला।

तब मेरे मामा लोग सभी सामान को गौर से देखकर कहते, 'वाह, कितनी जल्दी सब सामान उतार लिया!' वे खुद ही तारीफ कर लेते।

परन्तु मामा माइक का ढंग अनोखा था, 'क्या दिया था तुझे पापा ने ?'

'पाँच रूबल!'

'लेकिन चीजें तो पन्द्रह रूबल के करीब की हैं! तुमने कितना खर्च किया ?'

'चार रूबल और दस कोपेक।'

'वाह वाह, तो नब्बे कोपेक तुम्हारे जेब में हैं! अरे सेर्गे [illegible] देख। पैसा कैसे बचाया जाता है!'

नानी आकर घोड़े को थपथपाती तथा प्यार से उसे एक [illegible] नमकीन रोटी खिलाती। सीगल पास आकर कहता, 'सचमुच बहुत तेज है।'

'मेरे पास मत आना !' चीख पड़ी नानी, 'आज मैं तुमसे नाराज़ हूँ।'

बाद में नानी ने मुझे बताया कि सोगन ने चोरी की थी। 'तेरे नाना से उसने पाँच रूबल पाया और उसमें से तीन बचा लिया। इसको चोरी की आदत पड़ गई है। तेरे नाना को आजकल येपरु बच्चों के खून से ज्यादा कीमती लगते हैं। और तेरे मामा माइक और जेक..........। अगर किसी दिन सोगन की चोरी पकड़ी गई तो लोग उसे मार डालेंगे।'

दूसरे दिन मैंने सोगन को समझाया, 'अगर तुम चोरी बन्द न करोगे तो मार डाले जाओगे !'

'वे मुझ पर हाथ नहीं लगा सकते। मैं काफी तेज घोड़ा हूँ।' हँसा और बोला, 'मैं जानता हूँ कि चोरी पाप है और बहुत बड़ा खतरा भी फिर भी मैं मौज के लिए चोरी करता हूँ।'

अचानक उसने मुझे उठा लिया। कहा, 'तुम्हारी देह की हड्डी अच्छी है। तुम नाना से नहीं डरते न !'

'मैं नहीं जानता !'

'वे सभी कासारिन दुष्ट हैं पर मैं इनमें भी तेरी नानी को प्यार करता हूँ।'

'और मुझे ?'

'तुम कासारिन कहाँ हो तुम तो दूसरी ही जात के हो, पेश्कोव जाति के।'

फिर उसने मुझे नीचे उतार दिया।

आँगन में एक बहुत बड़ा क्रास रखा था। जब मैं सर्वप्रथम इस घर में आया था तभी मैंने देखा था परन्तु तब वह देखने में पीला और साफ सुथरा था। बरसात के पानी ने उसे काला कर दिया था। यह क्रास मामा जैक का था जो अपनी पत्नी के कब्र पर रखने को लाया था। उसने यह प्रण किया था

कि इसे वह पीठ पर लाद कर ले जाएगा। अगली जाड़े के शुरू के एक शनिवार को जब उसकी पत्नी की बरसी पड़ेगी। आज मैं घर के तीन बच्चों के साथ एक शरारत के कारण घर में बंद रखा गया था। मेरे दोनों मामा ने क्रास को खड़ा किया। वह बहुत ऊँचा था। कुछ पड़ोसियों और ग्रेगरी ने मिल कर उसे सीगन की पीठ पर लादा। मामा ने उसका पिछला भाग पकड़ा। सीगन काफी मजबूत था फिर भी उसके पाँव काँप रहे थे।

'ले जा सकोगे?' ग्रेगरी ने पूछा।

'पता नहीं। पर बहुत भारी है।'

'चुप रह अंधे। जा दरवाजा खोल!' मामा माइक चीखा।

जैक मामा भी बिगड़ा, 'तुझे यह कहने में शर्म न आई जब तू हम दोनों से मजबूत है।'

दरवाजे खोल कर भी ग्रेगरी सीगन को सावधान करता रहा, 'धीरे धीरे जाना। खुदा तेरी मदद करे, तुझे बचाए।'

'भाग जा, मूर्ख।' गली में जाता हुआ भी माइक मामा चीखा।

तभी आंगन में लोगों की बातचीत व हँसी की आवाज आई जैसे लोग उस क्रास से छुटकारा पाकर खुश हुए हों। ग्रेगरी मुझे दूकान पर ले गया और बोला, 'यह सब जो हो रहा है इससे शायद आज रात नाना को उछल कूद करनी पड़ेगी।'

उसने मुझे उनके एक स्टूल पर बैठा दिया जो रंगने को आया था। 'मेरे बच्चे मैं उसे सैंतीस साल से जानता हूँ। मैंने इस व्यापार का प्रारम्भ देखा था और अंत भी देखूँगा। उसने दोस्तों की तरह काम शुरू किया था। सच तो यह है कि काम साझेदारी में शुरू हुआ था। परन्तु तेरे नाना बहुत चतुर हैं उसने किसी तरह सब हथिया लिया। तब मैं यह न समझ पाया था। खुदा तो हमसे भी चतुर है न! तुम नहीं जानते कि आजकल क्या हो रहा है पर बाद समझ जाओगे। तेरा बाप कितना

भला था और पढ़ा लिखा भी था। लेकिन तेरा नाना उस पर भी खुश न था।'

अपने बाप के लिए यह शब्द सुनकर मुझे अच्छा लगा। दाढ़ीदार, बिना टोपी का, लम्बे कानों वाला ग्रेगरी देखने में बड़ा प्रभावपूर्ण लगा! उसने राय दी, 'लोगों की आँखों में सीधे, गहरे देखा करो, अगर कभी कोई पागल कुत्ता आए तब भी। ऐसा करोगे तो वह रुक जाएगा।' उसकी नाक पर भारी चश्मा सवार था।

'क्या हुआ!' अचानक वह चौंक पड़ा। उसके कान खड़े हो गए। अपने जूते से धक्का देकर उसने चूल्हे का मुँह बंद किया। दौड़ा बल्कि कूद कर भागा, उसके साथ मैं भी भागा। रसोईघर के फर्श पर पीठ के बल सीगन पड़ा था। उस पर खिड़की से आती धारीदार धूप पड़ रही थी। उसका सिर भीगा था आँखें छत पर जमी थीं। उसके गले व मुँह से खून निकल कर जमीन पर आ रहा था। उसका पाजामा गीला था तथा बालू उस पर लगी थी।

सीगन चुपचाप पड़ा था। यूजेनिया एक रोशनी लेकर आई।

'यह फिसल गया था।' [illegible] जैक ने अजीब शून्य आवाज में कहा। 'यह फिसला तो शायद इसी पर गिर पड़ा। उसके चलते तो हम भी मरते लेकिन किसी तरह बच गए।'

ग्रेगरी ने दुःखी होकर कहा, 'यह तुम्हारी ही करनी है।'

'क्या मतलब?'

'तुम्हारी करनी!'

[illegible] खून बह कर दरवाजे पर जमा हो रहा था।

'[illegible] घोड़े पर पापा को बुलाने गया है।' जैक ने [illegible] 'मैं इसे यहाँ गाड़ी में लाया। यह अच्छा हुआ कि मैं [illegible] [illegible] नहीं था नहीं तो मेरी भी यही दशा होती।'

एक बार फिर इजेनिया ने सीमन के हाथ में बत्ती देनी चाही। उसके आँसू और पिघली मोम उसी पर गिर रही थीं।

'यही होता है। उसका सिर सीधा कर दो और टोपी उतार दो।'

इजेनिया ने टोपी खींच ली।

अब तक केवल मुंह से खून आने लगा था परन्तु खून गाढ़ा था।

अब तक काफी समय बीत गया था जैसे शीघ्र ही सीमन उठ बैठेगा, 'ओह बड़ी गरमी है।' ऐसा वह हर रविवार को खाना खाने के बाद कहता था। अब सूरज की रोशनी उस पर से हट कर खिड़की पर ही सीमित हो गई थी। धीरे धीरे उसके सारे शरीर पर अँधेरा छा गया और उसके मुँह से खून का बहना भी बंद हो गया। उसके सिर के पास केवल तीन मोमबत्तियाँ जल रही थीं जो उस अँधेरे में केवल तीन पीले धब्बों का निर्माण करने में ही सफल हो रही थीं तथा उनके प्रकाश में उसके बड़े बड़े दाँत तथा नाक ही दिखाई पड़ रही थी

'बेचारा।' इजेनिया ने दुःख से कहा।

अब तक जाड़ा बढ़ गया था। मैं टेबिल के नीचे छिप गया जब नाना उसके पीछे नानी तथा माइक उसके बाद और अन्य पड़ोसी कमरे में आए।

अपना कोट उतार कर नीचे फेंकते हुए नाना चीखे, 'ओफ! दुश्मनो देखा! तुमने क्या किया है। तुम दोनों सरफिरो! केवल पाँच वर्ष में वह अपने तौल के बराबर सोना मेरे लिए पैदा कर सकता था।'

सभी लोग कोट पहने खड़े थे जिसके कारण मैं टेबिल के नीचे से अब सीगन को नहीं देख पाता था। वहाँ से मैं रेंग कर निकला और नाना से टकरा गया। नाना ने मुझे एक ओर हटाकर मामा माइक को धक्का देकर कहा, 'भेड़िए!' फिर बेंच पर बैठकर सूखी सिसकियों के बीच उसने कहा, 'इससे मुझे बहुत कष्ट हो रहा है। वह तुम्हारे जीभ पर हड्डी की तरह गड़ रहा था इसी से तो तुम सभी परेशान थे न! बेचारे सीगन, तुम्हारे साथ इन्होंने क्या किया? नए घोड़े के बेवकूफ सईस से यही होता है। ओ माँ। इधर खुदा हमसे क्यों इतना नाराज है?"

जमीन पर सीगन पर झुकी हुई नानी रो रही थी। और चीख कर कह रही थी, 'अपराधियों, दूर हटो।'

लेकिन नाना भीड़ जमाए ही रहा।

फिर सीगन की अंतिम क्रिया में कोई शोर गुल न हुआ। और शीघ्र ही वह भुला दिया गया।

चार

एक कम्बल के चार तह के नीचे लेटा हुआ मैं नानी की प्रार्थना सुन रहा था । वह घुटनों के बल बैठी थी । एक हाथ उसका उसकी छाती पर था, दूसरे से रह रह कर वह अपने ऊपर क्रास बनाती जाती थी । बाहर खूब बर्फ पड़ रही थी । खिड़की से छन कर आती चाँदनी हरी दिखाई पड़ती थी ।

नानी की प्रार्थना समाप्त हुई । उसने अपने लबादे उतारे और ढंग से तह कर रखे फिर जब बिस्तरे पर सोने के लिये आई तब मैं बिल्कुल सिकुड़ कर सोने का अभिनय करने लगा ।

'बदमाश ! अभी तक जाग रहा है ।' उसने कहा, 'यह बतख की तरह जो पड़ा है सो ठीक से लेट और मुझे भी तकिया लगाने दे ।'

इस परिहास से मुझे हंसी आ गई और वह चिल्ला उठी, 'ओह, बूढ़ी नानी से मजाक करता है ?' कह कर उसने तकिया खींच लिया और लुढ़कता हुआ मैं नानी के घुटनों

बिछौने पर पहुँच गया तो उसने कहा, 'क्या बात है ? क्या तुम्हें मच्छड़ काट रहे हैं ?'

यों तो ऐसा ही होता था कि उसे प्रार्थना में बहुत देरी लगती थी और मैं जब बिल्कुल सो जाता तब आकर बिछौने में घुसती थी। परन्तु यह लम्बी प्रार्थनाएँ उसी दिन होती थीं जिस दिन घर में झगड़ा होता या कोई परेशानी रहती थी, और वह प्रार्थनाएँ भी सुनने लायक रहतीं। वह खुदा को सविस्तार सभी घटनाएँ सुनाती थी। फिर अन्त में कहती, 'खुदा, हम सबों का भला चाहते हैं। बड़े बेटे माइक को बाजार में एक नई दूकान हो जाय। वहाँ अभी ऐसी कोई दूकान नहीं कि उसे खतरा हो। नदी के किनारे की वह जगह ठीक रहेगी। लेकिन क्या करूं ? उसका बाप जैक को अधिक मानता है। लेकिन क्या एक बेटे के प्रति अधिक उदारता दिखाना न्याय है ? क्या यह उचित है ? खुदा उस बूढ़े को ठीक रास्ता दिखाओ।'

फिर आँखों की चमक के साथ ही वह खुदा को सलाह देती, 'किसी सपने में उसे दिखाओ कि बच्चों से किस तरह व्यवहार करना चाहिये।' फिर धरती पर सिर झुकाकर वह कहती, 'क्या बारबरा को तनिक सुख न होगा ? क्या वह सबों से अधिक पापिन है। उस जैसी अच्छी व सुन्दर औरत को क्यों इस तरह सताया जा रहा है ? और खुदा, इस बूढ़े भिखारी के लिए भी कुछ सोचना। दिन प्रति दिन उसकी आँखें खराब होती जा रही हैं अगर वह अन्धा हो गया तो कितना भयानक होगा। वह यदि परिवार के किसी व्यक्ति पर न रहे तो क्या होगा ! मेरे खुदा, ओफ खुदा ?'

फिर वह बहुत देर तक सिर झुकाकर चुपचाप बैठ जाती कि शक होता कि सो तो नहीं गई या जग तो नहीं

गई। फिर वह सोच कर रहती, 'और कौन छूटा? खुदा सभी भलों का भला करना। जो अपराधी हैं उन्हें भी माफ करना। और खुदा तुम्हें सब मालूम है तुम सब देखा करते हो।'

मुझे लगता कि नानी खुदा से परिचित है इसलिए मैं पूछता, 'मुझे खुदा के बारे में बताओ।' तब वह एक खास ढंग से कहती, आंखें मूँदकर वह शब्दों को लम्बा खींचकर कहती। फिर बात शुरू करने के पहले वह कपड़ों को कसकर ठीक से बैठ जाती।

स्वर्ग के सुन्दर देश में पहाड़ों के ऊपर वह रहता है। उसके चारों ओर खूबसूरत पेड़ होते हैं। जानते हो, स्वर्ग में जाड़ा कभी नहीं आता न बर्फ गिरती है। इसलिए फूल कभी नहीं मुरझाते। सभी कुछ खुदा की दया से हरे भरे और सदा सुन्दर रहते हैं।

उसके चारों ओर फरिश्ते उड़ते रहते हैं। और शायद सफेद कबूतर उड़ उड़ कर स्वर्ग और पृथ्वी की खबरें उन्हें पहुँचाते रहते हैं। जो हम लोग करते हैं या दुनिया के दूसरे लोग करते हैं। और [illegible] पर हम सबों की हिफाजत के लिए हर व्यक्ति पर एक फरिश्ता रहता है—तुम्हारे, हमारे और तेरे नाना के लिए। खुदा सब पर एक सी नजर रखता है। जैसे अपने फरिश्ते को लो। वह फरिश्ता आएगा और खुदा से कहेगा, 'अलीमर्दान ने अपने नाना से बुरे शब्द कहे हैं।' 'अच्छी बात है।' खुदा ने कहा, 'खुदा सबको माफ करता है।' फिर इसी तरह सब होता है। जो जैसा करता है वैसा ही खुदा से पाता है, जैसे किसी को दुःख मिलता है, किसी को खुशी, खुदा जो भी करता है क्योंकि उसके दूत, फरिश्ते सदा ही अपना पंख फैलाए हमारे पास ही रहते हैं।' यह कहते हुए वह मुस्कुराती जाती और प्रसन्न होती।

'क्या कभी तूने उसे देखा है ?'

'किसी ने देखा नहीं लेकिन जानते हैं !'

खुदा, स्वर्ग और फरिश्तों की बात करते करते उसके चेहरे पर जैसे पुनः यौवन लौट आया और उसकी आँखों में अद्भुत चमक आगई। और मैं चुपचाप उसे देखता और उसकी कहानियाँ सुनता रहा।

'आदमी खुदा को नहीं देख सकते। उनकी आखें पवित्र नहीं हैं। केवल कुछ साधु लोग ही उसे सामने देख सकते हैं। लेकिन फरिश्ते को मैंने भी देखा है। जब पवित्र आत्मा से प्रार्थना करते हैं तब फरिश्ते दिखाई पड़ते हैं। एक सुबह को गिरिजा के ऊपर दो फरिश्तों को मैंने बादलों की तरह उड़ते हुए देखा था। उन्हें देखकर मैं खुशी से लगभग चीख सी पड़ी और खुशी से आँसू भी निकल पड़े थे। ओफ ! वह दृश्य कितना सुन्दर था। ओफ ! अलेक्सी, खुदा की परछांई जहाँ भी पड़ती है अच्छा ही लगता है, चाहे स्वर्ग हो या पृथ्वी !'

'लेकिन यहाँ मेरे घर में ?'

'हाँ सर्वत्र !'

यह सुनकर मैं कुछ उलझन में पड़ा। क्योंकि उस घर में जो कुछ हो रहा था, दिन प्रतिदिन मैं उससे ऊबता जा रहा था और यह मानने को मैं तैयार न था कि खुदा की उपस्थिति में सब कुछ ठीक ही हो रहा था।

एक दिन मैंने देखा कि मामा साहब के कमरे में से मामी नतालिया रोती हुई निकली। उसके बदन पर आधे ही कपड़े थे और अपने दोनों हाथों को वह अपनी छाती पर दाबे थी।

'बचाओ! ए खुदा, मुझे इस नर्क से निकालो!'

उसकी इस प्रार्थना से मुझे बड़ी दया आई और तभी मैंने सुना मामा बड़बड़ा रहा था, 'ज्योंही मैं अंधा हो जाऊँगा ते

मुझे अवश्य ही निकाल देंगे। मैं गलियों में भीख माँगकर भी यहाँ से अच्छा ही रहूंगा।'

उसके लिए मैंने सोचा कि वह शीघ्र ही अन्धा हो जाए क्योंकि उसके साथ ही गलियों में भीख माँगने का मैंने भी निश्चय किया था। मैंने यह विचार उसके सामने प्रकट किए थे। अपनी दाढ़ी के बीच मुस्कुरा कर उसने कहा था, 'जरूर, हम लोग साथ ही चलेंगे। और सभी गलियों में घूमघूम कर मैं सबों को बताऊँगा कि 'यह वासिल काशरिन का नाती है। जो रंगराजी की दूकान का मालिक है', यह बहुत अच्छा होगा बहुत मजेदार!'

अक्सर ही मैं देखा करता कि मामी नातालिया के पीले चेहरे पर नीले दाग होते। आँखों के चारों ओर काला धब्बा तथा उसके ओंठ फूले होते। तब मैं नानी से पूछता, 'क्या माइक मामा ने उसे मारा है ?'

'हाँ', वह कहती, 'वही दुष्ट! लेकिन तेरा नाना यह सब नहीं सह सकता इसलिए रात को ही पीटा करता है। वह बहुत कड़ा, कठोर है और नातालिया बहुत कोमल! फिर भी ...' वह काफी प्रसन्नता से कहती, 'आजकल वैसी मार कहाँ होती है जैसी पहले होती थी। कभी कभी तो कान और दाँतों को कष्ट सहना पड़ता था। और कई कई घंटे लगातार पिटाई होती थी। एक बार ईस्टर के दिनों में तुम्हारे नाना ने हमें पीटा था, लगातार पीटता रहा, सुबह से रात तक। और केवल साँस लेने भर का मौका देता था।'

'सो क्यों ?'

'यह याद नहीं! दूसरी बार भी इतनी देर तक पीटता रहा कि मैं मरते मरते हो गई थी। फिर कई कई घंटों तक मेरा

खाना वह बंद कर देता था। मैं बड़ी मुश्किल से जिन्दा बच पाई थी।'

मैं आश्चर्य में डूबा था। नानी, नाना से बदन में दूनी थी। वह यह सब कैसे कर पाता था? 'क्या वह तुमसे मजबूत है?' मैंने पूछा।

'मुझसे बड़ा है, मजबूत नहीं।' उसने जवाब दिया, 'लेकिन वह मेरा पति है। मेरे लिए खुदा के बराबर। मेरा काम तो उसकी बातों को धैर्य पूर्वक सहना ही है।'

नानी के एक काम को मैं बड़ी मौज में देखा करता था वह यह कि जब नानी मूर्ति और उसके चांदी के मुकुट को साफ करती होती तो वह फूलकर कहती, कितना खूबसूरत चेहरा है!' वह उसे चूम लेती और फिर कहती, 'पवित्र मां, मैं तुम्हारी धूल झाड़ रही हूँ।' फिर मुझसे कहती, 'अलेक्सी देखो, कितने अच्छे, साफ छोटे छोटे हरुफ हैं ये। बड़ी आसानी से पढ़े जा सकते हैं। इसका नाम है 'बारह पवित्र दिन'। यह जानते हो क्या लिखा है?—मेरे लिए दुःख मत करो। मुझे जल्दी ही कब्र में लेट जाना है।' इस समय सचमुच नानी वैसी ही लगती जैसे छोटे छोटे बच्चे गुड़ियों के साथ खेलें।

उसे अक्सर भूत-प्रेत भी दिखाई पड़ते थे। कभी अकेले कभी कई। 'एक बार एक चाँदनी रात को रौडोल्फोव के मकान के पास से मैं आ रही थी तो मुझे उसकी छत पर कुछ दिखाई पड़ा। फिर पता लगा कि चिमनी से लग कर कोई बैठा था, कोयले जैसा काला! उसका भयानक चेहरा तथा उसके सींग आगे झुके थे और वह यह देख रहा था कि चिमनी के भीतर क्या है। वह अपनी पूँछ हिला रहा था, अपने होंठ रगड़ रहा था। इसके सामने से जाते समय मैंने जोर से कहा, 'ईसा

जाग उठा है और उसके दुश्मन हार गए हैं।' उसने छत को हिलाया। उस दिन अवश्य ही उस घर में गोश्त पक रहा था तभी तो चिमनी से आती सुगन्ध में वह विभोर था।'

ग्रेस के छत हिलाने की बात से मैं हंस पड़ा। उसी समय हँस कर नानी ने भी कहना जारी रखा, 'बच्चों की तरह ही वे खूब खेलते कूदते हैं। एक दिन बहुत रात गए तक मैं कपड़े रंग रही थी। तभी अचानक दरवाजा खुल गया, बहुत से छोटे छोटे लाल, हरे और काले जीव भीतर आगए। वे कई नाप के थे और शीघ्र ही वह सारे कमरे में फैल गए। मैंने दरवाजे तक जाना चाहा पर न जा पाई। वे फिर मेरे पाँवों पर रेंग कर मेरे कपड़ों पर चढ़ गए और ऊपर चढ़ते गए। उनके चूहों जैसे दाँत थे और हरी आँखों से सब कुछ घूर रहे थे। उनकी उठी हुई पूँछ सुअर के पूँछ के आकार की थी। मुझे तो लगा कि मैं पागल न हो जाऊँ।'

मैंने आंख बन्द कर ली और कमरे भर में उस फौज की कल्पना करता रहा। नानी एक बार काँप उठी और बोली, 'और मैंने देव और राक्षस भी देखे हैं। जाड़े की एक रात में बर्फ पड़ रही थी। मैं उधर से जा रही थी कि यकायक मुझे कुछ आवाज सुनाई पड़ी। कौवे की तरह काले घोड़े मेरी ओर दौड़े आ रहे थे। एक राक्षस जिसके सफेद और बड़े बड़े बाल बाहर निकले थे और वह लाल हैट लगाए था, बैठा आ रहा था। लाहे की लगाम थी जिसे वह पकड़े था। जब कोई रास्ता न मिला तो घोड़े पास के तालाब को लांघ गए और बर्फ पर दौड़ गए। हर घोड़े पर लाल टोप वाले राक्षस थे। वे यों भाग रहे थे कि शोले के बने हों। वे प्रायः रोज ही घूमने आते होंगे। उस दिन शायद वे किसी दावत से वापस आ रहे थे।

इस प्रकार नानी को पूरी तरह इन बातों पर विश्वास था और वह इस ढंग से कहतीं कि उनकी कहानियों को सच मानना ही पड़ता। सबसे दिलचस्प कहानियां उसकी यह थीं—'एक देवी का किस प्रकार डाकू स्त्रियों के बीच जाकर उन्हें रुसियों को न लूटने की शिक्षा देना। साधू एलक्सी, बहादुर इवान, कोजा पादरी, डाकू का सरदार बाला उस्तिया और दूसरी कुछ महिलाएँ आदि। नानी की कहानियों का खजाना कभी न चुक सकता था।

वह न तो नाना से डरती न किसी शैतान या भूत से। लेकिन वह सदा ही काली मछली देख कर बुरी तरह भयभीत हो जाती थी। अक्सर रात को मैं सोता होता तो वह मुझे जगाकर कहती, 'अलेक्सी, देखो वहाँ कुछ है। उसे भगाओ।' मैं ऊँघता हुआ रोशनी लेकर कमरे भर का चक्कर लगा जाता तब कहीं वह शान्त होकर बैठती।

'तू इतना डरती क्यों है?' मैं पूछ बैठता।

'मैं खुद नहीं जानती।'

एक दिन जब नानी घुटनों के बल बैठी बुदबुदा कर आँखें बन्द किए हुये खुदा से शायद बातें कर रही थी कि चीखते हुए नाना ने आकर कहा, 'खुदा की पुनः हम पर कुदृष्टि है! घर में आग लगी है।'

'तुम यह क्या कह रहे हो?' नानी ने चौंक कर पूछा, फिर तत्काल ही वह उछल पड़ी। फिर आज्ञा के स्वर में जोरों से कहा, 'इवेनिया मूर्ति को ले लो। नातालिया, बच्चे को कपड़े पहना।'

मैं रसोई घर की तरफ भागा, इसकी खिड़कियाँ आँगन से सुनहले धुएँ की लगती थीं। जमीन पर भी पीली छायायें

पड़ रही थीं। मामा जैक आधे ही कपड़े पहने था और यों उछल रहा था जैसे आग की लपटें उसके पावों में लग रही हों। 'यह सब नाहक का ही काम है।' उसने चीख कर कहा, 'हम लोगों को आग में झोंक कर वह खुद भाग गया है।'

'चुप रह कुत्ते!' कहते हुये नानी ने उसे यों धक्का दिया कि वह गिरते गिरते बचा।

अब तक आग दूकान की ऊपरी छत तक पहुँच गई थी और लपटें दरवाजे के बाहर तक आ गई थीं। रात शाँत थी, फिर भी धुये से लपटों का तनिक भी रंग नहीं बदला था। धुआँ ऊपर उठ कर एक काले बादल की शक्ल ले लेता था फिर भी रास्ते की चमकती बर्फ की चमक कम न हुई थी। सभी वस्तुओं की शक्लें बदल गई थीं परन्तु वह चिमनी अब तक पहले जैसी ही खड़ी थी। हमारी खिड़की पर आग की ध्वनि कुछ मनोहर थी जैसे सिल्क के कपड़े की रगड़। आग बढ़ती रही, अपना काम करती रही। आग ने सारी दूकान को जलाकर यों काली कर दिया जैसे गिरजाघर की काली मूर्तियाँ। इससे आग के प्रति मेरे मन में तनिक आकर्षण ही हो गया।

एक बड़े बालों वाला कोट, जो मुझे पूरा ढंक लेता था, और एक जोड़ी जूता जो मेरे हाथ पड़ गया, लेकर मैं सहन में भाग आया। वहाँ आकर सर्वप्रथम मैं तेज रोशनी से चकाचौंध तथा नाना, मामा और ग्रेगरी के एक साथ चीखने से भौंचक्का सा हो गया। मैं नानी को देख कर सचमुच चौंक गया। अपने शरीर को एक बड़े कम्बल में लपेटे और सिर पर एक बोरा रखे सीधी आग में

दौड़ रही थी। जब वह आग में खो गई तो चिल्लाई, 'सभी गन्धक, तूतिया, अरे मूर्खो, अब विस्फोट होगा।'

'उसे बाहर खींच लो ग्रेगरी।' नाना चीखा, 'नहीं तो खतम हो जाएगी।' तभी नानी आगई। आधी बेहोश, झुकी हुई वह तूतिया का बड़ा घड़ा लिए थी।

'घोड़े को बचाओ' वह चीखी। बीच बीच में खांसी उसकी बात को रोक रही थी। 'यह मेरे हाथ से छीनो। देखते नहीं मैं जल रही हूं।'

ग्रेगरी ने जल्दी से उस पर से कंबल खींच लिया। और बर्फ के टुकड़े आग से भरे दरवाजे की ओर फेंकने लगा। जबकि नाना नानी पर ही बर्फ छिड़क रहा था। फिर झटपट तूतिया के घड़े को बर्फ में गाड़ कर नानी दरवाजे की ओर भागी। बाहर कुछ लोग जमा हो गये थे, उनसे कहा, 'पड़ोसियों, हमारी मदद करो, चीजों वाला कमरा बचा लो। अगर उस कमरे में आग पहुँच गई तो आप सबों के घरों की भी खैर नहीं। छतों को तोड़ कर घास के गट्ठरों को आग में खींच लो। ग्रेगरी कुछ बर्फ ऊपर भी फेंको, सभी नीचे ही नहीं। जैक, बेकार चारों ओर मत घूमो, कुल्हाड़ी दे दो, इन लोगों की मदद करो। मेरे पड़ोसियों, दोस्तों की तरह काम कीजिये और खुदा मदद करेगा, भला करेगा।

मेरे लिये नानी खुद आग की तरह ही थी। लपटों के बीच वह बाल बाल बचती। इसकी छाया जैसे इस समय हर ओर व्याप्त हो गई थी। मदद देते हुये, रास्ता बताते हुये वह पागल सी थी।

अस्तबल से छूटकर शराप। यों कूदा कि धक्का खाकर नाना गिरते गिरते बचा। उस जानवर की चमकदार

आँखों की रोशनी और अगले खुरों की चमक से हवा भी जैसे हिल गई। नाना उसकी रास न पकड़ सका। परन्तु कूद कर पीछा किया और पुकारा, 'पकड़ लेना।'

नानी ने आगे आकर घोड़े को रोक लिया फिर उसे तनिक प्यार से थपथपाती हुई बोली, 'अधिक डरने का काम नहीं है। चूहे!'

चूहे! चूहे से कई गुना बड़ा, फिर भी नानी के पीछे पीछे दरवाजे तक आया। इजेनिया ने बच्चों को घर के बाहर निकाला। फिर उसने नाना से कहा, 'हमें अलेक्सी कहीं न मिला।'

नाना की आज्ञा हुई कि वह हट जाये परन्तु मैं तो इसीलिये सीढ़ी के नीचे छिप गया था कि इजेनिया मुझे न पा सके। अब तक छत जलकर गिर चुकी थी और कोनों का अस्तित्व आकाश के नीचे अकेले खड़ा था। तभी घर के भीतर धड़ाका हुआ और तेजी से आग की लपटें चारों ओर दौड़ गईं। लोग आग पर बर्फ डालते ही रहे। आग के कारण गरमी में भी एक उबाल आ गया था। एक अजीब दुर्गन्धपूर्ण धुआँ चारों ओर फैल गया कि प्रत्येक व्यक्ति की आँखों में पानी आ गया। मैं सीढ़ी के नीचे से निकला तो नानी के रास्ते में आ पड़ा। देखते ही उसने कहा, 'भाग, भाग नहीं तो मर जाएगा।'

ठीक उसी समय पीतल का चमकदार टोपा पहने तेज घोड़े पर सवार एक सिपाही ने आकर अपने चाबुक को सड़क पर डरवाते हुये कहा, 'हटो, सब कोई।'

इसके बाद एक हल्का सा विरोध सबों के बीच उठा। तभी घोड़े की टाप के पास से मुझे खींच कर नानी ने कहा, 'मैंने कहा न कि भाग जा।'

यह समय अवज्ञा का नहीं था। वहाँ से हट कर मैं रसोई घर की ओर बढ़ा परन्तु अब तक मेरी दृष्टि के सामने केवल भीड़ ही भीड़ थी और वालों की टोपियों के बीच ऊँची ऊँची पीतल की टोपियां दिखाई पड़ रही थीं। आग पर काबू पा लिया गया था, आग बुझ भी रही थी। सिपाहियों ने आग बुझने पर भीड़ का तितर बितर कर दिया और नानी रसोई घर में आई।

'यह कौन है! अरे तू है। बहुत डरा है? परन्तु अब सब ठीक हो गया। अब डरने की जरूरत नहीं।'

जब वह मेरे सामने बैठ गई तो मुझे ज्ञात हुआ कि वह कांप रही है। मुझे हर ओर अंधेरा इस समय अच्छा लग रहा था।

नाना ने दरवाजे पर से पुकारा, 'भीतर हो?'

'हाँ।' नानी ने उत्तर दिया।

'क्या तुम जल गईं?'

'थोड़ा सा पर अधिक नहीं।'

आगे बढ़ कर नाना ने दियासलाई जलाई जिसके प्रकाश में उसका कालिख से भरा हुआ चेहरा भी चमक उठा। फिर उसने मोमबत्ती जलाई और आकर नानी के पास बैठ गया।

'सब से अच्छा काम होगा कि अब नहा डाला जाए।' नानी ने कहा जो खुद भी कालिख में डूबी थी, तथा उसके शरीर से धुएँ की बदबू आ रही थी।

'कभी कभी खुदा इसे भी सुबुद्धि दे देता है।' उसकी बाहों को थपथपा कर नाना ने कहा, 'परन्तु कुछ क्षणों के ही लिये।'

नानी ने मुस्कुराकर कुछ कहना शुरू किया परन्तु बीच में ही नाना ने रोककर कहा,

'ग्रेगरी से पिण्ड छुड़ाना ही पड़ेगा। यह सब खेल उसकी ही लापरवाही से हुआ है। उसके काम करने के दिन अब समाप्त हो गए हैं। हां, तुम उस मूर्ख जैक के पास जाओ जो सीढ़ी पर बैठा चीख रहा है।'

नानी उठी और चली गई। तब बिना मुझे देखे ही धीमी आवाज में नाना ने कहा, 'तुमने शुरू से आग लगते देखा, क्यों? तुमने देखा कि नानी ने कथा क्या किया। वह बूढ़ी है और बेकार! परन्तु तुम्हें समझना चाहिये.......अरे तू?'

थोड़ी देर तक वह झुका रहा, कुछ कहा नहीं। मोमबत्ती का जला हुआ भाग काट दिया और उठ खड़ा हुआ।

क्या तू बहुत डर गया था?'

'नहीं'

'ठीक है। डरने की कोई बात ही नहीं थी।'

फिर एकाएक उसने अपनी कमीज उतार डाली और नहाने का उपक्रम करने लगा। 'आग लगाना कितनी बड़ी बदमाशी है। जिसने आग लगाई हो उसे चौराहे पर बेंत लगनी चाहिए। या तो वह मूर्ख होगा या चोर! सजा पाने पर ही आग लगना बन्द होगा। पर तू यहाँ क्यों भटक रहा है?'

उस रात मुझे नींद न आई। मैं ज्योंही बिस्तर पर लेटा कि एक अमानुषिक आवाज मेरे खाट के नीचे से आती सी सुनाई पड़ी। मैं फिर भाग कर रसोईघर में गया। नाना उस [illegible] और कमरे के बीच में खड़ा था। कमीज वह नहीं पहने

था। हाथ में एक मोमबत्ती लिए था जो रह रह कर काँप उठती थी। वह लगातार अपना पाँव तो हिला रहा था परन्तु उस स्थान से हटता न था। उसने पुकारा, 'जैक, यह क्या है?'

मैं पुनः कूद कर भट्टी पर, अपने छिपने के स्थान पर पहुँच गया। घर में फिर एक हँगामा उठ खड़ा हुआ। छत और दीवारों से एक अजीब भयानक मौत की सी आवाज सतत बढ़ती आ रही थी। नाना और मामा जैक बिना कुछ समझे बूझे इधर उधर भाग रहे थे, परन्तु नानी सबों को आज्ञा दे रही थीं। ग्रेगरी आवाज कर रहा था, साथ ही चूल्हा जलाकर वह लोहे की केटली में गर्म पानी भी तैयार कर रहा था। वह अपना सिर इस प्रकार बार बार ऊँचा करता व गिराता कि लगता जैसे अफ़ग़ानिस्तान का ऊँट हो।

'चूल्हे में आग जलती रहे।' नानी ने आज्ञा दी। ग्रेगरी उछल कर भट्टी पर चढ़ा और मेरा पाँव कुचल कर चौंक पड़ा 'यहाँ कौन है?' फिर मुझे देख कर चीख पड़ा, 'तू सदा ही यहीं आ मरता है। मैं डर गया था।'

'क्या हुआ है?'

'तेरी नातालिया भाभी को बच्चा हुआ है।' नीचे कूदते हुए उसने बताया।

मुझे याद आया मेरी माँ इस प्रकार नहीं चिल्लाई थी जब उसे बच्चा हुआ था।

केतली को आग पर चढ़ा कर ग्रेगरी फिर चढ़ आया। अपने जेब से एक पाइप निकाल कर उसने मुझे दिखाया। 'यह मेरी आँख का इलाज है। नानी कहती थी कि मुझे सुंघनी लेनी चाहिए परन्तु मैं सोचता हूं कि धूम्रपान से ही ठीक होगा।'

भट्टी के किनारे पाँव मोड़ कर उसने नीचे झाँक कर आग देखी। उसके चेहरे पर कालिख की पर्त जम गई थी। उसकी फटी कमीज से मैं उसकी देह देख सकता था। उसके चश्में का एक शीशा टूट गया था और खाली फ्रेम में से झांकती हुई उसकी आंख इतनी लाल थी जैसे घाव हो।

अपने पाइप में सूखी तमाखू भरते हुए एक शराबी की तरह उसने कहा, 'मुझे अच्छी तरह मालूम है कि तेरी नानी बेचारी जले हुए हाथों के लिए कुछ न कर सकेगी। अपनी मामी का कराहना सुन रहे हो न! उसके उस कष्ट के बारे में सभी भूल गए हैं। ज्योंही आग लगी कि उसके मूर्छा आ गई। उस पर से डर। तुम नहीं जानते कि बच्चे को जन्म देने में कितना कष्ट होता है। फिर भी सभी उससे घृणा करते हैं। परन्तु तुम मेरी बात मानना। हर स्त्री का आदर करना चाहिए। औरतें माँ होती हैं।'

इस बात को मैं चुप चाप समझने की कोशिश कर रहा था कि दरवाजा खुला। शराब के नशे में चीखता हुआ मामा माइक आया। 'उसके लिए स्वर्ग का दरवाजा खुल रहा है। उसे छोड़ दो........मैं उसे एक बार देखना चाहता हूं।'

जमीन पर बैठा वह अपना पाँव पटक रहा था।

अब तक भट्ठी बुरी तरह गरम हो गयी थी। मैं नीचे उतरा और मामा माइक ने मेरे पाँव पकड़ लिये जिससे मैं पीठ के बल गिर पड़ा, मुझे चोट भी लगी।

'मूर्ख!' मैंने कह दिया।

उसने चीखा लिया, 'मैं तेरी हड्डियाँ तोड़ डालूँगा।'

[illegible] मैं उधर गया। जहाँ मूर्तियाँ रखी थीं। जिसके सामने नाना प्रार्थना कर रहा था। मेरे धक्के से वह

एक ओर को हो गया फिर चीखा ।' 'अरे तुझे क्या हुआ ?'

मैं सब बता देता । मेरे सिर व देह में दर्द हो रहा था । परन्तु मैंने इसलिए कुछ नहीं कहा कि यह सब जो रहा था उससे मैं आश्चर्यचकित था । वहाँ जितनी कुर्सियां थीं सभी पर कोई न कोई अवश्य था । कुछ पादरी, कुछ फौजी कपड़े पहने लोग । वे ऐसे बैठे थे जैसे काठ के या जमे हुये लोग हों । वे शायद किसी बात का इन्तजार कर रहे थे । वहाँ केवल पास से पानी के गिरने की आवाज आ रही थी । दरवाजे के पास बिल्कुल सीधा होकर मामा बैक खड़ा था, अपना हाथ पीछे बाँधे, गम्भीर मुद्रा में । नाना ने उससे कहा, 'इस छोकड़े को ले जा कर सुला दो ।'

मामा ने मुझे वहाँ से चलने का इशारा किया और मेरे कमरे तक साथ गया । जब मैं ओढ़ कर लेटा तो उसने धीरे से कहा, 'तेरी नातालिया मामी मर गई है ।'

मुझे कोई आश्चर्य न हुआ । इधर कई दिनों से मैंने उसे खाने के समय देखा भी नहीं था ।

'नानी कहां है ?'

जरा खींच कर उसने कहा, 'नीचे ।' और कमरे से चला गया ।

मैं भयभीत सा बिछौने पर पड़ा रहा । मैं खिड़की के बाहर शून्य में घूर रहा था । डर कर मैंने अपना चेहरा ढक लिया और एक नजर फर्श पर गड़ाए रहा कि कोई आ तो नहीं रहा है ? मुझे पता नहीं क्यों सीगन के मृत्यु की बात याद आ रही थी ।

मैं अपने चेहरे व कलेजे पर सूजन का अनुभव कर रहा था। इस घर में जो कुछ भी हुआ था, सभी स्मृतियां मेरी मानसिक आंखों के सम्मुख स्टेज के जुलूस की तरह आ रही थीं।

सभी नानी कमरे में आईं, दरवाजा बन्द किया और बच्चों की तरह मूर्ति के सामने खड़ी होकर रोने लगी, 'मेरे हाथ, जल गए हैं, बुरी तरह।'

पांच

एक के बाद दूसरी ऐसी ही घटनाएँ घटती गईं। एक शाम को चा समाप्त होने के बाद जब नाना मुझे प्रार्थना की एक किताब पढ़ा रहा था और नानी तश्तरियाँ साफ कर रही थी तभी मामा जैक तेजी से भीतर आया। अपना हाथ उठाकर टोपी उड़ाता हुआ वह चीख पड़ा, 'माइक लड़ने पर उतारू हुआ है। हम लोग साथ साथ खाना खा रहे थे तभी उसने बकवास शुरू की। उसने तश्तरियां फोड़ डालीं। खिड़की तोड़ी। मुझे और ग्रेगरी को गाली दी। और अब यहाँ तुमसे लड़ने आ रहा है। मैं उसे अब मार डालूँगा!'

धीरे से नाना उठा। उसका चेहरा कठोर होकर क्रोधित हो गया। 'सुना?' नानी से उसने पूछा, 'तुम्हारा ही बेटा अपने बाप को मारने आ रहा है। लेकिन अब ऐसा ही वक्त आ गया है।'

अपने कंधों को कड़ा करके वह दरवाजे पर गया और जैक से कहा, 'मैं जानता हूँ कि वारवरा के दहेज को हड़पने के लिए यह सब हो रहा है।' नाना मामा के ऊपर [illegible] हंस पड़ा। मामा जैक ने कहा, 'मैं? मैं क्यों चाहूँगा?'

'अरे तू——मैं तुझे खूब जानता हूँ।'

नानी ने जल्दी जल्दी परन्तु खामोशी से तश्तरियाँ एक ओर सरका दीं।

बनावटी हँसी के बीच नाना ने मामा जैक से कहा, 'बहुत ठीक, मेरे बेटे। तुम्हें शुक्रिया! अरे सुनो, इसे चाहे तो एक लोहे का मोटा छड़ या कोई और चीज दे दो, जिससे जैक जब तुम्हारा भाई यहाँ आवे, तो अपने बाप की आखों के सामने ही उसकी हत्या कर देना।'

जेबों में हाथ डाल कर वह एक ओर हो गया और बोला, 'अच्छी बात है। अगर तुम मुझ पर यकीन न करो तो......।'

'तुम पर यकीन!' नाना ने चिढ़ कर कहा 'तुमसे अच्छे तो जानवर, एक चूहा भी। मैं तेरी चाल जानता हूँ। तूने उसे शराब पिलाकर इस हालत में पहुँचाया होगा। फिर भी क्यों रुकता है। मुझे मार डाल, मुझे या उसे, किसी एक को।'

नानी ने धीरे से मुझसे कहा, 'भागकर ऊपर जा और खिड़की से देख और ज्योंही माइक दिखाई पड़े आकर मुझे कहना। जल्दी जा!'

मैं भाग कर गया और खिड़की से झाँकने लगा। यद्यपि इतनी भूल थी कि कुछ अनिष्ट न किया। सड़क पर इस समय बहुत अधिक लोग न थे। काफी दूरी पर एक मकान के पीछे से मामा माइक आता दिखाई दिया। वह अपने हैट से अपना कान ढँकना चाहता था परन्तु हैट बार बार फिसल पड़ती थी। वह भूरी वर्दी और धूल भरे जूते पहने था। उसका एक हाथ उसके पाजामे के जेब में था, दूसरा दाढ़ी पर। उसका चेहरा मैं साफ साफ न देख सका परन्तु ऐसा लगता था जैसे वह यही कल्पना कर रहा हो कि आते ही वह घर भर को मुट्ठी में दबोच

लेगा। मुझे दौड़कर खबर देना चाहिए था, परन्तु मैं खड़ा देखता रहा, मामा धूल उड़ाता सड़क पार कर रहा था, फिर आकर वह भट्ठी (शराब खाना) के दरवाजे भड़भड़ाने लगा। तब मैं भागा और नाना के कमरे का दरवाजा भड़भड़ाया।

'कौन है'? वह अजीब आवाज में बोला और जब विश्वास हो गया कि मेरे सिवा कोई नहीं तब दरवाजा खोला, 'अरे तू है, बोल क्या बात है ?'

'वह भट्ठी में गया।'
'अच्छा तो साथ चल।'
'मुझे वहाँ डर लगेगा।'
'चल चल !'

मैं पुनः खिड़की पर पहुँचा । रात बढ़ रही थी। धूल घनी होकर अंधेरा बढ़ा रही थी। आस पास के घरों से पीला धुआँ आ रहा था। पास के घरों से थोड़ी संगीत की भी ध्वनि आरही थी। भट्ठी के भीतर से भी गाने की आवाज आ रही थी। जब जब भट्ठी का दरवाज खुलता था गाने की एक कड़ी बाहर आ जाती थी। और जब दरवाजा बन्द हो जाता तो लगता कि गाने की कड़ी को बीच में ही किसी ने कुल्हाड़ी मार दिया है। यह गाना निश्चित रूप से एक भिखारी निकीतुस्का का था।

मेरी नानी निकीतुस्का से चिढ़ती थी। उसका गाना सुनकर कुढ़ कर कहती, 'वाह क्या गाना है ! हजारों गवैयों में एक !'

मुझे आलस आने लगी। मैं सोचने लगा मेरा पिता कैसा व्यक्ति था कि मेरे मामा और नाना उसे पसन्द नहीं करते थे जब कि नानी, येगर्दी और इजेनिया उसका आदर से नाम लेती हैं। मेरी माँ कहाँ है ? मैं आजकल माँ के विषय में बहुत अधिक

सोचा करता था। वह मेरे लिए नानी की कहानियों की नायिका की तरह हुई जा रही थी। उसने उसे घर में परिवार के साथ रहने से इन्कार कर दिया था। मैं कल्पना करता कि वह डाकुओं के साथ रहती होगी जो अमीरों का धन छीन कर गरीबों में बांट देते थे। याने किसी गुफा में रॉबिनहुड के साथियों के साथ रहती होगी।

मैं दिवास्वप्न देख रहा था। तभी जैसे मैं चौंक पड़ा। नीचे आंगन व बरामदे में शोर हो रहा था मैंने देखा कि नाना मामा जैक और मेजियन—उस भट्टी (शराबखाने) का मालिक मामा माइक को ढकेलते हुए ला रहे थे। माइक उनसे उलझ रहा था और बदले में लात घूँसे पाता था।

थोड़ी देर बाद ! सारी गली तमाशबीनों से भर गई और हर एक खिड़कियों से सिर निकल आए। मुझे तो एक कहानी का मजा आ रहा था। फिर अचानक जाने क्या हुआ कि सारा शोर खो गया और लोग तितर बितर हो गए।

मैंने देखा कि दरवाजे पर निर्जीव सी नानी झुकी हुई बैठी थी। मैं उसके पास गया और उसके गुलगुले गालों को हल्के से थपथपाया परन्तु ऐसा लगा जैसे मेरे स्पर्श का उसे कुछ अनुभव न हुआ और वह केवल एक बात ही दुहराती रही, 'ओ खुदा ! क्या हमारे लिए तुम्हारे यहां तनिक भी दया नहीं बची है। रहम करो !'

पौलवार्ड स्ट्रीट के इस घर में नाना को आए अभी एक साल हो हुए थे। पिछले वसन्त से इस वसन्त तक परन्तु इस छोटे से काल में ही यह परिवार बहुत अधिक बदनाम हो गया था। मुश्किल से ही कोई ऐसा रविवार होता था जब पड़ोस के

बच्चे शोर मचा कर हमारे दरवाजे पर न नाचते होते और कहते, 'काशिरिनों के यहां फिर कलह हो रही है।'

कभी कभी शाम को मामा माइक का आगमन बहुत बुरा होता था जब वह हम सबों को बुरी तरह डरा देता था। कभी कभी तो वह अपने साथ अपने दो या तीन साथियों को जो बहुत बदसूरत दिखते कुनाविन वाली दूकान से लाता। वे खूब पियक्कड़ होते। एक दिन तो उन्होंने स्नान घर की सभी तोड़ी जाने वाली चीजें तोड़ डालीं। स्टूल, बेन्च, केतली, चूल्हे, और दरवाजे भी तोड़ी।

क्रोध से भरा हुआ परन्तु अपने को रोके हुए नाना खिड़की पर खड़ा अपनी सम्पत्ति का यों नाश होता देखता रहा जब कि नानी चुपचाप बगीचे की ओर जाकर पुकारती, 'ओफ, माइक, तुझे क्या हो गया है?'

मैं केवल नानी के पीछे पीछे दौड़ता। क्योंकि मैं अकेला न होता, मुझे हर समय डर लगा करता। मैं नाना के कमरे में भी चला जाता और फलस्वरूप वह मुझे कोसता और बाहर निकाल देता। तब मैं खिड़की पर चढ़कर बागीचे में झाँकता ताकि नानी को देख लूं। फिर मैं उसे पुकार कर बुलाता कहीं वे सब उसे मार न डालें। वे तो न आतीं परन्तु मेरी आवाज सुनकर मेरा शराबी मामा मेरी मां को लक्ष कर के गालियाँ बकने लगता।

ऐसा ही एक शाम को जब नाना बीमार था और तौलिए से भीगा व लिपटा अपना सिर तकिए पर रगड़ कर बोला, 'क्या इसी सब पाप के लिए मैं जीवित हूं। अगर बहुत शर्म की बात न होती तो मैं इन दुष्टों को अवश्य ही पुलिस के हवाले करके कल अदालत में पेश कराता। कितने लज्जा की बात है—कभी किसी बाप ने अपने बेटे को गिरफ्तार कराया है? इसीलिए

चुपचाप पड़े रहने के सिवा कुछ नहीं किया जा सकता !'

लेकिन अचानक उछल कर वह खिड़की पर आगया। नानी जो उसकी सेवा में थी उसे खींच कर पूछा, 'कहाँ जा रहे हो ?'

'मुझे एक रोशनी दे।' तेज साँस लेकर उसने कहा।

जब नानी ने मोमबत्ती जला दी तो नाना ने उसे यों पकड़ा जैसे बन्दूक हो और चीख कर पुकार उठा, 'अरे ओ माइक, लुटेरा, पागल कुत्ता !'

तभी एक ईंट का टुकड़ा ऊपर की खिड़की से आकर नानी के पास मेज पर गिरा।

'तेरी आँख फूट गई है क्या, निशाना खाली गया।' क्रूर हँसी हँस कर नाना ने कहा।

नानी ने आगे बढ़कर बच्चे की तरह नाना को उठा लिया और लाकर खाट पर लिटाया। और बड़बड़ाई, 'तुम्हें क्या हो गया है ? तुम क्या सोच रहे हो ? खुदा क्षमा करे ! उसने अब कुछ किया तो उसे साइबेरिया ही मिलेगा। परन्तु वह तो इतना पागल हो गया है कि शायद उसे साइबेरिया के माने ही नहीं मालूम।'

अपना पाँव पटक कर टूटती सी आवाज में नाना ने कहा, 'उसे मुझे मार डालने दो !'

नीचे की दीवाल पर प्रहार जारी था। मैंने दौड़ कर मेज पर पड़ी ईंट को उठाया और खिड़की की ओर बढ़ा कि नाना ने रोक लिया और छीन कर ईंट एक कोने में फेंक दी और कहा, 'तू भी बदमाश है।'

दूसरी बार मेरा मामा पूरी तैयारी के साथ दल बल सहित आया और दरवाजे पर शोर करने लगा। नाना भी भीतर बैठा था। उसके साथ ही पड़ोसी और शराबखाने के मालिक

की पत्नी भी थी। उनके पीछे नाना कह रही थी, 'मुझे जाने दो। केवल दो बातें कर लेने दो।

शिकारी की तरह एक पांव आगे बढ़ाकर नाना खड़ा था उसने नानी का धक्का दे दिया। मैं सीढ़ी के ऊपर से टंगी हुई लालटेन की धीमी रोशनी में उन चारों के भयानक चेहरे देख रहा था।

मामा ने अपना काम जारी रखा।

दरवाजे के पास दीवार में एक छोटी सी खिड़की थी जिसमें आदमी मुश्किल से सिर भी न निकाल पाता। माइक मामा ने इसे तोड़ डाला था और अपनी टूटी अवस्था में वह एक काली आंख की तरह लगती थी। नानी ने दौड़ कर अपना सिर उससे बाहर निकाला और चीखी,

'माइक भाग जा। खुदा के लिये भाग जा। ये सब तेरे टुकड़े कर देंगे। भाग जा।'

उसने उसपर वार किया। कोई चौड़ी वस्तु उसके सिर पर गिरती दिखाई पड़ी। चोट से नानी गिर पड़ी परन्तु तब भी वह पुकारती रही, 'माइक, माइक' भाग जा।'

'तू कहाँ है।' नाना घबड़ाहट में पुकार उठा।

दरवाजा टूट गया था। दूसरे ही क्षण उस अन्धकार से नाना कूदकर आ गया परन्तु फौरन ही वह गिरा दिया गया।

उस दूसरी औरत ने उठाकर नानी को नाना के कमरे में पहुँचाया और नाना भी पीछे पीछे आया।

बहुत दुःख से झुक कर नाना ने पूछा, 'कोई हड्डी टूटी है?'

'लगता है कि टूटी होगी ।' बिना आँखें खोले ही उसने कहा और पूछा, 'पर तुम ने उसे क्या किया, उसे......?'

'होश में बातें करो ।' क्रोध से चूर नाना ने कहा, 'क्या मैं कोई जङ्गली जानवर हूं । उसे बाँध रखा है और वह शांत है । यह गोकि बुरा है पर उपद्रव किसने शुरू किया ?'

नानी कराही ।

मैंने हड्डी बैठाने वालों के पास आदमी भेज दिया है ।' नाना ने कहा, 'परन्तु ये सब मुझे समाप्त करने पर ही लगे हैं ।'

'ओह, उन्हें दे दो जो वे चाहते हैं ।'

'लेकिन बारबरा का क्या होगा ?'

फिर एक लम्बी बहस हुई । नानी का ढङ्ग साफ और दयालु था, नाना का तेज और क्रुद्ध ।

तभी एक बूढ़ी औरत आई जिसके ओंठ मछली के मुंह की तरह थे । मैं उसकी आंखें न देख सका । उसके पाँव की ध्वनि भी सुनाई पड़ती थी । उसके हाथ में कुछ था । मुझे लगा कि यह नानी की मौत लाई है ।

उत्तेजना से भर कर मैं उसके पास गया और चिल्लाया —'भागो' नाना ने मुझे घूरकर देखा और मुझे ऊपर के कोठे में ले गया ।

छः

वसन्त में मेरे मामाओं ने अपनी अलग दूकानें खोल लीं। जैक ने शहर में और माइक ने नदी किनारे। जब कि नाना ने उसी गली में एक अच्छा सा मकान खरीदा। नीचे का भाग उसका भट्ठीखाने के रूप में इस्तेमाल किया जाता था।। ऊपरी हिस्से में कई कमरे थे।

नाना काफी खुश था। एक दिन टहलते समय मुझसे कहा, 'तुझे मैं शीघ्र ही पढ़ना सिखाऊँगा।'

बिल्कुल ऊपर वाला भाग नाना का था, जिसमें उसका सोने का कमरा था तथा वहाँ वह मिहमानों से मिलता था। हाँ नानी और मैं भी वहाँ आ जा सकते थे। उस कमरे की खिड़की से बाहर का दृश्य दिखाई पड़ता था। हर रविवार की शाम को शराब खाने से निकलने वाले शराबियों के चीखने चिल्लाने का दृश्य भी दिखाई पड़ता था। कभी कभी उन्हें कूड़े या बोरे की तरह बाहर ढकेल दिया जाता था। और फिर वे भट्ठी में पुनः जाने की निरर्थक कोशिश करते थे। यह सब मुझे बहुत दिलचस्प मालूम होता।

एक दिन सुबह नाना मामाओं की दूकान देखने गया ताकि उन्हें किसी कठिनाई में मदद कर सके। परन्तु रात को बहुत थका हुआ तथा असन्तुष्ट और क्रोध में वापस आया।

नानी ने अपने को व्यस्त रखा। कभी खाना पकाती रही, कभी सिलाई करती रही। एक तरह से वह सदा ही सिलाई करती रहती। वह अपनी नास की डिबिया से नास लेती और खुश होकर कहती,

'खुदा को धन्यवाद। अलेक्सी, देख आखिर हम लोग एक शांत जिन्दगी बिताने लग गए हैं! स्वर्ग की देवी को धन्यवाद। आखिर सब कुछ ठीक हो गया न।'

परन्तु मेरे और उसके शांत जीवन के अर्थ में अन्तर था। मैं सदा ही नानी के पीछे पीछे डोलता रहता। वह चाहे बगीचे में या आंगन में होती, मैं साथ होता मैं उसके साथ पड़ोसियों के यहाँ जाता जहाँ काम के नाम पर वह घन्टों बैठी रहती, तरह तरह की कहानियाँ सुनाती। मैं अनुभव करता जैसे उसमें नई खूबियाँ आगई हों। बचपन की इस याद के सिवा और कोई भी याद नहीं कि वह बूढ़ी औरत किस प्रकार हर समय दूसरों की मदद व आराम के लिये परिश्रम करती रहती।

'तू डाइन है।' एक बार मैंने कहा था।

'तेरे खोपड़े में अब दूसरी बात कैसे आती है।' कह कर वह हँसी फिर सोच में पड़ गई, 'क्या, मैं डाइन? न मैं पढ़ना लिखना जानती। न नाना ही जानता है। मेरी संतानों में भी कोई पढ़ा लिखा नहीं है।'

तभी मुझे उसके जीवन का दूसरा पहलू देखने को मिला। 'तुझे मालूम है न कि मैं भी तेरी तरह ही अनाथ थी। मेरी

माँ गरीब खेतिहर स्त्री थी और पंगु थी। जब वह छोटी थी तभी एक आदमी ने उसे बहकाना चाहा। तब एक रात को वह खिड़की से कूद पड़ी और इस बुरी तरह घायल हुई कि उसकी बहुत सी हड्डियों के साथ उसका बायाँ हाथ बुरी तरह भुरकुस हो गया। दायें हाथ से वह काम करती थी। जब वह पङ्गु हो गई तो उसके मालिक ने उसे निकाल दिया और किसी तरह भी वह अपने रोटी भर का प्रबन्ध न कर सकी। अन्त में उसने भीख मांग-मांग कर किसी तरह हम लोगों को जिन्दा रखा। परन्तु पुराने जमाने के लोग अच्छे और खुश-हाल तथा दयालु होते थे।

'हम लोग कुछ दिनों राह में भी रहे। माँ और मैं। बर-सात और जाड़ों में भी हम लोग भागते। सचमुच गरमी और बरसात में धरती पर चलना कितना अच्छा लगता था। जमीन पर बिछी घास तो जैसे मखमल हो। और क्यारियों में तो यों खुशनुमें फूल खिले होते कि देख कर कोई भी खुशी से नाच उठे। उस समय मेरी माँ अपनी नीली आंखें आधी मूंद कर आकाश की ओर सिर उठाकर करुण शब्दों में खुदा को दुहाई देती। वह कितनी प्यारी थी! उसकी आवाज कितनी मधुर थी। उस समय लगता सारा वातावरण खामोश होकर उसे सुन रहा हो। उस समय भीख मांगना भी अच्छा लगता था। परन्तु जब मैं दस साल की हुई तो मेरी मां को मुझे लेकर भीख मांगने जाते लाज लगती, क्योंकि दूसरे लोग इसे दूसरी निगाह से देखते। इससे माताजी ने अलग रहने का प्रबन्ध कर लिया और वह अकेली ही मुसलमानी दरवाजे जाती और मैं घर में रह कर फीते बनाना सीखती। इतवार और छुट्टियों के दिन वह गिरजा की सीढ़ियों पर भी खड़ी हो जाती। मैं बहुत चाहती कि मैं अपनी मां की कुछ भी सहायता कर पाती परन्तु

मैं जब कुछ न कर पाती तो केवल रो लेती। फिर भी मैं लगी ही रही और दो वर्षों में मैंने काफी अच्छा काम सीख लिया और जल्दी ही शहर भर में मशहूर हो गई। और जिस किसी को भी फीता या बेलबूटे बनवाने होते मेरे ही पास आकर कहता, 'अकुलीना अपनी सलाइयां उठाओ।'

'उससे मुझे खुशी होती। मेरे लिए वे बड़ी खुशीके दिन थे। परन्तु इन सब का श्रेय मेरी मां को था मुझे नहीं। यद्यपि उसके हाथ बेकार थे और वह कुछ न कर पाती परन्तु उसकी शिक्षा ने सब किया। एक अच्छा उस्ताद दस काम करने वालों से अच्छा है।'

'अपनी शान में मैंने मां से कहा, मां अब तू भीख मांगना बंद कर दे क्योंकि जितना मैं कमा लेती हूं वह दोनों के लिए काफी है।'

'बेवकूफ,' उसने कहा, 'जो भी तू कमाती है वह तेरे दहेज के लिए है।'

'और फिर थोड़े दिन बाद ही तेरा नाना आया। क्या दिल-चस्प छोकड़ा था। केवल बाइस साल का परन्तु बहुत चतुर नाविक। इसकी मां मुझ पर नजर गड़ाए थी। वह मुझे खूब मिहनती समझती थी परन्तु एक भिखारिन की बेटी होने के कारण वह मुझे अच्छी परिश्रमी पत्नी बनाना चाहती थी। कितनी धूर्त वह औरत थी! परन्तु छोड़ो इस बात को...। मृतक के लिए उसकी बुराई न याद करनी चाहिए। खुदा सब देखता सुनता है।'

वह कह कर एक कल्पनामय अट्टहास कर उठी और हँसने से उसके नथुने पूरी तरह फूल उठे। परन्तु उसकी उस समय की चमकदार आंखों का उसकी बातों से अधिक असर हम पर पड़ा।

जहां तक मुझे याद है एक शाम को नानी के संग चा पीने मैं नाना के कमरे में गया। वह बीमार था। एक तौलिया उसके हाथ पर लिपटी थी और पसीने से वह तरबतर था। उसका बदन पीला पड़ गया था। उसे देखकर बहुत करुणा होती थी वह बहुत गंभीर था, वह बिल्कुल वैसा था जैसा वह सब समय नहीं होता था। उस समय उसकी दशा देख कर बड़ी दया आई जब उसने कहा, 'मुझे और थोड़ी चीनी क्यों नहीं देती?'

'मैंने शहद डाल दी है, इससे तुम्हें लाभ होगा।' नानी ने तनिक बड़ाई से कहा।

एक लम्बी सांस खींच कर एक बार में ही वह सारी चा पी गया और कहा, 'तुम देख लेना, इस बार मैं मर जाऊँगा।'

'यों नहीं कहना चाहिए।'

'ठीक है। पर देख लेना। अगर मैं मर जाऊँगा तब सब पता लगेगा।'

'ओह, तुम चुप न रहोगे?'

लेकिन वह एक मिनट से अधिक चुप न रह सका। अपने भद्दे ओंठों से वह लगातार कुछ बुदबुदाता रहा तथा अपनी उँगलियों से दाढ़ी उमेठता रहा। तभी जैसे उसे कोई पिन चुभ गई हो वह चौंक उठा और फिर वही कहने लगा जो भी उसके मन में था।

'जैक और माइक को फिर नई शादियाँ कर लेनी चाहिये। यह नई पत्नियां शायद उनके जीवन को नई दिशा दे सकें! क्या राय है?' कहकर उसने उन औरतों का नाम लेना शुरू किया जिसकी उसे याद आई।

लेकिन नानी चुपचाप चा पीती रही, और मैं शाम के लाल आकाश को देखता रहा। शायद किसी सुन्दर के

फलस्वरूप नाना ने मुझे बगीचे और आँगन में जाने से रोक रखा था। बाग की झाड़ियों में छिप कर खेलते बच्चों की आवाज मुझ तक आती रही। वे आवाजें मुझे अपनी ओर खींच रही थीं।

तभी नाना ने मुझे एक किताब दी और कहा, 'इधर आ धूर्त! इधर बैठ! इन अक्षरों को देख यह 'ऐज' है। दुहराओ 'ऐज, बुकी, वीदी'* वह क्या है?'

'बुकी'

'ठीक, और यह?'

'वीदी।'

'गलत, ऐज। ओ ये हैं, ग्लेगोल, दोबरो चेस्ट। यह क्या है?'

'ऐज।'

'ठीक और यह?'

'तुम्हें चुपचाप पड़े रहना चाहिये। तुम तो समझते हो।' नानी ने कहा।

'मुझे तंग मत करो। मुझे यह अच्छा लगता है, इसकी जरूरत है, आगे पढ़ो आलेक्सी!'

मेरे कन्धे पर अपना हाथ रखकर उसने अपनी उँगली से अक्षर बताए। प्याज और सिरके की जोरदार गन्ध उसके मुँह से आई और मैं परेशान हो गया। तब उसने मेरे कान के पास जोर से कहा,

'जेमलिया! लुदी!'

मैं सब समझ गया था। पर नाना का पढ़ाने का ढङ्ग अजीब था। उसके पसीने के साथ साथ मैं भी पसीने से तर

* रूसी भाषा

ो गया। और उससे भी जोर से बोलता गया जिसे देख कर वह आश्चर्यचकित था। उसे हँसी आ गई और हँसी के साथ भयङ्कर रूप में खाँसी। उसने किताब गिरा दी और नानी से कहा। 'देखो यह किस तरह बन गया है। अरे.....यह.....यह अज्ञाखान का पिल्ला!'

उसकी इस समय की हँसी देखकर मैं भी आनन्दित था और टेबिल के पास बैठी नानी भी मुस्कुरा रही थी। 'तुम दोनों ही पागल हो गये हो!'

नाना ने बड़ी कोमलता से कहा, 'मैं तो बीमार हूँ इसलिए चिढ़कर जोर से बोलता हूं। पर तुझे क्या हो गया है!' फिर नानी की ओर मुड़कर उसने कहा, 'नातालिया गलत कहती थी कि इसकी याददास्त कमजोर है।' फिर सिर डुलाकर कहता, 'इसकी याददास्त में कुछ नहीं हुआ है। खुदा का शुक्र है कि इसकी याददास्त दो घोड़ों की तरह तेज है।'

फिर उसने बड़े प्यार से मुझे बिस्तरे से हटाया, यह बड़ी सुखद स्मृति थी। 'इतना काफी है। अभी किताब ले जा और कल यदि सभी अक्षर सुना दोगे तब तुम्हें मैं पांच कोपेक दूंगा।'

जब मैं किताब लेने गया तो मुझे उसने अपने पास खींच लिया और कहा, 'तेरी मां तनिक भी तेरी फिकर नहीं करती।'

'तुम यह सब क्या कह रहे हो।' नानी ने टोका।

'हां मुझे नहीं कहना चाहिए परन्तु मेरा जी नहीं मानता। अरे लड़की भी क्या है!'

उसने मुझे ढकेला 'अच्छा भाग जा। और बाग तथा आंगन में भी जाया कर परन्तु गली में नहीं।'

ज्यों ही मैं बगीचे में गया कि गली के लड़कों ने मुझे ढेले मारने शुरू किए और बाद में गालियां भी दीं। परन्तु गालियों के माने मैं नहीं समझता था इसलिए मैंने भी ढेले चलाए।

मैं काफी तेजी से लिखना पढ़ना सीख रहा था। नाना मुझे बहुत प्यार करने लगा तथा बहुत समय हम पर खर्च करने लगा। अब तो कभी कभी मैं उसकी आज्ञा का उलंघन भी कर डालता परन्तु पहले जैसी मार न पड़ती। फिर भी मैं पिछली मारों के बारे में भूला न था।

एक दिन नाना ने बहुत प्यार से कहा, 'चतुर होना चाहिए। जो सीधे होते हैं वे मूर्ख होते हैं। सीधा जानवर भी भेड़ माना जाता है।'

शाम की चा के बाद का समय मेरे पढ़ने का था।

'नाना!'

'हाँ?'

'कहानी सुनाओ।'

'चल बदमाश पहले पढ़ाई खत्म कर ले।'

एक पुरानी आराम कुर्सी पर लेट कर आंखें छत में गड़ाए वह ऊपर देखता रहा और इसी समय उसने अपनी जवानी की कहानियां सुनाईं। बदमाशों ने उसके पिता की हत्या कर दी थी। वे बदमाश बालाखना में वहां के एक सेठ जेयेव को लूटने आए थे। उसके शोर करने पर वही पहला शिकार हुआ था। तलवार से उसकी सारी देह काट डाली गई थी।

'यह सब जब हुआ तब मैं बहुत छोटा था इसलिए कुछ भी याद नहीं। जिसकी मुझे याद है वह एक फ्रांसीसी था। तब मैं केवल बारह साल का था। बालाखना में तीन तरह के कैदी लाए गए—छोटे, दुबले पतले वे आदमी थे। कुछ तो इतने कमज़

कि भिखारियों से भी गए बीते थे और कुछ तो इस प्रकार अकड़ गए थे कि सीधे खड़े भी न हो पाते थे। गाँव वालों ने चाहा कि उन्हें मार डालें परन्तु उनके रक्षक सिपाहियों ने बचा लिया। फिर हम लोग उनसे काफी घुल मिल गए। वे काफी समझदार साबित हुए। परन्तु जो लोग निजनी से आए वे उन पर गुस्सा दिखाते उन्हें तंग करते। परन्तु कुछ थे जो अच्छी तरह बातें करते तथा रुपए भी देते।'

कहते हुए वह क्षणभर को रुका। आंखें बंद करके अपने बालों में उँगलियां चलाईं और कहना शुरू किया।, 'गलियों में जाड़े का साम्राज्य था। सभी झोंपड़ियां बर्फ से ढँक गई थीं। कभी कभी वे फ्रान्सीसी आते और हमारी खिड़की के नीचे से शीशे पर धक्का देते। बात यह थी कि जाड़े के कारण उनमें से कई मर गए थे। उनका देश गर्म देश था। दो को हम लोगों ने अपने यहाँ स्थान दिया। एक अफसर और दूसरा उसका अर्दली।

'वह अफसर लम्बा और दुबला था कि उसकी हड्डियाँ दिखती थीं। वह बहुत पियक्कड़ भी था और जब पी लेता तो गाने लगता। जब वह रूसीभाषा सीख गया तब उसने बताया— तुम्हारा देश सफेद नहीं—काला है, बुरा, अवश्य ही उसका उच्चारण ठीक न था परन्तु हम लोग समझ लेते थे। उसने जो भी कहा था किसी हद तक ठीक ही था। बोल्गा के उत्तर का भाग कोई स्वर्ग तो है नहीं और दक्षिण का भाग गर्म है। वहाँ कैसपियन सागर के पास लोगों ने बर्फ गिरती नहीं देखी। उन्हें बर्फ और जाड़े का नाम भी शायद न मालूम हो।'

इसके बाद वह निद्रा जैसी खामोशी में फिर खो गया। उस के किनारे सिकुड़ गए थे और उसकी आँखों की रोशनी कठोर हो गई थी।

'कुछ और सुनाओ' मैंने प्रार्थना की।

उसने शुरू किया, 'हाँ, हम लोग फ्रान्सीसी की बातें कर रहे थे। हम लोगों से बड़ा पापी कोई न होगा। कभी कभी वे माँ से आँटा खरीदते। उसे आदर से 'मैडम' कहते। माँ उनके बोरों में आँटा भर देती और वे उसे पाँच पूड *देते। मेरी माँ बहुत मजबूत थी। यानी जब मैं बीस वर्ष का हो गया तब भी वह मुझे बड़े मजे में उठा लेती थी। अफसर का अर्दली भी फीरोन को घोड़ों का बहुत शौक था। पहले तो यह फिक्र हुई कि उसे घोड़े छूने दिए जाँय या नहीं। परन्तु गाँव के लोग पुकारते—ऐ, भीरोन! और वह सिर झटकता कूदता आ जाता। उसके बाल बालू के रंग के तथा नाक लम्बी व ओंठ मोटे थे। वह घोड़ों की बीमारियों के सैकड़ों इलाज जानता था। वह निजनी में घोड़ा डाक्टर की तरह मशहूर होकर रहने लगा। परन्तु वह पागल हो गया और मर गया। बसन्त के शुरू में ही ज्ञात हो गया था कि अफसर अधिक न चलेगा और एक सुबह को जब वह खिड़की पर बैठा था उसका सिर झूल गया।

'इसी प्रकार वह मरा। मुझे बड़ा दुःख था—मैं उसके लिए रोया भी था। मुझसे वह बहुत घुला मिला था। अपनी भाषा में वह मुझे बहुत बातें बताता। मैं उन्हें समझता न था परन्तु उसकी सहृदयता ने मुझे मोह लिया था। मुझे उसने फ्रेंच पढ़ाना शुरू किया। परन्तु माँ को यह पसन्द न था। फलस्वरूप मुझे पादरी के यहाँ भेज दिया गया और वहाँ मुझे मार पड़ने लगी। बच्चे, उन दिनों हमारे साथ बहुत बुरा व्यवहार किया जाता था। उसकी आज तुम कल्पना नहीं कर सकते।'

* पूड—चालीस पौंड के बराबर।

अँधेरा बढ़ रहा था। परन्तु नाना की आँखों में बिल्ली की आंखों की चमक थी। अपने बारे में बातें करते समय वह बहुत घमण्ड की बातें करता। और बातों के बीच जब वह कहता।—'अब इसे कभी न भूलना।' तो बड़ी ऊब मालूम होती।

कारण बहुत सी चीजें जिन्हें मैं याद न करना चाहता सो भी याद रखनी पड़ती। परन्तु उन सभी बातों का मेरे दिल पर पूरा प्रभाव रहता था।

उसकी कहानियाँ गप्प न होती—बल्कि बिल्कुल सच्चाई की बातें होती एक बार मैंने पूछा—'बताओ कौन अच्छे हैं—फ्रान्सीसी या रूसी ?' इस प्रश्न से जैसे वह ऊब गया था।

'मैं कैसे बताऊँ ? मैंने किसी फ्रान्सीसी को घर में नहीं देखा !'

'लेकिन रूसियों को तो देखा है ? वे कैसे हैं ?'

'कुछ बातों में अच्छे हैं। परन्तु बुद्धिमान कम लोग ही हैं। कुछ तो चूहों की तरह सीधे हैं। चाहे उन्हें जो सिखा दो।'

'क्या रूसी मजबूत भी होते हैं ?'

'हमारे बीच कुछ मजबूत लोग भी हैं। परन्तु मजबूत होने से अधिक चतुर होना आवश्यक है। यदि ताकत ही पर बात होती तो ये थोड़े ही हमारे मालिक होते।'

'इन फ्रांसीसियों ने हमसे युद्ध क्यों किया था ?'

'युद्ध तो बादशाह का काम है। हम लोग यह नहीं समझ सकते।'

जब मैंने पूछा कि नेपोलियन कैसा आदमी था तो नाना ने बड़े ढङ्ग से कहा, 'एक दुष्ट आदमी। वह सारी दुनिया को जीतने गया था। फिर उसने आदमियों के वर्गों को

खत्म करना चाहा। कोई बादशाह नहीं, सभी बराबर, एकही तरह की हुकूमत, एक ही धर्म। एक दूसरे में नाम के सिवा कोई अन्तर नहीं। बिल्कुल मूर्खता! हमारे शहर में भी नेपोलियन आया था। उसके बारे में मैं फिर कभी बताऊँगा।'

जब भी नाना क्षण भर को चुप होता तो मुझे यों घूर कर देखने लगता जैसे मुझे पहलीबार देख रहा हो। उसकी यह दृष्टि मुझे अच्छी न लगती। अक्सर जब इस तरह की बातें होती रहतीं तो नानी चुपचाप बिना किसी ध्वनि के आ जाती और हम लोग न देख पाते। फिर एकाएक वह कह बैठती,

'क्यों तुम्हें याद है जब हम लोगों ने मरोम की यात्रा की थी। वे दिन भी क्या थे!'

नाना भी आत्मविभोर हो जाता। रुक कर कहता, 'कौन वर्ष था सो तो ठीक नहीं कह सकता! परंतु इतना याद है कि हैजे की महामारी के पूर्व ही का साल था। हम लोग भी जङ्गलों में चले गये थे। वहाँ भी कैदी मिले थे।'

'हाँ ठीक है। हम सभी कितने डरे हुये थे।'

'ठीक है'।

मैंने पूछा कि जंगलों में कैदी क्यों छिपे थे?' नाना इस प्रश्न के लिए तैयार न था। उसने कहा,

'शायद वे जेल के काम नहीं करना चाहते थे जो उन्हें दिये जाते थे।'

'फिर वे पकड़े कैसे गए?'

'उसी तरह जैसे तुम [illegible] खेल खेलते हो। एक भागता था दूसरा पीछा करता था। जब वे पकड़े गये तो उन्हें कोड़ों की

मार पड़ी और माथे पर जलाकर निशान बनाया गया। ताकि सभी जान जायें कि वे कैदी हैं।'

'पर क्यों ?'

'यह कौन जाने ?'

'और याद है वह आग ?' नानी ने कहा।

'कौन सी आग ?' नाना ने पूछा।

फिर एक के बाद एक इस प्रकार वे अपने अतीत को याद करते रहे कि मैं सब भूल गया। उनकी बातों में प्लेग, हैजा, आगजनी, हत्या, मौत, लूटपाट, पागल साधू और जमींदारों की चर्चा थी। इसके बाद नाना ने बहुत भावुक होकर कहा था, 'हम लोगों ने कितना देखा, कितना देख रहे हैं।'

'फिर भी हमारा कोई बुरा जीवन न था। क्यों ?' नानी ने कहा, 'याद है न, वह बसन्त कितना अच्छा था जब वारवरा पैदा हुई थी।'

'वह' ४८ का साल था। जब पादरी आये थे।'

'हाँ फिर वह न दिखाई पड़ा।' नानी ने दुखी होकर कहा।

'बिल्कुल ठीक। उसके बाद से ही खुदा ने हम लोगों पर से अपना साया उठा लिया। देखो वारवरा......।'

'बस करो, आगे न कहो।' नानी ने कहा।

'बस के क्या माने ?' नाना फूट पड़ा। 'हमारे बच्चे अच्छे न हुये। उन्हें देखो। हमारी जवानी और ताकत, कहाँ है सब कुछ ? हम लोगों ने इन बच्चों के लिये क्या नहीं किया था ?' कह कर वह उठ बैठा और चारों ओर देख कर अपने ही मुँह पर एक घूँसा मारा और कहा 'इस सब की जिम्मेदार

तू है। केवल तू—चुड़ैल ! तू ने ही उन्हें बरबाद किया। सदा ही तू उनका पक्ष लेती रही है।' कह कर वह रो पड़ा और खुदा को सङ्केत करके बोला, 'खुदा क्या हमारा पाप हमें आराम न देगा ? नहीं तो क्यों .....?'

एक मिनट तक तो नानी चुप रही फिर पास आई। आकर उसने नाना को सांत्वना दी। 'तुम क्यों दुःखी होते हो ? यह सब खुदा का काम है। वह सब जानता है। क्या तुम समझते हो कि दूसरों के बच्चे बहुत अच्छे हैं। अपने चारों ओर देखो। सभी एक जैसे हैं—वही झड़प, कलह, वही सब जगह। हमीं लोग ऐसे नहीं हैं जिन्हें रो रो कर अपना पाप धोना है।'

ऐसे शब्दों से कभी कभी वह शान्त हो जाता। एक बार ऐसे ही जोश में नाना उछला और गिर पड़ा। इस पर नानी ने सम्हाला। पर उसे भी चोट आ गई। ओंठ दबा कर उसने कहा, 'मूर्ख,' और अपना ओंठ इस प्रकार भींचा कि खून गिर पड़ा। नाना से यह न देखा गया और दोनों घूँसे तान कर बोला, 'भाग यहाँ से नहीं तो मार डालूँगा।'

'बेवकूफ !' उसने फिर कहा और जाने लगी। नाना उसके पीछे दौड़ा परन्तु जल्दी से नानी कमरे के बाहर भागी और दरवाजे बन्द कर दिये। नाना दरवाजे तक आया और बोला, 'चुड़ैल !'

मैं भट्ठी पर बैठा काँप रहा था, आधा बेहोश मैं जान न पाया कि यह सब क्या हो रहा था। मेरे सामने उस ने नानी पर कभी हाथ भी न उठाया था। उसका यह

व्यवहार में न भूल सका। उसका लाल, क्रोध से भरा चेहरा, ओफ़ !

एकाएक वह कमरे के बीच में घुटनों के बल गिर पड़ा, झुका और जमीन पर उसने हाथ रख दिये। फिर कहा, 'ऐ खुदा,……'

चूल्हे पर से उतर कर मैं यों उँगलियों पर भागा जैसे बर्फ़ पर चल रहा होऊँ। ऊपर के कमरे में नानी अपने मुँह को दबाये खड़ी थी।

'क्या तुम्हें चोट आ गई है ?'

पहले तो उसने नल पर जाकर मुँह साफ किया फिर कहा, 'चिन्ता की बात नहीं। दाँत नहीं टूटा पर ओंठ कट गए हैं।'

'उसने ऐसा क्यों किया ?'

खिड़की की ओर देखकर उसने कहा, 'उसे गुस्सा आ ही गया। वह बहुत बूढ़ा हो गया है न। उसे अब कुछ अच्छा नहीं लगता। अच्छा तुम जाकर सो रहो। प्रार्थना करके यह सब भूल जाना।'

मैं अपने प्रश्न पर जिद करने लगा तो वह चिल्ला उठी, 'मैं तुमसे कुछ कह रही हूं ? फौरन जाकर सो रह।'

फिर वह खिड़की पर बैठ कर अपने ओंठ को रूमाल से दबाने लगी। मैं लगातार उसे देखता रहा। चौकोर खिड़की से दिखते नीले आकाश के तारों के बीच उसका काला सिर दिखता रहा। नीचे गली में खामोशी थी और कमरे में अंधेरा। जब मैं लेट गया तो वह आई मेरे सिर को थपथपाया और कहा, 'गहरी नींद सोना, प्यारे बच्चे !

मैं ज़रा नीचे उसके पास जा रही हूँ। तू डरना मत। सोना।'

मुझे चूमकर वह चली गई। मैं बहुत सी चिन्ताओं में पड़ा रहा। परन्तु मैं उस बड़े गर्म और आरामदेह बिछौने, पर न रह सका। उठकर खिड़की पर गया और ख़ामोश सूनी गली में घूरने लगा।

सात

मुझे यह जानते देर न लगी कि नाना और नानी के भग वान में अंतर है।

कभी कभी सुबह ही बिस्तरे पर बैठकर नानी अपने आश्चर्यजनक बालों में कंघी करती थी। अपने सिर को पीछे से पकड़कर वह टूटे दांतों वाली कंघी करती और मुझे जगाने को पुकारती जाती।

फिर जब बाल ठीक हो जाते तो वह प्रार्थना करती। प्रतिदिन वह नए नए शब्दों के प्रार्थना करती।

'पवित्र, माँ, स्वर्ग की मालकिन! खुदा की मां। आज के दिन मैं किसी का नुकसान न करूँ। अगर मैं कुछ कर भी डालूँ तो क्षमा करना।'

'जेसस क्राइस्ट, खुदा के बेटे। इस पापिन पर दया करना।'

यह प्रार्थनाएँ वह अपेक्षाकृत काफी जल्दी ही समाप्त करती; क्योंकि नाना नौकर न रखता और समय पर खाना न मिलने पर वह नाराज होता था। अक्सर हम लोग पहले ही उठ जाते थे

जब वह ऊपर आता। अगर वह नानी की प्रार्थना सुन लेता तो चा के समय कहता, 'अरे बेवकूफ, मैंने कितनी बार तुझे बताया है कि कैसे प्रार्थना करनी चाहिए। परन्तु तू अपनी बेवकूफी से बाज नहीं आती। खुदा भी तेरी बात न समझ पाता होगा।'

नानी बहुत विश्वास से कहती, 'जो कुछ हम नहीं कहते वह भी वह समझ लेता है। वह सभी चीजों पर अपनी नजर रखता है।'

'अरे......तू?' यह उसका अन्तिम उत्तर होता।

नानी की स्मृति में दिन भर खुदा उपस्थित रहता। यहां तक कि जानवरों से भी वह खुदा की चर्चा करती। उसका खुदा सब पर मेहरबानी रखता—आदमी, कुत्ते, मक्खियाँ, खेत की घास पर भी। पृथ्वी पर की हर चीज उसकी मेहरबानी पर थी।

शराबखाने के मालिक की पत्नी की सफेद बिल्ली, जिसके रोयें बादल की तरह तथा आँखें सुनहरी थीं, ने एक बार बगीचे में शिकार किया। नानी ने मृतप्राय चिड़िया को उठाया और बिल्ली को डांट कर कहा, 'डाइन तुझे खुदा का भी डर नहीं है?'

जब शराबखाने की मालकिन और नौकर चाकर हँसने लगे तो नानी ने क्रुद्धकर कहा, 'क्या समझते हो कि जानवरों को खुदा का ज्ञान नहीं होता। तुम सब निर्दयी हो। ये लोग तुमसे ज्यादा खुदा से परिचित हैं।'

उसी समय उधर से शारप निकला।

'क्यों इतनी नाखुशी......?'

उसके स्थान पर घोड़ा सिर हिलाता।

नाना से अधिक खुदा उसकी जीभ पर होते। उसका खुदा मेरे लिये अधिक आसान था। जब वह सदा हमारे

चारों ओर है तब झूठ नहीं बोलना चाहिये । मुझे शर्म लगती । और इसका यह असर हुआ कि मैं नानी से भी झूठ न बोल पाता । मैं समझता था कि इस खुदा से कुछ भी छिपा नहीं है इसलिये कोई बात छिपाने की भी कभी इच्छा न हुई ।

एक दिन मेरी नानी और शराबखाने की मालकिन से झगड़ा हो गया । पहले तो नानी ने झगड़ा बचाया पर उसने नानी पर एक गाजर फेंक दिया । 'तू बेवकूफ है, भली औरत !' नानी ने कहा और क्रोध को बचाती ही रही । परन्तु मुझे बहुत गुस्सा आया और मैं बदला लेने की सोचने लगा ।

मैं काफी समय तक सोचता रहा कि उस मोटी और लाल सिर वाली औरत से क्या बदला लिया जाय । उसकी बिल्ली की दुम काटी जाय या, कुत्ते को भगा दिया जाय, या मुर्गियों को मार डाला जाए । उसके पीपे खोलकर शराब बहा दी जाए । परन्तु कोई भी योजना मुझे पसन्द न आई । अन्त में मैंने बहुत अच्छा रास्ता चुना उससे बदला लेने का ।

वह विचार बहुत ताजा था । शराबखाने की मालकिन पर मैंने नजर रखी । ज्योंही वह दूकान में गई तो सीढ़ी का दरवाजा बन्द करके ताला लगा दिया फिर भागकर नानी के पास रसोई घर में आया और उसे शान से बताया । सुनते ही वह मुझे मारने को दौड़ी और कहा कि मैं खोज कर चाभी लाऊँ । अन्त में मैंने चाबी लाकर उसे दे दी परन्तु उसका यह अद्भुत व्यवहार समझ में न आया । कोने में खड़े होकर मैं सब देखता रहा कि किस प्रकार मेरे कैदी को नानी ने मुक्ति दी । फिर दोनों—नानी और मालकिन की [illegible] की हँसी भी सुनाई पड़ी ।

'तुम्हें इसके लिये इनाम मिलेगा।' शराबखाने की मालकिन ने मुझे घूँसा दिखाकर कहा। परन्तु इस समय उसके चेहरे पर हँसी थी।

'तूने यह क्या किया ?' मेरी गर्दन पकड़कर ले जाकर नानी ने पूछा।

'उसने तुमपर वह गाजर फेंकी थी।'

'तो यह सब तूने मेरे लिये किया है ? और अब मैं तेरे लिए क्या करूँगी ? मैं तुझे घोड़े वाले चाबुक से पीटूँगी। और चूल्हे के पास बैठाऊँगी। तुझे मालूम है अगर तेरे नाना से कह दूँ तो वह तेरी चमड़ी उधेड़ लेगा।'

उस दिन, दिन भर वह मुझसे न बोली। परन्तु रात को प्रार्थना के पूर्व उसने बहुत गम्भीर मुद्रा बनाकर कहा, 'बेटे, बड़ों के मामले में तू दखल न दिया कर। वे जो कुछ करते हैं उसका हिसाब खुदा के पास रहता है। तुझे बच्चों की तरह ही रहना चाहिये। समय आने पर खुदा तुझे सुझा देगा कि तुझे किस रास्ते जाकर क्या करना चाहिये। समझे ?' यह तेरे देखने की बात नहीं है कि कौन गलती कर रहा है। खुदा ही देखने वाला है। सजा देना भी उसी का कार्य है। हमारा नहीं।'

सांस लेने भर को ठहर कर, दाईं आँख दबा कर उसने कहा, 'अक्सर खुदा भी नहीं जानता कि किसकी कहां गलती है।'

मुझे आश्चर्य हुआ, 'खुदा कुछ नहीं जानता ?'

'हां वह स्वर्ग में बैठकर हमें रोता कलपता भी तो देखा करता है और कहता है,—मुझे बहुत दुःख है।'

यह कहते कहते वह खुद रो पड़ी और बिना आंसू सुखाये ही कोने में जाकर प्रार्थना करने लगी।

और तब से मैं उसके भगवान के और पास आ गया और मुझे लगा कि मैं उसे और अच्छी तरह समझने लग गया हूं।

पढ़ाई के समय नाना ने भी बताया था कि खुदा सब जानता है, सब देखता है और कष्ट के समय आदमियों की मदद करता है। परन्तु नाना की प्रार्थना दूसरे ढङ्ग की थी। उठकर थोड़ी देर बाद वह प्रार्थना करने जाता। वह अच्छी तरह मुँह धोता, कपड़े पहनता, इतमिनान से कंघी करता और दाढ़ी पर ब्रश फेरता और शीशे में कई बार मुँह देखता फिर टाई ठीक करता, तब कहीं जाकर प्रार्थना की याद आती। वह निष्प्रयोजन आँखों से हर ओर देखता, उसके हाथ बगल में सावधान सिपाही की तरह रहते और वह मुश्किल से एक मिनट झुका रहता। इस बीच वह कई बार अपना शरीर हिलाता डुलाता भी।

तब तक कमरे में नाश्ता की वस्तुओं की सुगन्धि भर जाती। नानी चीजें ले आती। सूरज बगीचे से खिड़की की राह झांकने लगता। पेड़ों पर पड़ी ओस मोतियों सी चमकने लगती।

मैं जानता था कि सुबह की प्रार्थनायें कितनी रटी रटाई होती थीं और मैं बहुधा धोखे से ही उस समय वहां जा जाता। उस समय मुझे कंपकंपी का अनुभव होता। जब नाना पूरी तरह समाप्त कर के मेज पर आकर बैठता तब मैं कहता, 'आज एक शब्द तुम भूल गये।'

'नहीं।' नाना कह तो देता परन्तु वह चिन्तित हो जाता।

'हाँ वहाँ तुम्हें कहना चाहिए था······"

'ठीक, ठीक!' कह कर वह शांत बैठ जाता। उसकी आँखों से साफ पता चलता कि वह कितना परेशान हो गया है और उसकी परेशानी में मुझे मजा आता।

एक बार नानी ने उससे कहा था, 'तुम्हारी प्रार्थना से खुदा अब तक ऊब गया होगा। बस एक ही बात को बार बार दुहराते हो।'

'सो कैसे?'

'जो भी सुनती हूं उसमें एक शब्द भी तुम्हारे हृदय से नहीं निकला होता।

गुस्से से कांप कर वह उठा और एक प्लेट नानी के सिर पर फेंकी। और 'अरे तू······बुड्ढी डाइन। अब ले।' यों कहता जैसे लकड़ी में आरा चले।

जब भी वह खुदा की कड़ाई पर कुछ कहता तो कहता—जब आदमी पाप करते हैं तब बाढ़ में बहा दिये जाते हैं। फिर दूसरी बार उनके शहर जलाकर नष्ट कर दिये जाते हैं। उसके बाद दुर्भिक्ष तथा महामारी होती है। उसके लिए खुदा सिर पर लटकती तलवार था। अपनी उँगलियां टेबिल पर पटक कर वह कहता, 'जो भी खुदा के कानून तोड़ता है उसका अंत बुरा होता है।'

खुदा के लिए ऐसी बातें हमारे गले न उतरतीं। और मुझे शक होता कि ऐसा कह कर नाना खुदा से अधिक अपने से डरने को मुझे कहता है। सो साफ साफ मैं कहता, 'सो यह सब तुम इसलिए कहते हो कि मैं डर जाऊँ और तुम्हारा आज्ञाकारी बन जाऊँ।'

उसी तरह वह भी उत्तर देता, 'हो सकता है पर क्या तुम अवज्ञा का नया तरीका निकाल रहे हो।'

'और नानी की बातें…… ।'

'उस बेवकूफ की मत सुनो।' उसने हुक्म दिया 'वह सदा की गंवार, अनपढ़ है। उसे तर्क करना नहीं आता। ऐसी ही वह अपनी युवावस्था में भी थी। मैं तुम्हें कहूँगा कि उससे इन विषयों पर बातें न किया करो। अच्छा बताओ कितने स्वर्ग दूत होते हैं?'

मैंने ठीक उत्तर दे दिया फिर पूछा, 'क्या वे सब मिले रहते हैं?'

'तेरा भी क्या अँखफोड़ों का दिमाग है। यह सब संसारी लोगों की रीतियाँ हैं। उनके अपने कानून हैं?'

'कैसे कानून?'

'ओह कानून!' खीझ कर कुछ अपनी बुद्धि का प्रदर्शन करने लगा। 'एक साथ ठीक से रहने के लिए मनुष्यों को समझौता करना पड़ता है कि हमारे लिए अमुक काम ठीक है बस वही बाद में नियम, कानून बन जाता है। जैसे देखो कि बच्चे कोई खेल खेल रहे हों। शुरू करने के पहले ही वे तय कर लेते हैं कि कैसे खेल होगा किस नियम से होगा। इसी तरह कानून भी बनते हैं।'

'सब के मिलने से और कानून से क्या सम्बन्ध है?'

'यह तेरे समझ से ऊपर की बात है।' अपनी भौंहों को नचाकर उसने कहा और बाद में मुझे समझाने को ही कहा, 'आदमी जो भी करता है उसकी पूर्व योजना खुदा ही बनाता है। आदमी कुछ सोचता है परन्तु खुदा के कारण होता कुछ और ही है। आदमी का काम कुछ नहीं, खुदा ही उसे नाश कर सकता है या धूल में मिला सकता है।'

मेरी उत्सुकता कम तो हुई नहीं। मैंने पूछा, 'तो इसके क्या माने जब मामा जैक कहता है।'

नाना की हथेली फौरन दाढ़ी पर पहुँची और उसने अपनी आँख बन्द कर ली। उसने ओंठ दबाया मानों अपनी हँसी रोक रहा हो।

'तुम्हारे मामा जैक को तो हाथ पाँव बाँध कर पानी में छोड़ देना चाहिए। वह जो कुछ कहता है उसपर तुझे विश्वास नहीं करना चाहिए। पर.... तू!' कह कर उसने बात समाप्त की।

आदमियों की बात करते समय वह सदा ही खुदा का नाम बड़ी श्रद्धा से लेता। नानी की ही तरह वह समझता कि खुदा का हाथ सब जगह है और उसके हर काम पर उसकी निगाह है। मेरी नानी जिन साधुओं को जानती थी वे थे—निकोलाई, पूरी फ्लोरा और लवरा जो गाँव गाँव घूम कर लोगों के दुख सुख में साझा रखते थे। परन्तु नाना के साधु वे लोग थे जो बहुत सजा पाए विद्रोही होते थे।

एक बार नाना ने तेजी से कहा, 'अगर खुदा मेरा मकान अच्छे दामों बिकवा दे तो मैं सेंट निकोलस के नाम पर अच्छा दान देता।'

हँसकर नानी ने मुझसे कहा, 'यह बुड्ढा मूर्ख नहीं तो क्या? जैसे निकोलस को इसके घर बिकवाने की फिक्र के अलावा कुछ काम ही नहीं है।'

बहुत दिनों तक मैं एक कैलेन्डर रखे था जिस पर नाना के हाथ के निशान थे। कुछ पवित्र दिनों पर लाल निशान थे और लिखा था 'मेरे अच्छे दिन जिसमें मैं बड़ी मुसीबत से बचा।'

मुझे उस मुसीबत का भी पता है। अपने बेकार के बच्चों के

पालन पोषण के लिए नाना ने लाइसेंस लिए बिना ही सूद का काम करना शुरू किया। किसी ने उसकी शिकायत की और एक रात पुलिस ने तलाशी ली। बड़ा भयंकर समय था परन्तु कुछ बुरा न हुआ। रात भर उसने प्रार्थना की और सुबह नाश्ता के समय उसने यह लाइन लिखा थी।

यह उसकी आदत थी कि रात के खाने के पहले यह स्तुति, भजन की किताबें मेरे सामने बहुत ऊँची आवाज में चिल्ला कर पढ़ता था फिर रात के अंधेरे में वह प्रार्थना करता, महा-राजाओं के महाराज, हमें बुरे विचारों से बचाओ। मुझे दुष्टों से बचाओ। मैं अपने गुनाहों को याद करता हूँ तो मेरे आँसू बहने लगते हैं।'

नाना ही मुझे गिरिजा ले जाता। छुट्टियों में भी। मैं सदा ही यह सोचा करता कि यह किसका खुदा है नाना का या नानी का। मुझे जहाँ तक याद है उस समय मेरे लिए यही सबसे बड़ी परेशानी थी। नाना के खुदा से मुझे भय अधिक लगता था। नाना की सतर्क दृष्टि सदा मुझपर ही जमी रहती। नाना सभी व्यक्ति पर अविश्वास करता तथा दूसरों को सजा देने में सुख का अनुभव करता।

उन दिनों मैं केवल खुदा के विषय में ही सोचा करता। खुदा के विचारों का एक प्रकार से मुझ पर नशा चढ़ा रहता था। हर समय मेरे चारों ओर जैसे खुदा ही छाए रहते। खुदा यानी नानी का खुदा मुझे अच्छा लगता। मेरे हर खेल में मुझे वह साथी मालूम देता। अतः स्वाभाविक तौर पर मैं इस बात से झुँझलाया करता अच्छा क्यों नहीं है।

गलियों में दौड़ना मेरे लिए मना था। क्योंकि मैं उसके लिए बुरी तरह पागल था। और इससे हमारे भीतर जो प्रतिक्रिया होती वह बहुत अजीब थी! और इसका अन्त भी एक दिलचस्प घटना से हुआ। मैंने किसी को अपना मित्र न बनाया। पड़ोसी बच्चे मुझसे शत्रुता का ही व्यवहार करते। मैं केशिरीन कहलाना पसन्द न करता। और वे ऐसे शैतान लड़के थे कि मुझे देखते ही चीखने लगते—'वह रहा केशिरीन .....पकड़ो।' और लड़ाई शुरू हो जाती।

अपनी उस छोटी उम्र में भी मैं घूँसेबाजी करना खूब जानता था। यह सभी को मालूम था इसलिए वे बाल शत्रु मुझसे कभी अकेले न लड़ते। सदा ही एक भीड़ लेकर आते और मैं पिट कर घर वापस आता, सदा ही नाक पर खरोंच, फूले हुए होंठ, चेहरे पर तमाम निशान, फटे कपड़े और धूल धुसरित।

'अब क्या हो गया?' हल्की सहानुभूति के बीच शोर करके नानी पूछती। 'अरे दुष्ट! आखिर तुझे हुआ क्या है?' और मेरे घाव पोंछते और मुँह धोते हुए कहती, 'आखिर यह लड़ाई क्यों होती है? घर पर तो तू इतना गम्भीर और सीधा रहता है कि क्या कहना परन्तु तुझे तनिक बाहर तो जाने दूँ, पता नहीं तू क्या हो जाता है। कितने शर्म की बात है। मैं नाना से कह कर तेरा बाहर जाना बन्द करा दूँगी।'

लेकिन यह सब देख कर नाना कभी क्रुद्ध नहीं हुआ बल्कि उसने कहा, 'फिर से लड़ आए। यह तुम्हारे तमगे हैं? पर ऐ बालबहादुर, देख, तुझे मैं इस तरह गली में घूमता न पाऊँ! समझे?'

जब गली खाली या सूनी होती तो मेरे लिए तनिक भी आकर्षण न होता। परन्तु ज्योंही मैं बच्चों की खुशी की आवाज सुनता कि नाना की आज्ञा फौरन भूल जाता और आँगन से भाग खड़ा होता। मुझे उनसे झगड़े में मिले घूसें बुरे न लगते परन्तु उनका मजाक मुझे बुरा लगता। उनके झगड़े का तो मैं अभ्यस्त होगया था। उस समय तो मेरे क्रोध का ठिकाना न रहता जब मैं देखता कि वे बच्चे मुर्गियों और कुत्तों को सताते, बिल्लियों को मारते, यहूदियों की बकरियाँ खोल कर भगा देते। निरीह गदहों को तंग करते, मारते और चिल्लाते, 'इगोशा, उसके जेब में ही मौत है।'

इगोशा एक बहुत लम्बा था, लड़का नहीं आदमी। उसके हल्की सी दाढी थी। उसका रंग काला जैसे भुना हुआ गोश्त! वह एक भेड़ के खाल की जैकेट पहने गली में आने जाने वालों को बड़ी खाली निगाह से देखा करता। या तो उसकी आँखें जमीन पर ही गड़ी रहती। उसके काले, निरीह चेहरे व दुखी आँखों ने मेरे मन में उसके लिए श्रद्धा उपजा दी। मैं समझने लगा कि यह आदमी किसी बड़े खास काम में लगा रहता है अतः इसे छेड़ना न चाहिए।

परन्तु लड़के हमेशा ही उसके पीछे दौड़ते और उसकी पीठ पर ढेले फेंकते। अक्सर तो वह अनजान बना रहता मानों उसके चोट ही न लगती हो। फिर वह चलता हुआ रुक जाता, अपना सिर उठाता अपनी टोपी ठीक करता मानों अभी अभी वह सोकर उठा हो।

बस फौरन ही बच्चे चिल्ला उठते, 'इगोशा, जेब में मौत है। तुम कहाँ जा रहे हो, इगोशा? देखो, तुम्हारे जेब में मौत है।'

पहले तो वह अपनी जेबों में हाथ डाले रहता फिर झुक कर ढेला, पत्थर या मिट्टी का टुकड़ा उठाकर हाथ ऊँचा करता, उन्हें कोसता परन्तु बहुत थोड़े और रटे हुए शब्दों में। उन लड़कों के पास उससे अधिक गालियाँ होतीं। जब वह उन्हें दौड़ाता तो उसकी जैकैट रास्ते में गिर पड़ती और जब उसे उठाने को वह झुकता तो उसके पतले पतले हाथ यों लगते जैसे किसी पेड़ की दो सूखी टहनियाँ।

तब तकबगलों से पीछे से बच्चे उसपर ढेले की बरसात मचा देते और उसपर धूल छोड़ देना तो सबसे बड़ी बहादुरी होती।

इससे भी अधिक दर्दनाक होता जब मैं ग्रेगरी को देखता। ग्रेगरी—पुराना दूकान का नौकर। अब भी देखने में सीधा और सुन्दर परन्तु अब बिल्कुल अन्धा होगया था। अब घूम घूम कर भीख माँगा करता। एक छोटे कद की भूरा लड़की उसका हाथ पकड़ कर चलती। वह किसी भी खिड़की के नीचे बिना ऊपर देखे रुक जाती और माँगना शुरू करती—'गरीब अन्धे के लिए कुछ......खुदा के नाम पर!'

ग्रेगरी खुद कभी न बोलता। उसके ओंठ कस कर चिपके होते। उसकी दाढ़ी खूब फैली होती और हाथ भी बंधे होते। दिवालों की खिड़कियों पर उसकी आँखें काले चश्मे के नीचे सीधी देखती होतीं। मैं उसे अक्सर देखता परन्तु उसके चिपके ओंठ कभी कुछ न बोलते। उसकी इस खामोशी का मेरे मन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता। मैं कभी अपने को उसके पास नहीं लेजाता परन्तु उसे देखते ही मैं दौड़ कर नानी के पास जाता और कहता, 'ग्रेगरी गली में है।'

'क्या, कहां है?' उत्सुकता से वह पूछती, 'जा उसे यह दे दे।'

ऊब कर मैं इन्कार कर देता तो वह खुद जाती और उसके साथी काफी समय बिताती। ग्रेगरी हँसता, दाढ़ी हिलाता, परन्तु जो भी कहता उसे दुहराना मुश्किल है। कभी कभी नानी उसे रसोईं घर में बुला लेती और कुछ खाना देती। ग्रेगरी सदा ही मेरे बारे में पूछता। नानी मुझे पुकारती परन्तु मैं आँगन में छिपा खड़ा रहता। मैं जाने क्यों उसके सामने न जा पाता। उसे देखकर मेरा जी भर आता और मैं एक संकट में पड़ जाथा। मैं जानता हूं कि इसी प्रकार का कराह नानी को भी होता था। केवल एक बार इस विषय पर बात हुई थी जब ग्रेगरी को दरवाजे तक पहुँचा कर वह वापस आगई। उसका मुंह लटका था, आँखों में आँसू थे। मैंने उसका हाथ पकड़ा। उसने पूछा,

'तू उससे कतराता क्यों है? कितना अच्छा है वह। और तुझे बहुत प्यार करता है।'

'नाना ने उसे क्यों निकाल दिया?'

'तेरा नाना!' उसने बड़ी कठिनाई से कहा, 'जान ले जो मैं कह रही हूं—इसके लिये खुदा हम सबों को सजा देगा। खुदा की सजा·····।'

और उसके शब्द गलत न थे। जब दस वर्ष बाद नानी मर गई तब नाना को खुद भिखारी बन कर गली गली घूमना पड़ा उसका दिमाग खराब हो गया था खिड़कियों के नीचे से वह गिड़गिड़ाता, 'रसोईं घर के लोग दया करके चाहे मांस का ही एक टुकड़ा दे दो····लेकिन····तू····।'

इगोशा और ग्रेगरी के अलावा एक स्त्री भी थी जिसका नाम था—वोरोन्का। जिसे देखकर ही मैं भाग जाता। हर इतवार को वह अजीब भयानक, शराबियों की सी शक्ल

बना लेती। वह इस प्रकार चलती जैसे हवा में उड़ रही हो और जमीन पर उसके पांव न हों। जब वह आती तो लोग सहन में छिप जाते। सड़क पर खामोशी छा जाती। कभी कभी नीले गुब्बारे की तरह मुँह फुला कर वह कहती,

'कहां हैं मेरे बच्चे, मेरे बच्चे!'

मैंने नाना से पूछा कि वह क्या चिल्लाती है।

'तुम्हारे जानने के लिये यह नहीं है।' उसने पहले कहा फिर समझाया कि शायद उस औरत का पति वोरोनोव फौजी अफसर था। अपने ओहदे की वृद्धि के लिए उसने अपनी पत्नी को एक बड़े अफसर के हाथ बेच दिया था जो उसे लेकर दो वर्ष तक बाहर रहा। जब वह वापस आई तो उसके दो बच्चे, एक लड़का व एक लड़की मर चुके थे। उसका पति भी जेल में था, शायद उसने कुछ सरकारी रुपया हड़प कर खर्च कर दिया था। अपने दुखों से ऊब कर उसने शराब पीना शुरू किया जिससे उसकी यह दशा हो गई और अब गली में शोर करती चलती है। प्रति रविवार को उसे पुलिस पकड़ लेती है।'

गलियों से तो घर ही अच्छा था। मेरा दिन का सब से अच्छा समय वह होता जब दोपहर का खाना खाकर नाना मामा जैक के कारखाने में चला जाता और खिड़की पर बैठ कर नानी परियों की और मेरे बाप की कहानियाँ कहती।

नानी ने जिस मैना को बिल्ली से बचाया था उसका टूटा डैना काट कर पांवों में लकड़ियाँ बांध दिया था। नाना ने उसे चलना सिखाया था। नानी काफी देर तक

पिंजड़े के सामने खड़ी रहती। और बार बार वही शब्द दुह-राती जो उस चिड़िया को सिखा रही थी।

'प्यारी मैना कहो, तुम्हें कुछ सिखाऊँ।'

मैना अपनी छोटी छोटी आँखें नचाती। और लकड़ी के पांवों पर सीधी खड़ी होकर गर्दन निकाल लेती और सीटी बजाती या कूकती या भूँकती, जाने किस प्रकार की आवाज पैदा करती।

'बस कर!' नानी चीख पड़ती। 'ऐसे कह, कुछ खाना चाहिये।'

फिर वह मैना कुछ अच्छी आवाज करती और नानी को हँसी आ जाती। 'बड़ी चतुर है। अगर चाहे तो कह सकती है।'

और धीरे धीरे उसे उसने बोलना सिखा दिया। थोड़े दिनों में वह मैना इतना सीख गई कि नानी को देखते ही कह उठती, 'नमस्कार!'

पहले उसे नाना के कमरे में टांगा गया। परन्तु शीघ्र ही नाना ने उसे निकाल कर हम लोगों के कमरे में भेज दिया क्योंकि बहुत शीघ्र ही वह नाना के प्रार्थना की नकल उतारने लगी,

'खुदा,.....तुम.....तु.....म।'

और उस दिन प्रार्थना के पूर्व ही नाना चीख उठा, 'यदि इसे तुम अब यहाँ से नहीं ले जाती तो मैं मार डालूँगा।'

मेरे घर में इस प्रकार काफी दिलचस्प चीजें थीं। परन्तु मेरा मन सदा भारी रहता। लगता जैसे कोई भारी बोझ मुझे दबा रहा है। मैं अपने को अर्द्धजीवित सा ही अनुभव करता।

आठ

अचानक नाना ने वह मकान उसी शराबखाने के मालिक के हाथ बेच दिया और कनातनाई स्ट्रीट पर दूसरा खरीदा। यहां तो दीवाल की ऊँचाई की घास थी परन्तु वातावरण शांत था। खेतों की ओर की पंक्ति में यह सब से अंत का मकान था और सब से अलग रंग में पुता था।

अपना नया मकान छोटा और सुन्दर था। बाहर का रंग गहरा लाल था और नीचे की तीन खिड़कियां, आसमानी नीले रंग से पुती थीं। बगीचे में भी रास्ते बने थे। जैसे खास तौर से खेलने और छिपने के लिए बनाया गया हो। बगीचा खास तौर से मुझे बहुत प्यारा था। बड़ा तो नहीं था परन्तु पेड़ पौधे अच्छे थे। एक कोने में छोटा सा स्थान यह ऐसा लगता जैसे फकीर की झोपड़ी। एक ओर [illegible] के [illegible] और [illegible] [illegible] का अस्तबल था। दूसरी ओर कुछ कमरे बने थे नौकरों के रहने के। और बिल्कुल किनारे पर एक महिला का मकान था जिसका नाम पेत्रोवना था और जो एक दुग्धशाला की मालकिन थी। वह बहुत मोटी, लाल चेहरे वाली थी। उसका [illegible]

सा मकान कुछ अँधेरा सा रहता था। इसकी दो खिड़कियां खेत की ओर थीं। दिन भर खेत में सिपाही परेड करते थे। सूर्य की रोशनी में उनकी बंदूकें खूब चमकतीं।

उस मकान में जो लोग रहते वे मुझे बड़े निराले दिखते। उसमें एक गोल मटोल तातार फौजी रहता था जिसकी औरत बहुत चिल्ला कर बोलती तथा दिन भर गिटार पर ऊँचे स्वर में गाती रहती। उसके बहुत प्रिय गाने का भावार्थ था कि अगर तुम्हारी प्रेमिका तुम्हें छोड़ दे तो हिम्मत मत छोड़ो और दूसरी लड़कियों को खोजो। खिड़की पर उसका पति जिसके ओंठ नीले थे और लाल आंखें चारों ओर भटकती रहतीं बैठता। उसका पाइप दिखाई पड़ता और बहुत कर के वह कई बार खांसता जिससे करीब इस प्रकार की आवाज होती, 'वख, वख।'

अस्तबल के ऊपर अच्छे कमरे में रहने वाला बहुत लम्बा तातार था जिसका नाम वाली था। जो किसी अफसर का अर्दली था और दो व्यक्ति जिसमें एक चाचा पीटर और उसका गूँगा भतीजा स्टेफेन, जो हसोड़ था और उसका चेहरा मुझे तांबे की तश्तरी सा लगता था। वह सभी मेरे लिए अजीब और पूर्णतया अपरिचित थे। रसोई से लगे हुए कमरे में जो रहता था उसका उपनाम था 'भलेमानस' उसके कमरे में दो खिड़कियां थीं एक तो आंगन में खुलती थी दूसरी बाग में। वह सदा नज़रों से अपनी आंखें छुपाए रहता, और उसके चेहरे पर झाड़ी चढ़ी हुई थी। वह काफी शर्मीला और मृदुभाषी था। चाय या खाने पर बुलाए जाने पर कहा करता, 'क्या नाहक खिचाव है।' और नानी ने उसका नाम उसी विचार से जोड़ दिया। वह कहती, 'अलेक्सी जा 'भलेमानस' को बुला ला।' या: 'भलेमानस' तुमने तो प्लेट में कुछ छुआ भी नहीं।'

उस पूरे कमरे की दीवारों पर अलमारियां थीं। जो मोटी मोटी भद्दी किताबों से भरी थीं, यद्यपि पुस्तकें रूसी भाषा की ही थीं। अलग अलग रंग की अनेक बोतलें थीं तथा, लोहे, तांबे और सीसे की छड़ें थीं। सारे दिन लाल चमड़े की जैकेट तथा बुरी लगने वाली धारियों का पाजामा पहने वह छड़ों में कुछ फूंकता रहता। कुछ नापता रहता, कुछ तौलता रहता, परन्तु सभी जैसे बेकार क्योंकि अन्त में ऊब कर सब बन्द कर देता। अक्सर वह कोई बड़ा सा लिखा हुआ कागज दिवाल पर टांग देता और रङ्गीन शीशे द्वारा उससे आंख लगा कर कुछ पढ़ता कि उसकी लम्बी नाक भी कागज में छू जाती। फिर उससे ऊब कर भी वह खिड़की पर चला जाता, उसका सिर उठा रहता, आंखें बन्द रहतीं।

मैं छत पर चढ़कर उसकी खुली खिड़की से भीतर देखा करता। उसकी मेज पर जलती आग और नीली लपटों को मैं देखता। वह अपनी नोट बुक में कुछ लिखता हुआ छाया सा लगता, उसका नीला चश्मा बर्फ की तरह चमकता। कभी कभी खिड़की पर आकर वह यों अचल खड़ा हो जाता जैसे फ्रेम में कोई चित्र। उसकी आँखें हमारी छत पर जमी रहतीं और उसके हाथ पीछे रहते। यद्यपि वह मेरी उपस्थिति से पूरी तरह अनभिज्ञ होता। फिर अचानक वह अपनी मेज पर वापस चला जाता और उस पर इस प्रकार झुक कर अपने काम में लग जाता जैसे दोहरा हो गया हो।

यदि वह अच्छे कपड़े पहनता व ठाठ से रहता तो हमें डर ही लगता परन्तु उसके कोट, कमीज, गन्दे होते और अनेक पैबन्द वाले उसके पैन्ट और खुले पाँवों में चप्पल तो बिल्कुल नाममात्र की होतीं। वह बिल्कुल गरीब

था इससे हमें किसी बात का खतरा न था। यह भी मेरी नानी की मुझे एक देन थी कि गरीबों के प्रति मुझमें काफी दया उपजती थी।

'भलेमानस' के कोई मित्र न था, बल्कि उस घर के सभी रहने वाले उस पर हँसते थे। उस अफसर की छोटी सी बीबी तो उसे 'चाक नाक वाला' कहती थी। चाचा पीटर ने उसका नाम रखा था, पंसारी या बाजीगर। और नाना कहता—वह टोना करता है, राजमिस्त्री सा लगता है।

मैंने नाना से पूछा, 'वह क्या करता है।'

'चुप रहो, यह तुम्हारा काम नहीं।'

एक दिन मैं उसकी खिड़की तक गया। और पूछा, 'तुम क्या करते हो?' उसने मुझे चश्मे की डंडी के ऊपर से देखा। मुझे अपने हाथों से सहारा देकर उठाया—उसके हाथ में जलने के बहुत से निशान थे। उसने कहा, 'चढ़ आओ।'

उसने मुझे दरवाजे से न बुलाकर खिड़की से ही बुलाया इससे मेरे मन में उसके प्रति श्रद्धा अधिक बढ़ गई। वह एक झाबे पर बैठ गया और मुझे सामने खड़ा करके पूछा, 'कहाँ से आये हो?'

यह कहना बुरा लगता कि मैं उसके रसोई घर वाला पड़ोसी था सो कहा, 'मैं मकान मालिक का नाती हूँ।'

'अच्छा तो तुम्ही हो।' अपने हाथों को देखकर उसने कहा।

उसने केवल इतना ही कहा, इसलिए मैंने बताने की आवश्यकता समझकर, 'लेकिन मैं काशिरिन नहीं हूँ। मेरा नाम पेशकोव है।'

'पेशकोव !' आश्चर्य में डूब कर उसने पूछा, 'बहुत अच्छे !'

वह उठा और मुझे पुचकार कर मेज के पास गया, 'बैठा चुपचाप।' मैं बहुत देर तक बैठा देखता रहा। वह किसी चीज में ताँबा भरता था फिर एक प्रेस में यों दबाता था कि वह सोने की बूँद की तरह वह गिरता था—नीचे एक दफ्ती का टुकड़ा पड़ा था। फिर अपनी हथेली पर रख कर उसमें सफेद पावडर जैसी कोई चीज मिलाता था। फिर एक प्लेट में रखकर काले बोतल से कोई तरल पदार्थ मिलाता। जिसके मिलाते ही सब धुआँ बनकर उड़ गया और एक अजीब सी गन्ध कमरे में भर गई कि मैं बुरी तरह खाँसने लगा।

'बड़ी दुर्गन्धि है, क्या ?' उस बाजीगर ने तनिक घमंड से पूछा।

'हाँ।'

'लेकिन ठीक है। इसके माने कि मेरा काम ठीक हुआ है। मेरे बेटे।'

मैं समझ न पाया कि वह क्या बना रहा था। मैंने जोर से पूछा, 'इतनी दुर्गन्धि और ठीक कैसे हो सकता है ?'

'ऐसा मत कहो।' अपनी आँखें चमका कर उसने कहा, 'हमेशा ऐसा नहीं होता। क्या तुम जँगली के खेल जानते हो ?'

'हाँ।'

'तो मेरे साथ खेलो।'

'अच्छा आओ।'

'वह मेरे पास आया और धुएँ वाला बर्तन उसके हाथ में था। धुएँ से उसने अपनी एक आँख बन्द कर ली थी : फिर

दूसरे आँख से देखकर उसने कहा, 'लेकिन वायदा करो कि अब तुम यहाँ न आओगे।'

मुझे बहुत बुरा लगा।

तुम मुझे फिर यहाँ न देखोगे।' क्रोध में मैंने कहा और बागीचे में कूद गया। वहाँ नाना एक सेब के वृक्ष के पास काम कर रहा था। उसने कैंची मुझे दे दी। कहा, जा रसभरी (मकोइया) की झाड़ी छाँट दे।'

'वह 'भलमानुस' क्या किया करता है?' मैंने पूछा।

'क्या करता है? सिर्फ कमरे को बरबाद कर रहा है। सारी छत जल कर काली हो गई है। परदों पर दाग ही दाग हैं। मैं तो उससे कहने वाला हूँ कि कहीं और चला जाए।'

'हाँ ठीक!' रसभरी की सूखी टहनियाँ काटते हुये मैंने कहा। 'उससे यह कहना चाहिये।'

बरसाती शाम को यदि नाना कहीं चला जाता तो नानी खुश होकर रसोईघर में सभी किरायेदारों व पड़ोसियों को बुला कर चा की दावत करती। वह अर्दली, मोटी औरत, पेतोव्तनया कभी कभी वह तातार और उसकी प्यारी सी छोटी बीवी सभी आते और वह भलामानुस आता जो कोने में चूल्हे के पास खामोश बैठता। तातार अर्दली और गूँगे स्तेपेन के बीच ताश का खेल चलता।

चचा पीटर अपने साथ एक डबल रोटी लाता और उसे काट कर बिछा देता फिर झुक झुक कर सबों को एक एक देता व कहता, 'कृपा कीजिए।' फिर रोटी बाँटने के बाद सब पर दो दो बूँद जाम रखता।

पेत्रोनया का भाग होता मांडी। इस प्रकार सभी के संतोष के लिए वस्तुयें आ जातीं।

उस दिन जब 'भलेमानस' ने मुझे अलग किया था उसी के ठीक बाद ही नानी ने एक ऐसी ही दावत की। बाहर बसंत की ठंडी हवा चल रही थी। घर में तनिक गरमी थी। सभी मेहमान काफी पास पास सट कर बैठे थे। नानी चूल्हे के किनारे पर बैठी। वहां बैठने से छोटे से लैम्प की तेज रोशनी अधिकांश उसी के मुँह पर पड़ती थी। यह उसकी बहुत प्यारी जगह थी जहाँ बैठकर वह कहानियाँ कहती थी। 'जब मैं चारों ओर देखती हूँ तो शब्द अपने आप आने लगते हैं।'

मैं उसके पांव से लग कर बैठा ताकि ऊँचाई में 'भलेमानुस' को दिखूँ। नानी बहादुर इवान तथा योगी मिरोन की बातें कर रही थी।

'एक समय की बात है, गारडिओन नाम का एक बहुत बुरा आदमी रहता था। उसका दिल बहुत काला था, बिल्कुल पत्थर सा और वह सचाई का तो शत्रु ही था। लोगों को सताकर और जंजीर में बांध कर वह बहुत कष्ट दिया करता था। वह एक ऐसा उल्लू था जो पेड़ पर से गिर पड़ा था। वह अपने गुनाहों के बीच भी खुश रहता था। सभी लोग डर व घृणा से उससे दूर ही रहते थे। लेकिन एक बहुत जन प्रिय व्यक्ति योगी मिरोन ने उसे छेड़ा।'

'मिरोन की मौत की योजना बनाकर उसने अपने एक विश्वासपात्र बहादुर ईवान को उसे मार डालने की आज्ञा दी। यद्यपि मिरोन केवल बेकसूर ही नहीं था बल्कि वह निहत्था भी था। गारडिओन ने कहा, 'ईवान, यह योगी मेरे रहते फिर न रह पाए। अब समय आ गया है कि वह संसार को अन्तिम प्रणाम करे, यह बहुत रह चुका। जाओ और उसकी भूरी दाढ़ी पकड़कर उसका सिर मेरे पास लाओ जिससे इसने गुजारिशों

को हरा रखा है। वह सिर जो मेरे खिलाफ उठा था अब मेरे भूखे कुत्तों का भोजन बनेगा।'

'ईवान आज्ञाकारी की तरह वह काम करने गया पर मन ही मन सोचता रहा—इस हत्या का सारा पाप मुझ पर ही आएगा। मैं ही तो उसकी आज्ञा से मारने जा रहा हूँ। परन्तु एक शब्द भी वह प्रत्यक्ष न कह सका। ताकि यह कोई न जाने कि उसके मन में क्या हो रहा है। आश्रम में आकर उसने प्रणाम किया। 'मैं आपके स्वास्थ की कामना करता हूं। पिता, मुझे आशीर्वाद दो। खुदा तुम्हें मदद देगा।'

'योगी ने हँस कर प्यार से कहा, 'ईवान झूठ मत बोलो। तुम मुझे धोखा नहीं दे सकते। अब तुम जान जाओगे कि खुदा सब जानता है। और कोई भी अच्छा या बुरा काम बिना उसकी इच्छा के नहीं हो सकता। देखो, मैं ही जानता हूँ कि तुम्हारे यहां आने का क्या तात्पर्य है।

'योगी के सामने शर्म से सिर झुकाए ईवान खड़ा रहा। जिसकी वह हत्या करने आया था उसी के सामने कांपने लगा। उसने उसकी तलवार को चमड़े की मियान से खींच लिया और जब तक वह पूरी तरह चमक न गई उसे रगड़ता रहा। तब उसने कहा, 'मैं चाहता था कि तुम्हारी प्रार्थना के पूर्व ही तुम्हें मार डालूँ। परन्तु अब नहीं हो सकता। अब तुम प्रार्थनाकर लो, जितनी देर तक भी चाहो। अपने लिए, मेरे लिए, दुनिया के सभी लोगों के लिए और आगे पैदा होने वाले सभी लोगों के लिए भी।'

'एक वृक्ष के नीचे बैरागी झुका और धूप उस पर झुक गया। हँसकर उसने ईवान से कहा, 'ईवान, सिर से बोझ लो : कब तक प्रार्थना करोगे मैं नहीं कह सकता। बल्कि तुम मुझे अभी ही मार डालो। खतरा मत उठाओ ?'

'ईवान ने ऊब कर कहा, 'मैं अपने वचन रखूँगा। तुम एक शताब्दि तक प्रार्थना करोगे तो भी मैं यहां इन्तजार करता रहूंगा। तुम शांति से प्रार्थना करो। अपने दिमाग को परेशान मत करो।'

'प्रार्थना करते करते धुंधलका छा गया। फिर रात, दिन और फिर रात तक वह प्रार्थना करता रहा। फिर सुनहली गर्मी, काला जाड़ा तक। फिर साल के बाद साल तक। परन्तु ईवान ने बाधा न डाली। वह वृक्ष बढ़ कर आकाश छूने लगा। वृक्ष के आस पास जंगल उग आए फिर भी प्रार्थना चलती रही। और आज तक चल रही है।'

'और ईवान उसके पास खड़ा है। उसकी तलवार पर धूल जम गई है। उसके कपड़े चिथड़े होकर गिर पड़े हैं, वह नग्न हो गया है। कपड़े की जगह उसके शरीर पर कीचड़ व धूल की पर्त जम गई है। गर्मी से वह जल चुका है। उसे देख कर भेड़िए और भालू भी भाग जाते हैं। उसे अपनी जगह से हिलने की शक्ति नहीं है—न वह हाथ उठा सकता है न एक शब्द भी बोल पाता है। उसकी इस दर्दनाक कहानी से हमें सबक लेना चाहिए। हमें पाप न करने चाहिए।'

'हम पापियों के लिए वह वैरागी अब भी प्रार्थना करता है।'

इसके पहले कि नानी समाप्त करती 'भलेमानुस' विरोध कर उठा। अपना चश्मा उतार कर अपनी आँखें रगड़ीं। फिर आत्मा की शुद्ध……!' और जब नानी ने कहानी समाप्त की और अपने पसीने से तर चेहरे को पोंछ रही थी कि वह हाथ उठाकर चीख उठा, 'बहुत अच्छे! मैं सोचता था कि अगर तुम मुझे सिखा डालतीं। किन्तु अब…… हमारा……।'

हम लोगों ने देखा कि वह रो रहा था और आँसू धार की

तरह बह रहे थे—बड़ा दर्दनाक दृश्य था। आंखों का चश्मा नाक पर उतर आया था। कान पर की कमानी भी खिसक गई थी। केवल पीटर हँस रहा था बाकी सभी लोग धर्म संकट में पड़े से चुपचाप बैठे थे।

'अगर तू चाहे तो लिख डाल।' नानी ने कहा, 'मुझे इस तरह की बहुत सी याद हैं।'

'नहीं, सिर्फ यही।' भलामानुस ने कहा। 'जब हमें पाप करने को कहा जाए तो हमें खामोश और दृढ़ रहना चाहिये। क्या सचाई है।'

फिर एकाएक उसकी आवाज थम गई। उसने खामोश निगाहों से चारों ओर देखा। और एक गुनाहगार की तरह सिर झुकाये हुए कमरे से बाहर हो गया। सभी हँस पड़े और अर्थभरी दृष्टि से एक दूसरे को देखने लगे। नानी अँधेरे में झुकी। हम लोग उसकी हँसी भी सुन रहे थे।

अपने लाल ओंठ हिला कर पेत्रोनवा ने कहा, अजीब है।'

'असाधारण!' चचा पीटर ने कहा, 'सदा ऐसा ही रहता है।'

'बेचारा कुँवारा है।' वेलो ने कहा और सभी अट्टहास कर उठे। परन्तु तनिक गम्भीर होकर चाचा पीटर ने कहा, 'वह सचमुच रो रहा था।'

उनके कटाक्षों से मैं तनिक बिगड़ा। क्योंकि इस घटना से मेरे मन पर कुछ प्रभाव पड़ा। उसकी गीली आँखें मुझे याद हैं।

उस रात वह घर से चला गया और दूसरे दिन रात को लज्जित सा वापस आया! आकर नानी से बोला, 'कल वाली घटना के लिए मुझसे नाराज तो नहीं हो?

'मुझे क्यों नाराज़ होना है ?'

'क्योंकि मैंने उत्सव में विघ्न डाला था।'

'किसी ने भी बुरा नहीं माना।'

परन्तु मैंने अनुभव किया कि नानी के मन में कुछ उथल पुथल थी। उसने आँखें न मिलाईं और बचा कर बातें कीं।

वह उसके बहुत पास आ गया। और आश्चर्य से बोला, 'यह मेरे घर का एकान्त भयानक है। जब मैं बन्द कमरे में अकेला होता हूँ तो मेरी आत्मा मुझसे अलग होने लगती है और जैसे मैं पत्थरों और वृक्षों से बातें करने को उतावला हो उठता हूँ।'

नानी उससे दूर खिसकी और कहा, 'अगर तुम्हारे पत्नी होती ?'

'क्या ?' उसने पूछा। उसका हाथ हवा में उठा। उसका चेहरा फक हो गया और वह भाग गया। नानी उसे देखती रही फिर सुँघनी सूँघ कर मुझसे कहा, 'सुन रहा है, इससे सदा दूर रहना। जाने कैसा आदमी है।'

इसके बाद उसके प्रति मेरे मन में फिर एक बार आकर्षण बढ़ा। मैंने उसके चेहरे की आकृति में परिवर्तन देखा था जब उसने कहा था, 'एकान्त भयानक।' इन शब्दों से मेरे मन में उसके प्रति सहानुभूति की उत्पत्ति हुई।

दूर खड़ा होकर मैं उसकी खिड़की की ओर देखता रहा। वह नहीं था और खाली कमरा सुनसान था। मैं बाग में गया, वहाँ वह था। वह मेंड़ के किनारे पर खड़ा था। सिर के पीछे हाथ किए वह झुका कुछ देख रहा था। उसने मुझे नहीं देखा। परन्तु घूमती हुई उसकी दृष्टि जब मुझ तक

आई तो मुझसे उसने पूछा, 'क्या मुझसे कुछ चाहते हो ?'

'नहीं ।'

'तब यहाँ क्या कर रहे हो ?'

'कुछ नहीं ।'

उसने अपना चश्मा उतार लिया । अपने लाल व काले रङ्ग के रूमाल से उसे रगड़ा फिर पुकार उठा । 'अच्छा इधर बढ़ आओ ।'

जब मैं उसके सामने गया तो उसने कहा, 'तुम चुपचाप बैठो । चुपचाप । सब ठीक है न ! तुम बहुत धूर्त और हठीले हो ?'

'हाँ ।'

'वाह, बहुत खूब !'

फिर एक लम्बा सन्नाटा रहा । शाम भी बहुत उदास व खामोश थी । वह पूछ रहा था, 'बच्चे ! क्या तुम्हें तनिक भी सर्दी नहीं लग रही है ।'

जब आकाश में बादल आ गये और हर ओर अंधेरा छा गया तो उसने कहा, 'बेकार है । अब हमें भीतर चलना चाहिये ।' फिर आगे आगे चलकर बाग के दरवाजे पर रुक गया और बहुत धीरे से बोला, 'तेरी नानी अजीब औरत है । बिल्कुल गोरों की तरह ।' फिर आँखें बन्द करके मुस्कुराहट के बीच उसने बहुत धीरे से कहा, उसकी कद्र है जिन्दगी में हमें शिक्षा होनी चाहिये और पाप की ओर से नफरत रखना चाहिए, इसे सदा याद रखना ।'

और ज्योंही मैं बढ़ा कि उसने पूछा, 'क्या तुम लिखना जानते हो ?'

'नहीं ।'

'सीख लो बच्चे। ताकि अपनी नानी की कहानियाँ लिख लो। कभी यह बड़े काम की होंगी।'

और इस तरह हमारी मित्रता बढ़ी। इसके बाद जब भी जी चाहता मैं भलेमानस के पास चला जाता। मैं दूर किसी ऊँचाई पर बैठकर नलियों द्वारा उसका फूँकना तथा तांबे को धुआँ बनाकर उड़ाना और लोहे को छोटी हथौड़ी द्वारा पीटना देखता। फिर बहुत महीन दाँतों वाली छोटी सी आरी से कटाई, या नाप तौल—वह सब कुछ तौलता—फिर धुआँ उठाकर कमरे भर में भर देता।

'अब तुम क्या कर रहे हो?'

'बच्चे, कुछ बना रहा हूँ।

'क्या?'

'तुम्हें बताना कठिन है। तुम समझ भी नहीं सकते।'

'नाना कहता था कि कोई आश्चर्य नहीं कि तुम नक्काल निकलो।'

'तेरा नाना ऐसा कहता था? उसने कुछ कहने के लिए ही कह दिया था। रुपया एक धोखा है।'

'क्या हमें बिना रुपया के रोटी मिल जायगी?'

'हाँ उसके लिये मेरे पास रुपया होना चाहिये'

'गोश्त के लिये?

'हाँ गोश्त के लिए भी।'

मेरे सवालों पर वह हँसा और कान गरम करके बोला, तुम्हें बहस में लाओगे। तुम्हें ठहरा समझना गलत है। मैं अपना मुँह बन्द ही रखूँगा।

कभी कभी वह काम बन्द करके खिड़की की राह बाहर की ओर देखता और पानी का बरसना तथा छत से गिरना देखा करता तमाम रहता वह देखता कि घास कैसे बढ़ रही है

या सेब के सूखे वृक्षों में किस प्रकार पत्तियाँ आ रही हैं। 'भलामानुस' कम बोलता और हर शब्द काम के होते। जब भी मेरा ध्यान आकृष्ट कराना होता तो वह पुकारने के बजाय किसी वस्तु को गिरा देता।

कभी कोई बिल्ली का बच्चा अपनी छाया देखकर खुशी से अपने पांव का पञ्जा उठाता तो 'भलामानुस' कहता,, 'बिल्लियाँ बहुत शक्की होती हैं।' और झाड़ी पर किसी रङ्गीन पतिंगे को देखकर कहता। 'उसके रङ्ग बिरङ्गे निशान जैसे किसी फौज के तगमें हों।'

धीरे धीरे मेरी उस भलेमानुस से बहुत घनिष्ठता हो गई और खुशी व सन्ताप के सभी क्षणों में मुझे उसके साथ की आवश्यकता अनुभव होने लगी। परन्तु नाना सदा ही मुझे डाँटता रहा, 'उससे बातें न किया करो।'

नानी तो नहीं परन्तु 'भलामानुस' सदा ही बहुत ध्यान से मेरी बातें सुना करता। बस कभी कभी यही कहता, 'नहीं बच्चे ऐसा नहीं है।' कभी कभी मैं जब गढ़ी हुई कहानियाँ कहता तो अपना सिर हिला कर विरोध करता, 'नहीं यह सच नहीं है।'

'तुम कैसे जानते हो?'

'बच्चे! मैं इतना समझ लेता हूँ।'

जब नानी सीनिया स्क्वायर के पम्प से ताजा पानी लाने जाती तो मुझे भी साथ ले जाती। एक दिन हम लोगों ने देखा कि शहर के पाँच रहने वाले एक देहाती किसान को पीट रहे हैं। उन्होंने उसे पटक दिया। पाँव से कुचला, और इस तरह घसीटा जैसे कुत्ते दूसरे कुत्ते को घसीटते हैं। नानी ने मुझे कहा, 'भागो भागो!' और अपना घड़ा वहीं रखकर उनकी ओर दौड़ी।

मैं भागा नहीं। ऊबकर नानी तो किसान के जुये से और मैं पत्थरों की वर्षा से वार करने लगा। तब तक और लोग आ गये और पीटने वाले भाग गये, तब नानी घायल की ओर झुकी। उसके चेहरे पर ठोकर मारी गई थी। उसके नाक से बहता खून नानी की छाती पर और चेहरे पर पड़ गया था। उसका थूक व कफ भी बुरी तरह बह आया था।

जब हम लोग घर आये तो फौरन ही मैं 'भलेमानुस' को सूचित करने भागा। उसने काम बन्द कर के शीशे के नीचे से मुझे यों देखा जैसे उसे सुनकर बड़ी खुशी हुआ हो। फिर हमारी बातें सुनकर बोला, 'अच्छा किया।'

मैंने जो भी देखा था उससे इतना प्रभावित था कि मैं उसकी न सुनकर अपनी ही कहता गया। तब उसने अपने हाथ मेरे कन्धे पर रखकर कहा, 'बस करो, बस करो। मैं ज्यादा नहीं सुनूँगा। जो भी आवश्यक था तुमने मुझे बता दिया है, समझे बच्चे।'

मुझे यह बुरा लगा और मैंने कोई उत्तर न दिया।

उसके कुछ उत्तर जो वह प्रश्न पूरे होने के पूर्व ही दे देता था मुझे याद हैं। एक बार एक लड़के से लड़ने में मैं जीत गया था तब उसने कहा था, 'चीजों को जानने समझने की कोशिश करो।'

मैं उसकी बात तो न समझा पर पता नहीं क्यों वह मुझे सदा याद रहा।

धीरे धीरे पता नहीं क्यों उससे सब छूट गए। वह प्यारी बिल्ली जो अब उसके घुटनों पर न उछलती न प्यार से उसके पेट पर चढ़ती बल्कि मेरे पास वह आकर रहती तो मैंने उसे उसके पास भेजना शुरू किया।

मेरे कपड़ों में जो तेजाब लगी है इससे वह नहीं आती। इसकी गंध उसे पसन्द नहीं—उसने कहा। परन्तु सभी नानी नाना भी उसे कहता, 'झूठा, क्रूर।'

'तू आखिर उसके पास चक्कर क्यों लगाता है?' नाना चिढ़कर पूछता 'तुम देख लेना उससे जो भी सीखेगा उससे तेरा बुरा ही होगा।' और अक्सर तो मुझे वहाँ आता जाता न देखकर भी नाना डाँट बता देता क्योंकि उसकी समझ में वह भला आदमी न था।

मैं भलेमानुस को बता देता था कि उसके बारे में घर भर के लोग क्या राय रखते हैं।—'नानी तुमसे डरती है कि तुम काले जादू का अभ्यास करते हो। और नाना कहता है कि तुम खुदा के शत्रु हो और तुम्हें यहाँ रखना खतरनाक है।'

फिर वह अपना हाथ सिर पर यों उड़ाता जैसे तितली के पर। और एक ढीली मुस्कान उसके सफेद चेहरे पर छा जाती।

'अजीब बात है।' वह उसांस लेकर कहता।

'हाँ।'

'हाँ बच्चे अजीब बात है।'

अन्त में उसे मकान छोड़ने का परवाना मिला। एक दिन रोज की आदत के मुताबिक शाम को जब मैं पहुँचा तो, देखा कि वह सामान बाँध रहा है। मुझे देखते ही बोला, 'नमस्कार मेरे दोस्त, मैं जा रहा हूँ।'

'क्यों?'

मुझे बहुत देर तक टकटकी लगाकर देखने के बाद उसने कहा 'भला यह कैसे हो सकता है कि तुम्हें ही कारण

न मालूम हो ? वे लोग यह कमरा तुम्हारी माँ के लिए खाली करा रहे हैं।'

'किसने कहा है ?'

'तुम्हारे नाना ने।'

'वह झूठ बोलता है।'

'भलेमानस' ने मुझे पास खींच लिया और जमीन पर सामने बैठाकर कहा, 'इससे अपना दिमाग खराब मत करो। मैं समझा कि तुम जानते हो और मुझसे नहीं बताते। और मुझे निराशा भी हुई थी।' फिर भी उसने अपने स्वाभाविक ढङ्ग से कहा, 'याद है। मैंने तुमसे कहा था कि मुझसे दूर रहो।'

मैंने 'नहीं' के अर्थ से सिर हिलाया।

'तुम्हें दुःख हुआ था न !'

'हाँ।'

'लेकिन मेरा मतलब तुम्हें दुःख देने का नहीं था बच्चे ! मैं जानता था कि मेरी दोस्ती से तुम मुसीबत में फँस जाओगे। और क्या वैसा नहीं हुआ ? अब देखो कि मैंने ऐसा क्यों कहा था।'

यह सब उसने यों कहा जैसे मुझ जैसा ही बच्चा हो। 'इससे मुझे बहुत खुशी हुई। मेरे मन में आवाज उठी। 'यह मैंने भी अनुभव किया था।'

मेरे मन में एक बात ले द्वन्द्व हो रहा था, वही मैंने पूछा, 'आखिर सभी तुम्हारे इतने विरुद्ध क्यों हैं ?'

मेरे गले में हाथ डालकर मुझे अपने पास खींचकर उसने कहा 'मैं उनकी किस्म का नहीं हूँ। देखते नहीं ! मैं उन लोगों जैसा नहीं हूँ।'

मैंने उसका हाथ दाब दिया। मैं कुछ भी न कह पाया।

'तुम परेशान न हो।' कहकर उसने कान में कहा, 'और रोना भी मत।' जब कि उसके आँसू चश्मे के बीच से लुढ़क रहे थे।

फिर जैसा कि सदा ही होता था हम लोग काफी देर तक खामोश बैठे रहे। बीच बीच में एक या दो शब्द से खामोशी टूटती, बस। उसी शाम को सभी से नमस्कार करके वह विदा हुआ। मैं उसे छोड़ने दरवाजे तक गया। और गाड़ी जब सूखे कीचड़ में जा रही थी मैं देखता रहा।

नानी ने झटपट कमरे की सफाई की और मैं जब गया तो डाँटा, 'भागो यहाँ से।' वह मुझ पर नाराज थी।

'मुझे बताओ उसे क्यों निकाल दिया ?'

'जो तेरे मतलब की बात नहीं उसमें क्यों पड़ता है ?'

'तुम सभी मूर्ख हो।' मैंने कहा। 'तुम सभी।'

जिस झाड़ू से वह सफाई कर रही थी उसके उल्टे भाग से मुझे मार कर वह बोली, 'क्या तू पागल हो गया, तू जानवर !'

'मेरा मतलब तुमसे नहीं दूसरों से है।' कहकर उसे समझाना चाहा परन्तु उसका गुस्सा न उतरा।

उसी शाम को खाना खाते समय नाना ने कहा, 'खुदा का शुक्र है! आज वह चला गया। एक दिन मैंने उसे अपनी पसलियों में चाकू घुसेड़ते देखा था। अरे वह......'

गुस्से में मैंने एक चम्मच तोड़ दिया। और अपनी चिरपरिचित खामोशी के साथ लौट आया। इस प्रकार मेरे अच्छे मित्रों की मित्रता की प्रथम कड़ी टूट गई।

नौ

मेरा बचपन बिल्कुल वैसा ही था जैसे मक्खियाँ शहद एकत्रित करें। जीवन के विविध अवसरों पर विभिन्न प्रकार के लोग मिले जिनसे मुझे उनके अनुभव मिलते रहे। मैं उन्हें मधु की तरह ही संचित करता रहा। कुछ मधु गंदा था, कभी-कभी इससे खासी परेशानी भी होती। परन्तु मेरे लिए सभी शिक्षा ग्रहण करने की वस्तु थी, अतः मैं उसे मधु ही मानता हूँ।

पीटर, गाड़ीवान ने 'भलेमानुस' का स्थान ले लिया। वह बाहरी शक्ल सूरत में तथा अच्छी आदतों में नाना से मिलता, जुलता था। परन्तु कद में तथा अन्य बातों में भी तनिक छोटा था। उसे देखकर कभी कभी अपरिपक्व युवक का भान होता। उसके चेहरे की झुर्रियों से लगता जैसे उसका चेहरा किसी बहुत खूबसूरत धारीदार चमड़े का बना है। उसकी हँसोड़, पीली और सफेद, तथा फुर्तीली आँखें यों लगतीं जैसे पिंजड़े में कोई मैना। उसके भूरे बाल जो कभी बिल्कुल काले चमकदार थे घुंघराले हो गए थे। उसकी दाढ़ी के भी सभी बाल घुँघराले थे। और उसके पाइप से धुँआ निकलता तो भी

बिल्कुल उसके बालों के रंग का होता तथा उसके छल्ले भी वैसे ही लगते जैसे उसके घुँघराले बाल।

वह बहुत तेज आवाज में और काफी जल्दी जल्दी बोला करता था।

'जब पहली बार मैं रानी तातियाना के पास आया तो उसने कहा; तुम्हें लुहार का काम करना पड़ेगा, लेकिन मुझे उसने माली के साथ काम करने को भेजा। मुझे कोई बुरा न लगा परन्तु मैं मजदूर नहीं बनना चाहता था। लेकिन एक बार उसने कहा, पीटर तुम्हें हमारे लिए ताजी मछली लाना है।' सभी मेरे लिए ही, मधु आया माली! लेकिन मैंने तय करके मछली को नमस्कार किया। मैं शहर आकर गाड़ीवान बन गया। यद्यपि इससे मुझे कोई लाभ न हुआ। अब तक मेरी अपनी जायदाद के नाम पर केवल यह घोड़ा है।'

उसके इस बूढ़े घोड़े ने सफेद रंग का शरीर पाया था परन्तु जैसे एक मनचले, शराबी पेन्टर सवार ने उसे दूसरे रंग में रंगना शुरू किया और बीच में ही छोड़ दिया। उसके पांवों को देखकर लगता कि वे तोड़कर फिर उल्टे पुल्टे जोड़ दिए गए हैं। या लगता जैसे कई चीरों को घोड़े की शक्ल में जोड़ दिया गया है। फिर भी पीटर उसे बड़े आदर से तंका (पुरानी मालकिन तातियाना का बिगड़ा नाम) के नाम से पुकारा करता था।

'तुमने इस जानवर का ऐसा आदमियों जैसा नाम क्यों रक्खा?' एक बार नाना ने पूछा।

'ऐसी कोई बात नहीं।' पीटर ने जवाब दिया। 'मैं तो प्यार से ही ऐसा कहता हूँ। किसी आदमी का नाम ऐसा नहीं होता हाँ तातियाना जरूर है।'

चाचा पीटर कुछ पढ़ा लिखा भी था। वह और नाना अक्सर बैठकर साधुओं की पवित्रता पर बहस करते थे। अपने पक्ष को मजबूत बनाने के लिए दोनों बड़े बड़े पापियों का भी जिक्र करते थे। एक बहुत बड़े व मशहूर पापी एबसालोम की अधिक चर्चा होती। कभी कभी बहस अजीब रूप धारण कर लेती थी। किसी एक शब्द को लेकर झगड़ा होता। 'मैं अपने ढंग से कहता हूँ और अपने ढंग से तुम।' गुस्से से लाल होकर नाना चिल्लाता। और बकने लगता, 'शीशा! शीशा।'

तमाखू का चक्करदार धुआँ छोड़ता हुआ पीटर अपने ताव में कहता 'खुदा को चाहे जिस तरह याद करो। वह तो वही रहता है। जैसी चाहे प्रार्थना करो।'

पीटर कद में छोटा पर कसा हुआ व्यक्ति था। जब भी वह चलता तो पांवों के नीचे पड़ने वाले लकड़ी के टुकड़े, टूटे शीशे के टुकड़े या हड्डी के टुकड़े को एक ओर फेंकता चलता और कहता, 'इनका कोई उपयोग नहीं।'

कभी कभी वह एकान्त में किसी कोने में बैठकर सोचा करता। उस समय उसका भतीजा पूछता,

'क्या बात है चाचा?'

'मुझे अकेले ही छोड़ दो।' वह उसी उदासी में उत्तर देता।

हम लोगों का एक और पड़ोसी था। हर इतवार को वह खिड़की पर अपनी बंदूक के साथ बैठ जाता और कुत्ते, बिल्लियों व मुर्गियों पर गोली चलाता। और उसके बीच में जो भी आ जाता उस पर वह क्रुद्ध होता। एक बार 'भला मानुस' उसके इस क्रोध का शिकार बन गया। उसके चमड़े के कोट के कारण उसके जेब में ही सभी छर्रे भर गए। मुझे उस समय की उसकी नीली आकृति की याद है। मेरे नाना ने उसे

उसकाया कि वह उसकी शिकायत करे परन्तु उसने उत्तर दिया, 'इतना क्यों परेशान करूँ ?' परन्तु एक दिन जब उसकी छोटी बन्दुकची का छर्रा नाना के पावों में लग गया तो नाना ने उसका अन्त कर दिया उसने दूसरे लोगों को इकट्ठा किया और सबों को गवाह बना कर अधिकारियों के पास शिकायत लिख दिया। बस इतना बहुत काफी था। फिर अचानक वह व्यक्ति भाग गया।

परन्तु उसकी बन्दुकची की आवाज रोज ही गली में सुनाई पड़ती। सुनते ही चाचा पीटर अपनी रविवारी टोपी पहनकर दरवाजे पर आ जाता। उस मकान के अन्य किराए-दार भी आकर इकट्ठे हो गए। वह फौजी अफसर तथा उसकी पत्नी भी खिड़की से झांकने लगे।

कभी कभी बेकार ही चाचा पीटर वहाँ दौड़ धूप मचा देता। और कहीं छिपकर वह बन्दूकची बार बार हवा में गोली छोड़ता जाता। और बिना किसी घबड़ाहट के ही हम लोगों के पास आकर पीटर बहुत संतोष से कहता। 'सभी बार खाली गए!'

एक बार कुछ छर्रे उसके गले व कंधे पर लगे और जब नानी सुई से उन्हें खोद खोद कर निकाल रही थी तो भाषण भी दे रही थी, 'तुम उस जानवर को इतना बढ़ावा क्यों देते हो। किसी दिन वह तुम्हें अंधा कर देगा।'

'नहीं, अकुलीना!' चाचा पीटर ने बहुत गम्भीरता से कहा, 'वह गोली नहीं छोड़ सकता।'

'लेकिन उसे बढ़ावा क्यों दे रहे हो?'

'बढ़ावा। उसे चिढ़ाता हूँ और बड़ा मजा आता है।' हथेली पर छर्रे रख कर उन्हें देखता हुआ वह कहता। 'यह भी गोली है भला? मेरी वह मालकिन। रानी तातियाना के यहाँ

एक सचमुच का फौजी अफसर था मारमाउन्टलीच। वह गोली के सिवा कुछ और न छोड़ता था। इगनाज की पेटी में उसने एक बोतल बांध दिया और उसे चालीस कदम की दूरी पर खड़ा किया। फिर इगनाज को हिलने को कहा। वह हिलता रहा और अफसर ने गोली चलाई। बोतल चकनाचूर होकर गिर पड़ी। हाँ केवल एक बार उस बेवकूफ इगनाज की गलती से उसके घुटने में चोट आ गई थी। फौरन डाक्टर आया। और एक मिनट में ही उसकी टाँग काट दी। उसकी टाँग को गाड़ दिया गया।'

'फिर उस बेवकूफ का क्या हुआ?'

'उसका कुछ नुकसान न हुआ। एक बेवकूफ के लिए भला हाथ या पांव की आवश्यकता ही क्या है। उसकी बेवकूफी ही उसे खाने पीने को दे देती है यही काफी है। फिर एक बेवकूफ को अपनी दिलचस्पी के लिए सभी खुश रखते हैं।'

ऐसी बातों से नानी को अधिक दिलचस्पी न होती परन्तु मैंने पूछा, 'क्या किसी को मार न सकता था?'

'जरूर, क्यों नहीं मार सकता? एक बार वह कुश्ती लड़ा था। एक बार लाफिताना के यहाँ एक जल्लाद आया। उसमें और मारमाउन्ट में झगड़ा हो गया। फौरन ही दोनों ने अपनी पिस्तौलें सम्हाल लीं। फिर लड़ने के लिए पार्क में गए। वहाँ रास्ते में ही दोनों ने एक दूसरे पर गोली छोड़ी। जल्लाद ने मारमाउन्ट के पेट में गोली मारी। मारमाउन्ट को कब्रगाह भेज दिया गया और जल्लाद को काकेशश भेजा गया। यह सब काम पलक मारते ही हो गया। इसी प्रकार सब हुआ। जहाँ अन्य लोगों ने उसकी चर्चा चलानी भी समाप्त कर दी। लेकिन लोगों को उसके सामान की चिन्ता थी।'

'सामान बहुत न रहा होगा।' नानी ने कहा

'हां बहुत नहीं था।' कह कर पीटर ने मेरी ओर इस प्रकार देखा मानो मैं बहुत बड़ा हो गया होऊँ। उसकी निगाह के कारण मैं तनिक चिन्तित हुआ। परन्तु उसने मुझे जाम दिया। रोटी पर लगाने के बाद चाकू में जो कुछ लगा रह गया था सो भी उसने मेरी ही रोटी पर लगाया। वह बाजार से मेरे लिए मिठाइयां लाता और—उसका व्यवहार सदा ही हमारे लिए दोस्ती का रहता।

'सुनो जवान,' वह कहता, 'बड़े होकर तुम क्या करने को सोच रहे हो। सेना की नौकरी या नागरिक नौकरी?'

'फौजी, सेना की।'

'बहुत अच्छे! आजकल फौजियों के दिन अच्छे हैं। हां, पादरियों का समय भी अच्छा ही है...... केवल प्रार्थना करना या मंत्र पढ़ना कोई बड़ा काम नहीं। मैं तो कहूँगा कि पादरी का काम फौजी से भी सरल है। लेकिन मछुए का काम सबसे आसान है। तुम्हें आदत पड़नी चाहिए बस!'

फिर उसने सब बताया कि कितनी प्रकार की मछलियां होती हैं और उन्हें किस किस ढंग से पकड़ना चाहिए।

'जब तुम्हारा नाना तुम्हें बेंत मारता है तब तुम क्रोधित क्यों होते हो?' उसने मुझसे पूछा, 'ऐसी कोई बात नहीं है। बेंत तो पढ़ाई के साथ रहेगी ही। और जो बेंत तुम्हें पड़ती है वह तो कुछ नहीं है। काश, कि तुमने तातियाना को किसी को पीटते देखा होता। उसके पास क्रिस्टाफर नामक एक व्यक्ति था, सिर्फ इसी काम के लिए। और अपने काम का वह उस्ताद भी था। कभी कभी आस पास के लोग आकर उससे कहते—'मेहरबानी करके उसे जरा एक को पीटने के लिए भेज दीजिए।' और वह उन पर कृपा कर देती।

फिर वह वर्णन करता कि किस प्रकार सफेद मलमल के कपड़े पहन कर सिर पर आसमानी रंग का रूमाल बांध कर लाल कुर्सी पर बरामदे में बैठकर क्रिस्तोफर की मार देखती।

'यह क्रिस्तोफर रायजान का रहने वाला था जो जिप्सी की तरह लगता था। उसकी मूछें कानों के ऊपर तक चढ़ आती थीं। वह दाढ़ी मूंड़ कर रखता था जिससे उसका चेहरा नीला मालूम होता। वह अपने को ही बेवकूफ समझता था इससे ज्यादा बातें न करता तथा।'

इस तरह की कहानियां मैं अपने नाना व नानी से भी सदा सुनता रहा हूं। इसलिए मैंने उससे कहा कि दूसरे ढंग की कहानी सुनाओ।

इसे सुनकर उसके चेहरे की झुर्रियां मानो नाच उठीं और हँसकर उसने कहा, 'तुम बहुत लालची हो। अच्छा! हममें एक रसोइया था।'

'किसका रसोइया था?'

'उसा तातियान के!'

'तुम तातियाना को तातियान क्यों कहते हो? क्या वह पुरुष थी।'

वह हँस पड़ा। 'वह स्त्री ही थी परन्तु अजीब शक्ल की! काली, नीग्रो जैसी। तुम्हें मैं रसोइया की बात बता रहा था।', और उसने कहानी शुरू कर दी।

कभी कभी छुट्टियों में या रविवार को मेरे ममेरे भाई आते थे। मामा माइक का लड़का और मामा जैक का लड़का। जब वे आते तो हम लोग छतों पर चढ़ते वहां से पड़ोसी घरों के आंगन में जिप्सी के बच्चों को खेलता देखते। उनके साथ जो

आदमी था वह हरे रंग का कोट पहने था जिसके किनारों पर किसी जानवर के बाल लगे थे! परन्तु उसका छोटा सा सिर पीला व गन्जा था। दोनों में से किसी एक शास्का ने यह प्रस्ताव रखा कि एक एक चिड़ा का बच्चा चुराना चाहिए और फौरन ही उन्होंने सारा कार्यक्रम बना लिया। वे दोनों नीचे दरवाजे से भीतर जाते और मैं उस व्यक्ति को बातों में फँसाता इसी बीच एक बच्चा गायब!

'लेकिन मैं उसे किस प्रकार बातों में फँसाऊँगा?'

'उसके गंजे सिर पर थूंक देना!' उसने प्रस्ताव किया।

क्या किसी व्यक्ति के सिर पर थूंकना पाप नहीं है? परंतु मैंने सुना है और देखा भी है कि कभी कभी बहुत बुरे काम भी किए जाते हैं। सो मैंने किस्मत के भरोसे अपना पार्ट अदा किया।

फौरन ही गोलमाल मचा! उस घर से एक सुन्दर युवक के नेतृत्व में पुरुष और स्त्रियों की लम्बी फौज हमारे आंगन में आगई। उस समय फौरन ही दोनों शास्का गली में चुपचाप आगए और यों अभिनय करने लगे जैसे उन्हें इस घटना का कुछ भी पता नहीं। मुझे अकेले ही मार पड़ी जिससे बतेलेन्गा के घर वाले तनिक शांत हुए।

मार से मेरे सारे शरीर में दर्द हो रहा था। मैं रसोई घर में पड़ा था कि चाचा पीटर आया। बिल्कुल सजा बजा कहीं जाने को तैयार। उसने कहा 'भले शैतानी बहुत खूब का काम किया था तुमने। उस बेहूदे बूढ़े को यही सजा मिलनी चाहिए थी।—उस पर थूकना ही उचित था। इस बार बहुत पिरा कर उसका सिर तोड़ देना, अच्छा!'

मेरे सामने फिर एक छाया स्पष्ट हो गई। वही साफ सुथरा बच्चों जैसा दिखने वाला बूढ़ा। उसका बिल्ली के बच्चों के साथ का खेलना। परन्तु उसी समय मुझे अपने ममेरे भाइयों की भी याद आई और मुझे गुस्सा आ गया। परन्तु फिर पीटर को देखते ही सब भूल गया। उसके चेहरे पर मुझे वही दया के भाव मिले जो पीटते समय नाना के चेहरे पर थे।

इस समय पीटर की बात मुझे अच्छी न लगी। मैं चीख पड़ा, 'भागो यहाँ से' मुझे घूरता हुआ वह वहाँ से चला गया।

तब से मेरी उसकी खटक गई और मैं उससे दूर ही भागता रहा। परन्तु एक भेदिए की तरह मैं उसके हर काम पर नजर रखता था

परन्तु बेतलेंगा वाली घटना के ठीक बाद ही दूसरी शर्मनाक घटना घटी। बेतलेन्गा का पूरा घर मुझे बहुत अच्छा लगता। इसके किराएदारों में अधिकांश महिलाएं थीं जिनसे मिलने दिन भर कुछ अफसर या विद्यार्थी आते रहते। फलस्वरूप गाने तथा हँसने की अटूट धारा सदा ही बहती रहती। अपनी साफ खिड़कियों से ही वह काफी सुन्दर मालूम होता।

परन्तु नाना को उनसे कोई दिलचस्पी न थी। वह कहता कि यहाँ सभी लोग नास्तिक हैं तथा खुदा के शत्रु हैं, खासकर वे औरतें।

बगल वाला ओवसिकोव की कोठी सदा गम्भीर रहती। पत्थरों की बहुत ऊँची कोठी। एक व्यक्ति जो बहुत लम्बा था, जिसके दाढ़ी न थी परन्तु मूँछें इस प्रकार उमेठता था कि दोनों कोने सूई की तरह नुकीले थे, कभी कभी उसके बाग में दिखाई पड़ जाता। फिर कभी कभी एक दाढ़ी वाला बूढ़ा और

लंगड़ा भी दिखाई पड़ता जो लंगड़ाता हुआ अस्तबल की ओर जाता जहाँ बहुत खूबसूरत तथा पीले रंग की एक घोड़ी बंधी रहती। वह सीटी बजाता हुआ घोड़ी को बगल में ठोंकता और खुश होता।

लगभग रोज ही शाम को तीन बच्चे भी बाग में आकर खेलते। सभी एक से कपड़े पहनते। भूरे रंग का कोट पैंट। सभी के चेहरे गोल थे तथा आँखें चमकदार थीं। वे सभी एक दूसरे से इतना मिलते जुलते कि दिवाल की उस सूराख से उनकी बड़ाई छोटाई केवल ऊँचाई से जान पाता। मैं यों खड़ा होकर उन्हें देखता कि वे मुझे न देख पाते। उनका खेल का ढंग मेरे लिए अनोखा था। परन्तु खेल में वे इतने खुश होते थे कि मुझे सब कुछ अच्छा लगता। मुझे उनके कपड़े भी अच्छे लगते और सब से अधिक उनका आपसी प्रेम मुझे भाया। कभी कोई गिर पड़ता तो दूसरे हँसते। परन्तु उनके हँसने में चिढ़ाने का भाव न होता इससे हँसी अच्छी ही लगती। गिरने वाले की मदद के लिए दूसरे फौरन दौड़ पड़ते। और अपने रुमाल से उसकी धूल झाड़ देते। मैंने ऐसे खुश बच्चे पहले न देखे थे।

एक दिन पेड़ पर चढ़ कर मैंने उनके लिए सीटी बजाई। वे रुक गए फिर सभी पास आए। मैंने समझा कि शायद वे मुझे ढेले मारेंगे। मैं नीचे उतरा फिर अपने जेबों व कमीज के आगे के भाग में ढेले भर कर पुनः ऊपर चढ़ा। परन्तु तब तक मुझे भूलकर वे दूसरे कोने में जाकर खेलने लग गए थे। इससे मुझे दो प्रकार की निराशा हुई। एक तो कि मैं उनसे लड़ने नहीं गया था। दूसरे ठीक उसी समय एक खिड़की से किसी ने उन्हें पुकारा—बच्चो भीतर आने का समय हो

गया।—और फौरन ही परन्तु धीरे धीरे तीनों भीतर चले गए जैसे एक के पीछे दूसरी बत्तकें चलती हैं।

रोज ही मैं इस आशा में कि वे मुझे खेल में शामिल होने की दावत देंगे मैं उसी जगह पेड़ पर चढ़ता परन्तु कभी भी दावत न मिली। परन्तु मैं सदा ही अपने विचारों में उनके साथ ही होने की कल्पना करता। फलस्वरूप उनके खेल में ही मैं हँस पड़ता या चिल्ला उठता। जिससे वे लोग मुझे देखकर पास आते और मैं शरमा कर उतर आता।

आँख मुदौवल के खेल में एक दिन बीचावाला भाई 'चोर' हो गया। सो नियमानुसार वह कोने में खड़ा होकर गिनती गिनने लगा। और दूसरे भाई छिपने लगे। बड़ा भाई। बरामदे में खड़े एक स्लेज (गाड़ी) पर चढ़ गया। परन्तु छोटा वाला छिपने की जगह न पाकर कुएँ के चारों ओर ही घूमता रहा। 'चोर' भाई की गिनती समाप्त हो रही थी अतः छोटा वाला भाई जल्दी से कुएँ पर चढ़कर वहाँ लटकती बालटी में घुस गया। फिर एक हल्की सी आवाज के साथ बाल्टी नीचे जाने लगी और आँखों से ओझल हो गई। मैं बिल्कुल ही काठ हो गया कि बहुत तेजी से वह नीचे जा रहा था। परन्तु अपने को सचेत कर मैं उनके बाग में कूद पड़ा और चिल्लाने लगा, "वह कुएँ में गिर पड़ा है।'

मँझला भाई मेरे साथ ही कुएँ तक गया। उसने रस्सी पकड़ ली परन्तु वह खुद ही अब खिंचने लगा तो रस्सी छोड़ दी। परन्तु मैंने उसी समय रस्सी पकड़ ली। तब तक बड़ा भाई भी आकर रस्सी खींचने में मेरी मदद करने लगा। बार बार वह कहता, 'होशियारी से।'

एक मिनट में ही छोटे भाई को हम लोगों ने खींच लिया और बाहर निकाला। छोटा भाई बुरी तरह डर गया था। उसके दायें हाथ से थोड़ा सा खून निकल रहा था और ओंठ में रगड़ लग गई थी। उसने हल्की मुस्कान के साथ आँख मूँदी फिर हँसा और पूछा मैं कैसे गिरा था ?

'यह तेरी मूर्खता थी !' मझले भाई ने कहा। उसके चेहरे को पोंछते हुये उसने कहा। परन्तु बड़ा भाई डर गया था। उसने कहा, 'अब हमें अन्दर जाना चाहिये। इस बात को हम छिपा नहीं सकते।'

'क्या तुम्हें इसके लिये मार पड़ेगी ?' मैंने पूछा।

उसने सिर हिलाया फिर मेरी ओर हाथ बढ़ाकर कहा, 'तुम बहुत जल्दी आये।'

मैं बहुत खुश हुआ और उसका हाथ थामने को हाथ बढ़ाया कि वह अपने भाइयों की ओर मुड़ गया। 'हमें भीतर जाना चाहिये नहीं इसे सर्दी लग जायगी। मुझे केवल यही कहना चाहिये कि यह गिर पड़ा था, कुएँ का नाम न लेना चाहिये।'

'नहीं।' छोटे वाले ने कहा, 'कहना चाहिये कि कीचड़ वाले गढ़े में गिरा था। ठीक है !'

और वे भीतर चले गए।

यह सब इतने कम समय में ही हो गया कि जब मैं फिर पेड़ के पास आया तो उसकी डालें तब तक हिल रही थीं तथा पीली पत्तियाँ गिर रही थीं।

इसके बाद उन भाइयों को लगभग एक सप्ताह तक मैंने न देखा परन्तु जब वे आये तो पहले से ज्यादा खुश। मुझे पेड़ पर देखकर बड़ा भाई पुकार उठा। 'नीचे आकर हमारे साथ खेलो।'

उस दिन बरामदे में पड़ी उसी स्लेज पर हम सब बैठे। एक दूसरे को खूब देखा और और खूब बातें कीं।

'तुम्हें कभी बेंत पड़ी है?' मैंने पूछा।

'जरूर!'

मुझे आश्चर्य हुआ कि ऐसे बच्चे भी मेरी ही तरह पिटा करते हैं। इससे मुझे अत्यन्त क्लेश हुआ।

'तुम चिड़ियों को क्यों पकड़ते हो?' छोटे ने पूछा।

'मुझे उनका गाना अच्छा लगता है।' मैंने उत्तर दिया।

'उन्हें पकड़ना बुरा है। उन्हें भी आजाद होकर घूमने देना चाहिए।'

'परन्तु मैं यह नहीं चाहता।'

'तो तुम मेरे लिए भी एक पकड़ दोगे?'

'तुम्हारे लिए? कैसी?'

'वह जो पिंजड़े में भी फुदकती है।'

'तुम गौरैया चाहते हो।'

'उसे बिल्ली मार डालेगी और पापा भी उसे पसन्द न करेंगे।'

'हाँ वह पसन्द न करेंगे।' बड़े ने कहा।

'तुम्हारे माँ है?' मैंने पूछा।

बड़े ने कहा, 'नहीं।' परन्तु मझले ने कहा, 'जो है वह हमारी सगी माँ नहीं है। हमारी तो मर गई।'

'विमाता है क्या?' मैंने पूछा।

'हाँ।' बड़े ने सिर हिलाया

इस पर तीनों बच्चे जैसे काले पड़ गये। मैंने नानी की कहानियों में जान लिया था कि विमाताएँ क्या होती हैं। अतः उनकी सूनी दृष्टि का मैं अर्थ समझ गया। मैं समझ गया कि विमाता कितनी डाइन होगी।

'तुम्हे तुम्हारी सगी मां मिल जायगी। देख लेना।' मैंने उन्हे सांत्वना दी।

बड़े ने कहा, 'ऐसी बातें नहीं होतीं। जब वह मर गई है तो कैसे मिलेगी?'

'नहीं होता? परन्तु बहुत बड़ी तदाद में मृतक लोग और वे भी जो टुकड़े टुकड़े काट डाले गए हों वे भी जीवन के मंत्र के पानी के पड़ने पर जी गए हैं। खुदा सदा मौत नहीं भेजता। मौत तो, किसी न किसी चुड़ैल के किए होती है।'

फिर बहुत जल्दी से मैंने नाना की बताई कहानियाँ सुनाना शुरू किया तो बड़ा हँस पड़ा, 'अरे वही परियों वाली कहानियाँ। सब मालूम हैं।' परन्तु दोनों दूसरे भाई मुंह बाए एक दूसरे का हाथ पकड़े ध्यान मग्न सुनते रहे।

शाम हो रही थी। छत के ऊपर का बादल लाल हो रहा था कि तभी कड़ी और नुकीली मूछों वाला वह बूढ़ा आदमी हमारे सामने आ खड़ा हुआ। उसने एक लम्बा सा पादरियों जैसा चोंगा तथा बालों वाली टोपी पहन रखी थी। उसने मेरी ओर हाथ दिखाकर कहा, 'यह कौन है?'

बड़ा उठा और नाना के घर की ओर सिर हिलाकर कहा, 'यह उस घर से आया है।'

'इसे किसने बुलाया?'

सभी बच्चे स्लेज से उतरे और चुपचाप घर में चले गए। इस समय पुनः इन्होंने मुझे बत्तकों की याद दिला दी। उस व्यक्ति ने मेरे कंधे को पकड़कर अपनी ओर खींचा। फिर दरवाजे के पास लाकर बाहर कर दिया। मैं डर कर चीख पड़ता परन्तु मैं बोल नहीं पाया। मैं बाहर गली में आ और दरवाजे पर खड़ा होकर वह उँगली दिखाकर मुझे सचेत कर रहा था, 'फिर कभी यहाँ मत आना।'

मुझे भी गुस्सा आ गया। मैं चिल्लाया, 'अरे बूढ़े भूत, मैं खुद कभी यहाँ आना नहीं चाहता।'

एक बार फिर उसकी बाहें उठीं और मैं खींच लिया गया तभी उसकी आवाज यों लगी जैसे सिर पर किसी ने हथौड़ा मारा हो। 'तेरा नाना घर पर है।'

मेरे अभाग्य से वह घर पर ही था। सिर निकाल कर दाढ़ी ऊँची करके उसने अपनी फीकी रोशनी वाली आखें से उस बूढ़े को देख कर कहा, 'देखिए, इसकी माँ बाहर है और मैं काम में फँसा रहता हूँ। इससे इसकी देख रेख कोई नहीं कर पाता। क्या तुम उसे क्षमा नहीं कर दोगे कर्नल।'

कमरे में चारों ओर देख कर कर्नल चला गया। मुझे मार पड़ी और मैं पीटर की गाड़ी पर चढ़ गया 'भले आदमी फिर कोई बुरी हरकत!' पीटर ने पूछा, 'इस बार क्या किया?'

जब मैंने उसे सब बता दिया तो उसने पूछा, 'लेकिन तू उनसे दोस्ती क्यों करना चाहता है। वे संपोले हैं। और तुम्हें तो इसका फल मिल गया न!'

वह बहुत देर तक इसी प्रकार कहता रहा। पहले तो मार से हो रहे दर्द के कारण हमने उनसे बदला लेने की सोची। तभी सोचा कि अवश्य ही उन तीनों बच्चों को भी मार पड़ी होगी। फिर हमें कोई शिकायत न रह गई।

'उन्हें मार नहीं पड़नी चाहिए।' मैं चिल्लाया, 'वे बड़े प्यारे बच्चे हैं। तुम जो कुछ भी कह रहे हो झूठ है।'

उसने एक अर्थभरी दृष्टि से मुझे देखा फिर एकाएक मुझे गाड़ी से अलग होने को कहा। मैं कूद पड़ा और कहा, 'मूर्ख!'

उसने मुझे दौड़ा लिया, परन्तु बेकार मैं दौड़ता रहा और उसने चिल्लाना शुरू किया. 'मैं मूर्ख हूँ। झूठ बोलता हूँ। रह जा मुझे पकड़ लेने दे तो।'

तभी नानी रसोई घर से निकल आई और मैं उसके पास भाग गया। उसने शिकायत करनी शुरू की।

'मुझे इस छोकरे के कारण तनिक भी शांति नहीं। यह सदा ही हमें कोसता रहता है। मेरी माँ और हर को गाली देता है।'

उसकी झूठी शिकायत को सुनता हुआ मैं उसे घूरता रहा तभी नानी ने कहा, 'तुम झूठ बोल रहे हो पीटर यह सच है। वह कभी किसी को नहीं कोसता।' परन्तु यदि नाना होता तो वह अवश्य ही पीटर की बात मान लेता।

फिर उस दिन से हम दोनों के बीच युद्ध मचा रहा। वह सदा ही मेरी गलती खोजने में व्यस्त रहता। उसने हमारा पिंजड़ा खोल कर चिड़ियों को उड़ा दिया। उनके पीछे बिल्ली दौड़ाई जिसने कुछ को तो अवश्य ही पकड़ लिया। वह सदा ही बेकार के कारणों को बढ़ा चढ़ा कर नाना से मेरी शिकायतें करता रहता। नाना सभी पर विश्वास कर लेता। अब उसके प्रति मेरा विश्वास पक्का हो गया कि वह बूढ़ों का कपड़ा पहने एक बच्चा ही है।

इसके बदले में मैं यह करता कि उसके जूते को छिपा देता फिर उसकी सीवन खोल देता ताकि जब वह पहने तो रास्ते में ही न टुकड़े टुकड़े हो जाएं। एक दिन उसकी टोपी में मैंने काली मिर्च छोड़ दी। वह एक घंटे तक लगातार छींकता रहा जिससे उसका उस दिन का सब काम नष्ट हो गया।

रविवार को खास तौर से वह मुझपर निगरानी रखता था। कभी कभी वह उन बच्चों से मिलने के हमारे गुप्त कार्य को

देख लेता तो भागा हुआ नाना को बताने जाता। परन्तु किसी प्रकार भी यह खतरा कम न हुआ और बच्चों से मेरी घनिष्ठता बढ़ती ही गई। उनकी चारदिवाली और मेरे घर के बीच में एक छोटी सी गली थी। इसमें घास पात और झाड़ियाँ उग आई थीं। उन्हीं के साए में मैंने उनकी चारदिवाली में एक रास्ता फोड़ा जो दिखाई न पड़ता था। वे बच्चे भी एक एक करके या कभी दो भी आकर हमसे मिलते थे। उसी रास्ते के सहारे हम लोग बातें करते बहुत धीरे धीरे। दो भाई तो बातें करते और कोई तीसरा दूर खड़ा यह देखा करता कि कहीं कवैल तो नहीं आ रहा है।

उनके दुःखी जीवन से मुझे भी क्लेश हो रहा था। हम लोग पिंजड़े की चिड़ियों की बातें करते और भी बहुत सी दूसरी बातें करते परन्तु कभी भी उन बच्चों ने अपने पिता या कि माता की बात नहीं की। वे सदा ही किसी नई कहानी की माँग करते और मैं नानी की कहानी दुहरा देता। जैसे कि मैं कहानी की घटनाओं को जानता होऊँ। अगर कभी भूलता तो उन्हें इन्तजार करना पड़ता और जाकर मैं नानी से ठीक ठीक पूछ कर आता। नानी सदा खुश रहती।

मैंने उन्हें अपनी नानी के विषय में कुछ बताया। एक दिन बड़े ने तनिक झेंप के साथ कहा, 'लगता है कि तुम्हारी नानी बहुत अच्छी है। हमारे भी एक बहुत अच्छी नानी थी।'

अपने अतीत की बातें कहते हुए उसका गला भर आता था। एक दिन जब हम लोग बातें कर रहे थे तभी बिना हमारे जाने ही अचानक पीटर आ उपस्थित हुआ और चीखा, 'फिर!'

और हम सभी डर गए।

मैं अनुभव कर रहा था कि धीरे धीरे पीटर अधिक गम्भीर होता जारहा था और उसकी बात करने की आदत कम हो रही थी। जब वह ठीक रहता तो लम्बी आवाज के साथ दरवाजा खुलता था और जब वह थका या व्यथित होता था तो एक कराह की तरह धीरे से दरवाजे की आवाज आती और खो जाती थी।

उसके भतीजे ने शादी करली थी और अपनी पत्नी के साथ देहात चला गया था। अस्तबल में पीटर अब अकेला ही रहता था। अस्तबल की खिड़की अब टूट चली थी तथा वहाँ, चमड़े, तेल और तमाखू की किंचित ऊबा देने वाली दुर्गन्ध सदा ही व्याप्त रहती थी जिससे मैं बहुत जल्दी ही दूर भाग जाता था। उसकी अब यह आदत पड़ गई थी कि रात को सोते समय भी वह लैम्प जलाए रखता था जिससे नाना को सदा ही आपत्ति रहती थी, 'एक दिन तू मुझे जला कर छोड़ेगा।'

'नहीं, ऐसा नहीं होगा।' वह उत्तर देता। 'इससे परेशान नहीं होना चाहिए। मैं लैम्प को पानी से भरे बर्तन में रखता हूं।' अब वह अक्सर नानी की शाम की दावत में गायब रहता, इससे उसके साथ उसके नाम का डिब्बा भी न दिखाई पड़ता। अब वह पहले से अधिक बूढ़ा हो चला था। चेहरे की प्रत्येक झुर्रियाँ गहरी होती जारही थीं तथा उसके चलने से लगता जैसे पाँव ठीक न पड़ रहे हों। एक पंगुल की तरह।

एक दिन सुबह सुबह, जब रात को बहुत बर्फ पड़ी थी, नाना के साथ मैं रास्ता साफ कर रहा था तभी अचानक दरवाजा खुला और एक सिपाही भीतर आया। आकर पहले उसने दरवाजे को भीतर से बन्द कर लिया। फिर अपना

मोटा व भद्दा अँगूठा दिखा कर नाना को उठने का इशारा किया।

नाना उठा तो वह झुका और कुछ इतने धीरे से कहा कि मैं न सुन सका। नाना ने आश्चर्य से कहा, 'यहाँ, कब, या खुदा!'

फिर हाँफते हुए कहा, 'या मेहरबान खुदा!'

सिपाही ने इशारा किया, 'शि..................धीरे बोलो।'

चारों ओर देखकर नाना ने मुझसे कहा, सामान लेकर भीतर जाओ।

मैं एक कोने में छिपकर उन्हें देखता रहा। वे पीटर के अस्तबल में गए। मैंने देखा कि सिपाही ने एक हाथ का दस्ताना उतार कर दूसरे हाथ पर पटका और कहा, 'वह जानता था कि हम लोग उसके पीछे लगे थे। उसने गली में घूमने के लिए घोड़े को लावारिस छोड़ दिया है और अवश्य ही खुद यहीं कहीं छिपा हुआ है।'

नानी को बताने मैं भागकर रसोईघर में गया। उसका सिर उसके काम के साथ साथ हिल रहा था। उसने बिना किसी उत्सुकता के ही बातें सुनकर कहा, 'भाग जा, शायद उसने कुछ चुराया है। तेरा इससे क्या काम?'

जब मैं बाहर गया तो नाना दरवाजे पर खड़ा था; उसके सिर की टोपी उतार ली थी और आकाश की ओर देख रहा था। गुस्सा उसके चेहरे पर साफ दिखायी पड़ रहा था और गुस्से से ही उसका एक पाँव भी काँप रहा था। मुझे देख कर पाँव पटक कर उसने पुकारा, 'मैंने तुमसे

भीतर जाने को कहा है ?' परन्तु मुझे साथ लेकर वह रसोईघर तक गया और पुकारा, 'मालकिन जरा सुनना ।'

नानी और नाना दूसरे कमरे में चले गए । वहाँ वे फुस-फुसा कर बातें कर रहे थे । जब नानी रसोईघर में लौट कर आई तो उसके चेहरे पर के भावों से मैं जान गया कि जो कुछ हुआ है वह बहुत भयानक और खतर-नाक है ।

'नानी तुम इतनी डरी सी क्यों लगती हो ?' मैंने पूछा ।

'तू खामोश रह !' कहकर वह शाँत ही रही ।

फिर उस सारे दिन तक जैसे घर पर कोई भयानक छाया मंडराती रही । नाना नानी फुसफुसाकर बातें करते परन्तु दोनों की आँखों में भयकर बेचैनी थी ।

नाना ने खाँसकर नानी से कहा, 'घर भर में रोशनी कर दो ।'

हम लोग जल्दी से खाने पर बैठे और बिना स्वाद लिए ही यों जल्दी जल्दी बेचैनी से खाने लगे जैसे कोई अभी आने वाला हो । नाना बहुत थका सा लगता था और धीमे आवाज में उसने कहा, 'आदमियों पर भी क्या राक्षसी साया रहती है ।'..................सभी जगह'..........अरे वाह !'

नानी ने कोई उत्तर न दिया ।

जाड़े का वह सुनहला दिन बहुत चिन्ता में बीता । शाम के पूर्व ही दूसरा सिपाही आया । चूल्हे के पास बैठ कर बातें करने लगा । नानी ने पूछा, 'इसका पता कैसे लगा ?'

'हमीं लोगों ने सब पता लगाया। तुम चिन्ता मत करो।'

मैं खिड़की पर बैठा था कि बगल वाले पेत्रोनवा के घर से रोने की आवाज आई, 'दौड़ो, देखो क्या हो रहा है।'

सिपाही के पंजे से पकड़ी जाकर उसने रोना गिड़गिड़ाना शुरू किया, 'जब मैं गाय दुहने गई तो वहाँ''''''वहाँ काशारीन के बाग में जूते की तरह लगता है ? मैंने समझा''''''

नाना ने उसे डाँटा। 'तू मूर्ख है, झूठी है। मेरे बाग की चारदिवाली कितनी ऊँची है। भला तू कैसे देख सकती है। झूठी !'

'मैं झूठ क्यों बोलूंगी ? मैंने पांव के निशान देखे। वहाँ तक गई। कि तभी तुम्हारे बागीचे में बर्फ की ढेर के पार 'वही' था।'

'कौन, कौन, यह प्रश्न कई बार किया गया था परन्तु उसने उत्तर न दिया। परन्तु दूसरे ही क्षण सभी एक दूसरे को धक्का देते हुये बाग में घुसने लगे। वहीं कोने में गद्दे से लग कर वह पड़ा था। उसका सिर उसकी छाती पर था।

उसकी भयानक शक्ल से मैंने अपनी आँखें मूँद लीं। आँख खोली तो देखा कि उसके दाहिने हाथ में उसकी छूरी थी और उसका दूसरा हाथ कटा, बर्फ पर पड़ा था। इस समय वह अपने जीवन काल से अधिक मासूम मालूम होता था। उसने अपनी आत्महत्या की थी। उसके चारों ओर का भयानक वातावरण मुझे चिन्तित कर रहा था। बिना कुछ समझे हुये पेत्रोनवा चीखने लगी और सिपाही ने डाँटा, और वेलो से नाना ने कहा, 'खबरदार उसके पाँवों के निशान पर पाँव न पड़े !'

एकाएक जमीन पर कुछ देखकर नाना क्रोध से भड़क उठा और सिपाही को डांटने लगा, 'देखो, तुमने क्या बखेड़ा मचा रखा है ? अब यह खुदा के हाथ में है। खुदा का निर्णय, सुनो !.....तुम यह सब बेकार.....?'

इन शब्दों से बाग में सन्नाटा छा गया। हर ने लम्बी साँस ली और अपने पर क्रास बनाया। भीड़ बढ़ने लगी। कुछ लोग पेत्रोनवा के चारदिवाली पर चढ़े और गिर पड़े। उन्हें चोट लगी। अचानक नाना ने कहा, 'पड़ोसियों तुम्हें तनिक भी होश नहीं है। तुम लोग हमारी रसभरी (मकोइआ) की झाड़ी नष्ट कर रहे हो।'

नानी रो रही थी। उसने मेरा हाथ पकड़ा और घर के भीतर आई।

'उसने क्या किया ?

'तुमने नहीं देखा क्या ?'

उस सारी रात घर भर में शोर मचा रहा। पुलिस ने वहाँ पहरा लगाया था। अगर उधर कोई भी आता जाता तो सिपाही चीखता, 'कौन है ?'

नानी उन्हें चा। पिलाती रही। खाने की मेज पर एक दाढ़ीवाला बैठा था। उसके चेहरे पर चेचक के दाग थे। उसने कहा। 'उसका असली नाम अब तक पता नहीं लगा।..... वह इलेत्मा में पैदा हुआ था। अब तक सिर्फ यही पता लगा है।.......और यह गूँगा स्तेफेन......यह उसका नकली नाम था...... वह ठीक था, न गूँगा न बहरा।............ ......वह सब जानता था............और एक 'और भी तीसरा साझीदार है............अभी तक पता नहीं लगा।'

'या खुदा !' पेत्रोवना बोला, उसे पसीना छूट रहा था।

भट्टी के किनारे बैठा मैं सब को देख रहा था कि सभी कितने अजीब थे।

दस

एक शनिवार की सुबह को मैं खड़ा पेत्रोनवा के बाग में कुछ लाल व सुन्दर चिड़ियों का बर्फ के ऊपर इस डाल से उस डाल पर उड़ना देख रहा था। चिड़ियों की फुर्ती देखकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही थी। मुझे इससे अधिक खुशी भला क्या होती मेरे सामने बर्फ से ढँकी जमीन, बर्फ का ही सन्नाटा और चिड़ियों का मन मोहक संगीत। स्लेज की आवाज।

बाहर मैंने बगीचे की दीवाल पर चढ़कर देखा, गली में एक बहुत प्रसन्नचित्त व्यक्ति सीटी बजाता हुआ तीन घोड़ों को हांक रहा था जो एक बंद स्लेज में जुते थे। मेरे हृदय की धड़कन तेज हो गई और मैंने पूछा, 'किसे लाए हो?'

उसने मुझे तनिक अवहेलना से देखा अपने हाथ को ऊपर करके जिससे वह रास पकड़े था फिर उसका अपनी जगह पर बैठते हुए उसने कहा, 'पादरी को।'

मुझे उसपर यकीन न आया। अगर पादरी होता तो हम लोगों के बीच क्यों आता। तभी गाड़ीबान ने चाबुक मार कर

घोड़ों को तेज किया और घोड़े खेतों की ओर बढ़ गए। मैं थोड़ी देर तक खड़ा उन्हें देखता रहा फिर दरवाजा बन्द कर लिया।

रसोई घर में आते ही मुझे जो आवाज सुनाई पड़ी वह मेरी माँ की आवाज थी जो साफ सुनाई पड़ी। वह कह रही थीं, 'अब क्या तुम मुझे मार ही डालना चाहते हो ?'

मुझे इतना उत्साह हुआ कि मैंने वह बर्फीले कपड़े भी न उतारे और भीतर भागा कि नाना ने मेरी बांह पकड़ ली, 'तेरी माँ वापस आ गई.........उसके पास जा.........परन्तु रुक...रुक !' फिर उसने मुझे यों झटका दिया कि मैं गिरते-गिरते बचा। फिर उसने कहा, 'जा !'

भींगे हुए दरवाजे पर मैंने धक्का दिया। मेरे हाथ पांव भी बर्फ के कारण सुन्न हो रहे थे। फिर भी घबड़ाहट में जब मैं भीतर गया तो मुझे कुछ भी दिखाई न पड़ा।

'यह रहा !' मां ने कहा। 'अरे वाह, यह कितना बड़ा हो गया ! क्या बात है, क्या तू मुझे पहचान नहीं रहा है ? इसके कपड़े कैसे हैं ? देखो, इसके कान सफेद हो रहे हैं। जल्दी देखो माँ।'

मुझपर झुककर उसने मेरे बर्फीले कपड़े अलग किए तथा यों घुमाती रही मुझे, जैसे मैं उसके हाथ में केवल एक गेंद होऊँ। उसकी लम्बी चौड़ी आकृति बहुत ही भव्य लग रही थी। वह मर्दों के लबादे की तरह ही का एक लम्बा लाल रंग का कोट पहने थी ऐसा कपड़ा इसके पूर्व मैंने न देखा था।

उसका चेहरा मेरे स्मरण से अधिक ताजा था और उसकी आंखें अधिक बड़ी और गहरी और उसके बाल अधिक गहरे

सुनहले । ज्यों ज्यों वह मेरे कपड़े उतार रही थी उसके लाल ओंठ व्यथा से फैलते जा रहे थे। वह मुझे दरवाजे के पास ले गई और पूछा, 'कुछ बताओ ! क्या तुम्हें मुझे यहाँ देख कर खुशी नहीं हुई ? ओह कितनी गीली व गंदी कमीज है।'

तब उसने मेरे कान पर गर्म तेल रगड़ कर उन्हें ठीक किया। परन्तु जब वह मुझपर झुकी थी उस समय उसके शरीर से जो खुशबू आरही थी वह इतनी सुहावनी थी कि मेरा दर्द उसी समय चला गया था। मैं इतना खुश था कि बोल न सका और उससे चिपक कर उसकी आँखों में ही घूरता रहा। तभी मैंने सुना कि नानी कह रही थी, 'यह कितना धूर्त है .... इसे कोई काबू में नहीं रख सकता। उसे नाना का भी डर नहीं लगता। बारबरा !'

'जाने दे माँ। खुदा के लिए जाने दे !'

और मुझे माँ के सिवा सब कुछ बुरा, पुराना लग रहा था ! मुझे खुद भी लग रहा था कि मैं नाना की तरह बूढ़ा हूँ।

अपने घुटनों से मुझे दबाकर अपने मुलायम हाथों से मेरे बाल पकड़ कर वह कह रही थी, 'उसे कोई देखने वाला चाहिए। और अब स्कूल लायक भी हो गया है। क्या तुम पढ़ना सीखना चाहोगे ?'

'मैं तो भी पढ़ना था सीख चुका हूँ।'

'लेकिन अभी कुछ और जानना होगा। तुम कितने ताकतवर हो।' फिर वह बहुत देर तक मेरे साथ खेली और हँसी से मुझे हँसाती रही।

जब नाना भीतर आया तो उसका चेहरा सूखा था परन्तु आँखों से आग बरस रही थी। माँ ने मुझे एक ओर कर दिया

फिर बहुत तेज तथा रोष भरे स्वर में पूछा, 'पिता, क्या तय किया? क्या चाहते हो कि मैं चली जाऊँ?'

वह खिड़की पर चुपचाप खड़ा रहा। अपने नाखून से छड़ों पर जमी बर्फ खुरचता रहा। ऐसे मौकों पर मैं बहुत सतर्क हो जाता हूँ। तभी नाना ने कहा,

'एलेक्सी! बाहर जाओ!'

'क्यों?' माँ ने पूछा। और मुझे अपने पास खींच लिया। 'तुम इसी कमरे में रहोगे।' फिर वह उठी फिर नाना के पीछे जाकर खड़ी हो गई जैसे लाल बादल ने उसे ढंक लिया हो फिर कहा, 'पिता, मेरी बात सुनो।'

एक झटके के साथ वह घूमा और डाँटा, 'चुप रहो!'

माँ ने बहुत शान्त होकर कहा, 'मैं तुम्हें यों चीखने न दूँगी।'

नानी उठी और पुकारा, 'बारबरा, आ इधर।'

नाना ने एक कुर्सी पर बैठते हुए कहा, 'चुप रहो। पहले बताओ वह कौन था। वह कैसे आया।' फिर क्षण भर बाद बिल्कुल बदली आवाज में कहा, 'बारबरा, तूने हमारी बहुत बदनामी की है।'

'कमरे से बाहर जा!' नानी ने मुझे कहा और मैं रसोई घर में चला गया। वहाँ मुझे घुटन होने लगी। मैं फिर भट्ठी पर चढ़ गया। वहाँ से सब कुछ सुनाई पड़ता था। उनकी बातें कभी तेज कभी धीमी होती रहीं। वे कभी सब एक साथ बोलते फिर यों चुप हो जाते जैसे सभी सो गए हों। वे किसी एक बच्चे की बात कर रहे थे जिसे मेरी माँ ने अभी पिछले दिनों जन्म दिया था और पालन पोषण के लिए कहीं और चला गया था। मुझे ताज्जुब यह था कि मैं समझ नहीं रहा

था कि आखिर नाना क्यों नाराज था। माँ ने उससे बिना आज्ञा लिए ही एक बच्चे को जन्म दिया या बच्चे को यहाँ नहीं लाई इसलिए।

बाद में वह भी रसोईं घर में आया, बहुत परेशान थका हुआ और उसका चेहरा उदास था। उसके पीछे पीछे नानी थी जो अपने ब्लाउज से आंखें रगड़ रही थी। नाना एक बेंच पर बैठकर झुका हुआ अपना ओंठ चबाने लगा। और नानी उसके सामने घुटनों के बल बैठकर उसे समझा रही थी। 'उसे क्षमा कर दो, मालिक! उसे तुम्हें यों बाहर न ढकेल देना चाहिए। क्या तुमने बहुत बड़े शाही खानदानों या लखपतियों के यहाँ होने वाली इस प्रकार की घटनाओं की चर्चा नहीं सुनी! तुम जानते हो कि औरतें क्या हैं। आओ उसे क्षमा कर दो। संसार में कोई भी निर्दोष नहीं है।'

दिवाल से उँठगकर नाना ने उसे घूरकर देखा फिर यों अट्टहास करके हँसा कि सुनने में लगा कि वह रो रहा हो। उसने कहा, 'अब फिर! अगर तेरे ही तक बात हो तो कुछ भी माफ किया जा सकता है। समझी!' नानी उस पर झुकी और उसका शरीर पकड़ कर हिलाया फिर कहा, 'भले आदमी! अपना मजाक मत बनने दो। यहाँ हमारा जीवन तो जैसे कब्र का जीवन है! हमारे लिए कोई खुशी कोई शांति नहीं है। अगर यही रहा तो शीघ्र ही हम लोग भी भिखमंगे हो जाएँगे।'

फिर नानी उसके बगल में खड़ी हो गई और कहा, 'क्या तुम इससे घबड़ाते हो कि भीख माँगना पड़ेगा। तुम्हें सिर्फ घर में रहना होगा। मैं माँग लाऊँगी। मुझे मिल जायगा तुम चिन्ता मत करो।'

इस पर उसे भी हँसी आ गई। उसने बकरे की तरह सिर हिलाया और नानी ने उठकर नाना को अपनी बाहों में भरना चाहा परन्तु वह बहुत छोटा था।

'अरे तू बड़ी मूर्ख है।' नाना ने कहा, 'केवल तू ही तो मेरे लिए बची है। तुझे सब मालूम है कि इनके लिए हमने क्या क्या पाप नहीं किए और इन्हें देख अब।'

इस बात से मेरा भी जी भर आया। और मेरे आँसू अपना बांध तोड़ कर बाहर आ गए। मैं भट्टी पर से कूदकर उनके पास आ गया। मेरी सिसकियाँ खुशी की थीं—इनकी इतनी प्यारी बातें सुनकर। उनके दुःख और संतोष के लिए, माँ के आने की खुशी के कारण—उनके प्यार के लिए। इसी लिए मैं रो पड़ा था। नाना धीमी आवाज में कह रहा था। 'तो अब तेरी माँ आ गई। अरे''तू!'

तभी हम दोनों को दूर करके वह क्रोध में चिल्ला उठा। 'वे हमारा नाश करना चाहते। मेरी ओर से मुंह फेर लिया है।...जा उसे बुला ला। यहाँ क्यों खड़ी है?'

नानी भाग कर गई और नाना सिर झुका कर खुदा से कहने लगा, 'देखो, दया के बादशाह, देखो, हमारे साथ क्या हो रहा है।'

खुदा से जब वह कुछ कहता तो लगता कि वह अपने को खुदा का बड़ा दूत मानता है—यह मुझे अच्छा न लगता।

ज्यों ही माँ रसोई घर में आई कि उसके लाल लबादे की रोशनी चमक उठी। वह नाना नानी के बीच में बैठी और उसकी दोनों बाहें उनके कन्धे पर थीं। वे अब बिलकुल बदल गए थे। माँ की बातें दोनों बिना रोक टोक के यों सुन रहे थे जैसे उसी के बच्चे हों। मैं अब तक थक गया था और कुर्सी पर ही सो गया।

उस शाम को नाना नानी ने अच्छे कपड़े पहने और बहुत खुश होकर कहीं गए। जाते समय माँ के सामने खड़े होकर नाना ने कहा, 'देख अपने बाप को, बकरे की तरह लगता है न!' मां हँस पड़ी।

जब हम दोनों अकेले रह गये तब मां ने मुझे अपने बगल में बुला लिया और उसी कुर्सी पर बैठकर पूछा, 'बता तुझे यहां अच्छा लगता है? मैं समझती हूं अच्छा न लगता होगा।'

'मुझे नहीं मालूम!'

'नाना तुझे बेंत मारता है? क्यों?'

'नहीं इतना ज्यादा नहीं।'

'मुझे सब बताओ। जो भी चाहो बताओ। बताओ।'

मैं नाना को बात का विषय नहीं बनाना चाहता था। सो मां ने फिर पूछा, 'कुछ और बताओ।'

मैंने उसे पड़ोस के तीनों बच्चों के बारे में और कर्नल द्वारा वहाँ से भगाए जाने की बात बताई। इसपर उसके हाथ कस गए और उसने कहा 'अजीब बात है।' और शून्य दृष्टि से जमीन पर देखती रही।

'नाना तुम पर नाराज क्यों था?' मैंने पूछा।

'मैंने जो किया है उसे वह बुरा समझता है।'

'जो कि तुम बच्चे को नहीं लाईं' इसलिए?'

उसने मुझे घूर कर देखा, अपने होंठ काटे और हँस कर मुझे गोद में तेजी से कस लिया। 'अरे बदमाश! इस बात के लिये तुझे मुँह बन्द रखना होगा। समझे? एक शब्द भी नहीं। बल्कि जो भी तूने सुना है सब भूल जा।'

फिर बड़ी देरी तक वह मुझे वह बातें बहुत गम्भीरता से बताती रही। जो मैं समझ न पाया। फिर पूछा, 'तू कब सोता है?'

'मुझे कुछ देर यहाँ और रहने दो।'

'हाँ ठीक तू तो पहले ही सो चुका है।' उसने जैसे याद कर कर लिया हो।

'क्या तुम कहीं जाने की सोच रही हो?'

'कहाँ?' उसने यों कहा और मुझे प्यार भरी आंखों से देखा कि मैं भी रुआँसा हो गया।

'आखिर क्या बात है?' उसने पूछा।

'मेरे गले में दर्द है।' दर्द तो दिल में था कि मुझे जाने क्यों यह विश्वास था कि माँ बहुत कम समय के लिए आई है।

'तू अपने बाप की तरह हुआ जा रहा है।' उसने कहा, 'क्या नाना ने तुझे उसके बारे में बताया है?'

'हाँ!'

'दोनों एक दूसरे को बहुत चाहते थे।'

'मैं जानता हूँ।'

मां ने उठकर रोशनी बुझा दी। और कहा 'अब ठीक है।' अंधेरे में चांदनी के प्रकाश में सब दिखाई पड़ रहा था—धुँधला।

'जब तुम यहाँ नहीं थीं तो कहाँ रहती थी।'

उसने किसी शहर का बहुत याद करके नाम लिया। जैसे उसे वह भूल चुकी थी।

'तुमने यह कपड़ा कहाँ लिया?'

'मैंने बनाया। मैं सभी कपड़े खुद सीती हूँ।'

मैं चाहता था कि मेरी मां सबों से भिन्न हो पर इतनी नहीं कि जब मैं कुछ पूछूँ तभी मुंह खोलती थी। थोड़ी देर के बाद उठ कर वह बैठ गई। हम और वह दोनों ही बड़ी देर तक एक दूसरे से चिपके बैठे रहे। फिर जब वे आ गए। उस दिन बहुत अच्छा खाना बना जैसे त्योहार हो और खाने के समय सभी इस प्रकार धीरे धीरे बोल रहे थे जैसे पास ही कोई सो रहा हो।

उसके बाद ही मां ने मुझे रूसी पढ़ाना शुरू किया। मां मेरे लिए कुछ किताबें लाई थी जो मैं शीघ्र ही पढ़ने लग गया। वह एक कविता सदा पढ़ाती वह यह है—

> एक चौड़ी सड़क लम्बी सड़क
>
> खेतों से आगे, मनुष्य का निवास
>
> किसी कुदाल से बराबर नहीं हुआ,
>
> इसे तो धूल की परतों ने बनाया है।

मैं इसमें एक शब्द का ठीक उच्चारण न कर पाता था। माँ ने बिगड़ कर कहा, 'रुक कर सोचले। फिर समझ में आ जायगा।'

मुझे भी आश्चर्य है कि आखिर मैं उस शब्द को ठीक क्यों नहीं कह पाया। मुझसे अधिक मां को आश्चर्य था। वह अब उठी और मुझे कुन्दजेहन कहने लगी। यह सुन कर मुझे बहुत कष्ट हुआ क्योंकि मैंने उसे याद करने की हर प्रकार से कोशिश की। मैं अपने मन में जब दुहराता तब तो ठीक रहता परन्तु ज्योंही मैं शब्द को मुँह से बाहर लाता कि मेरी जीभ लड़खड़ा जाती। तब मैंने फिर उससे मिलते जुलते बहुत से शब्दों को याद किया और किसी प्रकार उस पर विजय पाई।

एक दिन पढ़ाई के समय जब माँ ने पुनः पूछा तो मैंने गलत सलत बता दिया। जिसके माने ही बिल्कुल दूसरे थे।

खीझ कर माँ उठ गई। टेबिल का किनारा पकड़कर बोली 'तू क्या बके जा रहा है ?'

'मुझे नहीं मालूम।' मैंने उत्तर दे दिया।

'तुम सब और अच्छी तरह जानते हो।'

'हाँ थोड़ा थोड़ा।'

'क्या थोड़ा थोड़ा ?'

'कुछ बहुत प्यारा।'

'जा कोने में खड़ा हो।'

'क्यों ?'

'जा कोने में खड़ा हो' उसकी आवाज बहुत गम्भीर थी।

'किस कोने में ?'

उसने उत्तर तो न दिया परन्तु उसका घूरना इतना अजीब था कि मैं घबड़ा गया। मुझे पता न लगा कि आखिर वह क्या चाहती है। अन्त में निराश हो कर मैंने पूछा, 'मैं समझ नहीं पा रहा हूँ। कि तुम क्या चाहती हो ?'

थोड़ी देर चुप रह कर उसने पूछा, 'क्या कभी नाना ने तुझे कोने में खड़ा नहीं किया ?'

'कब ?'

'मैं कब की बात नहीं पूछती। क्या उसने कभी भी तुझे कोने में भेजा था ?'

'जहाँ तक मुझे याद है, कभी नहीं।'

'ओह, इधर आ।'

उसके पास जा कर मैंने पूछा, 'तू मुझ पर इतनी नाराज क्यों है ?'

इसमें मैं जोड़ देता,

पत्रोविना के हाथ उसकी गाय के लिए,
फिर भी अपने लिए शराब लेते हैं।'

रात को नानी के पास लेट कर बहुत थकान के बीच भी मैं बताता कि मैंने आज क्या याद किया है तथा अपनी ओर से क्या जोड़ दिया है। कभी कभी तो उसे भी अच्छा लगता जो मैं जोड़ता परन्तु वह कहती, 'नारियों का मजाक मत बनाओ। उनपर खुदा की मेहरबानी है। ईसा और दूसरे सभी साधु भी भिखारी ही थे।'

तब मैं गुनगुनाता,

'सभी भिखारी लगते हैं मुझे बुरे
और नाना भी।
खुदा मुझे क्षमा करे,
मेरे इस पाप को;
परन्तु नाना सताता है
मुझे हर समय।'

'यह क्या बक रहा है। तेरी जीभ कट जाए।' नानी डाँटती यदि नाना सुन ले तब ....।'

'वह चाहे वह भी सुन ले।'

तब धीरज से तथा दया के स्वर में नानी कहती, 'तू अपने माँ को इस प्रकार न घेर। तेरे विना ही उसे बहुत बहुत कष्ट है।'

'क्या कष्ट है ?'

'कुछ नहीं। उसका कष्ट तुम नहीं समझ सकते।'

मेरे दिन बहुत बेचैनी में बीतते। क्योंकि माँ जब भी कविता पढ़ाती मेरे लिए कठिनाई अत्यधिक बढ़ती जाती।

गणित मुझे कुछ आसान लगी परन्तु व्याकरण तो जैसे मेरे मान की ही न थी। इन सबों के अलावा जो बहुत अधिक कष्टदायक बात थी वह यह कि नाना के इस घर में माँ का जीवन बहुत कष्टकर होता जा रहा था। दिन प्रति दिन वह अत्यधिक उदास होती जा रही थी। वह घन्टों खिड़की पर बैठी बाग की खामोशी देखा करती। इससे उसके दिन बड़े रूखे बीतते।

पढ़ाते समय भी उसकी आँखें मुझपर से हटकर कभी कभी खिड़की या दीवाल पर जा टिकतीं। वह जाने किस धुन में मुझसे प्रश्न करती कि व कभी कभी मेरा उत्तर भी न सुन पाती, यानी इतनी खोई खोई सी रहती कि गुस्सा उसे बहुत जल्दी और अकारण ही आ जाता। इस व्यवहार से मुझे बहुत कष्ट होता क्योंकि मैंने परियों की कहानियों में सुना था कि सभी माँ बहुत प्यारी होती हैं।

कभी कभी मैं कहता, 'तुम्हारा जी नहीं लगता क्या ?'

सुनते ही वह क्रोध में पागल हो उठती। 'तू अपना काम कर।'

थोड़े दिनों बाद हमें पता लगा कि नाना की कोई योजना है जिससे नानी और माँ बहुत अधिक परेशान रहती हैं। अक्सर एक सूने कमरे में नाना व माँ बातें करते। कभी कभी सारे घर को माँ रोती चीखती सिर पर उठा लेती और कहती, 'नहीं मैं नहीं।' और मैं सुनता कि दरवाजा खुलता और नाना भूँकता रहता।

एक रात को यह हुआ। नानी रसोईघर में बैठी बड़बड़ा रही थी और नाना की एक कसीदा सी रही थी। जब दरवाजा खुला तो वह चुप होगई फिर आहट लेकर कहा, 'वह किसी पड़ोसी के यहाँ गई है।'

अचानक नाना रसोईघर में आगया। मेरी नानी के सिर पर एक धौल लगाई और कहा, 'तू अपना मुंह क्यों नहीं बन्द रखती ?'

नानी ने बड़ी शान्ति से कहा, 'तुम बूढ़े और बेवकूफ भी हो। समझते हो मैं चुप रहूँगी ? मैं जब भी तुम्हारी किसी योजना का पता पाऊँगी तो उसे सचेत कर दूंगी।'

इस बार नाना ने दोनों घूँसे से नानी के सिर पर प्रहार किया। उसने अपने को बचाने की कोसिश न की बल्कि चीखी, 'अरे मूर्ख आदमी! पीटो, मारो! जितना भी चाहो! मारो! मारो!'

जहाँ मैं खड़ा था वहीं से मैंने तकिया, कम्बल और जूते उस पर फेंकने शुरू किये। परन्तु उसने ध्यान न दिया। वह इतना क्रोधित था। उसने नानी को धक्का देकर गिरा दिया और उसके सिर पर ठोकर मारी और क्रोध में काँपता अपने कमरे में चला गया।

नानी उठी और बेंच पर बैठकर बालों को ठीक करने लगी। जब मैं कूदकर उसके पास गया तो उसने सीधे शब्दों में कहा, 'वह सब तकिया वगैरह जहाँ की हैं वहाँ रख आओ! तूने उसे क्यों फेंका। तेरा इससे क्या मतलब था। वह बूढ़ा बेवकूफ तो अपने होश के बाहर है न!'

फिर वह कराहती हुई मेरे पास आई और सिर नीचा करके कहा, 'देखो तो मेरे सिर में कुछ दुख रहा है।'

उसके बालों को अलग कर के मैंने देखा कि एक बालों वाली पिन चुभ रही थी। एक को निकाला तो दूसरी दिखी। परन्तु तब तक मेरी उंगलियाँ भीग गई थीं, मैंने कहा, 'मुझे डर लग रहा है। माँ को बुलाता हूँ।'

मुझे ढकेल कर उसने कहा, 'क्यों, उसे क्यों बुलाएगा। खुदा की मेहरबानी से उसने यह सब नहीं देखा।'

फिर उसने अपनी ही उँगलियों से दो पिनें और खोजीं और उन्हें निकाल कर मैंने पूछा, 'क्या यही दर्द करता था?'

'थोड़ा दर्द था। कल मैं गरम पानी से सिर धो डालूँगी तब सब ठीक हो जाएगा।'

फिर उसने मुझे समझाया, 'प्यारे, देखो माँ से मत कहना कि उसने मुझे पीटा है। वादा करो। इससे उनके मन में और गांठ पड़ेगी, समझे। वादा करो।'

'अच्छा।'

'भूलना मत! याद कर लो। देखो मेरे चेहरे पर तो कोई निशान नहीं है? बस ठीक। हम लोग इसे अब छुपा लेंगे।'

बहुत गहराई से अनुभव कर के मैंने कहा, तुम बिल्कुल साधू हो! तुम सब कष्ट सह लेती हो और उफ़ भी नहीं करतीं।'

'यह क्या बेवकूफी है? साधू! तुमने कभी कोई साधू देखा है?'

वह काम में लग गई और मैं नाना से बदला लेने की सोचने लगा। नाना ने कभी भी मेरे सामने नानी पर इतना अत्याचार नहीं किया था। मैं आज तक उनके चेहरे को नहीं भूला था—गुस्से में लाल चेहरा, सिर के बाल भी [illegible]; गुस्से से मेरा भी हृदय भरा था। मैं अपने आप पर भी मानो खिजला रहा था कि मैंने इस तरह क्यों नहीं पीटा कि नाना को चोट लगती।

कुछ दिनों के बाद। जब मैं कुछ लेकर उसके कमरे में गया तो देखा कि वह छाती खोले जमीन पर झुका कोई कागज पढ़ रहा था। उसके बगल की कुर्सी के पास उसका प्यारा कैलेंडर टंगा था जिसमें हर पृष्ठ पर उसके प्रिय देवताओं के रंगीन चित्र थे। जिनपर उसे नाज था। मैं उन्हें छू भी न पाता था। आज जब नाना उठकर खिड़की के पास गया कि रोशनी में वह कागज को साफ साफ पढ़ ले तो फौरन ही मैंने वह कैलेंडर उतारा और नीचे भागा। नानी की कैंची लेकर मैंने देवताओं के चित्र काटने शुरू किये। परन्तु मैं दो भी पूरा न कर पाया था कि नाना दरवाजे पर खड़ा क्रोध से काँप रहा था, 'किसने तुमसे कहा कि मेरा कैलेंडर ले आ।'

झुककर उसने सभी कटे कागज उठाये और मेज पर उन्हें बिछाया। ज्यों ज्यों वह कागज उठा रहा था उसके जबड़े हिलते जाते, दाढ़ी काँपती जाती और बवंडर की तरह साँस यों चलती कि मेज के कागज उड़ने लगते।

'यह तू ने क्या किया ?' अन्त में उसने कहा और मेरा पांव पकड़ कर मुझे जमीन पर पटक दिया।

नानी आगई और मुझे पकड़ लिया। नाना उस पर भी टूट पड़ा, मैं इसे मार डालूँगा।'

ठीक उसी समय मामी आई और जब उसने नाना को हटाया तो मैं भट्ठी के पीछे छिप गया।

खिसिया कर नाना खिड़की के पासवाली बेंच पर बैठ गया। बोला, तुम सभी मुझे मार डालोगे। तुम सभी मेरे शत्रु हो ' तुम सभी।'

'कितने लज्जाकी बात है।' माँ ने बहुत धीरे से कहा, 'तमाशा बना रखा है।'

जोश में नाना उठा। बेंच को धक्का दिया। फिर आँख बंद कर लिया। मैं जानता था कि माँ के सम्मुख वह तनिक झेंपता है इसीलिये आंख बन्द रखता है।

"मैं सभी कागज कपड़े पर गोंद से चिपका कर ठीक कर दूँगी।' माँ ने कहा, 'अब यह पहले से भी अच्छा हो जाएगा। यह तो सड़ गया था।'

माँ उन्हीं रोषपूर्ण शब्दों में कह रही थी जिसमें वह मुझे पढ़ाया करती थी! नाना उठा, अपनी कमीज झाड़ी, और थूका फिर कहा, 'लेकिन यह आज ठीक हो जाना चाहिए।'

दरवाजे की ओर जाते हुए वह रास्ते में रुका और मुझे उँगली दिखा कर कहा, 'और इसे मार पड़नी चाहिए।'

'जरूर!' माँ ने कहा, फिर मेरी ओर घूम कर पूछा, 'तूने यह सब क्यों किया?'

'मैं यही करना चाहता था। वह अब नानी को फिर न पीटे नहीं तो मैं उसकी मूँछें काट डालूँगा।'

नानी ने अपना फटा हुआ फ्राक ठीक किया और कहा, 'तुझे अपना वायदा याद नहीं है क्या?'

माँ अब मेरी ओर घूमी, 'उसने नानी को कब पीटा है?'

'क्या बारबरा, उससे यह प्रश्न करते तुझे शर्म नहीं आती? तुझे इससे क्या करना है?'

माँ नानी के पास गई और उसे अपने बाहों में लेकर कहा, 'ओह मेरी माँ?।'

'ओह मुझे छोड़ दे। तू और तेरी माँ! भाग यहाँ से।'

दोनों ने खामोशी में एक दूसरे को घूर कर देखा।

इस बार आने के बाद माँ उस फौजी अफसर की प्यारी सी बीबी की सहेली बन गई थी। वह उसके साथ पड़ोसियों के यहाँ चली जाती थी। उसमें देवतात्मा की कोठी की कुछ

बहुत सुन्दर महिलाएँ तथा कुछ अन्य अफसर लोग भी थे। नाना को यह बात पसन्द न था। एक दिन उसने खाने के समय माँ पर झुंझला कर कहा था, 'अपनी पुरानी आदतों पर फिर आ गई! हम लोगों की रात भर नींद हराम रहती है।'

उसने किरायेदारों को निकाल दिया। सामने वाले कमरे के लिए कुछ मेज कुर्सियाँ लाया, 'अब किरायेदार न रखूँगा।' उसने घोषणा की।

इसके बाद लोग हमारे यहाँ ही मिलने आते। रविवार और छुट्टियों को नानी की बहन, मातवेना, एक लम्बी नाक वाली सिल्क के लबादे में आई। उसके लड़के भी साथ आए। वासील, जो अच्छे स्वभाव का था और विक्टर जो गहरे रङ्ग के कपड़े पहनता था।

मामा जैक भी अपने गिटार के साथ आया। उसके साथ एक गंजी खोपड़ी वाला, झुककर चलने वाला, घड़ीसाज काला सूट पहने आया। उसे देख कर मुझे एक सन्यासी याद आया। उसके केवल एक आँख थी। वह रंग का काला था। बहुत कम बोलता, 'अपने को अधिक मत तंग करो।'

उसे देखते ही मुझे एक घटना याद आई जो मैं भूल गया था। [illegible] बज रहा था। हम लोगों ने देखा कि कुछ सिपाही थे और आदमी काले कपड़े पहने थे। वे एक गाड़ी के आगे पीछे चल रहे थे जो जेल से शहर के पार्क की ओर जा रही थी। गाड़ी पर जंजीरों से बंधा एक आदमी रुई की टोपी पहने बैठा था। उसकी छाती पर सफेद अक्षरों से लिखी एक काली तख्ती लटकती थी। और रह रह कर जंजीरों की आवाज भी आ रही थी। उसकी तस्वीर मुझे याद आ गई जब माँ ने कहा, 'देखो देखो!' और

जो हम लोग गाया करते थे।'

अपनी सिल्क की पोशाक को पहराकर रंगरेज की पत्नी ने कहा, 'यह सब पुराने ढङ्ग के गीत हैं।'

मामा ने नानी को यों देखा जैसे उसे वह बहुत दूर से देख रहा हो।'

तभी बहुत रहस्यमय ढंग से नाना ने घड़ीसाज से कहा कि वह मेरी माँ की ओर गौर से देखे। जिसे देखकर उसके चेहरे का अजीब ढंग हो गया।

माँ मातरेना के बच्चों के बीच में बैठी थी। वह बहुत गम्भीरता से वकील से बातें कर रही थी। वह कह रही थी, 'हाँ, उसपर विचार करना होगा।' जबकि विक्टर एकाएक अपने जूते से जमीन पर ठोकर मार कर चीख पड़ा, 'पिता, अन्डी!' और आश्चर्य से रंगरेज की पत्नी ने कहा, 'वह थियेटर का गाना गा रहा है जो अभी देखकर आया है।'

ऐसी तीन शाम की दावतों के बाद एक दिन दोपहर को वह घड़ीसाज आया। मैं माँ के साथ उसके कमरे में था। वह सिलाई कर रही थी कि एकाएक दरवाजा खोलकर नानी डरी हुई आई और तनिक तेज आवाज में फुस-फुसाई 'वारवरा वह आ गया!' और फिर वापस चली गई।

माँ ने सिर भी नहीं उठाया न उधर देखा ही। तभी फिर दरवाजा खुला और इस बार नाना आया। बोला, 'वारवरा कपड़े बदल ले। तुझे जाना है।'

वह बैठी ही रही और उसकी ओर देखे बिना ही पूछा, 'कहाँ?'

'जाओ भी, खुदा के लिये! बहस की दरकार नहीं है। वह

काफी अच्छा आदमी है। उसकी रोजी भी ठीक है। वह अलेक्स का अच्छा पिता साबित होगा।'

नाना का कहने का ढंग असाधारण रूप से बहुत सीधा सादा था। और अपने दोनों हाथों से अपनी बगल थपथपा रहा था।

बहुत शान्ति से माँ ने कहा, 'मैंने कह दिया कि यह न होगा।'

नाना उसपर हावी हो गया। क्रोध में चीख पड़ा, 'चलेगी या चाहती है कि तेरे बाल पकड़ कर घसीट लिया जाए?'

'तो तुम मुझे उसके पास घसीट ले जाओगे? तुम?' सफेद होकर माँ ने कहा। वह उठ खड़ी हुई। बहुत धीरे से उसने अपने बाल खोल दिये और बोली, 'लो अब घसीटो।'

नाना ने दाँत पीसे। घूँसा तान लिया और कहा, 'वारवरा जल्दी कपड़े बदल लो।'

माँ ने उसे ढकेल दिया। दरवाजे तक गई और कुंडी पकड़ कर पूछा, 'क्यों तुम क्यों, नहीं आ रहे अब?'

'तुझे धिक्कार है।' नाना ने धीरे से कहा।

'मैं मुंहचोर नहीं हूं!' उसने कहते हुए दरवाजा खोला और नाना ने बढ़ कर उसके बाल पकड़ लिये और अपने घुटने के पास गिरा लिया और बड़बड़ाया, 'वारवरा, तू चुड़ैल! हमारा सत्यानाश चाहती है। तुझे तनिक भी शर्म नहीं है?' तभी वह चीख उठा, 'मालकिन, मालकिन!'

नानी पहले से ही माँ के पक्ष में थी। नानी ने खींच कर माँ को पुनः कमरे के भीतर किया और दरवाजे बन्द कर दिया और कहा, 'तुम, सठियाए, कहाँ ले जा रहे हो?' फिर नाना

पर झुककर उसके शरीर को झिझकोरा और कहा, 'ओफ, तुम बूढ़े राक्षस !'

जब उसे उठाकर कुर्सी पर डाला तो निर्जीव की तरह उसका सिर झूल रहा था।

'और तुम जल्दी से कपड़े पहन लो।' नानी ने कहा।

'लेकिन यह समझ लो कि मैं उसके साथ नहीं जा रही हूँ।'

नानी ने मुझे दूर कर के कहा, 'जा थोड़ा पानी ला।'

दूसरे कमरे में मैं सुन रहा था कोई बैठके में भारी कदमों चहलकदमी कर रहा था। जबकि माँ के कमरे से सुनाई पड़ रहा था, वह कह रही थी, 'मैं खुद कल कहीं चली जाऊँगी।'

रसोईघर में मैं खिड़की पर यों बैठ गया जैसे कोई स्वप्न देख रहा होऊँ। मैं सुन रहा था कि नाना, गाली दे रहा था चीख रहा था। तभी दरवाजा खुला और सब कुछ खामोशी में खो गया।

तभी मुझे अपने काम की याद आई। मैं एक पीतल के बरतन में पानी लेकर भागा कि दरवाजे से ही देखा, घड़ीसाज बैठके से निकलकर बाहर जा रहा था, उसका सिर झुका था और हाथ में बालों वाली टोपी थी। नानी भी हाथ बांधे उसके पीछे पीछे चल रही थी और कह रही थी, 'सब समझ लेना, खूब समझ लेना, तब संयोग से प्यार नहीं होता।'

थोड़ा रुककर वह बाहर हो गया और नानी फूट पड़ी। उसकी आकृति देखकर कहना कठिन था कि वह हँसना चाहती है या रोना। मैं देखकर उसके पास गया पूछा, 'क्या बात है ?'

उसने मुझसे पानी का बर्तन छीन लिया और पानी मेरे पाँवों पर गेर दिया। 'अब जाओ हो। दरवाजा बन्द कर लो।' वह वापस माँ के कमरे में गई और मैं वापस रसोईघर में। वहाँ से सुना कि वे यों बातें कर रही थीं जैसे उनका कोई असहनीय बोझ हल्का हुआ है।

फिर एक अच्छा दिन! जंगलों को पार करके जाड़े की धूप की किरणें खिड़कियों की राह आ रही थीं। खाने की मेज सजाई गई। नाना के पसन्द की हरी चन्द्रिका भी लाई गई। मैंने खिड़की से देखा तो चारों ओर बरफ ही दिखी। यहाँ तक कि सभी मकान बर्फ की टोपी पहिने थे। खिड़कियों पर टंगी पिंजड़ों की चिड़ियाँ भी सूर्य की किरणों का आनन्द ले रही थीं। मैना गा रही थी, गौरइया चहक रही थी।

परन्तु इतना होने पर भी पता नहीं क्यों वह दिन मुझे अच्छा न लग रहा था। सब कुछ अस्तव्यस्त मालूम हो रहा था। मुझे लगा कि मैं चिड़ियों को आजाद कर दूं। इसीलिये मैं ज्यों ही उनका पिंजड़ा उतारने चला कि अचानक नानी भीतर आई। वह अपना नाम ले ले कर चीख रही थी और अपना पुट्ठा पीट रही थी। 'धिक्कार है, अकुलिना बूढ़ी बेवकूफ!' कहकर चूल्हे पर से उसने मांस का एक टुकड़ा निकाला, हाथ से जला भाग गिराया और फिर सब जमीन में फेंक दिया, 'सब जल गया। यह सब तेरी ही गलती है। ओफ! तुझे शैतान ले जाये। तुझे मौत आये! उल्लू, अपनी आँखें फोड़! तेरी किस्मत ही फूटी है!"

और रोती हुई उसने उलट पुलट कर गोश्त को देखा और उसकी उंगलियों पर बड़े बड़े आँसू गिरने लगे।

जब नाना व माँ कमरे में आये तो मेज पर की तश्तरियाँ

में गोश्त के टुकड़े रखते हुये बोले, 'देख, यह सब तेरा काम है।'

माँ चुप थी परन्तु काफी खुश थी। उसने नानी को चूम लिया और सांत्वना के स्वर में कहा कि इसके लिए चिन्ता न करो। नाना भी थक कर बैठ गया और रूमाल से मुँह पोंछने लगा। फिर बोला, 'काफी है। हमारे हिस्से भर को गोश्त ठीक है। बारबरा बैठ जाओ। यह अन्तिम बार है।'

तभी नानी ने तेज आवाज में कहा, 'तुम अपना खाना खाओ। तुम्हारा यही काम बाकी है।'

माँ की तेज आँखें अधिक चमक रही थीं। मुझसे वह बोली, 'क्या तू डर गया था ?'

सचाई यह थी कि मैं डरा तो न था परन्तु कुछ परेशान व चिन्तित था। अब हर रविवार या छुट्टियों को जब साज बाज के साथ दावतें होतीं तो मैं सोचता कि क्या ये वही लोग हैं जो छः महीने पहिले एक दूसरे को टुकड़े टुकड़े काट डालने को तैयार रहते थे। यद्यपि अब मैं इनके प्रत्येक व्यवहार का आदी हो गया था इससे मुझे अधिक चिन्ता न रहती।

धीरे धीरे मैं जान गया कि सभी लोग अब दुःख को खिलौने की तरह खेलकर भूल जाने के आदी हो गए हैं और कष्टों को लेकर अधिक चिन्तित नहीं होते।

ग्यारह

इस घटना के बाद माँ ने सारे घर का काम अपने ऊपर ले लिया। अब वही घर की मालकिन थी। नाना बहुत बूढ़ा और महत्वहीन हो गया था।

अब वह यदा कदा ही घर के बाहर निकलता। अपने कमरे में बैठकर एक पुस्तक पढ़ता रहता जिसका नाम था, 'मेरे पिता की रचनाएँ'। वह उसे सदा ही अपने बक्स में रखता था। और एक दिन मैंने देखा था कि उसे छूने के पहले वह हाथ धोया करता था। उस पर लाल चमड़े की जिल्द बँधी थी। शुरू के नीले पृष्ठ पर रंगीन स्याही से लिखा था,

'आदरणीय वसीली काशिरीन को बहुत आदर व सम्मान से।'

इसके नीचे किसी का हस्ताक्षर था जिसे मैं नहीं जानता था। पास ही उड़ती हुई एक चिड़िया का चित्र था।

नाना बहुत सावधानी से चमड़े का एक डिब्बा खोलता. अपना चाँदी के फ्रेम वाला चश्मा पहन लेता फिर कुछ लम्बाई से देखता फिर नाक पर उसे अच्छी तरह ठीक करता।

कई बार मैंने पूछा कि वह कौन सी किताब है तब वह कहता, 'यह तेरे जानने के लिए नहीं है। थोड़ा इन्तजार करो। जब मैं मर जाऊंगा तो तेरे लिए छोड़ जाऊंगा। मैं अपना कोट भी तेरे लिये छोड़ जाऊंगा।'

जब वह माँ से बात करता तो बहुत मुलायम बन कर यद्यपि बात [illegible] वह काफी कम करता। जब वह माँ की बातें सुनता रहता तो उसकी आँखें मुझे पोटर, गाड़ीवान की याद दिलातीं। बात को आगे न बढ़ा कर वह कह देता, 'काफी है, जो जी में आये करो।'

नाना के सन्दूक में बहुत अच्छे अच्छे कपड़े रखे थे।..... सिल्क की कमीजें, कढ़ी हुई साटन की सदरियां, लम्बे सिल्क के लबादे, चाँदी के काम वाले कपड़े। मोती जड़े हुए टोपे; रंगीन रूमाल और अनेक रंगीन कपड़े। कभी कभी वह उन्हें अपने हाथ में टांग लेता, और उनको लेकर माँ के कमरे में जाता, फिर उन्हें टेबुल या कुर्सियों पर डाल देता। माँ को कपड़ों का बहुत शौक था सो वह कहता, 'जब मैं युवा था तब यह कपड़े अधिक सुन्दर व कीमती थे। लेकिन वे लोग अधिक अच्छे थे। [illegible] आ सकते। इन्हें देखो यदि तुम्हारे [illegible]

एक दिन माँ [illegible] कमरे में गई। थोड़ी देर बाद लौटी तो [illegible] और मोतियों से सजी [illegible] उसने झुक कर कहा; '[illegible] रहा है?'

[illegible] चारों ओर [illegible] अगर तेरे पास धन होता तो छोटे से छोटा आदमी तुम्हारे पैर पड़ता।'

माँ दो घरों में जाकर खूब हँसी मचाती रही। दोनों मैक्सिमोव भाइयों के यहाँ। एक, पीटर खूबसूरत और तन्दुरुस्त अफसर, अच्छी दाढ़ी, नीली आँखों वाला, वही आदमी जिसके गंजे सिर पर थूकने के कारण नाना ने मुझे पीटा था। और दूसरा, एवजीने, लम्बा पर पतला और पीला, जिसकी छोटी दाढ़ी नुकीली थी और आँखे बहुत बड़ी बड़ी। उसके लम्बे कोट में सोने के बटन थे और कंधे पर भी सोने का काम था।

उस साल क्रिसमस का पूरा सप्ताह बहुत अच्छा रहा। मां रोज शाम को बहुत सुन्दर कपड़े पहन कर अतिथियों का स्वागत करती। और कभी कभी और भी अच्छे कपड़े पहन कर सबों के बीच चमकती सी बाहर जाती। जब कभी वह अपने मित्रों के साथ चली जाती तो घर खाली खाली सा लगने लगता और लगता जैसे घर जमीन में धँसा जा रहा हो तथा हर कोने में सन्नाटा छा जाता। नानी बूढी बत्तक की तरह चारों ओर घूमती रहती। और नाना चूल्हे के पास बैठा अपनी पीठ गर्माता तथा कहता, 'जो भी हो, काफी है। हम लोग परिवार को ही देखें।'

क्रिसमस के बाद माँ ने मुझे और मामा माइक के शश्का को स्कूल भेजा। मामा माइक ने दूसरा विवाह कर लिया था। विमाता को यह लड़का बिल्कुल अच्छा न लगता था सो वह दुर्व्यवहार करती। और नानी के आग्रह से वह हम लोगों के साथ रहने को ही बुला लिया गया था। एक महीने तक स्कूल जाने के बाद जहाँ तक मुझे याद है कि मैं केवल इतना ही पढ़ पाया, 'मेरा नाम पेश्कोव है' जब भी कोई पूछता तो मैं यही पूरा उत्तर देता। परन्तु मास्टर मुझे अधिक पसंद करते, 'सुनो बूढ़े लड़के, मुझे घूरो मत। मैं तुमसे डरूंगा नहीं।'

मुझे स्कूल से घृणा हो गई परन्तु शश्का को वहाँ अच्छा लगने लगा। परन्तु एक दिन क्लास में पढ़ाई के समय उसे नींद आ गई और नींद में ही चिल्ला पड़ा, 'नहीं, 'नहीं।' इस पर सभी हँस पड़े और वह चुपचाप उठकर चला आया। दूसरे दिन स्कूल जाते समय स्कूल के पास चौराहे पर वह रुक गया और बोला, 'तुम जाओ, मैं नहीं जाऊँगा। मैं घूमने जा रहा हूँ।'

झुक कर उसने अपनी किताबें बर्फ में गाड़ दीं और भाग गया। यह जनवरी का महीना था, रुपहरी सूरज की रोशनी चारों ओर फैली थी। मैं मां को धोखा न देने के इरादे से स्कूल गया। दूसरे दिन शश्का की गड़ी पुस्तकें न मिली यह बाहर रहने का दूसरा बहाना था। तीसरे दिन, जाने कैसे नाना को सभी सच बातें पता लग गईं और हम लोग हाजिर किए गए।

रसोई घर में एक गोल मेज़ पर, नाना, नानी और माँ बैठे थे। हम लोगों से बहुत से सवाल पूछे गए। मैं उस समय के शश्का के धूर्तता के जवाबों को कभी न भूलूँगा जो नाना को वह दे रहा था।

'तुम स्कूल क्यों नहीं गए?'

'मैं रास्ता भूल गया।'

'रास्ता भूल गए?'

'हाँ मैंने बहुत खोजा, खोजता रहा।'

'लेकिन तुम तो अलेक्सी के साथ गए थे न! वह रास्ता जानता है।'

'लेकिन मैं अलेक्सा को भी भूल गया था।'

'उसे भी भूल गए थे?'

'हाँ।'

'सो कैसे ?'

एक मिनट सोचकर शास्का ने कहा, 'बड़ी तेज बर्फ गिरी और मुझे कुछ भी न दिखा।'

उसके उत्तर से सभी को मुस्कान आई। बात साफ थी। शास्का भी मुस्कुरा पड़ा। लेकिन दांत पीसकर नाना ने कहा, 'तुमने अलेक्सी की पेटी या हाथ क्यों नहीं पकड़ लिया ?'

'पकड़ा था।' शास्का ने कहा, लेकिन हवा इतनी तेज थी कि हाथ छूट गया।'

उसकी बातें मुझे भी अच्छी न लगीं।

हम दोनों को मार पड़ी। एक बूढ़ा आदमी जिसका हाथ टूटा था उसे केवल इसलिए नौकर रखा गया कि वह हम लोगों को स्कूल छोड़ आया करे ताकि रास्ते से शास्का गायब न हो जाय। लेकिन यह सब बेकार था। दूसरे दिन चौराहे पर पहुँच कर शास्का ने दाएँ पाँव का जूता उतार कर बाएं तरफ फेंका और बाएँ पैर का दाएँ तरफ और मोजा पहने ही भाग खड़ा हुआ। बड़ी मुश्किल से बूढ़े ने दोनों को खोजा और मुझे भी घर लाया।

उस दिन, नाना, नानी और माँ सारा दिन शहर में उसे खोजते फिरे। अन्त में चिरकोव के शराब खाने में ग्राहकों को नाच दिखाते हुए उसे पकड़ा। वे उसे घर ले आए। परन्तु उसकी बदमाशी के लिए पीटा भी नहीं। उस दिन मेरे सामने उसने अपने गालों के घावों को दिखा कर कहा, 'मेरी विमाता और पिता और दादा कोई मेरी फिक्र नहीं करता फिर मैं क्यों उनके साथ रहूँ। मैं नानी से पूछूँगा कि डाकू लोग कहाँ रहते हैं। बस उनके पास जाकर उनके गिरोह में शामिल हो जाऊँगा।......तब तुम सब जानोगे कि क्यों...... अच्छा कैसा रहे यदि हम दोनों साथ भाग चलें।'

लेकिन मैं उसका साथ नहीं दे सका। क्योंकि मैंने पहले ही निश्चय कर लिया था कि मुझे अफसर बनना है। दाढ़ी वाला रोबीला अफसर, जिसके लिए स्कूल जाना आवश्यक था। जब मैंने अपनी योजना उसे बताई तो थोड़ी हिचक के पश्चात वह बोला, 'बुरी योजना तो नहीं है। जब तक तुम अफसर हो पाओगे तब तक मैं डाकुओं का सरदार हो जाऊँगा। फिर तुम हमारा पता लगाओगे और हम दोनों में से एक को किसी दूसरे की हत्या करनी पड़ेगी। परन्तु मैं तुम्हें न मारूँगा।'

'और मैं भी तुम्हें न मारूँगा।'

इस बात पर हम दोनों एक मत थे।

जब नानी आई तो हम लोगों को देखकर बोली, 'कहो क्या हाल है?'

हम लोगों पर दया बरसाते हुए वह शारका की सौतेली मां को गाली देने लगी।—मोटी नदेफड़, मट्टीवाले की बेटी पूरी विमाता। फिर उसने योगी इओना की कहानी सुनाई जिसे लड़कपन में ही विमाता मिल गई थी।

'इओना का पिता एक मल्लाह था। वह सफेद झील के पास रहता था।'

'अपनी युवा पत्नी के कारण उसकी दुर्दशा हो गई। उसकी पत्नी ने उसे ऐसी शराब पिलाई जिसमें नींद लाने वाली जड़ी मिली थी। जब वह सो गया तो उसे उसने एक बहुत सकरी नाव में डाल दिया जो बिल्कुल कब्र की तरह थी। नाव को खेकर वह झील के बीच में ले गई। वहाँ उसने एक गुप्त गड्ढा खोद रखा था। वहाँ ले जाकर उस चुड़ैल पत्नी ने नाव उलट दी! और बहुत गहरे में उसका पति डूब गया।

'धीरे धीरे वह डाइन किनारे आ लगी। उसने जो

भी बाहर आ कर कहा भले आदमियों ने उसका विश्वास किया और सबों ने दुःख प्रकट किया, 'खेद की बात है कि तुम्हारा दाम्पत्य जीवन इतना क्षणिक रहा। बहुत जल्दी ही तुम्हें वैधव्य का कष्ट सहना पड़ेगा। लेकिन सभी का जीवन तो खुदा के हाथ में है। जब वह किसी पर खुश होता है तभी मौत देता है।'

'लेकिन उस चुड़ैल के सौतेले बेटे को उस पर तनिक भी विश्वास न था न उसके झूठे आँसुओं पर ही। उसने चिल्ला कर कहा, 'ऐ विमाता तू आदमियों को धोखा देने को ही पैदा हुई है। तुम्हारे तमाम मातम में मुझे विश्वास नहीं है। तू जो भी अनुभव करती है वह दुःख नहीं बल्कि खुशी है। तुझे खुदा के सामने परीक्षा देनी होगी। किसी से भी कहो कि ऊपर आकाश में खुली हुई छुरी फेंके और यदि वह निर्दोष है तो छुरी मुझ पर गिरेगी और यदि वह दोषी है तो वही मरेगी।'

'विमाता ने उसे घूर कर देखा। उसकी आँखों से घृणा बरस रही थी। उसने कहा, 'तू बेवकूफ है। तू जूठन है! भला इससे तुझे क्या मिलेगा? उससे तुझे तो कोई उत्तर मिल न जाएगा।'

'भले लोग चारों ओर खड़े परेशानी में सोचते रहे कि आखिर इसका क्या किया जाय। उन्होंने पंचायत की और एक वृद्ध तथा सम्मानित मल्लाह आगे आया और बोला, 'मेरे दाएँ हाथ में लोहे का चाकू दो। मैं फेकूँगा, देखो किस पर गिरता है।'

'उसके हाथ में चाकू दे दिया गया। यही तो उनका उत्तर था। उसने चाकू फेंका और हवा में चिड़िया की तरह वह उड़ा। अपना अपना टोप उतार कर सबों ने उत्सुकता से ऊपर

देखा परन्तु आश्चर्य की बात कि चाकू वापस न आया। रात हो गई और चाकू न आया।

'झील के ऊपर एक रोशनी छा गई। विमाता ने समझा कि उसकी जीत है। वह खुश होने लगी कि उसी क्षण अचानक छुरी आकर उसकी छाती में प्रवेश कर गई।

'सभी का रक्षक खुदा की इस न्यायकुशलता पर सभी घुटने टेक कर बैठ गये। फिर उस बूढ़े ने इओना को अपना पुत्र बना लिया और फरमेन्ट नदी के किनारे उसे एक आश्रम बनवा दिया।'

दूसरे दिन मैं जागा तो सारी देह में लाल निशान थे। चेचक निकल रही थी। ऊपर के कोठे में सब से अलग मैं लिटा दिया गया। जहाँ आँख मूंदे तथा हाथ पांव मोड़े पड़ा रहता, चुपचाप खामोश। केवल नानी मेरे पास आती और बच्चों की तरह मुझे एक चम्मच से खाना खिला देती। फिर जी बहलाने को मुझे रोज एक नई कहानियाँ सुनाती जो स्पष्ट था कि उसके समाप्त हो रहे खजाने की अन्तिम होती।

एक बार मेरे देह की पट्टियाँ खुल चुकी थीं, केवल हाथों पर बँधी थी ताकि मैं खुजला न सकूँ। मैं बड़ी उत्सुकता से नानी की प्रतीक्षा कर रहा था क्योंकि अपने निश्चित समय से वह आज न आई थी। जिससे मुझे बड़ी चिन्ता हो रही थी। अचानक मैंने देखा कि ऊपर के जिस कमरे में मैं लेटा था उसके दरवाजे पर जमीन में धूल से सनी मुँह के बल, हाथ फैलाए नानी पड़ी थी। उसका सिर यों फूला था कि मुझे उसी पीटर गाड़ीवान की याद आ गई। उसी अंधेरे में एक बिल्ली हरी आँखों से उसे ललचा कर देख रही थी। मैं बिस्तरे से कूदकर खिड़की के जरिए फर्श पर उतर पड़ा। दूसरे खिड़की का शीशा टूट गया, माँ उसी समय भीतर आई. किसी ने

वहाँ न देखा ! मैं काफी देरी तक बर्फ पर पड़ा रहा। मेरा पाँव तो न टूटा था परन्तु कंधे पर शीशे से खरोंच अवश्य लग गए थे। मैं तीन महीनों तक खाट पर पड़ा घर का शोर सुनता रहा लोगों का आना जाना। दरवाजों का बुरी तरह भड़भड़ाना।

मैं पड़ा हुआ छत पर बर्फीली हवा का चलना भी देखता। दिन में मैं कौवों का चिल्लाना सुनता। रात को काफी दूर से भेड़ियों का मातम मनाने जैसा चीखना भी सुनता। इसी प्रकार इन्हीं गानों के बीच मेरा समय बीतता। इसके बाद बसन्त आया। दिन प्रति दिन गरमी बढ़ती रही। बिल्लियाँ गरमी पाकर छत्तों पर से अपने बच्चों को बुलातीं। आधी पिघली हुई बर्फ अस्तबल की छत पर से गिर रही थी। और घन्टियों की आवाज अधिक साफ हुई जा रही थी।

जब नानी आई तो उसकी सांसों में वोद्‌का की गंध थी। उसकी सुगन्ध दिन प्रति दिन बढ़ती गई। फिर तो बाद में वह अपने साथ उसे एक बड़े से सफेद प्याले में लाने लगी जिसे वह मेरी खाट के नीचे छिपा कर रख देती और कहती, 'तुम नाना से इसके विषय में एक शब्द भी न कहना, प्यारे बेटे !'

'तुम यह क्यों पीती हो ?'

'अरे वाह ! तुम्हें यह समझने के लिए बड़ी उम्र तक इन्तजार करना पड़ेगा।' कहकर वह एक घूँट पी लेती। अपनी बाहों से मुँह पोंछती और एक हँसी हँस कर कहती, 'मुझे बताओ, मेरे बेटे, आज रात को क्या सुनोगे ?'

'आज मुझे मेरे बाप के बारे में बताना।'

'कहाँ से शुरू करूँ ?'

मैं जहाँ से पहली बार उसने रोका था उसे याद दिलाता

और वह वहीं से शुरू करके झरने की तरह शब्दों का स्रोत बहाती रहती।

मेरे पिता के विषय में यह चर्चा कुछ ही दिन पूर्व शुरू हुई थी जब एक शाम बहुत थकी मादी, दुःखी नानी ने आकर कहा, 'मैंने तुम्हारे बाप को सपने में देखा है। वह सीटी बजाता हुआ खेतों में घूम रहा था। एक चितकबरा कुत्ता मुँह खोले व जीभ लटकाए उसके पीछे दौड़ रहा था। मैं नहीं जानती कि क्यों परन्तु वह मुझे सपने में दिखा है। लेकिन एक बात है मैं उसे बहुत देर तक देखती रही शायद उसकी आत्मा को शांति नहीं मिली।'

उसी दिन से शुरू कर के कई रातों में उसने मुझे मेरे बाप का जीवन चरित बताया जो उसकी कहानियों से तनिक भी कम अजीब न था।

मेरे बाप का बाप एक सिपाही था जो बाद में बड़ा अफसर हो गया था। अपने कर्मचारियों पर वह इतना अन्याय करता था कि बाद में उसे साइबेरिया जाना पड़ा। वहीं मेरा बाप पैदा हुआ था। उसका बचपन काफी खराब बीता, वह कई बार घर से भागा था। एक बार तो उसे खोजने को जंगल में शिकारी कुत्ते छोड़े थे। दूसरी बार अपने बेटे को उसने इस अमानुषिक ढंग से पीटा था कि पड़ोसियों ने उसे छिपा लिया था।

'क्या वे सदा ही बच्चों को यों ही सताते थे?'

'हाँ।' नानी ने उदासी से कहा।

मेरे बाप की माँ बहुत छोटी उम्र में ही मर गई थी। और मेरा बाप केवल नौ वर्ष का था जब उसका बाप भी मर गया। शहर में क्रास बनाने वाले एक व्यापारी के यहाँ वह काम सीखने लगा। परन्तु वहाँ से वह भाग गया और अंधों

को मेले का रास्ता बता बता कर अपनी रोजी कमाने लगा। सोलह वर्ष की उम्र में वह निजनी आया और नाव बनाने वाले एक बढ़ई के यहाँ काम करने लगा। बीस साल की उम्र में वह एक चतुर बढ़ई बन गया और कोवालिन की गली में नाना के घर के पड़ोस की दूकान का यह कर्ताधर्ता बन गया।

'एक दिन बारबरा और मैं बाहर रसभरी (मकोइया) बिन रही थी कि सेब के वृक्ष के नीचे वह हँसमुख युवक खड़ा दिखाई पड़ा। उसका सिर और पांव दोनों नंगे थे। लेकिन वह सफेद कमीज व मखमल की पतलून पहने था। सिर के बड़े बालों को चमड़े की एक रस्सी से बांधे था। इसी प्रकार पहले तेरी मां व बाप ने एक दूसरे को देखा था। इसके पहले ही मैंने उसे एक दिन खिड़की से देखा था और मन में कहा था, 'अच्छा लड़का है।' तभी मैंने उससे कहा, 'कहो क्या बात है, इस रूप में क्यों चले आ रहे हो?'

'और वह घुटने के बल बैठ कर बड़ी अजीजी से बोला था, 'क्योंकि मेरा दिल यहीं है, सब कुछ बारबरा के लिए। खुदा के लिए हमारी शादी करा दो।'

'यह ऐसी घटना थी कि मैं एक क्षण के लिए अपना मुँह न खोल सकी। मैंने चारो ओर देखा, तेरी मां थी। एक सेब के पेड़ के पीछे से वह उसे इशारे कर रही थी। वह इस समय बिल्कुल लाल थी, रसभरी की तरह लाल और उसकी आंखों में आंसू भी भरे थे।'

'अरे बदमाश!' मैं चीखी, 'यह सब क्या हुआ? बारबरा क्या तू पागल हो रही है? और तुम युवक! तुम कौन हो? कहाँ से आते हो? क्या तू उसे उठा कर ले भागने वाला है?'

'तब तेरा नाना बहुत बड़ा आदमी था। उसने अपने सभी

लड़कों को उनका हिस्सा दे दिया था फिर भी उसके पास चार मकान व काफी रुपया था। कुछ ही दिन पूर्व उसे कामदानी हैट और कामदानी कपड़े भेंट में मिले थे क्योंकि अपनी मन्डली का वह सात वर्षों तक लगातार सरदार था। उन दिनों वह काफी बड़ा दिखता भी था। मैंने तब वही कहा जो मुझे अपने अधिकार के साथ कहना चाहिए था जिससे दोनों उदास हो गए।

'तब तुम्हारा बाप बोल उठा, 'मैं जानता हूँ कि काशिरिन महोदय कभी राजी न होंगे इस लिए हमें भाग जाना पड़ेगा हमें केवल तुम्हारी मदद की आवश्यकता है।'

'मेरी एक भी न सुनी तेरे बाप ने। उसने कहा कि यदि मैं ढेले भी मरूँगी तो भी वह नहीं मानेगा।'

'तब तक वारवरा उसके पास चली गई और उसके कंधे पर हाथ रख कर कहा, 'बहुत दिनों से शादी का हमने निश्चय कर लिया है—हमारी शादी मई में ही हो ही जानी चाहिए थी। हम लोग तो तभी पति पत्नी बन चुके हैं।'

'पर खुदा, मुझे तो ऐसा धक्का लगा जैसे उन्होंने मुझे ढकेल दिया हो।'

नानी हँसने लगी। हँसी से उसका सारा शरीर हिलने लगा। फिर उसने नस सूँघा, आँखें पोंछी और शांति की सांस लेकर कहने लगी, 'अभी तुम यह नहीं समझते। नहीं समझ सके कि शादी क्या बला है। लेकिन यह तो जान ही लो कि शादी के पहले कोई लड़की माँ बने यह कितना भयानक है। यह तुम अपने दिमाग में रखलो ताकि बड़े होकर किसी लड़की को बेवकूफ न बनाना। यह बहुत बड़ा पाप है। लड़की जाति से निकाल दी जायगी और बच्चे को दोगला कहा जायगा। इसे कभी न भूलना। औरतों के प्रति सदा दयालु रहना। उन्हें

दिल से प्यार करना। अपने मौज के लिए ही प्यार मत करना मैं तुम्हे यह बहुत बड़ी सीख दे रही हूँ।'

'लेकिन जानते हो मैंने क्या किया? मैंने तेरे बाप को चपत लगाई बारबरा को बाल पकड़ कर घसीट लिया। लेकिन तेरे पिता ने शान्ति से कहा, 'झगड़े से यह तय न होगा।' और बारबरा ने कहा, 'पहले हमें तय करना है कि क्या किया जाय फिर झगड़ा बाद में होगा।'

'मैंने पूछा कि उसके पास रुपया है। मेरे पास काफी रुपया है।' उसने कहा 'लेकिन उससे मैंने बारबरा की अंगूठी बनवाई है।'

'कितना?'

'लगभग एक सौ रूबल।'

'उस समय कठिन दिन थे। चीजों के दाम ऊँचे थे। मैंने तेरी माँ व बाप को देखा। सोचा, कितने बच्चे हैं, भोले हैं दोनो।'

मैंने अंगूठी को गाड़ दी है। ताकि कोई न देखे। हम उसे बेच सकते हैं? तेरी मां ने कहा।'

'दोनों ही अजीब बच्चे थे। किसी तरह हम लोगों ने निश्चय किया कि एक सप्ताह में ही शादी कर दी जाए और मैंने वायदा किया कि पादरी का प्रबन्ध मैं ही करूँगी। पर हम सभी तेरे नाना के डर से कांप रहे थे। फिर भी किसी तरह सब इन्तजाम हो ही गया।

'लेकिन तेरे नाना के कारखाने का एक व्यक्ति हम लोगों की योजना की गंध पा गया था। वह जासूसी कर रहा था। मैंने सभी अच्छे कपड़े जो अपनी बेटी के लिए बनवा सकती थी बनवाया और पहना कर उसे दरवाजे तक ले गई जहाँ तेरा बाप गाड़ी लिए इन्तजार कर रहा था। उसने सीटी बजाई

और फिर दोनों चले गए। जब मैं वापस घर में आई तो वह व्यक्ति मिला और उसने कहा, 'मैं बुरे दिल का व्यक्ति नहीं हूँ। मेरी इच्छा नहीं कि मैं किसमत के रास्ते में जाऊँ। परन्तु मुझे रास्ते से दूर रहने के लिए तुम्हें पचास रूबल देने पड़ेंगे।'

मेरे पास बिल्कुल रुपये न थे। जब होते थे तब भी मैं बचाती न थी सो एक मूर्खा की तरह मैंने कह दिया, 'मेरे पास रुपये हैं ही नहीं। मैं नहीं दे सकती।'

'अगर वायदा करो कि बाद में दोगी तो भी मैं इन्तजार कर लूँगा।'

'लेकिन मुझे रुपये भी कहाँ मिलेंगे कि वायदा पूरा करूँ।' 'क्या धनी पति के पास से चुराना भी कठिन है!'

'लेकिन मैं भी पागल हो गई थी। मैं उसे आसानी से रोक सकती थी परन्तु मैंने उसपर थूक दिया और वह जो भी जानता था वही पुकार पुकार कर बाहर दौड़ने लगा।'

उसने अपनी आँखें बंद करलीं। फिर मुस्करा कर कहना शुरू किया, 'आज भी मुझे याद है कि मैंने कितना खतरा उठाया था। तेरा नाना जंगली पशु की तरह मुझपर टूट पड़ा। उसने पूछा कि क्या उसका मजाक बनाया जा रहा है। सच तो यह था कि बारबरा को लेकर उसने भी एक योजना बनाई थी कि उसकी शादी वह किसी बहुत बड़े व्यक्ति से करने की सोची थी। परन्तु यह तो खुदा ही जानता है कि किसकी गांठ किससे जुड़ेगी।'

'नाना पल भर में यों उछला जैसे उसके कपड़ों में आग लगी हो। उसने माइक जैक और गाड़ीवान को पुकारा। मैंने देखा कि तेरे नाना ने चमड़े का एक सोंटा लिया और माइक ने अपनी बंदूक ले ली। उस समय हमारे घोड़े सबसे अच्छे थे तथा मैंने देखा कि वे उन सबों को रास्ते में ही पकड़ लेंगे।

ो मैंने चाकू से घोड़ों की जोत काट दी। फलस्वरूप वही हुआ जिसकी मैंने आशा की थी। रास्ते ही में जोत खुल गई और मेरा नाना, माइक तथा गाड़ीवान मरते मरते बचे। जब तक गाड़ी ठीक की गई और वे पहुँचते कि तेरे बाप व बारबरा ने पहुँच कर गिरिजा में सकुशल शादी की रस्म पूरी करली।

वहाँ पहुँच कर सभी तेरे बाप से लड़ने लगे परन्तु वह बहुत खुश और मजबूत था। माइक की तो एक ही धक्के में बाँह टूट गई। गाड़ीवान भी घायल हुआ, फिर नाना और वह जासूस भाग आए।'

'यहाँ तक कि जब लड़ाई हो रही थी तब भी तेरे बाप ने अपना मस्तिष्क खराब न किया बल्कि नाना से उसने कहा, मैं चाहता हूँ कि हममें शान्ति बनी रहे। मैंने वही किया है जो खुदा को मंजूर था।'

'इस पर नाना गाड़ी में वापस आ गया। और वहीं से चिल्ला कर कहा, 'बारबरा, अलविदा! तू अब मेरी बेटी नहीं। न मैं तुझे कभी देखने आऊँगा चाहे तू रहे या भूखी मर जाये।'

और घर आकर उसने मुझे गाली दी और पीटा परन्तु मैं केवल रोई और चुप हो रही।'

'फिर सब समाप्त हो गया। जो भी होना होता है होता ही है। उसने कहा, 'समझी अकूलिना, तेरे अब कोई बेटी नहीं है। याद रखना।'

मैंने सब सुना। मुझे यह कहानी सुनकर आश्चर्य हुआ क्योंकि नाना ने माँ की शादी की बिल्कुल दूसरी कहानी बताई थी। उसने बताया कि उसने शादी रोक दी थी, माँ को घर में बन्द किया था फिर शादी में खुद भी गिरिजा में उपस्थित था। मैंने नानी से यह न पूछा कि

किसकी कहानी सत्य थी परन्तु नानी की कहानी अधिक अच्छी लगी इससे मैंने उसे ही अधिक महत्व दिया।

कहानी कहते समय नानी यों हिल रही थी जैसे किसी नाव में बैठी हो। जब कहानी अधिक दर्दनाक हो जाती तो उसका हिलना अधिक तेज हो जाता। कभी कभी अपने हाथ वह यों उड़ाती जैसे सचमुच ही कुछ उड़ा रही हो और कभी कभी अपने हाथों से अपनी आँखें मूँद लेती।

'पहले दो सप्ताह तो,' उसने आगे कहना शुरू किया, 'मुझे मालूम ही न हुआ कि बारबरा व तेरा बाप कहाँ हैं। फिर एक छोटे से लड़के ने नंगे पांव आकर मुझे बताया। शनिवार को मैं बहाना बताकर वहाँ गई। वे काफी दूर स्वेतिन्स्क पहाड़ी के पास रहते थे। जिस कमरे में वे रहते थे वह ऊपर के हिस्से में था और नीचे कोई छोटी सी फैक्टरी थी जहाँ सदा ही शोर होता रहता था। परन्तु उन्हें इसकी चिन्ता न थी। वे दोनों ही बच्चों की तरह खेलते और रहते थे। मैं जो भी संभव था उनके लिए ले गई। चा, चीनी, अनाज, जाम, आटा, और थोड़ा रुपया भी ·········चोरी इतना बड़ा पाप नहीं है। यदि अपने लिये चोरी न की जाये।

'लेकिन तेरे बाप ने कुछ न लिया, 'हम लोग भिखारी नहीं हैं।' उसने कहा और बारबरा ने भी कहा, 'यह सब किसके लिये?'

'सो मैंने उन्हें समझाया, 'बेवकूफों, मैं भी कुछ हूं या नहीं? मुझे खुदा ने ही तेरी माँ बनाया है। तू मेरे हाड़ मांस का ही एक हिस्सा है। तू मेरा अपमान क्यों करती है? क्या तुझे नहीं मालूम कि यदि धरती पर किसी

माँ का अपमान होता है तो स्वर्ग में खुदा की माँ रोने लगती है ?'

'तब तेरे बाप ने मुझे पकड़ कर कमरे भर में घुमाया। सचमुच नाचने लगा। वह कितना मजबूत था—भालू की तरह! और बारबरा—उसे अपने पति पर बड़ा घमण्ड था। मोर की तरह वह फूली न समाती थी। वह सदा उसी पर नजर रखती जैसे कोई उसका नया नया गुड्डा हो और घर का सब काम तो वह यों करती थी जैसे जिन्दगी भर यही करती रही हो! उसकी बातें सचमुच बड़ी मजेदार होती थीं।

'इसी प्रकार महीने पर महीने बीतते गये और तेरे पैदा होने का दिन भी पास आता गया। परन्तु ओफ़, तेरा नाना! अजीब है वह भी। एक शब्द भी न बोला। वह यह जान गया था कि मैं उनके पास जाती थी परन्तु वह ऐसा बना रहा जैसे उसे कुछ भी मालूम न हो।

उसने घर में बारबरा का नाम लेने की भी मनाही कर दी थी। इसलिए कोई उसका जिक्र न करता। मैं भी उसका नाम न लेती। लेकिन मैं जानती थी कि कभी न कभी पिता का दिल अवश्य ही भर आएगा। और वह समय आ गया। वह तूफानी रात, लगता था जैसे हजारों भालू खिड़की के पास चिल्ला रहे हों। उस रात मैं और तेरा नाना, दोनों ही सो न सके।

'ऐसी रातें गरीबों के लिए तो बुरी हैं ही, जिनके मन में अशान्ति है उनके लिए भी बुरी हैं।'

'उसी समय तेरा नाना बोल उठा—'वे लोग कैसे हैं'? क्या वे ठीक हैं?'

'तुम किसे पूछते हो—बेटी बारबरा को या दामाद मैक्सिम को।'

'तुम यह अन्दाज कैसे लगाती हो?'

'अरे मालिक, छोड़ो इस हठधर्मी को। भला इसमें तुम्हें कोई सन्तोष भी मिलता है या नहीं।'

'वह हँसा—ओफ, बदमाश! फिर थोड़ी देर बाद मेरे बाप के बारे में उसने कहा, 'मैंने सुना है कि वह बेहूदा है। क्या यह सच है?'

'बेहूदा! बेहूदा वह है जो अपना काम न करे और दूसरों के गले पड़े। क्या अपने माइक और जैक बेहूदे नहीं? इस घर में कौन कमाऊ है? कौन रुपया लाता है? तुम! भला उनसे तुम्हें क्या मदद मिलती है?'

'इसके उत्तर में उसने मुझे गालियाँ दीं। मूर्ख और जाने क्या क्या लेकिन मैं चुप रही। वह कहता रहा, 'किसी ऐसे को तूने कैसे स्वीकार किया? तुझे मालूम है कि वह कौन है कहाँ से आया है?' मैंने फिर भी कुछ न कहा। जब वह चुप हुआ तो मैं बोली, 'तुम खुद जाकर क्यों नहीं देख आते? वे अच्छी तरह रह रहे हैं।'

'मेरा जाना बड़ी बात होगी जो सम्मान के खिलाफ है। उन्हें आना चाहिए।'

'यह सुनकर मैं खुशी से चीख उठी। उसने मेरे बाल खींचे और कहा, 'तू क्या समझती है कि मेरे सीने में बाप का दिल नहीं है?'

एक वक्त था, तुम जानो, जब वह बहुत अच्छा था। जब उसने यह सोचना शुरू किया कि वह सब से अच्छा है तो बुरा होगया।'

'और एक छुट्टी के दिन वे आए। तेरी माँ और बाप।

वे नाना के सामने खड़े हो गए। तेरे बाप ने नाना के कन्धे पर हाथ रख कर कहा, 'मैं आज दहेज की बात करने तथा अपनी पत्नी के पिता का सम्मान करने आया हूँ।'

'नाना को इससे हँसी आगई। उसने कहा, 'तू लड़ने आया है। डाकू! मैं चाहता हूँ कि तू यहाँ आकर रहा कर।'

'तेरे पिता ने सीधा उत्तर दिया, 'यह तो बारबरा है। वह जो भी तय करेगी मुझे स्वीकार होगा।'

'और इस तरह शुरू हुआ। तेरे पिता की आंख अच्छी थी—साफ और चमकीली। उसकी भवें बहुत घनी थी। जब वह दोनों भवें मिलाता तो उसकी आँखें छिप जाती थीं। वह घर भर में केवल मेरी बातें मानता था। वह यह जान गया था कि मैं उसे अपने बेटों के अधिक प्यार करती हूं तो वह भी मुझे बहुत प्यार करता था। वह मुझे अपनी बाहों में उठा लेता और कमरे भर में नाचता व कहता, 'तू मेरी सगी माँ है। तू तो धरती की तरह महान है। मैं तुझे बारबरा से भी अधिक चाहता हूँ।' और तेरी माँ जब खुश होती तो, ओह! हम तीनों बहुत ही खुश थे। हम जानते थे कि खुशी किसे कहते हैं। वह अच्छा नर्तक भी था और उसने बहुत अच्छे अच्छे गाने भी अन्धों से सीख रखे थे। तुम जानते हो न कि अन्धों से अच्छा गवैया कोई और नहीं होता।'

'उसी घर के बाहर वाले बगीचे के कमरे में वे रहने लगे। वहीं एक दोपहर को तू पैदा हुआ था। जब दोपहर को खाना खाने तेरा बाप आया तो तू उसके स्वागत को पैदा हो चुका था। वह बहुत खुश हुआ। उसे यह अनुमान तो था नहीं कि बच्चे जनने में क्या कष्ट होता है। उसने मुझे रास्ते से ही लौटा दिया कि मैं नाना से कह आऊँ कि उसके एक और नाती हो

गया है। नाना भी उस पर हँसा था—'मैक्सिम ! तू कितना शैतान है ?'

'लेकिन तेरे मामा उसे पसन्द न करते थे। वह शराबी न था। बातों में खरा था और वह खूब धूर्तता करता था। एक बार अचानक तेज आँधी चली ! हम सभी घबड़ा गए।'

'फिर जिस प्रकार अचानक वह शुरू हुई थी बन्द भी हो गई। इससे हम सभी खूब डर गए। तेरे नाना को शक हो गया। वह चीख पड़ा, 'अवश्य ही यह मैक्सिम की धूर्तता है। बाद में पता लगा कि कई बोतलों से उसने यह आवाज बनाई थी। नाना ने उसी दिन उसे डाँटा, 'याद रख तेरी यही करामातें तुझे पुनः साइबेरिया वापस ले जाएँगी।'

'जाड़ों के दिनों में अचानक जंगलों से कुछ भेड़िए शहर में आ गए, कुत्ते मरने लगे। घोड़े भी मरे और एक दो पहरेदार भी घायल हुए। सारे शहर में सनसनी फैल गई। तेरा बाप बर्फ वाले जूते पहन कर बंदूक लेकर निकल गया और दो को मार लाया। उसने उनके चमड़े निकाले। सिर में भूसा भरा। शीशे की आंखें लगाईं। सब कुछ बहुत सफाई से किया। जब तेरा मामा माइक उधर निकला तो भाग आया। डर के मारे उसके रोयें खड़े थे। आंखें भयभीत थीं—बड़ी मुश्किलों से उसने कहा, 'भेड़िया!' सभी लोग चाकू लेकर मारने दौड़े। वह भेड़िया संदूक पर सिर रखे बैठा था। उस पर गोली छोड़ी गई फिर पता लगा कि वह क्या है ! तेरे बाप की इस करामात ने सचमुच नाना को रुष्ट कर दिया।

तेरा मामा जैक उसमें कुछ दिलचस्पी लेता था। उन लोगों ने नकली चेहरे लगाकर रात को खिड़कियों से झाँक झाँक कर शहर भर को डराना शुरू किया। एक पादरी को डराया वह

भाग कर सिपाही के पास चला गया। सिपाही भी डर गया। मैंने और बारबरा ने बहुत समझाया कि यह बन्द करो। लेकिन वे अपने ही मन का करते रहे। तेरा पिता इस प्रकार के करामातों में बहुत मजा लेता।

'लेकिन अपनी दवा का उसे ही स्वाद मिल गया। माइक सदा ही नाना के पास रहता था। उसने एक योजना बनाई। जाडे के प्रारम्भ में वे चारों चले आ रहे थे। तेरा बाप दोनों मामा और एक अन्य व्यक्ति। रास्ते में ही सलाह कर के वे लोग इस इरादे से बर्फ की ओर गए कि तेरे बाप को ढकेल दें।'

मामा लोग इतने बुरे क्यों बन गए थे ?'

'ऐसा नहीं कि वे बुरे थे। बस वे बदमाश हैं। माइक कुछ अधिक और जैक कम। उन्होंने उसकी हत्या का पूरा प्रबंध किया था पर यह बच गया। परन्तु खुदा उसकी आत्मा को शांति दे कि जब पुलिस अफसर ने पूछा तो उसने सारा अपराध अपने ऊपर ले लिया—'यह सब मैंने ही किया। मैंने शराब पी ली थी।'

'यह सचाई नहीं है।' अफसर ने कहा, 'तू कभी नहीं पीता।'

और जब वह घर आया तब जैक व माइक नहीं आए थे वे एक शराब खाने गए थे। अपनी सफलता पर प्रसन्नता मनाने। तेरी मां व मैंने मैक्रिगर को घूर घूर कर देखा। वह अकड़ा हुआ था। उसका चेहरा नीला पड़ गया था। उँगलियाँ कटी थीं और उनपर सूखा हुआ खून जमा था। उसके बाल ऐसे लगते जैसे बर्फ के बने हों।

'तेरे साथ उन्होंने क्या किया ?' बारबरा ने चीखकर पूछा,

'अफसर ने समझ लिया कि कुछ गड़बड़ी है सो उसने कई सवाल पूछने शुरू किये ।

'मैंने बारबरा को अफसर के पास छोड़कर एकान्त में तेरे पिता से पूछना शुरू किया कि क्या बात थी ।

'पहला काम तो यह है ।' उसने कहा कि माइक व जेक से कहो कि वे यही कहें कि उन्होंने मुझे यामस्की गली में छोड़ दिया था । वे पोक्रोवेस्की सड़क की ओर और मैं प्रीआ-डोल्मी की ओर चला गया था । इसमें फर्क न पड़े अन्यथा पुलिस फँसायेगी ।'

मैं भाग कर नाना के पास गई कि वह जाकर अफसर को बातों में फँसाये रहे और मैं अपने बेटों को इस दुष्टता की कृपा के लिये सब समझा दूँ ।

'नाना उठा कपड़े पहने और कहा, 'मैं जानता था कि यह होगा, जरूर होगा ।'

मैं जब अपने बेटों से मिली तो मैंने अपना मुंह ढाँक लिया था । वे डर गये । जेक ने कहा, 'मैं कुछ नहीं जानता । गलती माइक की है ।'

'लेकिन हम लोगों ने अफसर को समझ लिया था वह भला आदमी था । उसने कहा, 'होशियार रहना मैं जान लूँगा कि क्या गड़बड़ी है ।' कह कर वह चला गया ।

'फिर तेरा नाना तेरे बाप के पास गया, बोला, 'तुम्हें बहुत धन्यवाद । मैं जानता हूँ कि मेरे स्थान पर कोई दूसरा होता तो इस समय क्या कहता । बेटी, मैं तेरा कृतज्ञ हूं कि तू ऐसे भले आदमी को मेरे घर में लाई ।' नाना अच्छा [illegible] था ।

'जब मैं और बारबरा अकेले बचे तो बाप रोने लगा, 'माँ, आखिर उन्होंने मेरे साथ ऐसा क्यों किया ? मैंने उनका क्या नुकसान किया है ?' वह मुझे सदा 'माँ' कहता था। एक बच्चे की तरह।

'मैं भी रो पड़ी। इसके सिवा भला क्या करती ? मैं अपने बेटों पर दुःखी थी। तेरी माँ ने जल्दी में अपनी ब्लाउज़ के बटन गलत बन्द कर लिये और ऐसी दिखाई पड़ी जैसे लड़ाई से उठी हो। उसने चीखकर कहा, 'चलो हमें यहाँ से चला जाना चाहिये। मेरे भाई मेरे शत्रु हैं। आगे वे जाने क्या करें। हमें चल देना चाहिये।'

मैंने उसे चुप कराना चाहा। 'आग में कूड़े मत डालो। क्या घर में अभी ही कम धुआँ है ?'

'तभी नाना ने दोनों को भेजा कि तेरे बाप से माफी माँगे। बारबरा उछल पड़ी। उसने माइक को एक चपत लगाई, कहा, 'यों तुझे माफ किया जायगा। और तेरे बाप ने कहा, 'भाइयों ! ऐसा क्यों किया ? बिना हाथ के हम कैसे काम कर सकेंगे।'

तेरा बाप सात सप्ताह तक बीमार पड़ा रहा। उसने कहा, 'माँ हम कहीं और चले जाएँ। यह शहर हमारे लिये ठीक नहीं है।

'तभी उसे अस्त्राखान जाने का मौका मिला। ज़ार वहाँ आने वाला था। तेरे बाप को एक शानदार फाटक बनाने का काम मिला। पहली ही नाव से वे चले गए। उनका जाना देखकर मैं रो पड़ी। तेरा बाप भी दुखी था। उसने मुझे भी अस्त्राखान चलने को कहा। बारबरा प्रसन्न थी। इस प्रकार वे चले गए। यही कहानी का अन्त है।'

उसने एक घूँट वोद्का पिया और एक चुटकी नस लिया फिर खिड़की की राह नीले आकाश को देखकर कहा, 'सचमुच तेरा बाप मेरे ही हाड़ माँस का एक टुकड़ा था।'

जब वह कहानी कह रही थी तब बीच बीच में नाना चिल्ला उठता था—'यह झूठ है।' फिर वह पूछता, 'एलेक्स क्या यहाँ यह शराब पी रही थी?'

'नहीं।'

'तू झूठा है। मैंने खुद देखा है।' परन्तु रहस्यमयी दृष्टि से देखकर वह चला जाता।

एक दिन कमरे के बीच में खड़ा होकर उसने नीचे देखा और पुकारा, 'मालकिन!'

'क्या?'

'देखो क्या हो रहा है?'

'क्या?'

'तू क्या समझती है?'

'शायद शादी का प्रबन्ध हो रहा है। तुम किसी बड़े आदमी की बात करते थे?'

'ठीक।'

'यह रहा वह बड़ा आदमी।'

'लेकिन उसके पास कुछ नहीं है।'

'तुझे क्यों फिक्र पड़ी है'

नाना चलागया तो मैंने पूछा, 'तुमलोग क्या बातें कररहे थे?'

'तुम सब जान जाओगे। अभी छोटे हो। यदि अभी ही सब जान जाओगे तब बड़े होकर क्या करोगे।'

'ओफ मालिक, मालिक! अलेक्स, किसी से कुछ न बताना।

तेरा नाना बर्बाद हो गया है। कोई बड़ा आदमी जिसे नाना ने रुपया उधार दिया था दिवालिया हो गया।'

फिर वह गम्भीर हो गई।

'बताओ क्या सोच रही हो ?

'मैं तुझे कुछ बताने की सोच रही हूं। एक राक्षस था। उसका नाम था—इवस्तीगनिया। वह बहुत चतुर था। वह बड़ा घमण्डी था। वह गिरजे को देखकर कहता, कोई ज्यादा ऊँचा नहीं। गली को देखकर कहता—चौड़ी नहीं है। एक रात उसके यहाँ शैतान आया। उसने कहा—'अरे तुझे मैं नरक में ले चलूँगा तब बताना कि वहाँ गरमी है या नहीं ? इसके पहले कि वह उठे शैतान ने उसे घसीटना शुरू किया। नरक की गरमी से वह लाल हो गया पर शान के मारे बोला नहीं। ठीक उसी तरह तेरा नाना है। अच्छा जा सो जा।'

माँ कभी कभी पर बहुत कम आती। बहुत कम समय को आती। कम बोलती। परन्तु दिन पर दिन वह सुन्दर होती जा रही थी। उसके कपड़े अच्छे होते। उसमें मुझे परिवर्तन दिखाई पड़ने लगा। नानी भी बदल रही थी। इससे मुझे लगा कि कुछ होने जा रहा है जो मुझसे छिपाया जा रहा है। इससे मैं परेशान रहने लगा।

नानी की कहानी अब मुझे अच्छी न लगती। एक दिन मैंने नानी से पूछा,

'आखिर क्यों मेरे बाप की आत्मा अशान्त है ?'

'मैं क्या जानूँ !' कहकर उसने आँखें बन्द कर लीं। 'यह खुदा के हाथ की बात है।'

रात को मुझे नींद न आती और मैं खिड़की की राह नीले आकाश में खिले सितारों को देखता। मेरे मन में एक कथा-

नक ने घर कर लिया। जिसका नायक मेरा बाप था। अकेला व्यक्ति, हाथ में डंडा। संसार की सड़क पर अकेला चलता हुआ। उसके पीछे एक तेज व बहादुर कुत्ता भी। बस!

बारह

एक दिन शाम को मुझे थोड़ी झपकी लग गई। मुझे लगा कि मेरे पांव सुन्न हो गए हैं। परन्तु ज्योंही मैंने पांव खाट के नीचे रखा कि लगा हाँ ठीक है और मैं चल सकता हूँ। यह विचार आते ही खुशी से मैं उछल पड़ा और खड़ा होने की कोशिश करने लगा। मेरे पाँव मेरा पूरा बोझ न सम्हाल सके। फिर भी सहारे से मैं नीचे गया और इस कल्पना से ही खुश था कि मुझे नीचे देखकर सभी हैरानी में आ जायँगे।

मैं हाथ व घुटनों के बल माँ के कमरे में गया परन्तु वहाँ अतिथि थे। उनमें से एक हरे कपड़े पहने महिला भी थी। सभी चुप थे परन्तु वही बोल रही थी, 'उसे चा पिलाओ और उसका सिर भी ढँक दो।'

उसने सभी कपड़े हरे थे। यहाँ तक कि हैट भी जिससे उसका चेहरा भी हरा मालूम होता था। उसके बाल भी मुझे घास की तरह ही हरे लगे। उसका ऊपरी ओंठ उठा और

निचला गिरा जिससे उसके हरे दाँत भी दिखाई पड़ गए। उसने उसी समय अपनी आँख बन्द कर ली।

'वह कौन है ?' तनिक घबड़ाकर मैंने पूछा।

एक व्यथा भरी आवाज में नानी ने कहा, 'तेरे लिये दूसरी दादी है वह !'

और हँसती हुई माँ ने ईजेने मैक्सीमोव को मेरी ओर भेजकर कहा, 'यह तेरा बाप है।' इसके अलावा भी जल्दी जल्दी में उसने कुछ और कहा जो मैं नहीं सुन सका परन्तु मैक्सीमोव ने आकर मुझपर झुककर कहा, 'मैं तुम्हारे लिये रंग ला दूँगा'।'

सारा कमरा उजाला था। तरह तरह की मोमबत्तियाँ जलाई गई थीं। कमरा जगमगा रहा था। खिड़की के बाहरी आकाश में सितारे तैरते से लगे और लगा कि मेरे चारों ओर यह सब तैर रहे हैं।

'यह बेहोश हो रहा है।' नानी ने कहा और मुझे उठाकर दरवाजे के पास लाई। परन्तु मैं बेहोश नहीं हो रहा था बल्कि केवल आँखें मूँद ली थीं। मुझे उठाये ही वह ऊपर चली। मैंने पूछा, 'तुमने मुझे सब क्यों नहीं बताया ?'

'काफी है······क्या बताती ?'

'तुम सभी मुझे बेवकूफ बनाती हो।'

ऊपर उसने मुझे खाट पर लिटा दिया फिर खुद भी तकिये में मुँह डाल कर रो पड़ी। तू क्यों नहीं रो रहा ?' उसने टूटी आवाज में पूछा।

मेरा रोने को जी न था। बाहर घना अँधेरा व ठंडक थी। मेरी आँखों के सामने अब भी हरी वाली स्त्री

मौजूद थी । मैंने सोने का बहाना किया और नानी चली गई ।

फिर एक के बाद दूसरे मनहूस दिन बीतते गये । सगाई के दूसरे ही दिन माँ जाने कहाँ चली गई । और घर पर भारी सन्नाटा छा गया ।

एक दिन सुबह सुबह नाना ने आकर खिड़की पर जमी बर्फ साफ करनी शुरू की । नानी भी पानी लेकर सफाई करने लगी तभी नाना ने पूछा,

'तुम्हें कैसा लगा ?'

'क्या मतलब ?'

'खुशी हुई या······?'

और उसपर उसने वही उत्तर दिया—'मुझे याद है, काफी है क्या बताऊँ ?'

इन दिनों मैं सीधी सादी बातों को भी बहुत अर्थ-भरी समझने लगा थी । और यदि उनके साथ किसी दुःखी या दूसरे प्रकार की घटना का सम्बन्ध होता तो उनका जिक्र किसी से न किया जाता परन्तु सबों को मालूम रहता ।

नाना ने सावधानी से खिड़की के पल्ले हटा दिये । नानी हवा का सुख लेने खिड़की के पास गई । मैं उसी समय बिस्तरा छोड़कर उठ खड़ा हुआ ।

'हट और नंगे पाँव दौड़ना मत शुरू कर देना ।' नानी ने आगाह किया ।

मैं बगीचे में जा रहा हूँ ।'

'रुक कर जाना, अभी जमीन सूखी नहीं है ।'

परन्तु मैंने उसकी एक न सुनी । सचाई तो यह थी कि बड़ों की सभी बातें मुझे बुरी लगतीं । बागीचे में घास

की पीली नई पत्तियाँ निकल आई थीं। सेब में फूलों की कलियाँ खिलने वाली थीं। चारों ओर चिड़ियाँ चहक रही थीं। गड्ढे के पास जहाँ गाड़ीवान पीटर रहता था वहाँ अब ऊँची ऊँची घास उग आई थी। मुझे वह अच्छी न लगी। मैंने मन में सोचा वह स्थान साफ करके गर्मियों में अपने इस्तेमाल के लिए बना लूँ ताकि बूढ़ों से दूर रह सकूँ। मैंने फौरन ही अपने विचार को कार्य रूप में परिणित करना शुरू किया। मैं बहुत गम्भीर होकर सोच रहा था।

'यह मुँह क्यों फुलाये है?' माँ व नानी ने पूछा। मुझे कोई उत्तर न सूझा क्योंकि यह बात तो थी नहीं कि मैं किसी पर क्रुध था परन्तु घर के सभी लोगों से जाने क्यों मुझे नफरत होती जा रही थी।

दोपहर के खाने, नाश्ता व चा के समय लगभग प्रतिदिन ही वह हरी दिखाई पड़ने वाली बुढ़िया आ जाती। उसकी शक्ल मुझे बहुत अधिक बनावटी मालूम होती। वह अजीब ढंग से खाना भी खाती। उसके दाँत घोड़ों के दाँतो की तरह थे। खाते समय उसके कानों के ऊपर की हड्डी लुढ़कते गेंद सी लगती।

लेकिन वह और उसका लड़का दोनों बहुत साफ सुथरे थे। इससे उनका सान्निध्य मुझे बुरा न लगता। फिर भी पहले दिन ही जब उसने मेरी ओर हाथ बढ़ाया तो मैं भाग गया था। इसपर वह अक्सर अपने बेटे से कहती, 'इजेने, उस लड़के को शिष्टाचार का ज्ञान नहीं है। समझे?'

कुछ भी हो मैं पूरी तरह उन्हें पसन्द न कर सका।

एक बार खाने के समय उसने अपनी आँखें नचाकर कहा, 'अरे, अलेक्स, तुम कैसे खाते हो? इतने बड़े बड़े ग्रास'! खाना सीखो।'

मैंने मुँह का ग्रास बाहर निकाल लिया। फिर से काँटे में खोंसा और उसकी ओर बढ़ाकर कहा, 'लो, लेकिन सावधान, गरम है।'

माँ ने मुझे गिरा दिया। मुझे बड़ी ग्लानि हो रही थी परन्तु नानी ने मेरा साथ दिया। वह मुँह बन्द करके हँसी फिर कहा, 'सचमुच बहुत बदमाश है।'

मैं भाग कर ऊपर छत पर चला गया और चिमनी से लग कर बैठ गया।

एक दिन अपने भावी सौतेले बाप व सौतेली दादी की कुर्सियों में मैंने ग्रीस और सिरका पोत दिया जिससे दोनों ही अपनी कुर्सी पर बैठते बैठते उछल पड़े। यह बहुत मजेदार दृश्य था। उस दिन नाना द्वारा मुझे मार पड़ी। उसके बाद माँ बहुत व्यथित होकर मेरे पास आई। मुझे अपने पास खींच कर गुठनों से लगाकर खड़ा किया और कहा, 'सुनो! तेरे मन में इतनी घृणा क्यों भर गई है? काश, कि तू जानता कि इससे मुझे कितनी मुसीबत उठानी पड़ती है।' और उसने ज्योंही मेरा सिर अपने गालों से लगा लिया कि उसके आँसू मुझ पर बरस पड़े।

इससे सचमुच मुझे आन्तरिक कष्ट हुआ। इससे अच्छा होता कि मुझे चाहे मार पड़ जाती। मैंने वायदा किया कि फिर कभी मैक्सीमोव परिवार को तंग न करूँगा।

उसने बहुत प्यार से कहा, 'उनके साथ अच्छा व्यवहार करना। हम लोगों की जल्दी ही शादी हो जायगी तब हम लोग मास्को चले जाएँगे। और जब वापस आयेंगे तब तुम्हें हमारे

पास रहना पड़ेगा। इजेने अच्छा लड़का है, होशियार भी है। तुम दोनों साथ रहोगे। तुम भी स्कूल जाने लगोगे फिर उसी की तरह बन जाओगे। फिर तुम डाक्टर बनोगे या जो भी चाहोगे। जो भी तुम सीखोगे तुम्हारा ही लाभ होगा। अब भाग जाओ और खेलो।'

भविष्य का जोभी स्वप्न उसने मुझे दिखाया वह मुझे बहुत सुनसान मालूम हुआ। मुझे वह बिलकुल अच्छा न लगा। मेरा मन हुआ कि मैं माँ से कह दूँ, 'शादी मत करो माँ, मैं तुम्हारा भार सम्हाल लूँगा।' परन्तु मैं न कह पाया।

बगीचे में मैं अपने लिए जो गृह निर्माण कर रहा था वह काफी उन्नति पर था। मैंने ऊँची ऊँची घास काट डाली। फर्श पर ईंटें बिछा दीं ताकि फिर घास न निकले।

'यह ठीक किया।' एक दिन नाना ने कहा। उसने मेरे काम का निरीक्षण किया। 'तुमने तो केवल घास काटी है। उसकी जड़ कहाँ निकाली? जा फावड़ा ले आ मैं खोद दूँ।'

मैंने फावड़ा ला दिया उसने कहा, 'मैं खोद रहा हूँ। तुम जड़ निकालते चलो। हां तेरे लिए मैं यहाँ कुछ अच्छे फूल के बीज बो दूँगा।' कहकर वह रुक गया और खामोश खड़ा शून्य में निहारता रहा।

मैंने उसे घूर कर देखा तो पाया कि उसकी छोटी छोटी आँखों से आँसू बरस रहे थे। मैंने पूछा, 'क्या हुआ नाना!'

उसने अपने को झिंझोरा। अपने हाथ से ही आँसू पोंछ लिए, 'कोई!' कहा और फिर खुदाई में लग गया। परन्तु कुछ क्षणों के पश्चात् कहा, 'मेरा सभी काम बेकार है। मैं शायद शीघ्र ही यह घर बेच दूँ तेरी माँ के दहेज के लिए मुझे रुपयों की जरूरत है। हम लोग सोचते हैं कि शायद इससे तेरी माँ की खुशी लौट आये। खुदा उस पर रहम करे!'

अचानक फावड़ा फेंककर वह स्नानघर के पीछे की ओर चला गया। मैं खोदता रहा। पहला ही फावड़ा जो चलाया उससे मेरा अँगूठा कट गया। फलस्वरूप मैं माँ की शादी में गिरजा न जा सका। मैं केवल दरवाजे तक आकर उसे देखता रहा, वह मैक्सीमोव की बाहों में थी और उसकी आँखें धरती पर गड़ी थीं।

शादी बहुत ही खामोशी से हुई। शादी के बाद वे गिरजा से वापस आकर चा की मेज पर बैठे। सभी बहुत थके से लग रहे थे। माँ ने शादी वाले कपड़े उतार दिये थे। वह कमरे में अपना सामान बाँधने गई। मेरे पास आकर मेरे सौतेले बाप ने कहा, 'मैंने तुम्हें रंग देने को कहा था न, यहाँ अच्छे रंग नहीं मिलते मैं तुम्हें मास्को से रंग लाकर दूँगा।'

'मैं उसे लेकर क्या करूँगा।'

'तुम्हें क्या रंग की तस्वीरें बनाने का शौक नहीं।'

'मैं बनाना नहीं जानता।'

'तब मैं तुम्हारे लिये कुछ और लाऊँगा।'

माँ वापस आई। 'हम लोग जल्दी ही लौटेंगे।' उसने कहा, 'तुम्हारे बाप को वहाँ एक इम्तहान देना है। जब पढ़ाई समाप्त हो जायगी तभी हम लोग आ जाएँगे।'

उनका इस प्रकार बातें करना मुझे अच्छा लग रहा था क्योंकि वे मुझे यों समझा रहे थे जैसे मैं काफी बुजुर्ग होऊँ। परन्तु कोई दाढ़ी वाला व्यक्ति पढ़ने जाए यह सुनकर मुझे कुछ अजीब सा लगा।

'क्या पढ़ाई कर रहे हो।' मैंने पूछा।

'जमीन की नाप जोख की।'

इसके अर्थ मैं न समझा न आगे पूछा ही। इसके बाद

घर भर में भारी खामोशी छाई रही । नाना चूल्हो की ओर पीठ करके बैठा खिड़की पर घूर रहा था । वह हरी वाली औरत माँ को सामान बाँधने में मदद दे रही थी । नानी कहीं दिखाई न पड़ती थी वह कहीं शोकाकुल बैठी थी । शायद दोपहर से शराब पीकर कमरे में बैठी थी ।

माँ बहुत सबेरे ही चली गई । जाते समय मुझे जमीन से उठाकर अपनी गोद में ले लिया । परदेसी की सी दृष्टि से मुझे घूरा फिर चूमा और विदा लिया ।

'इससे कह दो कि मेरी बातें मानेगा ।' नाना ने आकाश की ओर देख कर कहा ।

'नाना का कहना मानना ।' माँ ने मुझे शिक्षा दी ।

मैं उससे कुछ और कहने जा रहा था परन्तु नाना ने टोक दिया—इससे उसपर मुझे गुस्सा आया ।

गाड़ी में चढ़ते समय माँ का फ्राक किसी कीली से फँस गया जिससे क्रोध में आकर उसने फ्राक को खींचना शुरू किया । 'उसकी मदद कर । खड़ा क्यों है ? अंधा है क्या ?' नाना ने मुझे डाँटा । परन्तु मैं हिल भी न पाया । वेदना से मैं बिलकुल असहाय सा बन गया था ।

मैक्सीमोव नीला पतलून पहने था । माँ ने उसे कुछ बण्डल दिये जिसे उसने अपनी गोद में रख लिए । वे काफी थे । उसका पीला चेहरा लज्जा से झेंप गया और उसने कहा, 'इतना काफी है बहुत है ।'

दूसरी गाड़ी में वह हरी बुढ़िया और उसका बड़ा लड़का जो फौजी अफसर था—बैठे ।

'तो तुम्हें लड़ाई पर जाना है ?' नाना ने पूछा ।

'हाँ ।'

'यह बहुत अच्छी बात है। तुर्कों को मार पड़नी ही चाहिये।'

जब वे चल पड़े। तब कई बार घूमकर माँ ने रूमाल हिलाया। दिवाल के सहारे खड़ी नानी भी हाथ हिलाती रही। नाना ने आँखें पोंछकर टूटती आवाज में कहा, 'यह सब बेकार है, इससे कोई लाभ न होगा।'

अपने फाटक पर खड़ा मैं गाड़ी को तब तक देखता रहा जब तक वह मुड़कर विलीन न हो गई। मुझे लगा जैसे मेरे अन्तर का कोई दरवाजा बन्द हो गया। अभी काफी सवेरा था। सभी के घरों की खिड़कियां बन्द थीं। गली में सन्नाटा था।

'कुछ नाश्ता कर लेना चाहिये।' मेरे कन्धे पर हाथ रख कर नाना ने कहा, 'ऐसा लगता है कि तुझे मेरे ही साथ रहना पड़ेगा।'

उस दिन हम लोग पूरी तरह बाग में ही फँसे रहे। नाना ने रसभरी की झाड़ी काटी, सेब की कलम लगाई। मैं भी साथ साथ लगा रहा।

'यह तेरी अच्छी आदत है कि तू अपने लिए अपना काम करने का आदी है' नाना ने कहा।

मैं नाना की बातों को ध्यान से सुनता और मनन करता। अक्सर बेंच पर लेट जाता जिसपर मैंने चटाई बिछा दी थी। वह मुझे बातें बताता।

'अब तू अपनी माँ से सचमुच दूर हो गया है। उसे दूसरे बच्चे होंगे। जिनका उसके लिये तुमसे अधिक महत्व होगा।'

फिर क्षण भर रुक कर उसने कहा, 'तेरी नानी ने शराब छिपा है। इसके पहले दो बार उसने शराब पी थी। एक

जब माइक फौज में गया था। परन्तु वह निकाल दिया गया। अगर वह फौजी बन जाता तो उसका जीवन दूसरे ही तरह का होता। पर ·· तू ···! मैं शीघ्र ही मर जाऊँगा। इसके माने हैं कि तुम सबों को अपने पाँव पर खड़ा होना पड़ेगा। तुम्हें अपनी जीविका कमानी पड़ेगी। समझे! सदा अपने आप पर भरोसा रखो तथा दूसरे के आश्रित मत बनो। दूसरों से दोस्ती रखकर आदरपूर्वक शान्ति से रहना। दूसरे जो भी कहें ध्यान से सुनो परन्तु करो वही जिससे तुम्हारा अपना लाभ हो।'

मौसम अच्छा रहता तो गर्मियों में मैं बाग में ही रहता। वहीं सोता भी। कभी कभी नानी भी बिस्तर लेकर आ जाती। वहाँ पड़ी पड़ी वह अपनी कहानियाँ सुनाती रहती। 'देखो वह एक तारा टूटा। शायद कोई अतृप्त अशान्त आत्मा ने धरती माता को याद किया है। इसके माने कि कोई बड़ा आदमी पैदा हुआ है।' या वह कहती, 'एक बड़ी आँख की तरह देखो वह सितारा नया उगा है।'

'कितनी बेवकूफ औरत है यह!' नाना बड़बड़ाता, 'तुझे सरदी लग जाएगी। या बुखार आने लगेगा। नहीं तो चोर आकर तेरी हत्या कर देंगे।'

फिर शाम आती। लगता कि शोलों की नदी आकाश से उतरी आ रही है। सभी की परछाईं बढ़ जाती।

फिर रात आती। दिन भर की अच्छी बुरी बात भूल जाती। सिर ऊँचा करके आकाश के सितारों को निहारते हुए लेटे रहना बहुत सुखदाई होता। चारों ओर का अँधेरा घना होता जाता। एक के बाद दूसरी जो भी आवाज आती वह दिन की आवाज से भिन्न होती।

कहीं किसी स्त्री के हँसने की मधुर आवाज, कहीं कुत्तों के भूँकने की आवाज। परन्तु सब अपने ढङ्ग की अनोखी।

नानी बहुत कम सोती। अपने हाथ के तकिये पर सिर रखे वह कहानी कहती रहती चाहे मैं सुनता या न सुनता। मैं तो उसकी आवाज की मधुरता के साथ ही सो जाता और उठता चिड़ियों की आवाज के साथ। सुबह के सूर्य की किरणें मुझे ढँक लेतीं और मैं उठता। सुबह की ठँडी हवा और सेब पर से गिरती हुई ओस की बूँदें।

मैं अनुभव कर रहा था कि मैं अब कुछ बदलता जा रहा था। मुझे ओवसीनीकोव बच्चों के साथ खेलने की लालच न होती। न मामाओं का आना ही मुझे भाता। उनके आने पर मुझे बाग के अपने छोटे से घर की चिन्ता रहती। कहीं वे उसे नष्ट न कर दें।

मुझे दिन पर दिन नाना की बातों से दिलचस्पी कम होने लगी जिससे अब केवल भोंडापन रह गया था। अब तो उसकी यह आदत पड़ गई थी कि वह नानी से लड़कर उसे घर से निकाल देता। और वह साश्का या सेक के यहाँ चली जाती। एक बार वह कई दिनों रह गई और नाना को ही खाना पकाना पड़ा। उसने अपनी उँगलियाँ जला लीं। तश्तरियाँ तोड़ डालीं। वह बार बार आकर मेरे छोटे से घर के पेड़ पर चढ़ रहता और कहता, 'इतनी खामोशी क्यों?'

'मुझे खामोशी पसन्द है। क्यों?'

फिर उसका भाषण शुरू होता, 'हम लोग बड़े आदमी न थे। किसी ने भी हमारी शिक्षा की चिन्ता न की। हमें

हमें खुद ही सीखना पढ़ना पड़ा। उनके लिए तो किताबें लिखी जाती हैं। स्कूल बनते हैं। परन्तु हम लोगों के लिये कुछ नहीं।' कहकर वह चुप हो जाता परन्तु मैं परेशान होकर सोचने लगता।

एक दिन सुबह चा के समय उसने अचानक घोषणा की, 'मालकिन! मैंने अब तक तुम्हें खिलाया पहनाया। अब समय आ गया है कि अपना प्रबन्ध खुद करो।'

नानी ने चुपचाप सुना जैसे बात का कोई महत्व न हो। उसने शान्तिपूर्वक सुँघनी सूंघकर कहा, 'कोई बात नहीं। यदि यही होना है तो होने दो।'

नाना ने एक छोटी पहाड़ी के पास बने घर के सीलदार दो कमरे किराये पर लिये। हम लोग इसी में आ बसे। नाना ने भीतर झाँक कर कहा, तुम्हो मेरा मजाक उड़ाते हो। अच्छा बताऊँगा।'

'देख नाना को कोई कष्ट न देना।' नानी ने कहा। परन्तु नाना उसपर कुढ़ा ही रहा।

अपने घर की सभी वस्तुएँ एक तातार कबाड़ी के हाथ बेचने में नाना को पूरे तीन दिन तक गाली गलौज और दौड़धूप करनी पड़ी। उन्हें खिड़की से देखकर नानी कभी हँसती कभी रोती और कहती, 'यही तरीका है।'

मैं भी बाग वाले अपने छोटे मकान के लिये रो रहा था।

दो गाड़ियों पर हमलोग सासान लाद कर उस घर को चले।

हम लोग नये घर में आये ही थे कि माँ आ गई। दुबली और पीली। आँखों के नीचे भयानक काला गढ़ा। वह हमें देख रही थी—अपने माँ बाप व बेटे को। जैसे पहली बार देखा हो। लम्बी अवाक टकटकी के बाद

उसने मेरे गालों को छूकर कहा, 'तुम कितने बड़े हो गए ?'

मेरे सौतेले बाप ने मुझपर हाथ रखकर कहा, 'कहो बेटे, क्या हाल है। यहाँ बड़ी शीत है।'

दोनों ही बहुत थके थे, जैसे दौड़कर आये हों। उन्हें सभी शङ्का की दृष्टि से देख रहे थे। चा के समय नाना ने पूछा, 'क्या सब चीजों में आग लग गई ?'

'हाँ सब कुछ जल गया। सौभाग्य था कि हम लोग बच कर आ गये।'

'देखो! मजाक मत करो।'

झुककर माँ ने नानी के कान में कुछ कहा और नानी चौंक पड़ी।

तभी अचानक ठण्डी सांस लेकर नाना ने कहा, 'जहाँ तक मैंने सुना है आग नहीं लगी थी। बल्कि यह सब जुए में गया।'

सभी चुप रहे। अन्त में माँ ने कराहने के स्वर में कहा, 'पापा—!'

'मुझे 'पापा' मत कहो।' नाना ने डाँटा, 'अब क्या, क्या मैंने पहले नहीं कहा था कि तीस की स्त्री और बीस का पुरुष—ठीक जोड़ी नहीं है। नमूना देख लो। बोलो, अब क्या कहना है।'

फिर चारों ऊँची आवाज में लड़ने लगे थे। सौतेले बाप की आवाज सब से तेज थी। मैं उठकर बाहर आ गया। माँ को यों देखकर मैं अवाक था। जब तक मैं कमरे में था तब तक तो नहीं परन्तु बाहर आकर ही मुझे उसके पूर्व की याद आई। आज का स्वरूप देखकर मैं हैरान होने लगा।

कुछ दिनों बाद, पूरी बातें तो याद नहीं परन्तु मैंने अपने को सारमोवो के नये वातावरण में पाया। मेरी माँ और मेरा नया बाप सड़क की ओर दरवाजे वाले दो कमरें में रहते थे। मैं नानी के साथ रसोईघर में रहता। पास ही एक फैक्टरी हर समय धुँआ उगलती रहती जिसके फल-स्वरूप सारा गाँव धुँआमय रहता। सदा ही जलाइन सी गंध रहती। सुबह के समय भी हम लोग भेड़िये की आवाज सुनते।

एक स्टूल पर खड़े होकर मैं फैक्टरी का दरवाजा देखता। फाटक खुलता तो लगता कि किसी दाँत विहीन भिखारी का मुँह खुला हो। दोपहर को भी फाटक अपनी काली ओठें खोलता तो जैसे चुसे हुये बाहर निकल आते।

नानी सुबह से रात तक काम करती रहती। वह खाना बनाती, झाड़ू लगाती, लकड़ी चीरती और पानी भरती, जब वह बिस्तरे पर लेटती तो थकान से चूर रहती। कभी कभी जब खाना समाप्त हो जाता तो वह अपनी छोटी सी रुई वाली जाकेट पहन लेती और कहती, 'जरा जाकर देख आऊँ बुड्ढा कैसे रहता है।'

'मुझे ले चल!'

'तुझे सर्दी लग जाएगी। देख कैसी बर्फ गिर रही है।'

और वह बर्फ से ढँकी सड़क व खेतों की चार मील की दूरी तय करती।

माँ गर्भवती होने के कारण पीली पड़ गई थी और वह जो शाल ओढ़ती वह मुझे अच्छा न लगता क्योंकि उसमें उसका सौंदर्य ढक जाता था। परन्तु उसके आँख की चमक

आजकल तेज हो गई थी । वह कभी कभी घन्टों सड़क पर ही निहारती रहती ।

'हम लोग यहाँ क्यों रहते हैं ?' मैंने पूछा ।

'अरे क्या तू चुप नहीं रह सकता ?'

वह मुझसे बहुत कम बोलती केवल काम की बातें, यहाँ आओ, वहाँ जाओ, यह करो, वह करो बस !

मुझे गली में न निकलने दिया जाता । जब कभी मैं बाहर जाता तो अवश्य ही लड़ आता और मुझे मार पड़ती । एक बार मार पड़ी तो मैंने माँ से कहा कि अब मारेगी तो दाँत काट लूँगा और खेत में भाग जाऊँगा जहाँ बर्फ से गलकर मर जाऊँगा । तब माँ ने कहा, तू तो बिल्कुल जङ्गली जानवर बन गया है ।'

मेरा नया बाप मुझसे सदा ही कड़ाई से पेश आता और शायद ही कभी मैंने उसे माँ से बातें करते देखा हो । वह अक्सर माँ से लड़ता और उसे बहुत भद्दी तथा अपमानजनक गालियाँ देता । ऐसे अवसरों पर मुझे कमरे से निकालकर वह दरवाजे बन्द कर लेता ताकि मैं सुन न सकूं ।

एक दिन मैंने सुना कि अपना पाँव पटक कर वह कह रहा था, 'तेरे पेट के फूले होने के कारण मैं घर पर किसी को बुला नहीं सकता ।'

शनिवार को फैक्टरी के दर्जनों मजदूर खाने का कूपन मेरे नये बाप के हाथ बेचने आते थे । वह उन्हें आधे दामों पर खरीदता था । वह मजदूरों को रसोईघर में बुला लेता और एक एक को देखकर कहता,

'रुबल, आधा ।'

'लेकिन महाशय, मैक्सीमोव, खुदा के लिये !'

'रूबल आधा।'

मुझे यह देखकर बड़ी व्यथा होती। मैं नाना के पास वापस गया जो कुनाविन गाँव में एक छोटे से कमरे में रहता था। यह कमरा एक दो मञ्जिले मकान का हिस्सा था।

मुझे देखकर वह ठठाकर हँसा, 'क्या हुआ? माँ सब से अधिक दयालु कही जाती है। परन्तु क्या हुआ?'

मैं पूरा मकान अभी देख भी न पाया था कि नानी मेरी माँ व नवजात शिशु को लेकर आई। मेरे सौतेले बाप के मजदूरों द्वारा कूपन खरीदने के कारण उसे फैक्टरी से निकाल दिया गया था। परन्तु रेलवे के टिकट आफिस में उसे नया काम मिल गया था।

इस प्रकार फिर मैं माँ के साथ रहने को विवश हो गया। फौरन ही मुझे स्कूल भेजा गया जो मुझे बिल्कुल पसन्द न था। मेरे स्कूली कपड़े नाना व माँ के पुराने कपड़ों से बनाये जाते। मैं स्कूल में कभी भी वहाँ के लड़कों से दोस्ती न कर पाया।

मेरा मास्टर बीमारी से पीला हो रहा था तथा उसे नासिका फूटने की बीमारी थी। वह दर्जे में आता तो नाक में रुई भरे रहता। कई दिनों तक आरम्भ में दर्जे के लड़कों में मैं सब से आगे बैठाया जाता। मास्टर सदा मुझपर आँखें गड़ाये रहता, 'अबे, पेशकोव, सफेद कमीज वाला, अपने पाँव मत रगड़। अपने जूते के बन्द बांध ले।'

हम लोगों को धार्मिक शिक्षा देने एक युवक पादरी आता था। उसके सिर के बाल बहुत अच्छे थे। वह मुझसे इसलिये नाखुश था कि मुझे बाइबिल याद न होती थी। आते ही वह पूछता, क्या तूने किताब खरीदी, पेशकोव! या नहीं, 'हाँ खरीदी।' मैं उत्तर देता, 'नहीं खरीदी, हाँ।'

'क्या मतलब, खरीद ली ?'

'नहीं ।'

'तब तुम घर चले जाओ । हाँ घर । मैं तुम्हें नहीं पढ़ाऊँगा ।

निकाल दिया जाना मेरे लिये कोई बहुत बड़ी बात न थी । पादरी की शक्ल ईसा की तरह थी, उसकी आँखें औरतों की सी थीं । उसके हाथ मुलायम थे । परन्तु उसकी शिकायत के फलस्वरूप, व्यवहार की अकुशलता के आरोप के साथ मैं निकाल दिया जाऊँगा ऐसी घोषणा की गई ।

इसके लिये माँ ने मुझे इतना पीटा कि पहले ऐसी मार न पड़ी थी । मेरे सौभाग्य से स्कूल का निरीक्षण करने बिशप कीसाफ आये । अपने चोंगे में वह बहुत छोटा मालूम होता । उसकी टोपी अजीब थी जैसे काली बाल्टी पहना दी गई हो । उसने हाथ हिलाकर कहा, 'बच्चों आओ हम लोग बातचीत करें ।'

मेरी पारी आई तो मुझे बुलाकर पूछा, 'कितनी उम्र है तुम्हारी ?'

फिर फौरन ही पूछा, 'तुम्हें बाइबिल की कौन सी कहानी पसन्द है ?'

फिर मैंने बताया कि मेरे पास बाइबिल नहीं है और मुझे ठीक से शिक्षा भी नहीं दी जाती । अपना चोंगा हिलाकर उसने कहा, यह कैसे हो सकता है । तुम्हें प्रार्थना आती है ?'

मेरा पादरी आया और उसने बीच में टोका, 'एक मिनट ...... मुझे बताइये ।'

मैंने प्रार्थना सुना दी ।

तुम्हें यह किसने सिखाया। तेरे बाप ने पर तू लोगों से अच्छा व्यवहार किया कर।'

'अच्छा।' मैंने कहा।

'लेकिन तुम्हारी इतनी शिकायत क्यों ?'

'मुझे स्कूल अच्छा नहीं लगता।'

'नहीं कोई और बात होगी।'

उसने एक नोटबुक निकाली और नोट किया, 'पेशकोव अलेक्सी।'

विशप ने मुझे अपने पास खींच लिया। इससे सभी को ताज्जुब हुआ। उसने कहा, 'तेरी उम्र में सभी ऐसे ही होते हैं।'

यह सुनकर सभी बच्चे हँस पड़े। फिर वह जाने लगा।

'नमस्कार पिता, फिर जल्दी ही आइयेगा।' सभी ने कहा।

'मैं फिर आऊँगा, और कुछ किताबें लाऊँगा। मुझे वह बाहर तक हाथ पकड़ कर ले गया, 'अब तुम ठीक से रहोगे क्यों ? मैं समझ गया कि तुम्हारी सबों से नहीं पटती। अच्छा नमस्कार !'

विशप के व्यवहार से मेरे अन्तर में नया जोश भर आया पादरी भी जैसे मेरे प्रति बदल गया हो।

जब स्कूल का मामला ठीक हो गया तो घर में गड़बड़ी हुई। मैंने माँ के पास से एक रूबल चुराया। चोरी की कोई अच्छी योजना न थी। एक शाम को माँ कहीं जा रही थी तो बच्चे को मेरे देख रेख में छोड़ गई। समय काटने को मैंने नए बाप की एक पुस्तक—डाक्टर के अनुभव—उठा लिया। उसके पृष्ठों में एक दस रूबल और एक,-एक रूबल की नोट थी। मैंने 'राबिन्सन क्रूसो' का नाम सुना था। सो जब मैं दूसरे दिन 'राबिन्सन क्रूसो' की किताब लेने गया

तो वह जाने क्यों मुझे अच्छी न लगी। मैंने एक बाइबिल दो परियों की कहानी और खाने की चीजें खरीदीं।

स्कूल की दोपहर की छुट्टी में मैंने लड़कों को सुनाना शुरू किया, 'चीन में सभी चीनी रहते हैं, वहाँ का राजा चीनी है।' उसमें बड़ा मजा आया परन्तु स्कूल में वह अधिक न पढ़ी गई। मैं घर आया तो माँ चूल्हे पर अंडा पका रही थी। उसने अजनबी सी आवाज में पूछा, 'तू ने रूबल लिया है ?'

'हाँ उस किताब से लिया है।' जाने क्यों मैं इन्कार न कर सका झूठ न बोल सका। मैं कई दिनों स्कूल न गया था। इसलिए मेरे नए बाप से इसकी शिकायत की गई थी। अब चोरी की शिकायत होगी यह मैं जानता था। मैंने माँ को सब बता दिया। वह खिड़की पर बैठी मेरे भाई शास्का को दूध पिला रही थी। वह फिर गर्भवती थी। वह सदा थकी माँदी सी रहा करती थी। उसने मुझे देखा और उसका मुँह मछली के मुँह की तरह खुला रह गया।

'कहीं गड़बड़ी जरूर है।' उसने बहुत महीन आवाज में कहा, 'सभी लोग रूबल की बात कैसे जान गए।'

'तुम खुद ही पता लगा लो।'

'जरूर ही तूने कही होगी। सच सच बताना। कल मैं पता लगा लूँगी कि स्कूल में यह बात कैसे पहुँची।'

तब मैंने उसे अपने स्कूली मित्र का नाम बताया और वह रोने लगी। मैं रसोई घर में जाकर सुनने लगा। माँ रो रही थी, 'या खुदा!' मुझे इतना अँधेरा हुआ कि मैं बाहर निकला। माँ ने पुकारा, 'अब कहाँ जा रहा है ? यहाँ आ! मत जा!'

हम लोग जमीन पर बैठ गए। शास्का माँ की गोद में था और अपने कपड़े के बटन के साथ खेल रहा था। माँ ने मुझे चूम लिया और कहा, 'हम लोग गरीब हैं, और एक एक

पैसा......एक पैसा.....' वह वाक्य पूरा न कर सकी और मुझे अपने से चिपटा लिया, 'क्या बताऊँ।'

शाश्का का सिर उसकी देह को देखते हुए काफी बड़ा था। उसकी गहरी नीली आँखें लगतीं जैसे सदा ही किसी का इन्तजार करती रहती हैं। वह इतनी छोटी उम्र में ही बोलना सीख गया था। वह मुझे बहुत अच्छा लगता। वह भी मेरे पास रहना पसन्द करता। जब मैं उसे उठा कर उछालता तो वह मेरे कान पकड़ लेता। यह बड़ा अच्छा लगता।

परन्तु अचानक ही उसकी मौत हो गई। वह बीमार भी नहीं था। सुबह तो वह हँस खेल रहा था कि शाम को उसकी लाश देखने को मिली। यह सब दूसरे बच्चे निकोलस के पैदा होने के दूसरे ही क्षण हुआ।

मैं शीघ्र ही एक परेशानी में फंस गया। एक दिन चा के समय मैं रसोई घर में प्रवेश कर रहा था कि सुना माँ कह रही थी।

'इजीनी, इजीनी, मैं प्रार्थना करती हूँ, मत जाओ।'

'बेवकूफ।' नए बाप ने उत्तर दिया।

'मैं जानता हूँ तू उसके पास जाती है।'

'तो इससे क्या?'

फिर दोनों चुप रहे। तभी मैंने घूँसे की आवाज सुनी। मैं भाग कर भीतर गया। कुर्सी से लगी माँ घुटने के बल गिरी सी बैठी थी। शायद उसके कलेजे में घूँसा लगा था। मेजपर रोटी काटने का चाकू था। यह मेरे पिता की एकमात्र चीज बची थी जो माँ ने बचा रखा था। मैंने उसे उठा लिया और अपनी पूरी शक्ति से अपने सौतेले बाप की बगल में मारा! सौभाग्य से उसी समय माँ ने उसे धक्का दे दिया इससे उसके कोट में फंस कर छूरी केवल उसका चमड़ा छू

पाई थी। अपनी बगल दबा कर वह कमरे से भागा। माँ ने मुझे गुस्से में ढकेल दिया। तभी बाहर से आकर मेरे सौतेले बाप ने मुझे धक्का दिया।

उस शाम को काफी देर बाद जब वह चला गया तो माँ मेरे पास आई। मुझे छाती से लगा लिया और चूमा। फिर आँसुओं के बीच ही बोली, 'मुझे क्षमा करना, प्यारे बेटे...... परन्तु तुमने छूरी ले......?'

मैंने उससे साफ साफ कहा कि मैं अपने सौतेले बाप और खुद को मार डालूँगा। परन्तु मुझे इसका अवसर न मिला।

लगभग साल भर बाद मैंने देखा कि वह अस्पताल में पड़ा जीवन की अंतिम साँसें ले रहा था मैंने देखा कि किस प्रकार धीरे धीरे उसकी चमकदार आँखें पथरा रही थीं। इस शोक के क्षण में भी मैं उसकी एक भी स्मृति न भूल सका।

अकसर, रूसी जीवन की इस प्रकार की स्मृतियों को याद करके मैं सोचता हूँ कि क्या सचमुच यह सच थी। परन्तु यह वह सचाइयाँ हैं जिनको सामने लाना जरूरी है ताकि इस प्रकार के शर्मनाक जीवन की जड़ ही समाप्त हो जाए।

हमारा जीवन केवल इसीलिए अजीब नहीं है कि वह बहुत कठिन हो गया है परन्तु हमारे भीतर भी तो कोई शक्ति है जिसका प्रकाश बहुत तेज है। अच्छाई का महत्व बढ़ रहा है और अन्त में वह दिन आएगा कि मानवता जाग उठेगी और जीवन सुन्दरता तथा मनुष्यता से भरा होगा।—

तेरह

एक बार फिर मैं नाना के पास रहने आ गया।

'तेरा क्या है, डाकू ?' कह कर नाना ने स्वागत किया, 'तेरी नानी तुझे अब खिलाएगी।'

'जरूर, जरूर !' नानी ने उत्तर दिया।

'जा उधर, अगर तू चाहे तो उसे खिला।' कह कर नाना ने मुझसे कहा, 'अब मैं और वह अलग अलग रहते हैं। हमें एक दूसरे से तनिक भी मतलब नहीं है।'

नानी खिड़की पर बैठी फीते बना रही थी। नाना अधिक बूढ़ा लगने लगा था। नानी ने हँस कर अपने बटवारे का हाल बताया।

नाना ने नानी का बालों वाला कोट बेचकर रुपया सूद पर लगा दिया। अब उसकी आदत हो गई थी कि वह अपने सभी परिचितों के यहाँ जाकर अपने बेटों के अन्याय की बात करके रुपया झटकता। वह नोट लाकर नानी के चेहरे पर फेंक कर कहता, 'देख, मूर्खे ! तू इसका सौवाँ भाग भी नहीं ला सकती।' यह सब रुपया भी वह उधार चलाता था।

घर के खर्चों का अजीब हिसाब था। एक दिन के खाने का खर्च नाना करता और एक दिन नानी। चा और चीनी दोनों की अलग अलग थी। परन्तु चा के बरतन दोनों के एक ही थे।

वे लोग जलाने का तेल भी बाँट लेने के फेर में थे। पचास वर्ष साथ रहकर भी यह भावनाएं आपस में कैसे आतीं थीं। मुझे आश्चर्य होता था। मेरे विरोध करने पर नानी कहती, 'वह अस्सी के लगभग है। उसे थोड़ी मूर्खता की छूट मिलनी ही चाहिये। हम लोग सब ठीक कर लेंगे। मैं काम भी खोजूंगी।'

मैंने भी अपना सहयोग दिया। सुबह का समय तथा छुट्टियों का पूरा समय गलियों में घूम घूम कर कतरन, कागज और धातु के टुकड़े बटोरता। इससे मुझे दो ग्रेपेन* मिल जाते। मैं सब कुछ नानी को दे देता। उसे जेबों में रख कर वह कहती, 'वाह, धन्यवाद। बेटे, इससे खाने भर को तो हो ही जाएगा। तूने अच्छा किया।'

कूड़े बटोरने से अधिक लाभदायक था कि ओक के किनारे के मेले से दूकानों पर से चाजें चुराई जातीं। उनसे अधिक पैसे मिलते परन्तु सभी चीजों पर दूकानदार पहरा लगाये रहते।

मैंने छोटा सा गिरोह तैयार किया। दस साल का शांका व्यखीर, तेरह साल का कस्त्रूम, जो कबूतरों की चोरी में सजा पा चुका था। साथी एक तातारी बारह वर्ष का लड़का, चौकीदार वाला आठ वर्ष का याज और सब से अधिक उम्र का ग्रेगरी चुरका एक दरजी का लड़का। हम सभी एक ही मुहल्ले के रहने वाले थे।

* १० ग्रेपेन = १० कोपेक

हमारे गाँव में चोरी इतना बड़ा अपराध न था क्योंकि सभी भूखों मरते थे और कभी कभी ही उन्हें खाने का प्रबन्ध हो पाता था। हमारे दल के प्रमुख चुरका की सलाह पर हमने चोरी शुरू की परन्तु कभी भी कोई रखवाला हमारा पता न पा सका।

चोरी के माल से प्राप्त धन का हम बँटवारा कर लेते। छः हिस्से लगे। सबों को पाँच से सात कोपेक तक मिले। इससे खाने का प्रबन्ध तो हो गया परन्तु व्याखीर को घर पर माँ ने उसे पीटा क्योंकि उसके पास इतने पैसे न थे कि उसकी माँ शराब का प्रबन्ध कर सके। कसत्रूम पैसे इकट्ठा करके कबूतर पालने का कार्यक्रम बना रहा था। चुरका की माँ पंगु थी अतः वह उसके लिये पैसे बचाता। खाबी अपने गाँव वापस जाने के लिए पैसे जुटाता लेकिन वह अपने गाँव का नाम ही भूल गया था।

पूरे गिरोह में केवल मैं और चुरका ही पढ़ सकते थे। वह कहा करता, 'जब मेरी माँ मर जाएगी तब मैं स्कूल जाकर मास्टर से प्रार्थना करके भरती हो जाऊँगा। पढ़ाई करके मैं बिशप बनूंगा।'

व्यखीर को पौधों व घास से बड़ा प्रेम था। किसी को घास पर बैठा देखकर वह चीख पड़ता, 'जाजा कब में जाकर बैठ, घास में क्यों बैठा है?'

हमारे गिरोह को तातार लोग पसन्द करते। वे कभी कभी खुश होकर हम लोगों को [illegible] दावत देते। फिर इतना हँसते कि आँसू आ जाते।

अब जब मैं अपने उस समय के जीवन को याद करता हूँ तो देखता हूँ कि वह दिन बुरे नहीं थे। वह

आजाद जीवन—हमारा गिरोह कितना अच्छी तरह संगठित था।

स्कूल के दिन मेरे लिए सदा बुरे रहे। मेरी लड़कों से लड़ाई हो जाती तो वे मास्टर से शिकायत करते कि वे मेरे साथ इसलिये न बैठेंगे कि मैं सेवार की तरह बदबू देता हूँ! इससे मुझे बड़ी वेदना होती।

किसी तरह मैंने तीसरे दर्जे में पदार्पण किया। साथ ही मुझे इनाम भी मिला। दो जिल्ददार कहानियों की किताबें एक कापी। नाना ने तारीफ तो की परन्तु किताबों को लेकर सन्दूक में बन्द कर देना चाहा। नानी उन दिनों बीमार थी पर नाना की बातें वैसी ही थीं, 'वह एक दिन मुझे खा जाएगी। मैं किताबें लेकर एक दूकान पर गया और पैंतालिस कोपेक में बेच आया और नानी को दे दिया।

स्कूल के बाद मैं गलियों में होता जहाँ मुझे बहुत अच्छा लगता क्योंकि वहाँ मैं पैसों का प्रबन्ध कर सकता था। रविवार को तो हमारा गिरोह मिलता और सारा दिन खुशी से बीतता।

परन्तु यह खुशी का जीवन बहुत दिन न चला। मेरे सौतेले बाप ने बहुत कर्ज ले लिया था, नौकरी छूट गई थी और वह भाग गया था। मेरे दूसरे दिन माँ सौतेले भाई निकी को लेकर नाना के घर आ गई थी। नानी ने नौकरी कर ली थी। मैं बच्चे की देख भाल करता था।

माँ इतनी दुबली पतली हो गई थी कि बहुत देर खड़ी भी न रह पाती थी और जिधर एक बार देखना शुरू करती देखती ही रहती।

नाना ने बच्चे को देखकर कहा, 'इसे अच्छा खाना मिलना

चाहिये परन्तु मेरे पास इतना कहाँ कि मैं सबों को खिला सकूँ।—इसे धूप में ले जा।'

मुझे छोटा बच्चा अच्छा लगता था। परन्तु नाना निर्दयी की तरह कहता, 'अगर यह मर जाए—जल्दी ही मर जाएगा—तब तब……।'

और इस पर माँ को एक वेदनापूर्ण खाँसी आ जाती।

खाने के समय नाना निकी को रोटी खिलाता। माँ कहती कि वह रोटी पर ही जी जाएगा।

माँ अजीब सी हुई जा रही थी। वह बहुत कम बोलती। लगा कि उसके खाट के पास मौत आ गई हो और लगता कि जैसे धीरे धीरे माँ मर रही है। क्योंकि अब नाना अक्सर बातों में मौत की चर्चा करता था। खासकर रात को दरवाजे के पास खाट बिछा कर वह कहता, 'मौत हमें पकड़ रही है।'

मैं भट्टी और खिड़की के बीच जमीन पर सोता। मुझे पांव फैलाने की जगह न मिलती तो मैं पांव चूल्हे में डाल देता। वहाँ से पड़ा पड़ा नाना की प्रत्येक बात सुनता व उसकी हर हरकत को देखता।

फिर वह दिन आया। अगस्त का इतवार और दोपहर का समय। मेरे सौतेले बाप को काम मिल गया था। वहीं उसने एक घर किराये पर लिया था और कुछ दिनों में माँ वहीं जाने वाली थी।

उस दिन सवेरे जरा तेज आवाज में माँ ने कहा, 'जाकर इजेने से कहो कि यहाँ आये।' फिर उठने की असफल कोशिश करके उसने कहा, 'जाओ दौड़ो, जल्दी।'

मुझे लगा कि उसकी आँखों की पुरानी चमक वापस आ गई है। जब मैं उसे लिवाकर आया तो फौरन ही नानी ने

मुझे नस लाने को भेज दिया । नस दूकान पर तैयार न थी। दूकानदार बनाने लगा। इससे मुझे इन्तजार करना पड़ा, काफी देर लगी। जब मैं लौटकर आया तो माँ बहुत अच्छे कपड़े पहने, बाल संवारे टेबिल पर बैठी थी।

'अब तबियत ठीक है न!' मैंने पूछा पर मेरे भीतर ही अविश्वास था। मुझे घूरकर वह बोली, 'यहाँ आ, तू कहाँ गया था?'

मैंने उसे उठाया और मेज पर रख दिया। खुद भट्ठी पर बैठ कर उसकी हरकत देखता रहा।

अपनी कुर्सी से उठकर वह बड़े कष्ट से खाट तक पहुँची और लेटकर रोने लगी तथा अपने रूमाल से आँसू पोछने लगी। उसके हाथ मानों चेतनाहीन हो रहे थे क्योंकि दो बार चेहरे के बजाय उसने तकिया पोंछा।

'थोड़ा पानी।'

मैं एक प्याले में पानी ले आया। उसने थोड़ा सा पिया। उसका हाथ बहुत ठंडा था। उसने मुझे पकड़ लिया और जोरों से सांस लेने लगी। उसने मुझे देखा और आँखें बन्द कर लीं, लगा कि उसके चेहरे पर कोई छाया पड़ गई। उसका रंग पीला हो गया। माँ का प्राणान्त कब हुआ मुझे ज्ञात नहीं—जाने कब तक मैं उसे यों ही पकड़े खड़ा रहा। उसकी साँस रुक गई। मैं प्याला लिये उसके पीले तथा ठण्डे पड़ते चेहरे की ओर घूरता रहा।

नाना आया। माँ को देखकर उसने कहा, 'माँ मर गई।'

फौरन ही मेरा सौतेला बाप आया। वह छोटा सा कोट और गर्मी वाली टोपी पहने था। वह अपने साथ एक

कुर्सी लाकर पास बैठ गया। वह खामोश था, बाद में बोला, 'देखा, यह मर गई।'

नाना की आँखें गीली थीं, जैसे किसी अन्धे की आँखें।

माँ की अन्तिम क्रिया के एक या दो दिन बाद नाना ने मुझसे कहा, 'एलेक्सी' मैं तुझे अपने गले नहीं बाँधे रह सकता। यहाँ अब तेरे लिए जगह नहीं। अब तुझे दुनिया के मैदान में जाना पड़ेगा।'

और मैं दुनिया के इस विशाल मैदान में निकल पड़ा।

दूसरा भाग

—:o:o:o:—

दुनिया में

एक

दुनिया में निकलकर मैं सर्वप्रथम बड़ी सड़क पर एक जूते की दूकान में नौकर हो गया। मेरा मालिक नाटे कद का था। [illegible]रे, रूखे चेहरेवाला, दांतों का रंग कुछ हरा और सदा गीली रहने वाली आंखें। मैंने समझा कि वह अंधा है। सो परीक्षा के लिए मैंने मुँह चिढ़ाया जिसपर उसने तनिक प्यार मिश्रित क्रोध से डांटा। वह मुझे बड़ी देर तक उन्हीं आंखों से देखता रहा जिन्हें मैं अंधी समझता था। उसने बाद में कहा,

'इस तरह मुँह न बनाया कर! तू जानता है कि तू अव्वल दर्जे की दूकान पर है और तुझे दरवाजे पर मूर्ति की तरह ही खड़ा रहना चाहिए।'

सच तो यह है कि मैं मूर्ति के माने ही नहीं समझता था।

'इसके पहले तू क्या करता था?' मालिक ने पूछा, उसकी नजर मेरे हाथों पर जमी थी। मेरे हाथों पर कीड़ों के काटने के बहुत से दाग थे। जब मैंने बता दिया तो उसने अपना गोल सिर जोरों से हिलाया और तनिक भयभीत स्वर में कहा, 'कूड़े बटोरता था!' अरे यह तो भीख मांगने व चोरी करने से भी बुरा काम है।

तनिक शान के स्वर में मैंने बताया कि मैंने चोरी भी की है।

इस बात पर सहम कर उसने टेबुल के किनारों को पकड़ लिया और यों देखा जैसे कोई बिल्ली ताक रही हो फिर बहुत कठिनाई से सांस लेकर पूछा, 'क्या, चोरी की है ? कैसे ?'

जब मैंने बताया तो उसने कहा, 'ठीक है लेकिन अगर तूने यहाँ जूते या रुपये चुराये तो मैं तुझे जिन्दगी भर के लिए जेल में बन्द करा दूंगा।' यह उसने इस प्रकार कहा कि मेरे मन में उसके प्रति जो भी ममता थी वह भी नष्ट हो गई।

उस मालिक के अलावा वहाँ के नौकरों में मेरे मामा का बेटा शास्का भी था और एक बहुत चतुर लाल चेहरे वाला किरानी। शास्का लम्बी पतलून, भूरा फ्राकनुमा कोट और टाई पहनता था। जब नाना मुझे इस दूकान पर लाया था तब शास्का से कहा था कि वह मेरी मदद करे। और शास्का ने घमण्ड से कहा था, 'हाँ जो मैं कहूंगा वही इसे करना पड़ेगा।'

नाना ने इस प्रकार मेरे कंधे पर हाथ रखा जैसे मुझे दबा रहा हो, 'देख वह जो कहे, करना, वह तुझसे बड़ा है और अनुभवी भी।'

शास्का बात बात में कहता, 'याद है दादा ने क्या कहा था ?' और इस प्रकार वह अपने बड़े होने का अनुचित लाभ उठाता।

'यों मत देख ! ए काशीरिन !' मालिक ने शास्का को डांटा।

'मैं ठीक देख रहा हूं मालिक।'

'तो क्या चाहता है कि तुझे देख कर एक भी ग्राहक दूकान में न आवे ?'

किरानी यह सब देख कर हंस पड़ता परन्तु मुझे कुछ अच्छा न लगता और लगता जैसे मैं विदेशियों के बीच हूँ।

जब दूकान में कोई महिला आती तो फौरन ही मालिक के हाथ जेबों से निकलकर मूछों को उमेठने लगते परन्तु उसकी आंखों का भाव न बदलता। किरानी उठ खड़ा होता। शाश्का अपनी आँखे छिपाने लगता और दरवाजे पर खड़ा मैं सब देखता।

किरानी बड़ी सावधानी तथा हल्के हाथों औरतों को जूते पहनाता।

एक बार एक स्त्री ने अपना पाँव झटक दिया और कहा, 'तकलीफ होती है।'

'यह आप के पांव का चमड़ा बहुत मुलायम है।' किरानी ने कहा।

इस पर मुझे हंसी आ गई और मैंने सड़क की ओर मुँह कर लिया। अक्सर मालिक भीतर कमरे में चला जाता और शाश्का को भी पुकार लेता और दूकान पर ग्राहक और किरानी ही बच जाते।

एक बार एक स्त्री को जूते पहनाते समय किरानी ने उसके पांव को अपने हाथ में उठाकर चूम लिया। यह दृश्य देख कर मैं बेतरह हंस पड़ा। फलस्वरूप मुझे सजा मिली। रात को घर जाते समय शाश्का मुझे रास्ते में डांट रहा था, 'ऐसा करेगा तो मार खायगा। निकाल दिया जायगा। आखिर ऐसा क्या था कि तुझे हंसी आ रही थी। बता?' बाद में उसने समझाया, 'औरतें चाहे खरीददारी न करें परन्तु उन्हें फँसाए रहना चाहिए। उनके केवल दूकान पर आने से ही व्यापार बढ़ता है।'

सुबह मुझे रसोई घर में काम करना पड़ता था। रसोइयां बड़ी बदमाश औरत थी। मुझसे वह बर्तन साफ कराती, चौका

साफ कराती, और मालिक किरानी तथा शाश्का के जूते व कपड़े भी साफ कराती। फिर सबों को खिलाना तथा दूकान का भी काम !

मुझे यह सब बहुत बुरा लगता। मैं सदा का कुनावीन की बालू भरी सड़कों पर और खेतों में घूमने तथा नदी किनारे टहलने का आदी था इसी के कारण मुझे नानी से अलग होना पड़ा था। मेरा कोई साथी भी न था।

जिस दिन कोई बिक्री न होती तो मालिक शाश्का पर बिगड़ता और बहाना निकाल कर शाश्का मुझे डांटता। परन्तु मेरे मालिक की बीबी, काली आंखों व लम्बी नाक वाली महिला मालिक पर यों बिगड़ती जैसे नौकरों पर बिगड़ा जाता है।

एक दिन दूकान पर एक बहुत खूबसूरत युवती आई। वह मखमल के बालों वाला कोट पहने थी जिसे आते ही उसने शाश्का के सुपुर्द कर दिया। अपने नीले सिल्क के कपड़ों में ही बहुत ही सुन्दर लगती थीं। कानों में हीरे चमक रहे थे। मैंने समझा कि वह गवर्नर की पत्नी होगी। मालिक, किरानी और शाश्का तीनों उसके सामने यों झुक गए जैसे वह कोई देवी हो। सभी पागलों की तरह नाचते रहे और जब वह एक जोड़ बहुत कीमती जूते खरीद कर चली गई तो मेरा मालिक नाच उठा।

'अभिनेत्री है, नीच······।' कह कर किरानी बहुत देर तक उसके प्रेमियों की चर्चा करता रहा।

एक दिन जब मैं आंगन में एक बक्स खोल रहा था जो हाल ही पिछले दरवाजे से आया था तभी गिरजे का चौकीदार आया। वह बहुत वृद्ध और जर्जर था। उसने मुझसे कहा; 'बच्चे, तुम मुझ पर दया करके अपनी दूकान से मेरे लिए एक जोड़ी रबड़ के जूते न चुरा लोगे ?'

मैंने कोई उत्तर न दिया। वह बक्स पर आ बैठा और फिर बोला, क्या एक जोड़ी ला दोगे ?'

'चोरी करना पाप है।' मैंने उत्तर दिया।

'ऐसा पाप नही। सभी चोरी करते हैं। फिर मेरे बुढ़ापे का कुछ तो ख्याल तुझे करना चाहिए।'

मुझे लगा कि उसके लिए चोरी करना बुरा नहीं सो मैंने वायदा किया कि खिड़की से जूते दे दूँगा।

'अच्छा !' उसने बिना किसी उत्साह के कहा, 'परन्तु तुम मुझे बेवकूफ तो नहीं बना रहे। अवश्य नहीं बना रहे।'

एक क्षणिक सन्नाटे के पाश्चात् वह पांव से जमीन पर जमी बर्फ कुरेदता रहा फिर पाइप जलाकर बोला, 'लेकिन अगर मैं तुझे मूर्ख बनाऊँ तब ? मैं जूते तेरे मालिक के पास ले जाकर कहूं कि तूने आधे रूबल पर मुझे दिया है, जबकि कीमत दो रूबल है, तब !'

आश्चर्य से मैं उस बुड्ढे को देखता रहा, फिर उसने नीला धुआं छोड़ कर कहा, 'समझ लो तेरे मालिक ने मुझे तेरी परीक्षा लेने को भेजा है कि तू चोर है या नहीं !'

'मैं तुम्हें जूते न दूँगा।' क्रोध से मैंने कहा।

'लेकिन तूने वायदा जो किया है।'

उसने मुझे अपने पास खींच लिया और कहने लगा, 'अगर मैं कहता कि आकर गिरिजाघर लूट ले, तब ! समझ ले तू अगर सारी दुनिया पर विश्वास करता है तब तू मूर्ख बन जायगा।' फिर मुझे एक ओर करके वह उठ खड़ा हुआ, मैं चोरी के जूते नहीं चाहता। मैं तुझे मूर्ख बना रहा था। लेकिन तू कोमल हृदय का है अतः ईस्टर में आना। मैं तुझे गिरजा के घंटा घर पर चढ़ा दूँगा। तू घंटा बजाना और शहर की छटा भी देखना।'

'मैं जानता हूँ कि शहर कैसा है।'

'परन्तु घंटाघर से वह और किस्म का दिखता है।'

बुड्ढा तो चला गया परन्तु परेशान होकर मैं यही सोचता रहा कि यह मुझे बेवकूफ ही बना रहा था या सचमुच मालिक ने इसे परीक्षा लेने भेजा था।'

तभी शाश्का ने पुकारा, 'अबे, तुझे क्या हो गया।'

मुझे क्रोध आ गया। हाथ की संसी उस पर फेंक दी। मैं जानता था कि वह और किरानी चोरी करते थे। अपने ओवर-कोट की बाहों में चप्पलें, जूते भर कर ले जाते थे। एक बार मैंने शाश्का से पूछा था, तुम भी तो ले जाते हो।'

मैं अपने लिए कुछ नहीं करता। मैं तो किरानी की मदद करता हूँ।' कहकर वह चुप हो गया। परन्तु उस दिन से उसका मेरे प्रति व्यवहार और खराब होने लगा। शाश्का की रसोइया से भी नहीं पटती थी। रसोइया भी अजीब थी। वह कहती, 'मुझे लड़ाई बहुत अच्छी लगती है—मुर्गे की लड़ाई, कुत्ते की लड़ाई, या आदमी की लड़ाई सभी एक सी ही है।' जब कभी उसे पता लगता कि आंगन में मुर्गे या कबूतर लड़ रहे हैं तो फौरन ही वह अपना काम छोड़ कर खिड़की से झांकने लगती। और शाम को हमें व शाश्का से कहती, 'बच्चे बेकार क्यों बैठे हो? थोड़ा लड़ो तो मजा आवे!'

इस पर शाश्का बिगड़ उठता, 'ए नालायक, मुझे बच्चे कहती है! जानती नहीं मैं छोटा किरानी हूँ।'

'तू मूर्ख है। जब तक शादी न हो, बच्चा ही रहेगा।"

'चुप रह! नालायक।'

'खुदा ने धोखे से तुझे बना दिया।'

अक्सर शाश्का उसके तकिए में पिन खोंस देता था और वह भी खूब थी! रात में कई बार उठती। अक्सर सैंप जला-

कर आती और मुझे उठा कर कहती, 'मुझे बड़ी बेचैनी लग रही है। मुझसे बातें करो।'

शाश्का उसे 'डाइन' कहा करता परन्तु पीठ पीछे। मैं उसे चुनौती देता, 'उसके मुँह पर क्यों नहीं कहते ?'

अक्सर रात को ही वह जगा कर मुझे काम करने को उठा देती थी और उससे चिढ़कर शाश्का बड़बड़ाता, 'यह क्या बद-माशी है ? मैं मालिक से कहूंगा कि इसकी बदौलत कोई सो नहीं सकता।'

तब वह भी उसी तरह उत्तर देती, 'यह खुदा की गलती है। और,'''''यदि यह मेरा बेटा होता !'

शाश्का उस पर क्रुद्ध रहता और मुझसे कहता, 'कुछ ऐसा करना ही पड़ेगा कि यह निकाल दी जाए। किसी दिन इससे बचाकर सभी बर्तनों में नमक भर दिया जाय तो खाने का स्वाद खराब होने पर यह अवश्य निकाल दी जाएगी। और नहीं तो मिट्टी का तेल डाल दिया जाय। तुम्हारी क्या राय है ?'

ठीक, परन्तु यह तुम्हीं करना।' मैं कहता।

'बुज़दिल !' वह चिढ़ जाता।

बाद में वह बुढ़िया हमारी आंखों के सामने ही मरी। काम करती हुई वह बिना किसी आवाज के यों गिरी जैसे उसके कलेजे में कुछ चुभ गया हो। उसके मुंह से खून की धार बहने लगी थी। हम और शाश्का दोनों समझ गए कि वह मर रही है परन्तु हम इतने भयभीत थे कि कुछ न कर सके। फिर शाश्का तो बाहर निकला परन्तु मैं खिड़की से बाहर देखने लगा। जब मालिक आया तो बोला, 'वह अवश्य मर गई। पर कैसे भला !' फिर उसने शाश्का को पुकार कर कहा, 'काशिरीन ! दौड़कर पुलिस को बुला ला।'

पुलिस वाले आए। अपनी सलामी ली और जाकर थोड़ी देर बाद गाड़ी ले आए। मृतक रसोइया को गाड़ी में भर कर ले गए तब मालकिन ने मुझसे कहा, 'फर्श को धो डाल।'

मालिक ने कहा, 'यह अच्छा हुआ कि रात को ही मरी।' रात का मरना क्यों अच्छा था मैं न समझ पाया।

सोते समय शाश्का ने कहा, 'रोशनी न बुझाना।'

'क्यों डर रहे हो ?'

शाश्का ने मुँह तक ओढ़ना खींच लिया और बड़ी देर तक शांत पड़ा रहा। रात इतनी खमोश थी मानों कुछ भांप रही हो।

तभी जब घंटा बजा तो उसने कहा, 'चलो हम दोनों एक साथ भट्ठी पर सोवें।

'वह बहुत गर्म है।'

'देखो न वह अचानक मरी है। अवश्य ही डाइन बनी होगी। मैं सो नहीं पाता।'

'मुझे भी नींद नहीं आवेगी।'

रात भर वह मुर्दों की, कब्र से निकल कर अपने रहने के घरों की तलाश में घूमने की कहानी कहता रहा, ''मुर्दों को शहर का ही नाम याद रहता है, स्थान व गली भूल जाते हैं।'

रात को ही शाश्का ने कहा, 'देखूँ मेरे सन्दूक में क्या क्या है!'

उसने अपनी संदूक में क्या भर रखा है यह जानने की उत्सुकता मुझे सदा रही है! जब कभी मैंने देखने की कोशिश की तो उसने डाँटा है, क्या देखना चाहता है?'

उसने आज मेरे सामने ही सन्दूक खोला और उसमें मैंने देखा कि दफ्ती के बहुत से डब्बे हैं। एक डिब्बा खोलकर उसने बिना शीशे वाली चश्मे की एक कमानी निकाली। उसे नाक पर

लगाया। और कहा, 'इससे क्या अगर शीशा नहीं है। यह एक विशेष तरह का है।'

'जरा मैं देखूँ ?

'तुम्हें ठीक न होंगे।' उसने कहा और चारों ओर देखा कि कोई देख तो नहीं रहा। फिर एक पालिश की डिब्बी से उसने बहुत से बटन निकाले और कहा, 'इन्हें एक-एक करके सड़क पर चुना है।

इसी तरह की अनेक चीजें उसने एक के बाद एक निकालीं और बिना शीशे को चश्मे से बहुत शान से देखता रहा। फिर कहा, 'इसमें से तुम भेंट के रूप में क्या लोगे ?'

'मैं कुछ नहीं चाहता।'

इसके कई दिन बाद कोई छुट्टी थी। दूकान बंद थी। दोपहर के खाने के बाद शाश्का ने मुझसे कहा, 'आओ'

मैंने समझा मुझे कुछ वह दिखाएगा। मुझे वह बगीचे में ले गया। एक कोने में एक दीवाल के नीचे छिपकर हम लोग खड़े हुए। पेड़ की छाया भी थी। हमें कोई देख नहीं सकता था। अगल-बगल के दरवाजों पर उसने सतर्क निगाह डाली। फिर उसने थोड़ी सी पत्तियाँ हटाईं तो जमीन पर गड़ी दो ईंटें दिखाई पड़ीं। ईंटें हटाने पर टीन दिखाई पड़ा। उसे हटाया तो एक सुरंग सा गढ़ा दिखा। शाश्का ने मोमबत्ती जलाकर कहा,

'डरना मत।'

परन्तु वह खुद काफी डर गया था। उसका हाथ हिल रहा था। उसने बाद में झांक कर फिर ईंटें लगा दीं। और थमकर बोला, 'तुम मुझसे जलते हो।'

शाश्का ने अपना कोट उतार दिया, बाहें सिकोड़ लीं और लड़ने को तैयार हो गया। मेरी लड़ने की इच्छा न थी। उसने

मुझे ढकेला। कहा, 'मार डालूँगा।' फिर मैं भी भिड़ गया। मैं मजबूत तो था ही। दूसरे ही क्षण वह जमीन चाट रहा था। उसने कहा, 'मैं मालिक से शिकायत करके तुझे निकलवा दूंगा।' कहकर वह चला गया। मैंने मन में निश्चय कर लिया कि शीघ्र ही मुझे वहाँ से अब भाग जाना है।

दूसरे दिन सुबह जब नई रसोइया मुझे जगाने आई तो चौंक कर बोली, 'या खुदा, यह तूने क्या किया अपने चेहरे को ?'

मेरा जी बैठने लगा। 'डाइन' ने तो कुछ नहीं किया ? लेकिन वह हँसने लगी तो उठकर मैंने शीशे में देखा – मेरे चेहरे पर पुताई हुई थी।

'यह शारका का ही काम है।' मैं समझ गया। फिर जब मैं अपना जूता साफ करने लगा तो जूते में खोंसी हुई एक पिन चुभ गई। यह भी क्या 'डाइन ने ही किया है ?

उस शाम को ही भाग जाने का मैंने निश्चय कर लिया। परन्तु शाम को खाना बनाते समय आग की लपक उठी। उसे शान्त करने में मैंने अपना हाथ खूब जला लिया। फिर अस्पताल जाना पड़ा।

मैंने नाना व नानी से सुना था कि अस्पताल में लोग भूख के मारे मर जाते हैं। सो मुझे लगा कि यही दशा मेरी भी होने को है। चश्मा पहने एक औरत आई। उसके हाथ में एक स्लेट थी। 'उसने पूछा'

'तेरा नाम ?'

'मेरा कोई नाम नहीं !'

'जरूर होगा।'

'नहीं।'

'बेवकूफ न बना वर्ना बेंत पड़ेगी।'

फिर चिढ़कर वह चली गई।

फिर रात आई और अपने-अपने कंबल के नीचे सभी दबक गए। प्रति क्षण सन्नाटा गहरा होता जा रहा था। मुझे डर लग रहा था। मेरे मन में हुआ कि मैं नानी को लिखूँ और आकर वह मुझे मरने के पहले लिवा ले जाए परन्तु लिखता कैसे? हाथ जो बेकार थे।

रात का सन्नाटा मेरे अन्तर के सन्नाटे की तरह ही घना था। मैं उठा और दरवाजे पर आया। वहाँ बड़ा हाल था। मैं बढ़ा तभी किसी ने पुकारा, 'कौन घूम रहा है इधर आ।'

परन्तु आवाज कर्कश न थी। मधुर थी।

'तू वही है जिसका हाथ जला है? तू रात को क्यों उठा। किसने यह आज्ञा दी?'

उसने तमाखू का धुआं छोड़ कर तनिक प्यार से मेरा गला पकड़ा और पूछा, 'क्या डर गए।'

'हाँ।'

यहाँ आने पर पहले डर लगता ही है। तुम्हारे माँ-बाप कहाँ है? नहीं हैं? कोई बात नहीं। उनके बिना ही तुम रहोगे। बस किसी से डरना मत।'

अरसे के बाद किसी दयालु के शब्द सुनने को मिले राहत मिली इससे। जब मैं अपनी खाट के पास आया तो उसे भी बैठने को मैंने कहा,

'तुम कौन हो?'

'मैं एक सिपाही हूँ। कज्जाक! मैं हंगेरियन और पोलों के खिलाफ लड़ा हूँ।'

मैंने आँखें बंद करलीं, फिर जब खोला तो देखा कि उसके स्थान पर काले कपड़े पहने नानी बैठी है और झुककर उसने पूछा, 'तुम्हे क्या हुआ, बेटे !'

मैंने सोचा कि सपना देख रहा हूँ सो चुप रहा। फिर डाक्टर आया, उसने पट्टी बाँधी और थोड़ी देर के बाद नानी के साथ गाड़ी पर बैठा मैं शहर के बीच से जा रहा था।

सूरज चमक रहा था। बादल सफेद चिड़ियों की तरह उड़ रहे थे। हमने वोल्गा का पुल पार किया। मैंने देखा कि वसन्त आने वाला है। शीघ्र ही ईस्टर आएगा। 'मैं तुम्हें क्यों प्यार करता हूं नानी !'

'क्योंकि हमारा तुम्हारा रिश्ता है।'

मैं नानी से लगा आराम करने लगा।

दो

जब मैं पहुंचा तो नाना बाग में काम कर रहा था। मेरा स्वागत उसने कुल्हाड़ी यों उठा कर किया जैसे मेरे सिर पर ही दे मारेगा। फिर पूँछा, 'क्या तेरा वहाँ का काम समाप्त हो गया? अरे तू...........अब तेरा जिस तरह भी जी चाहे रहना।'

'हमें वह सब मालूम है!' नानी ने कहा फिर मुझे कमरे में ले जा बताया, 'नाना तो बरबाद हो गया है। उसके पास जो भी रुपया था उसने निकोलस को ऊँचे सूद पर दिया था लेकिन कोई लिखा पढ़ी नहीं थी। मुझे यह तो नहीं मालूम कि अब ठीक स्थिति क्या है परन्तु सारा रुपया डूब तो अवश्य गया है।' कह कर वह रुकी फिर कमरे में चारो ओर देखकर पुनः कहा, 'इसीलिए तेरा नाना इतना कठोर हो गया है और किसी की सहायता नहीं कर सकता। लेकिन आज रात तू यहाँ रह जा, मेरे पास आज के खर्च भर को पैसे हैं।'

तभी नाना भीतर आया और मुझे घूर कर फिर कहा, 'क्या नाश्ता होने जा रहा है?'

'यह तुम्हारे भाग का नहीं लेकिन अगर चाहो तो आओ तुम भी साथ होलो। काफी है।'

वह मेज पर बैठ गया और बोला, 'अच्छा आओ, चा उँडेलो।'

मैंने देखा कमरे में सब पहले ही जैसा था। केवल वह स्थान सूना था जहाँ माँ रहती थी। नाना की खाट के ऊपर दीवाल पर एक बड़ा सा कागज पिन से लटकाया गया था।

मैंने पूछा, 'यह किसने लिखा है?'

नाना खामोश रहा परन्तु नानी ने मुस्कराकर कहा, 'कागज के उस टुकड़े की कीमत १०० रूबल है।'

नाना चिढ़ गया, 'तुझसे क्या मतलब, चुप रह!' मुझे पुराने दिनों की याद हो आई। कमरे के एक कोने में संदूक के ऊपर रखी टोकरी में सोता निको जाग गया परन्तु मुझे पहचान न पाया।

बाहर गली की खबरें मिलीं—व्याखीर मर गया है। रूबी कहीं चला गया है। याज के पाँव टूट गए हैं, वह चल नहीं सकता। काली आँखों वाले कस्त्रोम ने मुझे यह खबर बताकर कहा, 'बच्चे जल्दी करते हैं।'

'यह तो केवल व्याखीर मरा है।'

'हाँ लेकिन गली छोड़ कर भाग जाना भी तो मरने के ही बराबर है। चेस्नोकोव वाले पुराने मकान में दूसरे किराएदार आ गए हैं। उनका नाम है—इविसीन्को। उनके यहाँ निउश्का नाम का एक लड़का आ है। उसके बहनें भी है, एक तो बहुत छोटी है और दूसरी पंगु है परन्तु है खूबसूरत!' तनिक रुक कर उसने बताया, 'कुल्का और मैं उसे प्यार करने लगे हैं। उसे लेकर लड़ाई भी हो जाती है।'

'लड़की से लड़ाई होती है ?'

'धुत्त ! मुझमें और चुरका में लड़ाई होती है । लड़की से कभी नहीं ।'

मुझे यह पता लग गया था कि बड़े लड़के और जवान आदमी प्रेम करते हैं । उसी शाम को मैंने उस पंगु लड़की को देखा । वह बैसाखी के सहारे चलती थी । अपने घर की सीढ़ियाँ उतरते समय उसकी एक बैसाखी गिर पड़ी—फिर तो असहाय होकर खड़ी रहने के सिवा वहकर ही क्या सकती थी । मैंने अपने पट्टी बंधे हाथों से उसे उठाकर देना चाहा पर मैं भी असफल रहा मेरी असफलता पर वह हंस पड़ी ।—फिर पूछा, 'अपने हाथों को क्या कर लिया ?'

'जला लिया है ''

'ठीक है मैं लंगड़ी हूं । तुम क्या यहीं रहते हो ? क्या तुम अस्पताल में थे ? मैं तो बहुत दिनों वहाँ रही ।'

उसके कपड़े सफेद थे । फटे हुए परन्तु साफ सुथरे । उसके बालों में मोटे फीते गुंथे थे जो उसकी छाती पर झूलते रहते । आँखें बड़ी बड़ी । उनमें हल्के नीले रंग की चमक होती थी जिससे उसकी छोटी नाक वाला चेहरा काफी तेजोमय मालूम होता ।

उस दिन आधी रात को नानी ने मुझे जगाकर कहा, 'मेरे साथ आ दूसरों का । भला करेगा तो तेरे हाथ का घाव जल्दी ठीक होगा ।'

मेरे हाथ पकड़ कर अंधेरी गली में वह यों चलने लगी जैसे मैं अंधा होऊं । उस समय इतना अंधेरा था कि कुछ भी न सूझता था । एक कुत्ता हम लोगों पर भूंकने लगा । नानी ने कहा, डरो मत !'

नानी ने कुत्ते को पुचकारा फिर तो वह भी साथ हो गया। काफी चलने पर वह गिरजाघर आया जिसकी खिड़की से रोशनी साफ आ रही थी और कब्रगाह की दीवाल भी दिखाई पड़ती थी। नानी ने कहा, 'तू आ गया, इससे मुझे बहुत खुशी है। क्योंकि अब मुझे इन बड़े आदमियों से बहुत घृणा हो गई है जो खुदा को भी भूले जाते हैं और कयामत के दिन की भी फिक्र नहीं करते। न तो गरीबों से मित्रता करते हैं। और सदा ही अपने पास इकट्ठा हुए सोने के बारे में ही सोचते हैं जो एक न एक दिन अवश्य ही कोयला हो जायगा।'

यहाँ तक आते हुए नानी ने रास्ते में मिले प्रत्येक व्यक्ति के घर की बन्द खिड़की पर एक पैसा और दो बिस्कुट रखा। इस समय मैंने पूछा 'इस कुत्ते को हम घर ले चलें?'

'अगर यह चले तो। परन्तु मेरे पास एक बिस्कुट बचा है, इसे दे दे! अब मैं बहुत थक गई है।'

हम लोग गिरिजा के दरवाजे के पास पड़ी कुर्सी पर बैठ गए और कुत्ता भी वहीं बैठ कर बिस्कुट कुतरता रहा। नानी ने कहा, 'एक यहूदी स्त्री है, उसकी दस सन्तानें हैं।'

परन्तु मैं नानी से लग कर सो गया।

अब फिर मेरे जीवन की धारा तेजी से बह निकली। रोज ही मुझे नए नए अनुभव होते। कभी कभी मेरा जी बहुत बेचैनी और दर्द से भर जाता। धीरे धीरे मैं स्वास्थ लाभ करने के साथ ही उस पंगु लड़की के प्रति अधिक तेजी से खिंच गया

उसके साथ काफी देर तक गिरजे के दरवाजे पर बैठना—कभी बातें करता कभी चुप ही रहता। उसके साथ खामोश बैठना भी अच्छा ही लगता था। वह कुछ कमजोर हृदय की थी और उसकी आवाज चिड़ियों की तरह मधुर थी। वह बहुत दिलचस्प ढंग से डोन के किनारे के कज्जाकों का वर्णन करती जिनके बीच में वह अपने चाचा (तेल के कारखाने का एक मजदूर) के साथ रही है। अब उसका बाप निजनी में आ बसा था। उसने कहा, मेरा एक चाचा जार के राज भवन में काम करता है।'

अक्सर रविवार को या छुट्टी के दिनों में बहुत से युवक युवतियाँ गिरजे में आते। युवक तो भीतर चले जाते परन्तु स्त्रियाँ व बच्चे वहीं बालू पर या बेंच पर बैठ जाते। बच्चे खेलते और मुग्ध होकर मातायें देखतीं। हम लोग भी कभी कभी बच्चों के साथ हो जाते। पहले तो हम सभी साथ खेलते परन्तु अब कोसत्रोम और चुरका एक दूसरे के विपक्षी बन कर खेलते। इनकी लड़ाई तो उस पंगु लड़की के मुस्कान पर विजय पाने की थी। दोनों आकर घूसेबाजी भी करने लगते और इस तरह कि यदि बड़े लोग आकर बचाते तो भी बचा न पाते थे अन्त में उन दोनों पर लड़ाई रोकने के लिये पानी छोड़ा जाता, जैसे लड़ने वाले कुत्तों पर पानी डाला जाता है। अक्सर वह लड़की लुडमिला भी चीख पड़ती, 'बन्द करो, झगड़ा' उसका चेहरा गुस्से से सफेद होकर चमकने लगता।

एक बार चुरका को हरा कर भी कोसत्रोम एक दुकान के पीछे बैठकर रोने लगा। उसकी सिसकी सुनाई पड़ रही थी। उसका चेहरा इतना कठोर बन गया था जैसे पत्थर का हो। उसकी सूजी हुई काली आँखों से पानी गिर रहा था। मेरे

समझाने पर उसने कहा, 'देख लेना, सिर पर वह पत्थर मारेगा। देख लेना।'

और चुरका! वह भी एक ही जीव था। अफसर की तरह वह गली के बीचोबीच चलता। उसके हाथ पैन्ट के जेबों में होते और सिर की टोपी भी तिरछी। वह शान से कहता, 'शीघ्र ही मैं सिगरेट पीना सीख जाऊँगा। दो बार मैंने कोशिश की परन्तु बीमार हो गया।'

इस प्रकार की घटनाओं से मैं परेशान था। धीरे धीरे मेरे सभी मित्र मुझसे अलग हो गए—यह सब लुडमिला के कारण था। एक दिन शाम को अपने आप वह मेरे पास आई, पूछा, 'कहो, क्या हाल है?' फिर तीन बार सिर हिलाकर कहा, 'क्या तुमने चुरका व कोसत्रोम को देखा है?'

'चुरका से अब हमारी नहीं पटती। और तेरे ही कारण! वे दोनों ही तेरे प्रेम के कारण सदा लड़ते रहते हैं।'

वह जैसे फूट पड़ी, 'मैं किस प्रकार दोषी हूँ?'

'तुमने दोनों को अपने प्रेम में क्यों फंसाया?'

'मैंने क्या फँसने को कहा था?' कह कर वह क्रोध में घूमी और फिर बोली, 'बेहूदी बात है मैं उन दोनों से बड़ी हूं। मैं चौदह साल की हूं। बच्चे अपने से अधिक उम्र की लड़की से प्रेम नहीं करते।'

'यह तो तुझे अच्छी तरह मालूम होगा!' उसे नाराज करने को ही मैंने कहा, 'और वह रिव्ल स्तोव की बहन! वह भी तो बड़ी है परन्तु सदा ही लड़के उसके पीछे दौड़ते रहते हैं।'

लुडमिला एक दम मेरी ओर घूम पड़ी। उत्तेजना के कारण उसकी प्यारी प्यारी आँखों में आँसू भर गया था, अपने बैसाखी को

बालू में गड़ा कर उसने कहा, 'तू कुछ नहीं जानता। वह अच्छी लड़की नहीं है। मैं बल्कि बहुत अच्छी हूं। तुम उपन्यास पढ़ो तो सब जान सकोगे।'

दूसरे दिन लुडमिला से दोस्ती करने के लिए मैं उसकी प्रिय वस्तु थोड़ी सी मिसरी लेकर गया पूछा, थोड़ा खोगी ?'

'भाग जा !' क्रोध में उसने कहा, 'हमारी दोस्ती समाप्त हो गई।' परन्तु उसने उसे स्वीकार कर लिया और कहा, 'इसे तुझे कागज में लपेट कर लाना चाहिए था। देख तेरे हाथ कितने गंदे हैं।'

'मैंने धोया तो था।'

उसने मेरा हाथ अपनी हथेलियों में ले लिया और कहा, 'मेरे देख !'

'ये भी तो गंदे और खुरदुरे हैं।'

'मैं सिलाई बहुत करती हूँ। इसलिए सुई से ऐसे हो गए हैं।' फिर उसने चारों ओर सतर्कता से देखकर कहा, 'हमें कहीं ऐसी जगह चल कर बैठना चाहिए जहाँ कोई न देखे। हम लोग 'एक दिलचस्प' उपन्यास पढ़ेंगे। ठीक है न !'

जगह ढूँढ़ने में हमें देरी लगी। क्योंकि कोई जगह नजर में न जँची। अन्त में वह साधारण स्नानगृह दिखा जिसके बगल में ही बूचड़ खाना है। मुश्किल से ही कभी कोई उधर आता था। एक स्टूल पर वह बैठ गई और मैं दरवाजे के पास बैठ कर उसका मुँह ताकता रहा। वह पढ़ती जा रही थी। उसकी चमकती आँखें दो चिनगारियों की तरह पृष्ठ पर नाच रही थीं। अक्सर पढ़ते पढ़ते उसकी आवाज भर जाती और वह जैसे रोने रोने हो जाती।

मेरा कुत्ता जिसे मैंने अब पाल लिया था, उसकी शक्ल और तेजी के कारण उसका नाम 'विंड' रखा था, भी मेरे साथ था।

'सुन रहे हो न !' लुडमिला और मैं सिर हिला देता।

वह फिर पढ़ने लगती। पढ़ती पढ़ती एक दम से रुक जाती जैसे रोशनी बुझ जाए और किताब बंद कर के पूँछती, 'कहो अच्छा था न।'

स्नानघर की पढ़ाई काफी दिनों चलती रही। एक एक कर के तीन भाग पढ़े गए। लुडमिला ने कहा कि चौथा भाग भी है। जिस दिन पानी बरसता हम लोग अधिक निश्चिन्त रहते क्योंकि उस दिन कोई भी नहाने न आता और हमें कोई चिन्ता भी न रहती।

कोई देखेगा तो क्या होगा इसकी चिन्ता मुझसे अधिक लुडमिला को थी। हम घंटों एक दूसरे से लग कर बैठे रहते और जो भी मन में आता बातें करते जाते। मैंने उसे नानी की कुछ कहानियाँ सुनाईं। उससे हमें कज्जाकों के जीवन की बातें सुनने को मिलीं।

'वहाँ कितना अच्छा था !' एक आह खींच कर वह कहती। 'ओ यहाँ क्या है ? यह तो भिखमंगों का गाँव है।'

'फिर तो स्नानगृह की आवश्यकता भी हमें न रह गई क्योंकि लुडमिल की माँ को कोई नौकरी मिल गई और वह दिन भर वहीं रहने लगी। उसकी बहन स्कूल जाती और भाई एक फैक्टरी में काम करते। इस प्रकार सारा घर अपना ही था। मैं जाकर लुडमिला को घर के कामों में मदद देता।

अक्सर हँसकर वह कहती, 'हम लोग तो बिल्कुल ही एक विवाहित दम्पति की तरह रहते हैं ! बल्कि उनसे भी अच्छे, क्योंकि विवाहित पति पत्नियों की भी मदद नहीं करते।'

जब मुझे पैसे मिल जाते तो मैं चा के साथ के लिए कुछ नाश्ता खरीद ले जाता। नानी भी लुडमिला के लिए सिलाई के काम लेकर आती। वह हमारी मित्रता से परिचित थी—उसने कहा, 'लड़के व लड़की की मित्रता अच्छी बात है परन्तु फ़ाल [illegible] आते।'

हम दोनों ही नानी के इस वाक्य का अर्थ समझते थे।

लुडमिला के पिता की उम्र चालीस की थी, वह काफी सुन्दर था। उसके दाढ़ी और सिर के बाल घुंघराले थे। वह अक्सर अपने बच्चों को पुचकारता तो भांड़ की तरह मालूम होता और अपनी पत्नी को भी वह पीटता। हर रविवार व छुट्टी को वह मखमल की पतलून और चमकदार जूते पहन कर अकड़ कर फौजी की तरह दरवाजे पर खड़ा रहता।

लुडमिला अपनी माँ से कहती, 'माँ, तू ऐसी क्यों बनी रहती है। देखती नहीं, वे चटाई बिनने वाली स्त्रियाँ भी कैसे कपड़े पहनती हैं?'

'अगर तुम तीनों को पहनाने की बात न होती तो मैं भी वैसे ही कपड़े पहन पाती।'

लुडमिला के बाप का नाम इवसिन्को था। वह बुरी तरह चटाई वाली स्त्रियों की ओर घूरता रहता।

एक दिन लुडमिला, कोसत्रोम और मैं एक बेञ्च पर बैठे थे। चुरका ने लुडमिला के भाई को घूँसेबाजी के लिए चुनौती दी थी। दोनों ही एक दूसरे पर गुंथे हुए लड़ाई कर रहे थे। एकाएक लुडमिला चीख उठी, 'रोको!'

कनखियों से देखकर कोसत्रोम ने कालीनिन नामक एक शिकारी की बात बताई जो मर चुका था परन्तु अभी भी कब्र में नहीं दफनाया गया था। इसलिए वह अपने कफ़न में से निकल कर रात भर घूमता रहता है।

'ऐसी बातें मत करो।' लुडमिला ने रोका।

'झूठ है। मैंने उसे दफनाए जाते देखा है। चुरका लड़ाई के बीच ही चीख पड़ा।'

'अबे जा, तू भी उसी तरह फिर कब्र में सो रह!' कोसत्रोम ने कहा।

अपना सिर हिलाकर लुडमिला ने माँ से पूँछा,—'माँ क्या मृतक रात को घूमते हैं?'

'हाँ।' मां ने अधिक चिन्ता के बिना ही उत्तर दे दिया। परन्तु उनका झगड़ा इसे लेकर चलता ही रहा।

एक दुकानदार का लड़का—लगभग बीस वर्ष का लम्बा युवक आया और कहा कि जो भी उस कब्रगाह में रात भर सोए उसे वह तीन रुपये और दस सिगरेट देगा।

हम लोग तो सुन कर ही सन्न रह गए पर लुडमिला की मां ने कहा, 'यह बदमाशी! आखिर क्यों तू बच्चों को यों बहका रहा है।'

'अच्छा पाँच रुपया ला। मैं सोऊँगा!' चुरका ने कहा।

कोसत्रोम ने फौरन ही ताना दिया 'तीन रुपया में डर लगता है? अच्छी बात है बालक! तू कह दे पाँच रुपया। यह कभी न जाएगा।'

अच्छा पाँच रुपया सही।'

चुरका उठा और चुपचाप भाग गया। कोसत्रोम ने मुँह में दो उँगलियां रख कर सीटी बजाई। लुडमिला ने पूँछा, 'वह क्यों भागा?'

'बुजदिल है ।' बालक ने कहा, 'सब कहते थे कि यह बहादुर है। सब देख लिया ।'

मुझे यह ताना बहुत बुरा लगा । मैं इस बालक को खूब जानता था जो लड़कों को गंदी आदतें सिखा कर लड़कियों को तंग करता था। उसका कहा करके लड़के सदा ही झंझट में पड़ जाते थे। जाने क्यों उसे मेरे कुत्ते से चिढ़ थी। वह उस पर ढेला फेंकता था। एक दिन उसने उसे एक रोटी दी जिसमें सुई चुभी थी । मैंने बालक से कहा, रुपये मुझे दे, मैं जाऊँगा ।

उसने मेरा मजाक बनाना शुरू किया । उसने लुडमिला की माँ से रुपया रखने को कहा परन्तु उसने इन्कार कर दिया । 'मुझे यह सब बदमाशी पसन्द नहीं ।' कह कर वह चली गई ।

लुडमिला ने भी रुपया नहीं लिया तभी नानी आ गई। सब सुनकर उसने अपने पास रुपये रखने का निश्चय किया फिर मुझसे बहुत प्यार से कहा, 'अपना ओवरकोट ले लेना और एक कम्बल वहाँ सर्दी अधिक होगी।

नानी की बात से मुझे ताकत मिली और विश्वास हो गया कि वहाँ कुछ बुरा न होगा।

बालक ने यह शर्त लगाई कि कब्र पर ही सोऊँ। रात भर उस पर से हटने का मेरा अधिकार समाप्त। वह मुझ पर नजर रखेगा।

नानी ने मुझे चूमा और कब्रगाह की ओर घुमा दिया और कहा, 'अगर डर लगे तो खुदा का नाम लेना।'

मैं तेजी से चला। थोड़ी दूर तक कसत्रोम और दूसरे लड़कों ने पहुँचाया। फिर जब मैं कब्रगाह की दीवाल डाक

रहा था तो कम्बल से लगकर मैं गिर पड़ा परन्तु फौरन ही उठ खड़ा हुआ। जैसे धरती ने मुझे ऊपर फेंक दिया हो। पीछे से मुझे हल्की सी हँसी सुन पड़ी।

मैं जाकर उस कालिनिन वाली कच्ची कब्र पर बैठ कर चारों ओर देखने लगा। आसपास की सारी जगह क्रासों से भरी थी। सामने का सफेद गिरजा बर्फ का बना लगता था। सामने ही चौकीदार की झोपड़ी थी। मैंने मन ही मन निश्चय किया कि अगर कालिनिन कब्र में से निकलेगा तो इसी झोपड़ी में भाग जाऊँगा।

मुझे कब्रगाह का भूगोल मालूम था। माँ की कब्र भी गिरजा के पास ही थी। गाँव से मुझे गाने की आवाज सुनाई पड़ी। मैं पहचान गया। शराबी लुहार मिखोव की आवाज थी।

थोड़ी देर बाद केवल घंटे की ही आवाज रह गई। मेरा जी भी बैठने लगा। गिरजा की ओर मुँह कर के मैं कम्बल में पाँव छिपा कर बैठ गया। मुझे लगा जैसे रह रहकर कब्र फट रही है और नीचे से एक आवाज आ रही है दूसरी बार कोई चीज मेरे पास आकर गिरी। बाद में एक ईंट भी आई। मुझमें डर की एक लहर फैल गई पर मैं जानता था कि दिवाल के पीछे से वालक और उसके साथी मुझे डराने को यह कर रहे हैं। उनके वहाँ उपस्थित होने की कल्पना से मुझे राहत मिली।

अचानक मैं माँ के बारे में सोचने लगा। एक बार मुझे सिगरेट पीते पकड़ कर पीटा था। और कहा था, 'मुझे मत छूना। मैं काफी परेशान हूं। फिर मुझे भट्टी के पीछे भेज कर उसने नानी से कहा, 'वह अजीब भावना हीन है। 'उसे किसी से प्यार नहीं।'

मुझे इस बात की चोट लगी। मुझे माँ के लिये दुःख हुआ। उधर दीवाल के पीछे मुझे डराने की वे लोग सभी कोशिशें कर रहे थे। अन्त में मैं चीख पड़ा, 'तुम सबों को मौत आवे!' परन्तु मेरी कौन सुनता। चाँदनी में बर्फ के बीच अबरख के कण चमक रहे थे।

मैंने पूरी तरह कम्बल ओढ़ लिया—अब चाहे जो भी हो जब नानी ने मुझे आकर जगाया! 'उठ क्या डर गया था!' जाड़ा लग रहा है?

'हाँ थोड़ा डरा था, पर किसी से न कहना, लड़कों को पता न लगे।'

'शाबाश! बेटे, इस धरती पर आकर अपने ही अनुभवों से सीखना होता है। अगर खुद न सीखोगे तो किसी के कहने से कभी न आयेगा।'

फिर तो मैं गली में सब से बहादुर माना जाने लगा। कालीनिन के कब्र से निकलने की बात झूठी हो गई।

लुडमिला ने बहुत प्यार तथा आदर से देखा। नाना भी खुश हुआ। सभी खुश थे—चुरका को छोड़कर। वह कहता—'उसके लिये यह कोई बात न थी। उसकी नानी खुद ही डाइन है न!'

तीन

भोर के तारे की तरह ही मेरा भाई निक गायब हो गया।

चीथड़ों की शैय्या पर हम और वह दोनों ही नानी के साथ सोए थे। यों तो रोज की सुबह भी मुझे बहुत उदास मालूम होती थी—और आज नानी ने फुसफुसा कर कहा, 'निक मर गया।'

सचमुच वह इस तरह तकिए से चपक गया था जैसे तकिया उसके शरीर का एक भाग हो।

'खुदा को शुक्र है कि मर गया। नहीं तो इस संसार में बेचारा किस सुख के लिये रहता!' सिर के बालों को ठीक करती हुई नानी ने कहा।

तभी नाना आया और अपनी उँगलियों से निक की बंद आँखों को छुआ। तब उसकी ओर घूमकर नानी ने कहा, 'बिना हाथ साफ किये उसे क्यों छूते हो?'

नाना ने शून्य दृष्टि से उसे देखा और बाहर जाते हुये

कहा, 'तेरा जो मन आए करना, मैं उसकी अंतिम क्रिया के लिए कुछ भी नहीं करने का।'

मैं वहाँ से चला आया और फिर रात गए ही वापस आया। निक को उस सुबह को दफनाया गया। मैं तब माँ की कब्र के पास अपने कुत्ते के साथ बैठा था। मेरे साथ याज का पिता था। जिसने कब्र खोदी थी। उसने मुझसे कहा, 'मैंने तो केवल मित्रतावश ही यह किया है। इसके लिए किसी दूसरे से मैं कई रूबल लेता।'

नानी उसकी लाश को कब्र तक लाई। उसे कब्र में रख कर मिट्टी भर दी गई। नाना और नानी चुप चाप खड़े थे। न तो पादरी न भिखारी, सिर्फ हम चार ही थे। नानी ने, उसके बाद नाना के कब्र को सम्मान दिया और वापस चले।

काफी गर्मी पड़ रही थी! रास्ते की बालू तक गर्म हो गई थी। चलते चलते रुककर नानी अपना पसीना पोंछ लेती थी।

'माँ की कब्र की मिट्टी काली क्यों हो गई?' मैंने नानी से पूछा।

'पानी बहुत अधिक ऊपर से बहा होगा।' लेकिन इन बातों पर मत सोच। मैं चुप तो हो गया पर सोचता रहा कि सचमुच मौत कितनी भयानक और कुरूप है।

जब तक हम घर पहुँचे नाना पहुँच कर चा बना चुका था और फौरन ही कहा, 'हमें थोड़ी चा पीनी चाहिए।'

फिर नाना ने नानी का कंधा पकड़ कर झकझोरा और कहा, 'और कहो!'

'इसके क्या माने!' नानी ने मुड़ कर पूछा।

'इसके माने कि खुदा भी हमसे डर गया है और एक एक करके हमारा नाश कर रहा है!'

इस समय नाना को इतनी अच्छी तरह व्यवहार करते देख मुझे आश्चर्य ही हुआ।—परन्तु नानी ने अपने जैसा ही उत्तर दिया।

'यह क्यों नहीं कहते कि जीवन भर तुम कुछ नहीं कर सके।'

उस शाम, लुडमिला से बातें करते हुए मैंने सुबह की सभी घटनाएँ उसे सुनाईं परन्तु उस पर उनका कोई प्रभाव न पड़ा। उसने कहा, अनाथों को काफी सुविधाएँ हैं क्योंकि यदि मेरी मां व बाप मर जाएँ तो मैं अपनी बहन पर भाई का भार छोड़ कर गिरिजा में कोई काम में जाऊँगी। क्योंकि मैं पंगु हूँ! मेरी शादी तो होगी नहीं और यदि हुई भी तो पंगुओं की तादाद ही तो बढ़ेगी।'

उसके इस कथन से मैं उससे दूर भागने लगा।

भाई की मृत्यु के कई दिनों बाद नाना ने कहा, 'आज जल्दी सो जाना, अन्धेरा होने के पहले ही। हमें जंगल लकड़ी लाने जाना है।'

'मैं भी जड़ी बूटी चुनने चलूँगी।' नानी ने कहा।

लगभग दो मील पर एक जंङ्गल था। सुबह होने के पहले ही हम तीनों चल पड़े। जङ्गल आते ही नाना ने कहना शुरू किया।

'जंगल तो खुदा का बगीचा है। जब अपनी युवावस्था में मैं जहाज पर काम करता था तब एक बार झेगुलिया गया था। अलेक्सी! समझ जा कि जो जीवन मैंने बिताया उसकी तुम्हें कल्पना भी नहीं हो सकती। हम लोग सारातोव से मकारा तेल के पीपे ले जा रहे थे। पोरेखा का सिरील कप्तान था और हमारा मेट था एक तातार—आसफ! मई का महीना था

शायद। रात को हमारे कैप्टन सीरिल ने एकाएक कहा, 'अब, हम तुम्हें हुक्म न देंगे। अब तुम अपने मन से करना। मैं जंगल में जा रहा हूँ। हम लोग आश्चर्य से हक्के रह गए। हम में कुछ उसे रोकना चाहते थे, कुछ चुप हो रहे। तभी तातार भी चिल्ला उठा, मैं भी जाऊँगा।'

'क्या वे डाकू हो गए थे?' मैंने पूछा।

'शायद, या हो सकता है कि तपस्वी हो गए थे, कोई ठीक पता नहीं।'

थोड़ा आगे बढ़ने पर नानी ने कहा, 'अब जरा सुस्ता लो। एक कपड़े में वह रोटी, प्याज, नमक आदि खाद्य सामग्री बाँधकर ढो रही थी। उसने कहा, 'हमारे सबों के लिए खाना काफी है।'

खाना खाने के बाद हम सबों ने काम शुरू किया। नानी तो जड़ी चुनने चली गई। नाना लकड़ी काटने गया। मेरा काम था कि मैं कटी हुई लकड़ियों को जुटाऊँ। परन्तु मैं नानी की ओर चला गया। मैं बहुत चुपचाप उधर गया कि नानी न जान सके। परन्तु उसने मुझे देख ही तो लिया।

'तू नाना के पास से भाग आया।'

और हम लोग जंगल में बहुत भीतर घुसते गए। वहाँ जाकर मुझे जंगल में रहने वाले डाकुओं की कल्पना हो आई और मुझे उनका जीवन बहुत आकर्षक लगा। धनी को लूट कर गरीब को देना कितना अच्छा है। मुझे जंगल की नीरवता में बड़ी शांति मिली। वहां मुझे अपनी नानी पर भी बड़ी श्रद्धा उपजी।

बालक ने मेरे कुत्ते को हाल ही में जहर दे दिया था। जंगल में मुझे एक सफेद कुत्ता दिखा। तत्काल ही मेरे मन में आया

कि मैं उसे पाल लूँ। बस मैं उसके पीछे दौड़ पड़ा। वह मुझे अजीब लगा। उसकी पूँछ उसकी टांगों के बीच थी। मेरे सीटी बजाने पर वह मेरे पास न आकर और छिपने लगा। मुझे उसके व्यवहार से बिल्कुल ऐसा लगा कि वह कुत्ता नहीं है।

'तूने देखा।' हँसकर नानी ने पूँछा, 'मैं भी पहले कुत्ता समझी पर वह लोमड़ी थी। लोमड़ी गर्मी में खतरनाक नहीं होती।'

नानी न तो जङ्गल में कहीं रास्ता भूली न उसे डर ही लगा।

नानी जंगल की जड़ी बूटी को बेंच कर सारे पैसे अपने पास ही रख लेती। इस पर नाना मन ही मन कुढ़ता रहता। एक दिन उसने कहा।

'तू भिखारी से भी बुरी है। मुझे तेरे कारण शर्म खानी पड़ती है।'

'शर्म क्यों? मैं कोई तेरी बेटी नहीं, न तो मैं दूसरी शादी करने वाली हूं।'

'मेरे सिर पर पाप का बोझ कम नहीं है कि दूसरों के पाप भी लादूं।'

'तू किस लायक है यह कोई नहीं जानता।' नानी कह कर चुप हो गई।

एक दिन नाना जब शहर से आया तो बरसात शुरू हो चुकी थी। दरवाजे पर खड़े होकर गौरैया की तरह पानी झाड़ते हुए उसने विजय के उल्लास में कहा, 'अबे ओ, सुन, छोकड़े। कल से तुझे एक नए काम पर जाना होगा।'

'कहाँ?' नानी ने ऊब कर पूँछा।

'तेरी बहन मातरेना के बेटे के यहाँ।'

'यह तुमने गलती की।'

'चुप रह, नालायक! वे लोग इसे आदमी बना देंगे।'

नानी ने उत्तर तो न दिया परन्तु संताप से सिर झुका लिया।

उस रात मैंने लुडमिला को बताया कि मैं शहर जा रहा हूँ, और बहुत जल्दी चला जाऊँगा!

तब उसने बताया, 'मेरे पिता मेरे पाँव का इलाज करावेंगे। जब पाँव ठीक हो जाएँगे तब मैं भी ठीक हो जाऊँगी।

उस गरमी में वह कुछ दुबली होकर पीली पड़ गई और उसकी आँखें लम्बी हो गईं थीं।

'तुम क्या डर गई हो?' मैंने पूँछा।

'हाँ।' कहकर वह सिसकने लगी।

शहर के लिए मेरे मन में योंही काफी बुरी कल्पना थी, फिर मैं भला, उसे क्या सांत्वना दे पाता! बड़ी देर तक एक दूसरे से लगे हम दुःख में डूबे खामोश बैठे रहे। अगर गरमी का मौसम होता तो मैं नानी से कहकर लुडमिला को लेकर जाता और एक काठ की गाड़ी में उसे बैठाकर भीख माँगता घूमता। लेकिन गरमी का मौसम जा चुका था। पेड़ों पर से बरसाती हवा बह रही थी। आसमान में बादल भरे थे। सारे विश्व में हमें केवल दुःख की छाया ही पड़ती दिखाई पड़ी।

चार

पुनः शहर में। वह दो मंजिला मकान मुझे बहुत बड़ी ताबूत की तरह लगा। यद्यपि मकान नया था परन्तु देखने में दीन हीन लगता। प्रत्येक मंजिल में आठ खिड़कियाँ थीं। इनमें चार ही गली की ओर खुलती थीं। यह घर मैंने पहले भी देखा था क्योंकि जब मैं जूतेवाली दूकान में काम करता था, तब जहाँ रहता था यहाँ से यह बहुत दूर न था।

मैं अपने मालिक से अच्छी तरह परिचित हो गया था। एक बार यह और इसके भाई माँ के पास आ चुके थे। इसके भाई ने ही मजाकिया ढङ्ग से गाना गाया था। उसमें तब और अब में कोई अन्तर नहीं आया था। मेरा मालिक ऊँची नाक व लम्बे बालों वाला अच्छा, दयालु व्यक्ति दिखता था। और उसका छोटा भाई विक्टर घोड़े की तरह लम्बे मुँह का था। इनकी माँ, नानी की बहन बहुत बुरे स्वभाव की औरत थी। मालिक की पत्नी बहुत सफेद रंग की थी जैसे बहुत अच्छे सफेद गेहूँ की पकी रोटी। उसकी आँखें

बड़ी और काली काली थीं। पहले ही दिन उसने हमें दो बार कहा, मैंने तेरी माँ को सिल्क के काले किनारी वाले कपड़े दिये थे।

मैं जाने क्यों यह विश्वास ही नहीं कर पाता था कि इसने माँ को कभी भेंट दी होगी और माँ ने स्वीकार भी किया होगा। उसने जब दूसरी बार कहा था तो मैंने उत्तर दिया, 'दिया होगा ठीक ही है परन्तु इस प्रकार डींग हाँकने की जरूरत क्या है।'

वह क्रुध हो गई, 'क्या? तू किससे बातें कर रहा है।' उसके चेहरे पर लाल धब्बे उठ आये। आँखें गोल होकर चमक उठीं। उसका पति भी आ गया, हाथ में एक कम्पास लिये और कान पर पेंसिल खोंसे हुये। मुझसे बताया 'इनसे अदब से बातें किया कर, सभी की इज्जत किया कर।'

फिर पत्नी की ओर घूमकर उसने कहा, 'बेकार के लिए मुझे मत परेशान किया करो।'

'बेकार के लिए! तुम्हारा मतलब क्या है? अगर तुम्हारे रिश्तेदार......।'

'मेरे रिश्तेदार और तू जहन्नुम में जा!' चीख कर वह चला गया।

मैं भला किस प्रकार इन लोगों को नानी का रिश्तेदार मानता। मैंने अपने अनुभव से जाना था कि रिश्तेदार एक दूसरे को अजनबी से भी बुरा व्यवहार करते हैं।

फिर भी अपना मालिक मुझे पसन्द था। अपने बालों को जब कान के नीचे समेटता तो मुझे अच्छा लगता। वह कहता, 'अबे जंगली।' कभी-कभी अपनी माँ व पत्नी से कहता, 'तुम

लोग बहुत दिनों से लड़ी नहीं।' कह कर वह हंस पड़ता। मुझे भी आश्चर्य था कि किसी भी समय बिना कारण ही वे दोनों लड़ सकती थीं। अक्सर बड़ी लड़ाइयों की शुरुआत खाने की मेज पर खाना पकाने के तरीकों की बहस पर ही होती। जो भी मास बनाती, पतोहू कहती 'मेरी माँ ने उस ढङ्ग से बनाया था।'

'यह तो गलत तरीका हुआ।'

'कुछ भी हो। स्वाद तो बहुत अच्छा था!'

'तो अपनी माँ के पास ही चली जा!'

'क्यों जाऊँ, मैं तो घर की मालकिन हूँ!'

'और मैं क्या हूँ?'

तब मालिक बीच में कूद पड़ता, 'बहुत हुआ, जङ्गलियो; तुम्हें क्या हो गया। रसोईघर जाने को एक पतली सी दालान थी। उसी दालान के एक सिरे पर मैं एक कोच पर सोता था। यहाँ सोने से मुझे जुकाम हो जाता।

सुबह आठ बजे नाश्ते के ठीक बाद मालिक, उसका भाई अपनी मेज पर कागज फैला लेते, छोटे छोटे प्याले और तमाम सामान।

मेज के दो किनारों पर बैठकर वे काम करते। टेबिल से पूरा कमरा भर जाता फिर कमरे में कोई आता तो विक्टर की शिकायत होती।

'वसील!' मालिक की पत्नी पुकार कर कहती। 'इससे कहो कि मुझ पर न चिल्लाये।'

'अच्छी बात है मेरी मेज न हिले।'

'मैं क्या करूँ? मैं गर्भवती हूँ कमरे में आने जाने भर को जगह नहीं।'

'तो क्या हम कहीं और चले जायें ?'

तभी दूसरे कमरे से झाँक कर सास कहती, 'उसकी आदत है कि वह तेरे कमरे में जरूर घुसेगा। उसके लिये और चारों कमरे पूरे नहीं हैं।'

इस पर विक्टर हँस पड़ता और मालिक कहता, 'काफी हो गया।'

इस पर उसकी पत्नी कुर्सी पर गिर कर रोने लगती, 'मैं मर रही हूँ।'

'मेरे काम में बाधा न डालो। मेरे घर से तो पागल खाना अच्छा ये घर में न रहने देगी।' मालिक बिगड़ता।

ऐसे झगड़ों से पहले तो मैं चिन्तित हुआ। फिर एक दिन मालिक की पत्नी खाने की मेज से एक चाकू लेकर कमरे में घुस गई और भीतर से बन्द कर लिया। मालिक ने काफी धक्का दिया परन्तु कमरा न खुला तो मुझसे कहा, 'मेरे कन्धे पर चढ़ कर सिटकनी खोलो।'

मैं उस पर सवार हो गया और दरवाजे के ऊपरी भाग का शीशा तोड़ कर ज्योंही सिटकिनी खोलने को सिर भीतर डाला कि मालिक की पत्नी ने चाकू से वार किया। सिर कुछ कटा भी परन्तु मैंने जैसे-तैसे खोल ही लिया। मालिक आगे जाकर पत्नी को वापस घसीट लाया और चाकू छीन लिया। तभी मैंने देखा कि चाकू तो केवल रोटी काट सकता है चमड़ा नहीं, अतः मैं चोट की ओर से निश्चिन्त हो गया।

मालिक व उसके भाई, दोनों काम करते समय गाना भी गाते। जिसे सुनकर दूर से ही उसकी पत्नी चीख पड़ती, 'क्या तुम भी पागल हो गये हो ? बच्चे को भारी नींद आई है। सम्हलो तुम विवाहित हो, तुम्हें ऐसा गाना न गाना चाहिये।'

मैं दिन भर काफी व्यस्त रहता। घर का मैं सारा काम करता। शनिवार को दोनों सीढ़ियाँ और बाकी कमरे धोता। मैं तरकारीयाँ काटता और साफ करता। मैं मालिक की पत्नी को बाजार से खरीददारी करने और तरकारी की टोकरी लाने में मदद देता। परन्तु मुझसे वह बुढ़िया-नानी की बहन बहुत काम लेती। वह सुबह छः बजे उठ जाती। और रात के कपड़े पहने-पहने ही हाँथ-मुँह धोकर खुदा से प्रार्थना करती। अपने बेटे व पतोहू की शिकायत करती, 'ऐ खुदा, मैं कुछ नहीं चाहती, कुछ नहीं, केवल थोड़ी सी शाँति चाहती हूँ।'

उसकी आवाज से ही मेरी नींद खुल जाती और मैं कम्बल में मुँह छिपाये उसकी लीलायें देखा करता। वह अपना सिर पीटती, छाती थपथपाती और कहती 'ऐ खुदा मेरी मुसीबतों को खाते में लिख लेना और मेरी पतोहू से उसका बदला लेना। मुझे जो वह तकलीफें दे रही है। उसका उसे फल मिलना चाहिये। और मेरे बेटे विक्टर की आँखें भी खोलो। ऐ खुदा विक्टर की मदद करो।'

विक्टर तो रसोई घर में ही सोता था। माँ की बातें सुनकर वह चीख उठता, 'किसी नई पतोहू की कामना है क्या ? बड़े शर्म की बात है।

'चुपचाप तू सोता रह! फिर वह खुदा से कहती, मुझे कष्ट देने वालों की हड्डियाँ चिटक जाएँ। इस पृथ्वी पर सिर छिपाने को कोई छत न मिले।

नाना की प्रार्थना भी इतनी भयानक न होती थी। यह समाप्त करके वह मुझे जगाती।—'जल्दी उठ, नहीं तो सब काम बाकी रह जायेगा। जा लकड़ियाँ ला, चूल्हा जला। कल लकड़ियाँ नहीं चीरीं ? जा नास्ता तैयार कर।'

उनकी बातों से बचने के लिये मैं बड़ी तेजी से कार्य शुरू करता परन्तु वह खुश न हो पाती।

मालिक की पत्नी के लिये प्रति-दिन दो पौन्ड सफेद रोटी और थोड़ी मिठाई लाता। जब मैं कागज में लपेट सब चीजें लेकर आता तो दोनों ही स्त्रियाँ मुझे शक के निगाह से देखतीं। फिर चीजें लेकर पूछती, 'तूने तो नहीं खाया ? मुँह खोल ?' फिर दोनों ही चीख उठतीं, 'देखो उसके दाँतों में अब भी थोड़ा सा लगा है देखो। इसने बहुत ज्यादा खा लिया है।'

मैं काफी तत्परता से अपना काम करता था। अक्सर आपस में वे महिलायें बातें करतीं, 'काफी साफ-सुथरा काम रहता है, परन्तु आज्ञाकारी नहीं है।' अक्सर मालिक की पत्नी कहती, 'तू यह मत भूल कि तू कितने गरीब परिवार का है। मैंने तेरी माँ को काली पट्टियों वाला सिल्क का कपड़ा दिया था।' इस पर एक दिन मैंने उत्तर दे दिया, 'तो क्या तुम इसके बदले में मेरा चमड़ा चाहती हो ?'

वह चीखने लगी, 'हे खुदा, यह किसी दिन मेरे घर में आग लगा देगा !' दोनों महिलाओं ने मालिक से शिकायत की परन्तु वह मेरे प्रति दयालु था, 'बच्चे, ठीक से रहा करो।' फिर उसे जैसे पत्नी व माँ को कुछ कहने का अवसर मिल गया। 'तुम्हारी भी क्या जोड़ी है ! क्या यह लड़का घोड़ा है, कि उसी तरह रखना चाहती हो ! कोई दूसरा छोकरा होता तो कब का भाग गया होता।'

इस पर दोनों ही आँसू बहाने लगतीं। पत्नी कहती, 'उसके सामने तो इस प्रकार मत कहा करो। तुम तो लम्बे बालों वाले मूर्ख हो ! अब वह भला हमारी क्यों सुनेगा !'

और माँ केवल इतना कहती, 'वासील, खुदा तुम्हें समझे !

बच्चे को इस प्रकार बरबाद मत करो।

उनके चले जाने पर मालिक ने बढ़कर मुझसे कहा, 'अबे देख, तेरे कारण मैं किस चक्कर में फँस गया हूं! तू अपने नाना के पास वापस जा और कूड़े बिना कर!'

इस दृश्य से मैं भी बहुत व्यथित था। मैंने कहा, 'हाँ, कूड़े बिनने में मैं इससे अच्छा ही था! मैं यहाँ काम सीखने आया था, बताओ कि काम मुझे सिखाया है?'

मेरी बात पर वह अजीब आवाज में, आँखें दिखा कर मेरे बालों को पकड़ कर बोला, 'तो तू विद्रोही है। इसमें तेरा ही बुरा होगा लड़के!'

मैंने समझा कि मुझे अब चलाजाना चाहिये। तभी एक दिन मुझे रसोईंघर में उसने थोड़ा सा ड्राइंग पेपर, कम्पास और पेंसिल पटरी देकर कहा, 'जब यहाँ से छुट्टी हो तो इसपर नक्शे बनाने का अभ्यास करना।'

मुझे यह नया काम अच्छा लगा। हाथ धोकर मैं उसमें जुट गया। मुझे अपना नक्शा देख कर खुद ही आश्चर्य हुआ। जिस घर की मैं नकल कर रहा था उतनी शक्ल ही दूसरी बन गई थी और दरवाजा इतना ऊँचा कि दूसरी मंजिल तक जाता था। मैंने उस घर के आस-पास चिड़ियों की शक्लें बना दीं और गली में लूले लंगड़े लोग भी। फिर वह नक्शा मालिक को दिया।

बालों को समेट कर, आँखें फैला कर उसने पूछा, 'यह सब क्या है?'

'यह वर्षा हो रही है। ये चिड़ियाँ हैं, पानी के कारण घर में घुस रही हैं। यह सभी आदमी हैं—जल्दी जल्दी घर

भागे जा रहे हैं और वह स्त्री गिर पड़ी है। यह नींबू बेचने वाला है।'

'हाँ, सब समझ गया। धन्यवाद!' व्यंग से फिर हँसकर मालिक ने कहा, 'इसे खुद ही फाड़ कर रद्दी में क्यों नहीं फेंक दिया। अरे जंगली!'

तभी उसकी पत्नी भीतर आई और मेरा काम देख कर बोली, 'इसे पीटो।'

परन्तु मालिक ने कहा, 'कोई बात नहीं, मेरा शुरू का काम ऐसा भी नहीं था।'

फिर उस पर लाल पेंसिल से क्रास बना कर उसने और कागज देकर कहा, 'फिर कोशिश करो।'

दूसरी बार कुछ सफलता मिली परन्तु खाली मकान अच्छा न लगा मैंने उसमें भी रहने वाले बनाए। खिड़कियों पर स्त्रियों को पंखा व सिगरेट देकर बिठाया। दरवाजे पर एक कुत्ता भी। इसे देखकर मालिक बिगड़ा, 'यह सब क्यों?'

मुझे समझ में न आया कि खाली मकान क्यों बनाया जाय। तब मालिक ने कहा, 'अगर सीखना चाहता है तब इसमें दिमाग लगा। यह सब बेवकूफी न करो!'

अन्त में जब मैं एक नक्शा काफी अच्छा बना सका तो वह खुश हो गया, 'यह तेरे ही ऊपर है कि तू कितना कर सकता है। अपने काम को समझ ले।' फिर उसने समझा कर मुझसे कहा, देख, इस घर का एक नक्शा बना, मैं अधिक न बताऊँगा।'

मैं कागज लेकर रसोईघर में चला गया। मैं यह सोच ही रहा था कि किस प्रकार शुरू करूँ कि मालिक की माँ आगई और बिगड़ने लगी, 'तो अब नक्शे बनाएगा?' कहकर उसने

मेरे बाल नोचे और मुझे पटक कर कागज छीन कर टुकड़े-टुकड़े कर डाले और बोली, 'किसी बाहरी को यह कला सिखाना कितना बुरा है जबकि अपने ही खून-मांस का भाई ही काम के लिए भटकता रहता है।'

शोर गुल सुन कर मालिक और उसकी पत्नी दौड़े आए। फिर तीनों में कसकर लड़ाई हुई। फलस्वरूप स्त्रियाँ रोने लगीं और मालिक ने मुझसे कहा, 'फिलहाल यह काम बन्द कर दो।'

मुझे अपने मालिक पर दया आई क्योंकि उन बुरी सी स्त्रियों के ही कारण वह कुछ भी करने में असमर्थ था। उस बूढ़ी स्त्री ने मेरे पढ़ने में विघ्न डालने में कुछ उठा न रखा। जब भी मैं कागज लेकर बैठता, तो उसके पहले उससे पूछ लेता, 'मेरी कोई जरूरत तो नहीं?' तो वह मुँह चिढ़ाकर कहती, नहीं जब जरूरत होगी तो मैं खुद बताऊँगी।' और कुछ ही क्षणों बाद वह चीखने लगती, 'हाँ, यह क्या कर रहा है। देख आज सीढ़ी साफ नहीं हुई, न कोने का कूड़ा ही हटा है। जाकर सब सफाई कर।'

मुझे सफाई के लिये कुछ न मिलता। तो वह चीख उठती, 'तू मेरी बात क्यों नहीं मानता?'

वह कभी-कभी मेरे कागज पर तेल या सिरका गिरा देती। मैंने ऐसी बुरी और जलने वाली दूसरी स्त्री न देखी थी।'

उसे अपने बेटे विक्टर पर जो भी प्यार था वह एक प्रकार से नशा था। कभी-कभी मुझे उसपर हँसी आती। अक्सर वह प्रार्थना करती, 'मेरे बेटे की पत्नी बहुत सुन्दर हो,'''''राजकुमारी, लाखों की सम्पत्ति वाले की बेटी। और

'तू ही देख वह कैसी है ?' कहते हुए वह अपनी पतोहू को अच्छी बुरी बातें भी सुना गई, 'एक बार मैं जब उसके साथ ही स्नान करने गई तब देखा कि वह कैसी है। उसमें ऐसा कुछ नहीं जिस पर गर्व किया जाय! भला कौन उसे सुन्दरी कहेगा।'

अपनी पतोहू के लिए वह जितने भी वाक्यों का प्रयोग करती सभी वीभत्स होते। पहले तो उसकी बातों से मुझे ऊब लगती परन्तु धीरे-धीरे मैं बुढ़िया के दर्द का भी अनुभव करने लग गया।

बगल के एक घर से हमारा आँगन दिखता था। बगल वाले इस घर के आठ भागों में चार में अफसर किरायेदार थे। पांचवे हिस्से में एक पादरी। उस घर का आँगन, अर्दलियों, और नौकरों, नौकरानियों और रसोइयों से भरा रहता था। वहाँ हर रसोईघर में उनके प्रेम-नाटकों का अभिनय सदा ही चलता रहता, कभी-कभी मारपीट भी होती, औरतें भी पिटतीं। यानी वहाँ वीभत्स, और करुणामय दृश्यों की कमी नहीं होती थी। परन्तु यह सब देखकर बुढ़िया मजा लेती। सब सुन कर मालिक की पत्नी की मुस्कुराहट भी फूट पड़ती। विक्टर भी बहुत दिलचस्पी लेता परन्तु मेरा मालिक कहता, 'खतम भी करो।'

इस पर विक्टर मां को भड़काता। 'मां यहां की तू मालकिन है, तेरा जो जी में आए कर।'

मुझे आश्चर्य था कि आपस में इतना भेद-भाव ये किस प्रकार निभाते हैं। अगर कभी मालिक मां से कह देता कि तू विक्टर को बिगाड़ रही है तो वह कहती, 'यह बड़े पाप की बात है कि तू अपने भाई को प्यार नहीं करता।'

विक्टर का व्यवहार तो माँ के प्रति सदा ही उपेक्षा पूर्ण होता परन्तु प्रति शनिवार को जब मिठाइयाँ आतीं तो मेज पर से चुरा कर माँ उसके लिए मेरे बिछौने के नीचे छिपा देती। बाद में विक्टर चुराकर खाता तो बुढ़िया कहती, जल्दी खा ले, नहीं तो कोई देख लेगा।'

'मैं तो बताही दूंगा कि तू मेरे लिए मिठाइयाँ चुराती है।'

विक्टर मुझसे सदा ही जलता रहा। मेरे मन में भी उसके प्रति काफी घृणा थी। मैं उसकी गाली सहता, दिन भर में कई बार उसके जूते चमकाता। यहां मेरा जीवन एक तो योंहीं काफी परेशानी का था, फिर जब नानी कभी-कभी आ जाती तो वह और भी कठिन हो उठता। वह पिछले दरवाजे से रसोईघर में आती और अपनी छोटी बहिन के सम्मुख झुक जाती। नानी के झुकने से मुझे लगता जैसे मैं ही किसी बोझ से दबा होऊँ।

'अरे तू अकूलिना है?' बड़ी विचित्रता से वह स्वागत करती।

नानी तो जैसे बदल गई थी। उसके ओंठ चिपके होते और आंखें सूनी-सूनी लगतीं। मैं नानी से कहता, 'यों क्यों बैठी हो?'

'तू चुप रह, तू तो यहां मालिक नहीं है।' नानी मुझे ही डांटती।

'बिना काम की बात ही यह सदा करता रहता है। मार गाली का भी तो इस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।' बुढ़िया मेरी शिकायत करती। फिर थोड़ा रुककर अपनी बहन से कहती, 'तो तूने भीख माँगना शुरू कर दिया है?'

'यह मेरा अभाग्य है।'

'उनके लिए अभाग्य नहीं, जो बेशर्म हैं।'

'मैंने सुना है कि ईसा ने भी भीख मांगा था।'

'कौन कहता है ? चुड़ैल, तू खुद भूखी है। ईसा भिखारी नहीं। वह तो खुदा का बेटा था। वह हर एक पर दया करता है। आजकल तेरी और तेरे पति वसील की जो हालत है वह उन दिनों का फल है जब तू अमीर थी और मैं गरीबी में तेरे पास सहायता मांगने गई थी।

'लेकिन मेरे पास जो भी था मैंने तुम्हें दिया था।' नानी ने उत्तर दिया। 'खुदा मुझे उसका पुरस्कार भी देगा।'

उस बुढ़िया की बातों से नानी तनिक क्षुब्ध हुई थीं। नानी इतना किस प्रकार सह सकी मुझे आश्चर्य था। नानी का यह रूप भी हमें पसन्द नहीं आया।

तभी मेरे मालिक की पत्नी ने आकर कहा, 'खाने के कमरे में आइए, आइए।'

मालिक सदा ही नानी का प्रसन्नता से स्वागत करता था, 'अरे, अकुलीना मौसी, सन्यासिनी, कैसी हो ? वृद्ध काशरिन मौसा का क्या हाल है ?'

नानी मुस्करा कर कहती, 'अभी भी मिहनत से काम कर रहा है ?'

नानी और मालिक में बड़ी देर तक और दिलचस्प बातें होतीं। अक्सर बात मेरी मां तक आ जाती, 'वारबरा, क्या रत्न थी !'

बीच में टोक कर मालकिन कहती, 'याद है, मैंने उसे कपड़े दिए थे—काली सिल्क पर सुनहली किनारी !'

'हां याद है।' नानी ने स्वीकार किया।

'काफी अच्छा था न !' मालकिन ने फिर पूछा।

'बहुत अच्छा——।' मालिक ने व्यंग किया।

'इससे तुम्हारा क्या मतलब ?' मालकिन ने चिढ़कर पूछा।

'कुछ नहीं, खुशी और अच्छे लोग बहुत दिनों नहीं रहते ।'

'जाने तुम्हारे मन में क्या-क्या विचार आते हैं ।'

तब नानी को नवजात शिशु के दर्शन कराए गए। जब मैं टेबुल साफ कर रहा था तब मालिक ने कहा, 'तेरी नानी भी कितनी अच्छी है ।'

मुझे यह शब्द अच्छे तो लगे परन्तु फौरन ही मैंने नानी से कहा, 'तू यहाँ क्यों आती है । देखती नहीं किस तरह......।'

'अरे अलेक्सी, मैं सब देखती हूँ ।' अपने चेहरे पर हँसी लाकर उसने कहा । वह सब कुछ समझती थी, यहाँ तक कि मेरे अन्दर की उथल-पुथल से भी वह परिचित थी। उसने कहा, 'मैं केवल तुझे देखने आती हूं । तेरा नाना बीमार है । मैं उसकी सेवा करते-करते थक जाती हूँ । मैं अपना काम भी नहीं कर पाती, इससे मेरे पास एक पैसा भी नहीं बच रहा है । और माइक ने अपने बेटे शाश्का को भी घर से निकाल दिया है और मैं ही उसे खाना देती हूं। इन्होंने तुम्हें प्रति माह छः रुबल देने कहा था परन्तु मुझे विश्वास है कि अब तक तुझे एक रुबल भी न दिया होगा जब कि मुझे यहाँ लगभग छः महीने हो गए हैं । इनकी शिकायत है कि तू आज्ञाकारी नहीं है परन्तु मैं कहूंगी कि किसी तरह धीरज के साथ रह कर काम सीख ले । समझे !'

मैंने उससे वायदा किया यद्यपि जानता था कि यह वायदा पूरा न हो पाएगा । यहां की जिन्दगी एक बोझ थी । अक्सर मैं सोचता कि मैं भाग जाऊँ परन्तु जाड़ा आ गया था । रात भर बर्फ के तूफान चलते । मैं भला कहां जाता ? मुझे घर से बाहर जाने की इजाजत भी न थी । केवल गिरजा तक जाता था । मुझे गिरजा अच्छा लगता । परन्तु मैं कभी गिरजा में प्रार्थना

न करता तथा मुझे शर्म भी आती। इसलिए मैं नानी व नाना दोनों की ही प्रार्थनाएँ न जान पाया। जब कभी मुझे परेशानी होती तो मैं अपनी प्रार्थना करता।

'या खुदा, मुझे दुःखों से बचा। मुझे जल्दी से बड़ा कर दे, इस नर्क से निकाल, मुझे क्षमा दे। मुझे ऐसी शिक्षा नहीं मिलती जिससे मेरा भला हो।' यह प्रार्थना मेरे मन में आज तक ताजी है। लड़कपन से मस्तिष्क में जो भी असर पड़ता है वह जिन्दगी भर रहता है।

अक्सर रात को मैं अकेला गलियों में, अँधेरे में घूमता। इस घूमने में मुझे केवल पहरेदारों व कुत्तों से ही भेंट होती। अक्सर मैं कहीं बड़ी देर तक बैठकर इधर-उधर की शान्त वातावरण वाली आवाजों को सुनता और संगीत का मजा लेता परन्तु जब कभी पहरेदार आ जाते तो पूछते, यहां क्या कर रहा है?'

'गाना सुन रहा हूँ।'

मालिक के घर से भाग कर अक्सर रात में मैं अँधेरे में मँडराता रहता। मुझे दिन को शांत और रात को प्रकाशमान रहने वाले कुछ घरों ने अपनी ओर आकर्षित किया। अक्सर खिड़कियाँ बन्द रहतीं। रोशनदान से बहुत मस्ती की आवाजें आतीं। मुझे लगता कि मैं सपना देख रहा होऊँ। अतः मैं प्रति शनिवार की रात को यहाँ नियम पूर्वक आने लगा। जाड़ों का मौसम होने के कारण सन्नाटा अधिक होता और उस अँधेरी गली की ओर मुझे ऐसा कोई परिचित भी न मिलता जो कि मालिक से शिकायत करता कि मैं गिरजा के अलावा कहीं और भी गया था। मुझे नीचे के हिस्सों में रहने वाली वेश्याओं व शराबियों को देखकर कोई कष्ट न होता था और जब वे खिड़कियाँ बन्द न रहतीं या परदे खिंचे न रहते तो मैं उन्हें

खूब देखता था। उनकी खिड़कियों पर जो चित्र चपके थे वे भी बहुत ही अच्छे थे। कुछ लोग प्रार्थना करते हुए, कुछ ताश खेलते हुए, कुछ प्यार से चुम्बन लेते हुए कुछ झगड़ते हुए। यह सभी दृश्य मुझे बिना किसी खर्च के देखने को मिलते। एक बार खिड़की की राह मैंने देखा कि एक मेज पर दो युवतियाँ और उनके सामने एक युवक बैठे पढ़ रहे थे। दूसरी वाली युवती पहली की कुर्सी की बाँह पर बैठी थी। अचानक वह बड़ी वाली स्त्री जिसके बाल बहुत सुन्दर थे सिसक कर रो पड़ी। युवक ने किताब बन्द कर दी, दूसरी वाली युवती उठी और बाहर भागी। युवक आकर उस बड़ी स्त्री के सम्मुख घुटने के बल बैठा और उसके हाथों को खींच कर उन्हें चूमने लगा। एक दूसरी खिड़की से भी मैंने देखा कि एक स्त्री एक वृद्ध के सन्मुख प्रणय प्रदर्शन कर रही है।

इस प्रकार के अनेक चित्रों का मुझ पर काफी गहरा प्रभाव पड़ा। और उन्हें देखता हुआ मैं काफी रात गुजार देता। कि एक दिन घर आते ही दोनों स्त्रियों ने प्रश्न किया, 'आखिर तू किस गिरजा में जाता है कि इतनी देरी लग जाती है ?'

वे दोनों ही प्रत्येक गिरजा व प्रत्येक पादरी को जानती थीं अतः मेरा कोई भी बहाना, अवश्य ही पकड़ा जाएगा यह भी मैं जानता था। क्योंकि वे दोनों ही सदा ही झगड़े में भगवान को साक्षी बनाती थीं।

एक रविवार को बुढ़िया ने मांस पकाने वाले बर्तन में खीर पकाया जो गिरजा जाने को थी। खीर खराब हो गई तो पतोहू ने कहा, 'तूने मांस के बरतन में खीर पका कर खुदा के साथ धोखा किया है। खुदा तुझे इसकी भरपूर सजा देगा।'

यह सब होते हुए भी मैं उस अपने आकर्षण के केन्द्र से दूर ही था फिर भी एक दिन जब मुझे साथ [illegible] और

मैं उस खेल में शामिल हुआ और काफी रात गए वापस आया। जुए का यह खेल मुझे अच्छा ही लगा और मैं उसका आदी होने लगा। और धीरे धीरे मैं जुए की बारीकियों से भी परिचित हो गया।

उस दिन पड़ोसी पादरी के सामने मुझे आत्मशुद्धि के लिए अपने पापों को स्वीकार करना था। मैं जानता था कि मैंने पादरी की खिड़कियों में ढेले फेंके हैं और उसके बच्चों को पीटा है अतः वह इससे अपरिचित भी नहीं है। परन्तु पादरी ने हँस कर कहा।

'अरे, यह तो मेरा पड़ोसी है। बेटे, झुक कर बता दो कि तूने क्या पाप किए हैं?'

मेरे सिर पर उसने मखमल का एक टुकड़ा रख दिया। धूप बत्तियों की सुगंध मेरे नाकों में घुस रही थी, मैं बोलने में अपने को असमर्थ पा रहा था। उसने पूछा।

'तुम अपने बुजुर्गों का कहा मानते हो?'

'नहीं।'

'तो कहो कि मैंने पाप किया है।'

परन्तु मैं कह बैठा। 'चोरी की है!'

'कहाँ, कैसे?' पादरी ने पूछा।

'गिरजा में...।'

'तो यह तो बहुत बुरा था, पाप था मेरे बेटे!'

'मैं जानता हूँ।'

'तो कहो, मैंने पाप किया है! और चोरी क्यों की, कुछ खाने के लिए?'

'हाँ, लेकिन दूसरी बार इसलिए कि रुपये मैं जुए में हार गया था।'

पादरी ने फिर कई सवाल पूछे और अचानक फुसफुसाहट के बाद पूछा, 'क्या तुम कुछ जब्त किताबें भी पढ़ते हो ?'

सवाल मेरे समझ में पूरी तरह न आया इसलिए मैंने पूछा 'जब्त किताबें ?'

'हाँ, जब्त किताबें ! पढ़ी हैं तुमने ?'

'नहीं, एक भी नहीं ।'

'तो उठो तुम्हारे पाप खत्म हो गए !'

मैं उठा । उसकी शान्त दृष्टि ने जाने क्यों मुझे परेशान कर दिया कि मैं अपने आप कह उठा, 'मैंने आपके घर पर ढेले फेंके हैं ।'

'बुरी बात थी, पर अब तुम भाग जाओ ।'

'तुम्हारे कुत्ते को ढेला मारा है ।'

पादरी ने ध्यान नहीं दिया । मैं चला तो आया परन्तु जब्त किताबों की बात दिमाग में बुरी तरह चक्कर काट रही थी ।

दूसरे दिन मुझे पन्द्रह रुपये मिले । वह मुझे गिरजाघर पहुँचाने थे । रास्ते में मुझे एक जगह खेल जमा दिख गया । मैंने पूछा कि मैं भी शामिल हो सकता हूँ । 'एक रुपये की बाजी !' मुर्गे की शक्ल के एक आदमी ने कहा ।

जोश में मैंने तीन रुपये लगा दिए और दूसरे ही क्षण में ६ रुपये जीता । उस व्यक्ति ने कहा, 'देखो यह जीतकर भाग न जाए !'

मुझे यह बुरा लगा और क्रोध में मैंने नव रुपये की बाजी लगादी । यह नवों रुपये वह जीत गया ।

मैंने उत्तर में तीन रुपये लगाए । इस बार वह हारा । इसके बाद लगातार तीन बाजियाँ मैं हारा । अभाग्य की बात उसी समय गिरजा की घण्टियाँ बजीं और खेल खत्म हो

गया। उस व्यक्ति ने मेरे बाल पकड़ कर झकझोर दिया और पूछा, 'तेरी शादी हो चुकी है ?'

उत्तर न देकर मैं उससे छूट कर भाग गया। तभी बहुत अच्छे कपड़े पहने एक लड़का दिखा। मैंने पूछा, 'तुम गिरजा में थे, जब प्रार्थना हुई।'

'मान लो था, पर तुम्हें क्या ?'

'तो बता दो कि क्या क्या हुआ ?'

'गिरजा की बातें पूछता है ? मैं कुछ न बताऊँगा।'

मैं घबड़ाहट में घर पहुंचा। बुढ़िया ने पूछा, 'किरानी को क्या दिया ?'

'पाँच रुपये !' और उस दिन जान बची।

बसन्त आया। प्रत्येक नए बसन्त में नए कपड़े पहनने का जी चाहता था। नए कपड़े तो न थे अतः पुराने कोट को साफ किया।

उस दिन मैं रसोई घर में काम कर रहा था कि मालकिन कहीं से चीखी, 'दौड़ कर दरवाजे खोल !'

घबड़ा कर खोला तो एक युवक अपने हाथों में मोम-बत्तियाँ लिए खड़ा था। पूछा, 'तुम सभी अभी सो रहे हो ?'

ये सभी गिरजा के आदमी थे। उनके पीछे दो व्यक्ति और थे। एक सुन्दर लड़की थी। नानी ने बताया था वह कुमारी ईसा की भेजी होती है। सबों ने उसे चूमकर आदर प्रगट किया। मुझे वह इतनी अच्छी लगी कि मैंने यह सोचे बिना ही कि बड़ों ने किस प्रकार चूमा है मैंने उसके गालों व होठों पर चुम्बन अंकित कर दिये। फौरन ही मुझ पर सबों के तमाचे जाच गए।

'इसके लिए पादरी से पूछना होगा।' मालिक ने कहा ?

'सुअर ! तूने किससे सीखा कि ओंठ चूमे जाते हैं ?'

काफी दिनों तक सहमा सा मैं सजा की प्रतीक्षा कर रहा था। मैंने गन्दे हाथों से उसे छूकर चूम लिया था। मुझे सजा जरूर मिलेगी। परन्तु शायद उस देवी ने मुझे क्षमा कर दिया होगा क्योंकि पाप का उद्देश्य पाप नहीं था। या तो वह यह जान गई हो कि उसकी सजा के पूर्व ही मुझे घर में काफी सजा मिल गई थी।

एक दिन मैंने बुढ़िया से कहा, 'लगता है कि वह देवी मेरी सजा भूल गई है।'

'तू रह तो जा!' बुढ़िया ने क्रुद्ध होकर कहा।

'तू भूत है; बदमाश! तू क्या जादूगर है या क्या होगा, मुझे तो तेरे हर काम में आश्चर्य होता है!' मालिक ने कहा।

पाँच

उसी वसन्त में मैं भाग गया। एक सुबह, रोटी के लिए मैं नानबाई की दूकान पर गया तो जब बाहर था तभी उसने अपनी पत्नी को गाली दी और कोई भारी भरकम चीज से उसके सिर को इस तरह फोड़ डाला कि वह घर से बाहर भागी और गली तक आते आते ही उसके प्राणान्त हो गए। भीड़ इकट्ठी हो गई और एक खाट पर लाद कर उसे अस्पताल ले जाया गया। उसी के पीछे पीछे मैं भी चला। अन्त में मैंने अपने को वोल्गा के किनारे पाया और मेरे हाथ में बीस कोपेक थे।

बगल में बहती वोल्गा और वसन्त की प्यारी धूप देखकर मैं इस प्रकार मोहित हो गया कि फौरन ही निश्चय किया कि मुझे वापस नहीं लौटना है। न तो नानी के पास ही कुनाविन जाना है। मैं उसके वचन पूरे न कर सका था उसका खेद था साथ ही नाना की झिड़कियों का भी डर था।

काफी दिनों तक किनारे पर घूमता ही रहा। खाना और रात का सोना खैरात बाँटने वालों पर चलता। एक दिन एक ने कहा, 'इस प्रकार यहाँ मंडराने से काम नहीं चलेगा, अपने काम

खुद करो। मैंने सुना है कि एक स्टीमर में एक रसोइए की दरकार है। जाकर पता लगाओ।'

मैंने प्रयत्न भी किया। मुझे एक बहुत लम्बे, दाढ़ी वाले व्यक्ति के सामने ले जाया गया जो चश्मा लगाए था। और अपनी टिमटिमाती आँखों से मुझे घूर रहा था, 'महीने में दो रूबल! बोलो पासपोर्ट कहाँ है।'

मेरे पास कुछ न था। उसने फिर कहा, 'अपनी माँ को बुला ला।'

मैं भागकर नानी के पास गया। उसे मेरे काम की बात अच्छी लगी। उसने नाना को सरकारी मजदूरों के दफ्तर में भेजकर पासपोर्ट मंगाया और मुझे नाव तक पहुंचा आई।

'आगए, अच्छा। आ मेरे साथ।' जहाज वाले ने कहा।

वह मुझे रसोई घर में ले गया जहाँ एक मनुष्य राक्षसों की तरह ऊँचा बड़ा, सफेद रसोइयों वाला कपड़ा पहने मेजपर बैठा लगातार चाय सुरकता जा रहा था। उसके सामने करके उसने कहा, 'रसोई घर के लिए यह छोरा!'

चाय पीना बन्द करके उसने पूछा, 'तू कौन है?'

मैंने देखा कि सफेद कपड़ों के बावजूद भी वह काफी गंदा लगता था। उसके कानों के बाल मोटे और बड़े बड़े थे कि लगता था जैसे ऊन हो। मैंने कहा, 'मैं भूखा हूं।'

मेरी बात सुनकर पहले तो वह गंभीर हुआ फिर उसकी मूँछें उठीं और वह हँस पड़ा। उसके घोड़े जैसे दाँत दिखे और लगा कि वह माँ की तरह ही कोई स्नेहपूर्ण व्यक्ति है। उसने फौरन ही मांसाहारी खाने की एक तश्तरी बढ़ाकर कहा, 'खूब पेट भर के खा लो। तुम्हारे माँ बाप हैं? क्या तुम

चोर भी हो ? घबड़ाओ नहीं। यह जगह तो चोरों से भरी है ; तुम सब जल्दी ही सीख जाओगे।'

उसके ओठों के किनारे पर सिगार लगी थी। जब मैं खाकर चा भी पी चुका तो उसने एक रूबल देकर कहा, 'जाकर अपने लिए कपड़े खरीद ले, या रह जा, मैं भी चल रहा हूँ।'

जहाज पर मैं जब पहली बार यात्रा पर चला तो मुझे अपना बचपन याद आ गया जब मैं अस्त्राखान से निजनी गया था। मेरे सामने मां व नानी के चेहरे नाच गए। अब की परिस्थिति में मुझे बड़ा मजा आया और इस नव जीवन के प्रति मुझे आकर्षण भी प्राप्त हुआ।

वोल्गा की यह रातें मुझे इतनी प्यारी लगतीं कि कभी कभी आत्मविभोर होकर मैं आंसू बहाने लगता। उस जहाज पर भी लोग थे सभी विचित्र थे। युवा और वृद्ध, पुरुष वा स्त्रियाँ, सभी एक दूसरे से मिलते जुलते। हमारी स्टीमर जरा धीमी चलती। दिन भर प्यालों तश्तरियों, छुरी कांटों का ढेर लगता जाता और मैं उनकी सफाई करता। सुबह से आधी रात तक मैं काम में व्यस्त रहता। आधी रात के बाद थोड़ी छुट्टी मिलती जब यात्री खाना न खाते और चा या वोद्का पीते। स्माउरी हमारा सरदार था वह टेबिल पर प्याले रख कर चा पीता और उसके सहयोगी, जैक, मैक्सम और सरजो भी हमें अच्छे लगते। जैक के चेहरे पर चेचक के दाग थे। जैक गंदी-गंदी कहानियां सुना कर हँसता और अपने भद्दे तथा बड़े बड़े दांतों का प्रदर्शन करता।

जैक की बातों का केवल एक विषय था—औरत। और औरतों के प्रति उसका दृष्टिकोण भी बहुत भावुक था। अगर कभी कोई सुन्दरी स्त्री जहाज पर आ जाती तो वह उसका पूरी तरह गुलाम बन जाता। अक्सर वह कहता, 'देख, ये स्त्रियाँ

को फसाया जाता है।' अक्सर मुझे स्माउरी अपने केबिन में ले जाकर एक किताब पढ़ने को देता, 'लेकर पढ़ो।'

पढ़ने में मेरा जी न लगता परन्तु मेरे अभाग्य से उसके पास लोहे की सन्दूक भर कर किताबें थीं। वह कहता, 'यदि एक बार पढ़कर समझ में न आवे तो दुबारा पढ़ो, जरूरत पड़े तो सात बार पढ़ो। और अगर फिर भी न समझो तो एक दर्जन बार पढ़ो। स्माउरी बहुत स्पष्ट वक्ता था। उसके शब्द लोगों को ढेले की तरह लगते थे। मेरे प्रति वह सदा ही बहुत दयालु रहा है। फिर भी उसके व्यवहार कभी कभी मुझे परेशान कर देते। कभी कभी तो लगता वह भी पागल है जैसे नानी की बहिन। कभी कभी आँखें बन्द कर के वह लेट रहता और कहता, 'पढ़ना बन्द कर दे!' उसका पेट धौंकनी की तरह चलता। अपनी बालों से भरी छाती पर उँगलियां रख कर सोता जैसे मुर्दा हो। फिर चीख उठता, 'देख, अब तू होशियार हो रहा है।'

रुक रुक कर वह अपने फौजी जीवन की कहानियाँ सुना रहा था। स्टीमर के चलने पर अपने ढंग का एक शोर होता था परन्तु उसका आदी हो जाने के कारण लगता जैसे हम लोग सन्नाटे में ही चल रहे हों। स्माउरी से सभी डरते। वह किसी को भी चोर और अपराधी कह दिया करता था। इसी कारण अक्सर उससे और दूसरे लोगों से झगड़े भी हो जाते। झगड़े में कुछ लोग स्माउरी के पक्ष में हो जाते कुछ उसके विपक्षी। यहाँ तक कि कप्तान की पत्नी जिसका चेहरा पुरुषों की तरह था और जो लड़कों की तरह बाल रखती थी सो भी उसी का पक्ष लेती थी। उसमें एक खूबी और थी कि वह बहुत शराब पीकर भी नशे में नहीं आता था। सुबह आँख खोलते ही एक बोतल वोद्का पीता था। बाद में तो सारा दिन शराब पीता।

अक्सर रात को वह खुले में बैठ कर किसी एक ही ओर घंटों ताकता रह जाता। इस समय वह बहुत डरावना मालूम होता। अगर कभी मैं उसके पास चला भी जाता तो वह पूछता, 'क्या चाहते हो ?'

'कुछ नहीं।'

वह चुप हो जाता तो मैं फिर पूछता, 'आखिर लोग तुमसे इतना क्यों डरते हैं जब कि तुम अच्छे ही आदमी हो।'

मेरी आशा के विपरीत वह नाराज न हुआ, 'मैं केवल तुम्हारे लिए ही अच्छा हूँ।......लेकिन तू ठीक कहता है। मैं सभी के लिए भला तो हूं पर इसका प्रदर्शन नहीं करता। मैं बेवकूफ जो नहीं हूं। परन्तु पढ़ाई जारी रख। किताबों में तुझे आवश्यकता की सभी चीजें मिल जाएँगी। ले कुछ पिएगा !'

'मैं नहीं पीता !'

'ठीक, ठीक है, यह उचित ही है कि तू इससे दूर रहता है। पीना तो एक अभिशाप है। अगर मेरे पास खूब रुपया होता तो मैं तुझे खूब पढ़ाता क्योंकि बिना पढ़ा लिखा आदमी बैल होता है।'

कप्तान की पत्नी ने उसे गोगोल की कहानियों की एक किताब दी थी जिसे मैंने बड़ी दिलचस्पी से पढ़ी। परन्तु स्माउरी ने उस पर अपना वक्तव्य दिया, 'बेकार, ऊटपटांग ! मैं सब पढ़ चुका हूँ। इससे भी अच्छी बहुत सी किताबें हैं।'

अजीब बात थी। मेरी उसकी पसन्द में अन्तर था। जो पढ़कर उसकी आँखें गीली हो जातीं उन्हें पढ़ कर मैं ऊबता।

एक दिन मैंने उसे बताया कि कुछ ऐसी भी किताबें हैं जो गन्दी हैं और जिन्हें रात को छिपा कर पढ़ा जाता है। सुनकर उसकी आँखें फैल गईं और उसने कहा, 'क्या गप्पें हाँकता है ?'

'सपने नहीं, मुझे खुद पादरी ने इसके बारे में कहा था। और मैंने लोगों को वे किताबें पढ़ते देखा है जब वे चीख पड़ते थे।'

'कौन चीखता था ?'

'औरतें जो सुनती थीं, और दूसरे पुरुष भी कमरे से बाहर भाग जाते थे।'

'सपना देखा है क्या ?' स्माउरी ने पूछा, 'लेकिन कुछ तो ऐसी चीजें हैं ही जिन्हें मैंने नहीं देखा है।'

फिर पूरे घन्टे तक वह बड़े उत्साह से सुनता। धीरे धीरे पुस्तकें पढ़ने की मेरी आदत पड़ गई और मैं कोई भी पुस्तक उठा कर पढ़ सकता था। कभी कभी स्माउरी भी मुझे बुला लेता और कहता 'पेश्कोव, पढ़ो।'

'मेरे पास थोड़ी तश्तरियां साफ करने को हैं अभी।'

'कहो कि वह मैक्स कर ले।'

फलस्वरूप मैक्स को मेरा काम करना पड़ता और गुस्से में मैक्स काम करते करते गिलास तोड़ डालता। इस पर कभी कभी अफसर कहते।

'तुझे मैं नौकरी से भगा दूंगा।'

एक बार जान बूझ कर मैक्स ने कुछ गिलास तोड़ दिए और पानी बहा दिया। गिलास भी उनके साथ बह गए। अफसर ने कहा, 'यह तेरी गलती है तुझे इसके दाम देने पड़ेंगे।'

वे अब जान बूझ कर तश्तरियां गंदी कर के मेरे काम को बढ़ाते रहे। मुझे लगता था जैसे इस काम का अन्त भी बुरा ही होने वाला है।

एक रात को वहां दो स्त्रियाँ बैठी थीं। एक बूढ़ी, लाल चेहरे वाली, ब्लाउस पहने थी। दूसरी छोकड़ी थी, गुलाबी जैकेट और पीले कपड़े पहने थी। दोनों ही हँस रही थीं। दोनों

ही दूसरे दर्जे के यात्री थीं। उनका दर्जा जैक और सरजे के केबिन के सामने ही था। जब बूढ़ी स्त्री चली गई तो सरजे उसकी जगह जा बैठा।

उस रात को जब मैं काम खतम कर के एक बड़ी मेज पर बिछौना ठीक कर रहा था कि सोता तभी सरजे आया और मुझे बाहों में कस कर कहा, 'आ जल्दी आ! तेरे लिए मौज का प्रबन्ध किया है।

वह पिए था। जब मैंने अपने को छुड़ाना चाहा तो उसने डांट कर कहा, 'अरे चल भी!'

मैक्स भीतर आया, वह भी पिए था। दोनों ही मुझे डेक पर खींच ले गए। परन्तु डेक पर स्माउरी खड़ा था और दरवाजे पर जैक था। वह लड़की अपने हाथों से पीठ सहला कर नशे की अवस्था में ही चीख रही थी, 'मुझे जाने दो।'

स्माउरी ने मुझे सरजे और मैक्स से अलग करके उनके बालों को पकड़ा और सिर लड़ा कर छोड़ दिया, दोनों दूर दूर जाकर गिरे।

'एशियाटिक!' वह जैक पर चीखा और जैक ने दरवाजा बन्द कर लिया। फिर मुझे डाँटा, 'भाग जा यहाँ से।'

मैं भाग आया। उस रात को बादल थे इससे अन्धेरा हो रहा था। थोड़ी देर में स्माउरी आकर मेरे बगल में बैठ गया। तो वे जबरदस्ती तुझे उसके पास ले जा रहे थे? ओफ, जानवर हैं सब! मैंने सुन लिया था।'

'तुमने उस लड़की को उनके पंजे से छुड़ा लिया न!'

'अरे लड़की थी वो!' उसने सिर हिला कर कहा। 'अरे इस स्टीमर में सब कुछ अजीब है। पीने को शराब, खाने को खराब! तू गाँव में रहा है।?'

'नहीं।'

उसने अपनी सिगरेट दूर फेंक दी फिर कहा 'तू इन सुअरों के बीच आ पड़ा है। मुझे तेरे लिये बड़ी चिन्ता है। उनके लिये भी! मैं नहीं जानता कि दूसरी बार मैं क्या करूँगा। इन छोकड़ों को क्या हो गया है।'

तभी स्टीमर की ऊपर वाली रोशनी जल गई अन्य रोशनी भी जली और हम जान गये कि किनारा पासही है। उसने कहा,

'यहाँ एक नदी है उसका नाम है पियनाया। मैं जरा किनारे पर जा रहा हूं। किनारे पर सामान बेचने वाली लड़कियाँ खड़ी थीं। उनसे सामान खरीदते या मोल भाव करते समय मल्लाह लोग उनके छाती और पावों में चिकोटी काट लेते और वे चीखतीं, थूकतीं और पेटियों से मारने दौड़तीं। यह दृश्य मैं पहले भी सैंकड़ो बार देख चुका था जहाँ भी स्टीमर रुकी थी।

मुझे लगता जैसे मैं उस स्टीमर रहते रहते बूढ़ा हो गया हूं या बरसों से उसी पर रह रहा हूँ और यह भविष्य वाणी कर सकता हूँ कि अगले सप्ताह क्या होगा।

दिन आगया था। किनारे पर बालुए मैदान दिखाई पड़ रहे थे। पहाड़ों पर से स्त्रियों के गाने व हँसने की आवाज भी आ रही थी।

मुझे जाने क्या हुआ कि मुझे रोना आने लगा। आँखें भरने लगी और मेरा मन उन पहाड़ की स्त्रियों के साथ ही खोगया। ऊब कर मैं डक की सफाई करने वाले क्लिएखिन के पास चला गया।

'मेरा असली नाम क्लिएखिन नहीं है। मेरे माँ है और एक बहन है।' डक साफ कर चुकने पर उसने धीरे से कहा, 'देखो औरतों को लेकर कितनी परेशानी होती है! मुझे औरतें अच्छी भी नहीं लगतीं। यदि मैं औरत हुआ होता तो अवश्य

ही किसी पुल पर से कूद कर नदी में डूब मरा होता । यह समझ लो कि जब तक औरतों के साथ रहो समझ लो कि आग के साथ हो । वे बेवकूफ भी नहीं होतीं । वे बड़ी समझदार हैं, बल्कि जादू जानती हैं ।'

तभी कप्तान की स्त्री उधर से गुजरी । अपने स्कर्ट को ऊपर उठाये जैसे पानी में चल रही हो वह काफी लम्बी और मोटे गोश्त वाली स्त्री थी । मेरा मन हुआ कि मैं उसके पीछे जाऊँ और प्रार्थना करूँ, 'मुझसे बातें करो । मुझसे बातें करो ।'

इसी समय स्टीमर ने किनारा छोड़ दिया । किलएखिन ने कहा, 'चलो जान बची ।'

छः

सारापुलिया में मैक्स को जहाज पर से हटा दिया गया। वह चुपचाप चला गया। किसी से विदा भी न ली। उसके पीछे एक स्त्री यात्री और उसके आगे एक छोकड़ी थी जिसकी आंखें सूजी थीं। बड़ी देर तक सरजे कप्तान के केबिन के दरवाजे पर सिर पटकता रहा, दरवाजे को चूम-चूम चिल्ला रहा था, 'माफ करदो ! यह तो मैक्स की बदमाशी थी। मेरी नहीं !'

मल्लाह, यात्री सभी जानते थे कि गलती उसी की थी परन्तु उन्होंने ने भी कप्तान से सिफारिश ही की। परन्तु कप्तान ने उसे दुतकार दिया।

मैक्स की जगह विल्का का एक सिपाही रख लिया गया। वह भी अजीब था। कुछ सिंगल मारने को उसे भेजा गया। जाल को भर कर नाकी को छोड़ दिया। यात्रियों ने दौड़ कर बाकी को पकड़ना चाहा। तो मुर्गियों सहित पानी में जा रहे। इस पर वह सिपाही बैठ कर रोने लगा।

'अबे क्या बात है! सिपाही होकर रोता है।' [illegible] ने डांटा।

परन्तु वह रो-रोकर आंसुओं को कमीज की बांह से सुखाता रहा। यात्री भी उसे देख कर मजा ले रहे थे। इस पर वह बिगड़ उठा, 'क्या देख रहे हो? तुम सबों को टुकड़े-टुकड़े कर डालूँगा। इस पर लोगों की दिलचस्पी और बढ़ी और वे उसे देखते रहे। वह चूहों की तरह भागता रहा, लोग हँसते रहे।

उसके पीछे बैठकर स्माउरी यह दुःख कर रहा था कि किस प्रकार सिपाही को सम्हाला जाय। मैंने सिपाही से बताया कि लोग उस पर क्यों हँसते हैं। उसने गुस्से में आकर दोनों हाथ से मेरे बाल पकड़ लिए। फिर हम दोनों ही घूँसे बाजी करने लगे। यात्रियों ने हमें घेर लिया। तभी उन्हें हटाकर स्माउरी आया, हमें अलग किया और उसके कान खींचे। इसे देख कर सभी यात्री और हँसने लगे। स्माउरी को संभवतः यह बुरा लगा। उसने सिपाही को छोड़ दिया और भालू की तरह घूम कर यात्रियों पर चीख पड़ा, 'अपने केबिन में जाओ। भागो!'

तभी सिपाही फिर मुझसे उलझ गया। इस बार स्माउरी ने एक हाथ से घसीट कर उसे पानी के पम्प के नीचे खड़ा कर दिया। यह देख कर सभी मल्लाह दौड़ आए, यात्री भी जुट गए। सबों को बड़ा मजा आ रहा था। सिपाही आग के सामने बैठ कर जूते सुखा रहा था तथा मोजे उतार रहा था। उसके बालों से पानी भी चू रहा था। उसने कहा, 'और नाव नहीं, मैं उस छोकरे को मार डालूँगा!'

स्माउरी ने यात्रियों व मल्लाहों को हटाया। फिर सिपाही से कहा, 'तेरे साथ क्या किया जाय?'

सिपाही ने उत्तर तो न दिया परन्तु सक्रोध अपनी आंखों से घूरता रहा।

'चुप रह, शैतान के बच्चे!' स्माउरी ने डांटा।

'तुम मुझे कुछ नहीं कह सकते।' सिपाही ने कहा। इससे स्माउरी बहुत नाराज हुआ। उसने घृणा से थूक दिया और मुझे लेकर चला गया। मैं उसके साथ चला पर घूम घूम कर सिपाही को देख लेता था। 'वह जंगली है!' स्माउरी ने कहा।

तभी सरजे भाग कर आया और बोला, 'वह आत्महत्या करने जा रहा है!'

कहाँ है वह?' दौड़ते हुए स्माउरी ने कहा।

सिपाही कैबिन के सामने ही छुरी तेज कर रहा था। इसी छुरी से चिंगने मारे जाते थे। उसे देख कर सभी को हँसी आ गई। किसी को भी यह विश्वास न था कि वह आत्महत्या करेगा। हमें भी विश्वास न था। परन्तु स्माउरी गम्भीर था। उसने यात्रियों को गालियाँ देकर भगा दिया! अजीब बात थी। सभी बेवकूफों की तरह सुबह से हँस रहे थे। स्माउरी ने जाकर सिपाही का हाथ पकड़ लिया और कहा, 'लाओ वह छुरी हमें दो।'

'तुम्हें क्या पड़ी है?' कहते हुए उसने छुरी दे दी।

स्माउरी ने छुरी मुझे दे दी और सिपाही को कैबिन में ले जाकर कहा, 'लेटो और सो रहो। तुम्हें किस चीज ने यों परेशान कर रखा है?'

सिपाही ने उत्तर न दिया।

'वह तुम्हारे लिए खाना लावेगा। और वोदका भी लाएगा। वोदका पीते हो न!'

हाँ, कभी-कभी।'

'लेकिन देखना उसे छूना मत। उसके कारण तेरा मजाक नहीं बना।'

'वे मुझे क्यों सताते हैं?' सिपाही ने पूछा।

स्माउरी ने कहा, 'यह मैं क्या जानूँ?'

मेरे साथ रसोईं घर में आकर उसने कहा, 'देखो उसकी फिकर करना।'

मैं जब रोटी, गोश्त और वोदका लेकर पास गया तो देखा कि अब भी वह औरतों की तरह रो रहा है। मैंने कहा, 'खाना खा लो।'

'किवाड़ें बन्द कर दो!'

'अंधेरा हो जाएगा।'

'बंद कर दो नहीं तो वे झाकेंगे।'

मैं चला आया। मुझे उस पर बड़ी दया आई। एक यात्री ने एक बार कहा था, 'सब पर दया करना, किसी का जीवन सुखी नहीं है।'

स्माउरी ने पूछा, 'खाना दे आए। वह अब कैसा है?'

'मुझे उस पर दया आती है।'

'क्यों, अब क्या हुआ? अपनी दया यों बेकार मत जाने दे। ले एक सिगरेट। यह जगह तेरे लिए नहीं है।'

मुझे यात्रियों का व्यवहार अच्छा न लगा। किसी को सता कर वे कैसे आनन्द पाते हैं। वे मुझे अच्छे न लगे।

जहाज में नए पुराने यात्रियों के आने-जाने में कोई नवीनता न थी। मुझे दुःख था कि मैक्स जो सीधा और अच्छे स्वभाव का था वह निकाला गया। और बदमाश सरजे अब तक था।

एक बार आधी रात बीत चुकी थी जब इंजन में कुछ गड़बड़ी आ गई। चिमनी से भाप निकल कर चारों ओर छा गई। मेरी खाट रसोई घर में लगी थी। ज्यों ही धड़ाका हुआ मैं जाग गया। चारों ओर सन्नाटा था। बस चिमनी तर से आवाज आ रही थी। फिर अचानक चारों ओर शोर हुआ। बाल खोले स्त्रियाँ, और मजे से पुरुष सभी इधर-उधर शोर करके भागने

और एक दूसरे से टकराते। संदूक व बिस्तरों से टकरा कर गिरते और खुदा को दुहाई देते। इस प्रकार की सनसनी मैंने पहली बार अनुभव की। यद्यपि मैं जानता था कि यात्रियों ने बेकार ही चीखना चिल्लाना शुरू कर दिया है। जहाज की रफ्तार भी पहले जैसी ही थी। चाँदनी के कारण उजाला भी काफी था परन्तु पागलों की तरह यात्री दौड़ दौड़ कर एक दूसरे से टकरा रहे थे। घबड़ाहट में एक पानी में गिर पड़ा और उसे बचाने में दो और गए। एक मोटा यात्री जिसने घबड़ाहट में बिना कमीज पहने ही पतलून पहन ली थी अपनी छाती पीट रहा था।

मल्लाह यात्रियों को पकड़-पकड़कर खींच रहे थे। स्माउरी भी डाँट रहा था, 'तुम्हें शर्म आनी चाहिए। यह सब क्यों हो रहा है? देखो वहाँ किनारा दिख रहा है। जो कूदे थे उन्हें भी जाल डाल कर पकड़ लिया गया है। देखो दो नावें दिख रही हैं।' कहते हुए उसने तीसरे दर्जे के यात्रियों के सिर पर घूँसे मारने लगा ताकि वे बैठे रहें। यह सब हो रहा था तभी एक स्त्री ने स्माउरी के चेहरे पर चम्मच से मार कर कहा, 'यह क्या है?'

तभी एक आदमी ने अपनी मूँछें उमेठ कर स्त्री को पकड़ लिया और कहा, 'यह क्या कर रही है?'

स्माउरी जो स्त्री के व्यवहार के कारण घबड़ा गया था, मुझसे बोला, 'क्या बात है? वह मुझपर क्यों टूट पड़ी? मैं तो उसे जानता भी नहीं, अजीब बात है।'

गर्मी समाप्त होने के पहले ऐसे दो सनसनीदार दृश्य देखने को मिले। यह किसी मुसीबत के कारण नहीं बल्कि झूठे डर के कारण। तीसरी बार दो चोर यात्रियों के बीच से पकड़े गये

जिसमें एक विदेशी कपड़े पहने था। उन्हें मल्लाहों ने अपने कब्जे में कर लिया तो सभी यात्री चीखने लगे।

'चोर को छिपाना ! यह साफ है कि मल्लाह खुद उनसे मिले हैं।

परन्तु आगे जहाँ भी जहाज रुका उन चोरों को अधिकारियों को सौंप दिया गया। मुझे आदमियों से—हर प्रकार के आदमियों से घृणा होती थी। मैंने चोरों के प्रति अपनी सहानुभूति स्माउरी से प्रदर्शित की। उसने सिगार के धुएँ से अपना मुँह ढाँप लिया, 'सभी आदमी एक से नहीं होते। कुछ अच्छे भी कुछ बुरे भी। तू यह सब मत सोच। किताबें पढ़ तुझे सब अपने आप पता लग जाएगा।

उसे खुश करने को मैंने एक किताब खरीद कर भेंट स्वरूप उसे दी। पाँच कोपेक की किताब—मल्लाह की कहानी जिसने पीटर को बचाया।

'यह कौन सी किताब है मूर्ख ! मैंने तुझे अच्छी किताबों के लिये पढ़ना सिखाया था—यह क्या बेवकूफी की पुस्तक मेरे लिए लाया है ? बता इस में जो लिखा है वह क्या सच है ?'

'मैं नहीं जानता !'

'लेकिन मैं जानता हूं।'

मैं चला आया। सोचा वह ठीक कहता है। मैं छिपा कर पूरी पुस्तक पढ़ गया। बाद में जाना कि सचमुच यह अच्छी किताब नहीं है। इससे मुझे बुरा तो लगा परन्तु स्माउरी के प्रति आदर का भाव जागा। एक दिन उसने मुझसे कहा, 'अब तू किनारा सीखेगा। यहाँ तेरे लिए स्थान नहीं है।'

मैं खुद इसे अपनी जगह नहीं समझता था। खास कर सरेज के व्यवहार से मैं बहुत चिन्तित था। एक बार मैंने उसे चा का सामान चुरा कर यात्रियों को देते देखा था। इस चोरी के लिए स्माउरी मुझे कई बार आगाह भी कर चुका था।

अचानक मेरा नाविक का जीवन समाप्त कर दिया गया। एक शाम को कजान से निजनी के रास्ते में मुझे कप्तान के पास पेश किया गया। उस कमरे में स्माउरी भी स्टूल पर बैठा था। कमरे का दरवाजा बन्द कर दिया गया तब स्माउरी ने पूछा। 'तूने सरजे को मेरा प्याला व तश्तरी दी है?'

'उसने मेरे सूने में लिया होगा!'

कप्तान ने कहा, 'देखो, यह जानता है, देखा नहीं।'

स्माउरी उठ खड़ा हुआ, पूछा, 'तूने कभी सरजे से पैसे लिए हैं?'

'नहीं।'

'कभी नहीं?'

'कभी नहीं।'

फिर कप्तान से उसने कहा, 'यह कभी झूठ नहीं बोलता।'

'मुझे खुद नजर रखनी चाहिये थी।' उसने कहा।

निजनी पहुंचकर मैं निकाल दिया गया। मुझे आठ रूबल मिले जो अब तक की मेरी सब से बड़ी कमाई थी। स्माउरी ने कहा, 'आजसे आँख खोल के रहना, समझे! मुँह खोलकर मत चलना!'

उसने मुझे बाहों में उठा लिया, चूमा और डेक के नीचे उतार दिया। मुझे उसके और अपने दोनों के लिए दुख था।

मेरे आँसू न थम सके जब किनारे पर अकेला खड़ा मैं उसे जहाज पर जाते देख रहा था।

—सात—

नाना और नानी फिर शहर में वापस आगए थे। मैं उनके पास गया परन्तु मेरे मन में इस बात का गहरा संताप था कि सभी मुझे चोर क्यों समझते हैं? नाना ने अपनी स्वाभाविक खीझ के स्वर में कहा, 'कुछ पैसे बचाए हैं?'

'मैंने जो भी बचाया है सभी मेरा अपना है।' खिड़की पर बैठ कर मैंने उत्तर दिया और सिगरेट की डिबिया निकाल कर एक सिगरेट जलाया।

'तो यह बात है, जहर का स्वाद ले रहा है?' कहते हुए वह मुझ पर टूट पड़ा। मैं भी भिड़ गया। वह फर्श पर आ रहा। फिर उसने धीमी आवाज में कहा, 'तूने अपने नाना को—माँ के बाप को गिरा दिया।'

बिना अपने कृत्य पर सोचे ही मैंने उत्तर दिया, 'इसके पूर्व तू भी मुझे अनेक बार गिरा चुका है।'

उठ कर वह मेरे पास बैठ गया और मेरे मुँह में लगी सिगरेट झटक कर खिड़की के बाहर फेंक दिया और कहा, 'अरे पागल! खुदा तुझसे उम्र भर इसका बदला लेगा! अरे मालकिन!' नानी को संबोधित करके बोला, 'इसने मुझे पटका है, पूछ ले।'

मुझसे बिना कुछ पूछे या कहे ही नानी ने झपट कर मेरे बाल नोंच कर मुझे तमाचे लगाए—'ले, ले, और ले।'

मुझे चोट तो न आई परन्तु नाना के कारण बहुत ग्लानि हुई। क्योंकि वह कुर्सी पर बैठकर अब हँस रहा था, 'ठीक, ठीक, बहुत ठीक।'

भाग कर मैं बाहर बरामदे में चला गया और एक कोने में लेट गया। थोड़ी देर बाद नानी ने आकर सांत्वना दी।—मैंने तुझे पीटा थोड़े ही था यह 'तेरे बूढ़े नाना को दिखाने के लिए था। और उसे कष्ट न दिया करना। अब तू छोटा बच्चा भी नहीं है। एलेक्सी समझ ले कि अब वही बच्चा है।'

उसकी बातों से मुझे सचमुच सांत्वना मिली और मैं उससे लिपट गया। नानी ने कहा, 'जा, नाना के पास जा। पर उसके सामने सिगरेट न पीना, अच्छा!'

मैं पुनः कमरे में गया परन्तु नाना को देखकर बड़ी कठिनाई से हँसी रोक सका क्योंकि मेरे पिटने से उनके चेहरे पर सचमुच बच्चों की तरह परम संतोष का भाव खेल रहा था। अपने पावों को बार बार समेटता और फैलाता हुआ वह बैठा था। बोला,

अरे डाकू! तू फिर आ गया। तू बिल्कुल अपने बाप की ही तरह है।'

मैं कुछ न बोला ताकि वह अपने स्मरण भर की गालियां दे ले। लेकिन चा पीते समय भी उसने अपना अप्रिय भाषण शुरू कर दिया, 'खुदा का डर बहुत आवश्यक है। केवल खुदा ही तो हमारा परम मित्र है। आदमी तो आदमी का शत्रु होता है। तू फिर [illegible] के पास चला जा और बसन्त आते ही [illegible] पर आना। जाड़ा उनके पास बिताना पर उन्हें यह पता न लगने देना कि बसन्त में तू भाग जाएगा।'

'उसे धोखा क्यों देने को कहते हैं ?' नानी ने पूछा।

'बिना धोखा दिये कोई जी नहीं सकता। किसी ऐसा का नाम ले सकती है जिसने जिन्दगी भर किसी को धोखा न दिया हो।'

रात को जब नाना प्रार्थना कर रहा था तब नानी और मैं खेतों में गये। दो खिड़कियों की वह झोपड़ी जिसमें नाना रहता था वह शहर के किनारे पर थी। कोनानी सड़क के पीछे, जहां उसका पहले एक मकान था। नानी ने हँसकर कहा, 'आखिर हम लोग फिर आ ही गए। इस बुड्ढे को कहीं शान्ति नहीं मिलती। परन्तु यहां मुझे अच्छा लगता है।

फिर बड़ी देर तक स्टीमर की बातें हुईं। मैं बहुत हिचक रहा था कि नानी को कैसे बताऊँ कि मैं क्यों निकाला गया। अन्त में मैंने बता दिया परन्तु उसे अधिक चिन्ता न हुई। उसने कहा, 'तू अभी भी काफी छोटा है। तूने अभी जीने की कला नहीं सीखी है।'

'यह बात तो सभी कहते हैं। जीने की कला नहीं सीखा। पर तूने कहाँ सीखा है ?'

मैंने भी कहाँ सीखा ! तेरा नाना ही कितना बुद्धिमान और तेज है पर वह भी यह कला नहीं जानता।'

उस रात निश्चय किया कि जीवन निर्वाह के लिये चिड़ियों का व्यापार शुरू करूँ। मैं पकड़ूँ और नानी बेचा करे। मैंने जाल खरीदा, पिंजरा बनाया। और सुबह से ही झाड़ियों में जा बैठता।

उस दिन नाना ने पुकारा, 'अरे तू कहाँ है ?' वह रास्ते के एक किनारे बैठा था। रुमाल पर खाने की चीजें बिखरी थीं।

जिसमें रोटी और सेब भी थे। और इनके बीच में वोद्का का एक गिलास भी था।

'मैंने एक गाना बनाया है।'

'हाँ सुनाना तो।'

मैंने सुनाया। शायद कोई कविता थी—इस प्रकार,

'जाड़े के आगमन की बहुत सी निशानियाँ दिखाई पड़ रही हैं। ओ, गर्मी की धूप! तुम्हें बिदाई का नमस्कार।'

वह बीच में ही बोल पड़ी, 'इसी तरह का एक गीत मुझे भी मालूम है परन्तु इससे अच्छा।' और उसने सुनाया,

'दूर, बहुत दूर, जंगल के पीछे गरमी की धूप अंधेरी रात में मिल गई है। मैं पीछे छूट गई। और सुबह मुझे वही रास्ता दिख गया जिसपर मैं मई में चल रही थी। सूखे खेत कितने बुरे दिखते हैं जहाँ मैंने अपनी जवानी खो दी। किसी ने जैसे मेरे कलेजे से मेरा हृदय निकाल कर बर्फ के नीचे गाड़ दिया है।'

गीत सुनकर मेरे अन्दर करुणा जाग गई। नानी ने कहा, 'देखा, कैसा गीत है। इसे एक युवा लड़की ने रचा था। मैं समझती हूं कि पहले उसका प्रेमी उसे प्यार करता रहा होगा फिर जाड़ों में वह किसी दूसरी लड़की से प्रेम करने लगा। उसे बड़ी व्यथा हुई और वह जी भरकर रोई। बिना अनुभव के इस प्रकार की बात नहीं जानी जा सकती। तुम्हीं देखो न यह कविता कितनी सजीव है।'

पहली बार उसने एक चिड़िया बेची थी। चालीस कोपेक पाकर वह चकित थी। बोली, 'तू क्या समझता है! पन्नों का लेख और यह आनन्द!'

'तूने तो बहुत सस्ते भाव में बेंच दिया।'

'सो कैसे?'

'बाजार के दिनों में तो उसे प्रति चिड़िया एक रूबल भी मिल जाते। उसने उस दिन भी कहा, 'दिन भर घर में झाड़ू लगाकर और कपड़े धोकर स्त्रियां चौथाई रूबल पाती हैं और तू केवल चिड़िया पकड़ता है। लेकिन यह अच्छा काम नहीं है, एलेक्सी।'

लेकिन मुझे तो चिड़ियाँ फंसाने में मजा आने लगा था। मैं कितना आजाद था! मेरे इस कार्य से चिड़ियों को छोड़कर और किसी को कोई कष्ट नहीं होता था। मैंने धीरे धीरे चिड़ीमारों के सभी साधन जुटा लिए और पुराने चिड़ीमारों से काफी अनुभव भी पाया। मैं वोल्गा के किनारे किनारे लम्बी पूँछ वाली सफेद चिड़िया के लिए दो दो मील जंगलों में चलता जाता! अक्सर मैं शाम होते ही चल पड़ता और रात भर चिड़ीमारी करता। मेरी तो बरसात में भी अपने काम की आदत पड़ गई थी। अक्सर जाड़ों की रात में भी जब मैं कंधे पर बोरे में पिंजरा लादे और हाथ में जाल व डंडा लिये किसी गांव से निकलता तो चौकीदार चीख पड़ते, 'अरे कौन है! इस रात को शैतान के सिवा कौन घर से बाहर निकल सकता है?'

मुझे चौकीदारों से काफी डर लगता और उनके लिये मैं अपनी जेब में सदा ही पांच कोपेक घूँस देने को डाले रहता था। फोकीनोई गांव का तो मेरा मित्र बन गया था—वह कहता, 'फिर आगये! तुम भी तो किसी चिड़िया से कम नहीं जो सदा ही भागते रहते हो।'

उसका नाम था निफ़ान्त। वह देखने में सन्यासी सा लगता। वह अपने कोट से वह सेब, मटर व शलजम निकाल

कर मुझे देता, 'लो यार, तेरे लिये यह उपहार है। खाओ और मस्त रहो।' फिर बातें करते-करते वह गांव की सरहद तक आता और बिदा देकर कहता, 'जा दोस्त, खुदा तेरे साथ है।'

मैं प्रातः के पूर्व ही जंगल में पहुंच जाता, जाल बिछा देता और अपना कोट बिछाकर दिन की इन्तजारी में सो जाता। फिर सूरज निकलता और चारों ओर उजाला फूट जाता। मुझे प्रातः का सूर्य बहुत अच्छा लगता। मुझे नाना द्वारा कई बार बताई गई एक कहानी याद आ जाती—माइकेल चेरनीगोवस्की और लेडी थियोड्रा की कहानी। जब चिड़िया गाती हुई आतीं और मेरे जाल में फँस जातीं तो मैं पिंजड़े में उन्हें बन्द करते समय तनिक दुखी होता। शायद उन्हें केवल देखने में मुझे अधिक सुख मिलता। लेकिन इधर एक शिकारी के मन की कचोट भी तो थी।

मेरा शिकार का काम दोपहर तक पूरा हो जाता। मैं जङ्गल की राह ही वापस लौटता। यदि सड़क से आता तो गांव के युवक व बच्चे हमें वहीं घेर कर देते और सब छीन भी लेते। इसका तो मुझे अनुभव भी हो चुका था।

मैं अंधेरा होते-होते घर आया, थका, भूखा। नाना ने भाषण दिया, "यह व्यापार बन्द कर दे। कोई जिन्दगी भर चिड़ियों की हत्या नहीं करता रहता। कोई और काम खोजो जहाँ तुम्हारी योग्यता निखर सके। आदमी को यों बिना काम ही जीवन बिता देने से जिन्दगी नहीं मिलती। जीवन तो फसल की तरह ही है कि एक फसल को किसी कारणों से [illegible] कि उससे [illegible] हो सके। तुम क्या समझते हो कि जिन्दगी

कोई खेल है ? नहीं, यह खेल नहीं है। ऐसा जिओ कि लोग जानें कि दुनिया के साथ जी रहे हो। और किसी पर निर्भर न रहो चाहे जो भी परिस्थिति हो।'

वह रात बड़ी देर तक यह सब कहता रहता। मैं जीवन के बारे में सोचता। मैंने जैसा देखा है। कोसाक और फौजी बहुत मस्ती और बेफिक्री का जीवन बिताते थे। मैं अक्सर उनकी परेड देखता और उनके पीछे पीछे गलियों में तथा उनके बैरेक के पास तक जाता। उनका स्वस्थ और ताजा चेहरा यों दिखता जैसे नया बना सिक्का।

एक दिन एक युवक अफसर ने एक अजीब मोटी सी सिगरेट मुझे दी। 'पियो, पियो ! मैं सबों को नहीं देता, तुम्हें भी नहीं मिलनी चाहिये। यह बड़ी कीमती है।'

मैंने जलाया और वह कुछ दूर हट गया। अचानक लाल लपटें उठीं। मेरी उंगलियाँ, नाक और भौंहें जल गईं और मुझे बहुत जोर की खाँसी भी आई। मैं तो अन्धा होकर तड़पने लगा और सिपाही इसमें मजा ले लेकर हँसने लगे। मैं घर भागा। उँगलियाँ जल गईं थीं। चेहरा सूज आया था।

आठ

जिस दिन पहली बर्फ गिरी उसी दिन नाना मुझे नानी की बहन के यहाँ ले गया। पिछली गर्मियों में मुझे जो भी अनुभव प्राप्त हो गए थे उससे मैं अपने को बहुत अधिक बूढ़ा और होशियार मानने लगा था।

शाम को मैं बैठकखाने में बुलाया गया और मुझसे पूछा गया, 'बता, नाव पर क्या-क्या हुआ?'

दरवाजे के पास बैठकर मैंने अपनी कहानी बता दी। आज विवशता के कारण जो जिन्दगी मुझे अपनानी पड़ी थी उसके बाहर के जीवन की बातें करना अच्छा लगता था। मालकिन कभी जहाज पर नहीं चढ़ी थी। वह बहुत चकित होकर पूछ रही थी, 'क्या उसमें कुछ खतरा न मालूम हुआ?' मैं न समझ पाया कि उसमें भला क्या खतरा हो सकता था।

'नाव यदि डूब जाती तो सभी लोग मर गए होते?'

इस प्रश्न पर मालिक खूब हँसा और बुढ़िया ने बताया, 'नाव की तरह जहाज पानी में खेई नहीं जाती बल्कि चक्कों के के सहारे वह पानी की सतह पर चलती है।'

फिर पुस्तकों की बातें होने लगीं। मालकिन को किताबों से वहशत थी। 'उनसे बहुत नुकसान होता है।' उसने कहा, 'विशेषकर नई उम्र वालों को। मेदेस्का में जहाँ मैं रहती थी

वहीं एक जवान लड़की थी। वह बहुत ऊँचे खानदान की थी साथही वह सदा पुस्तकें ही पढ़ती रहती थी। फिर जानते हो क्या हुआ। वह एक पादरी से प्रेम करने लगी। जिसकी स्त्री ने बीच सड़क पर तमाम आदमियों के सामने उसकी बेइज्जती की। ओफ़ वह दृश्य कितना भयानक था।'

एक बार मैं वहाँ के नौकरों के सामने अपने अनुभवों की कहानियाँ सुना रहा था कि मुझे कहना पड़ा, 'साफ कहूं—अब मुझे कुछ कहना नहीं है।'

वे चीख पड़े, 'क्या कहा ?'

उस समय घर में दो छोटे बच्चे थे। दोनों की दाइयों से मालकिन कभी संतुष्ट न हो पाई। फलस्वरूप वह रोज ही बदली जातीं। मुझे उन बच्चों की देखभाल करनी पड़ती। उनके कपड़े साफ करने पड़ते। एक दिन धोबिन ने कहा, 'आखिर तू औरतों के काम क्यों किया करता है।'

ये धोबिनें अधिकतर यारोस्लो की ओर की ही होती थीं। और ऐसा लगता था कि वे संसार के सम्बन्ध में बहुत अनुभव भी रखती थीं। उन सबों में एक थी नातालिया कोजलोवस्की जो कहानियाँ खूब सुनाती। उम्र उसकी लगभग तीस की थी। चेहरा भी अच्छा था, मजबूत थी और आँखें व जीभ खूब तेज थीं। उसके साथ की धोबिनें उससे अपने हर बात में सलाह लेतीं। जब मैं धोबिनों के गीले कपड़े भरे आती तो सभी स्वागत करतीं। 'तुम्हारी बेटी कैसी है ?'

'स्वस्थ है और खूब पढ़ रही है।'

'ठीक है वह लड़की महान महिला होगी।'

'इसीलिए तो उसे मैं ऊँचे स्कूल में पढ़ा रही हूँ।'

मैंने नाविकों को, सिपाहियों को, किसानों को औरतों के बारे में बातें करते सुना है पर इन औरतों को मैंने सबों से भिन्न पाया। पहले मैंने सभी पुरुषों को सुना था कि वे अपनी स्त्रियों के बारे में सदा ही प्रशंसा के शब्द कहते थे। तभी से मैं यह अनुभव कर रहा था औरत बहुत शक्तिशाली होगी।

जब मेरे पास कुछ समय बचता तो मैं छावनी वाले बाहरी बरामदे में जाकर लकड़ी चीरता। यहाँ अकेले मुझे बहुत अच्छा लगता परन्तु यह अवसर कम ही मिल पाता। क्योंकि अफसरों के अर्दली यहाँ आकर मुझे घेर लेते और जहाज की कहानियाँ सुनाते। मेरे पास बहुत आने वालों में दो थे—यरमोखीन और सिदोरोव। पहला तो कलुगा से आया था, लम्बा आकर्षक व्यक्तित्व, छोटे से सिर में बहुत चमकदार आँखें और भारी देह में चमड़े पर उभरी मोटी-मोटी नसें! किसी भी स्त्री को देखकर उसकी आँखें फड़फड़ाने लगतीं और वह यों झुक जाता कि कहीं गिर न पड़े। घर की नौकरानियों के प्रति उसका आकर्षण कभी-कभी सब को आश्चर्य में डाल देता था। और सिदोरोव जो तुला से आया था बहुत भावुक मधुर-भाषी बातें करते समय वह किसी कोने में ही आँखें गड़ाये रहता।

'क्या देख रहे हो।'

'मैंने समझा वहां कोई चूहा है। मुझे चूहे अच्छे लगते हैं।'

मैं उन अर्दलियों के घर उनके पत्र लिख देता जो अधिकांश प्रेम पत्र ही होते। मुझे भी यह लिखते समय

बहुत मजा आता। खासकर सिदोरोव का पत्र लिखते समय। हर शनिवार को वह मुझसे तुला में अपनी बहन के पास मुझसे खत लिखाता। अपने पास बैठकर बहुत धीरे-धीरे वह बताता,

'शुरू करो, वही रोज की तरह—'प्यारी बहन, आशा है तुम पूरी तरह स्वस्थ व प्रसन्न होगी।' अब लिखो 'तुमने रुबल भेजा सो मुझे मिला। इसके लिये धन्यवाद पर इसकी कोई आवश्यकता न थी। हम लोग यहाँ बहुत आराम से रह रहे हैं'----लेकिन हम तो यहाँ कुत्तों से भी बुरी जिन्दगी बसर कर रहे हैं। लेकिन इसके लिखने की क्या जरूरत। वह तरुणी है—चौदह वर्ष की। उस पर अपनी मुसीबत का बोझ क्यों डाला जाये!' 'अब आगे लिखो।'

'अगर तुमसे कोई प्रेम की बातें करे तो उस पर विश्वास न करना। समझना कि वह तुम्हे बेवकूफ बना रहा है। उसका सारा नाटक तुम्हें बरबाद करने को ही है।' कहते-कहते उसकी आँखें भर आतीं। आवाज रुक जाती। मैं पूछता।

'क्या बात है?'

कुछ नहीं तुम लिखे जाओ। 'और खासकर भलेमानुसों का, कभी विश्वास न करना। वे पहली निगाह में ही लड़कियों को गुमराह कर देते हैं। उनमें पास इस कार्य के लिए रुपये भी होते हैं।'

पत्र लिखते-लिखतेमेरे कलेजे में टीस होने लगी। उस सिदोरोव और उसकी बहन की दशा पर मेरे आँसू आ जाते।

और जब उसकी बहिन का खत आता तो वह मेरे पास भागा आता, 'जल्दी से पढ़कर सुनाओ तो!'

यों तो वह काफी सीधा और अच्छे स्वभाव का था परन्तु औरतों के प्रति उसका अजीब दृष्टिकोण था। अक्सर मुझे उसकी प्रेमलीलाएँ देखने को मिलतीं। उनका प्रारम्भ और अन्त दोनों ही अजीब और बुरा होता। वह स्त्रियों को किस प्रकार भड़काता मैं खूब देखता फिर एक दिन मैंने पूछ ही तो लिया तो उसने उत्तर दिया।

'यह चीजें तुम्हारे जानने की नहीं हैं। यह गलत और पाप के कर्म हैं। तुम अभी यह समझने के लिए बहुत छोटे हो।'

लेकिन एक बार मैं साफ-साफ उत्तर पा गया, 'क्या तुम समझते हो कि, सिदोरोव ने कहा, 'स्त्रियाँ यह नहीं समझतीं कि उन्हें बेवकूफ बनाया जा रहा है। वे सब ठीक-ठीक समझती हैं। यह खेल ही ऐसा है कि हर कोई बेईमानी करता है। यह कोई प्यार नहीं है बल्कि एक खेल है। समय आएगा तो तुम्हें भी इसका अनुभव होगा।'

मैं अपने चारों ओर दुखी लोगों को ही देखता था। एक दिन मैंने सिपाहियों से एक कहानी सुनी जिसने मुझ पर गहरा प्रभाव डाला। एक दर्जी की दूकान पर कपड़े काटने वाला एक विदेशी था। उसकी शादी एक ऐसी स्त्री से हुई थी जिसके कोई संतान न हुई थी और वह दिनभर किताबें पढ़ा करती थी। वे पति-पत्नी छुट्टी के दिन थियेटर जाने के अलावा कभी भी बाहर न निकलते थे। पति तो रात को भी काम में व्यस्त रहता। उसकी स्त्री कभी-कभी पुस्तकों की खोज में पुस्तकालय भी जाती थी। वह स्त्री तो थी परन्तु देखने में बिल्कुल लड़की मालूम होती थी। चिड़ियों की तरह भोला और आकर्षक उसका चेहरा था। मेरे मन में वहाँ की अन्य स्त्रियों के अलावा इसके प्रति ही अधिक आकर्षण हो गया था। लोगों का कहना था कि पुस्तकों ! से उसका दिमाग खराब होगया है। और उनकी

एक कानी नौकरानी थी जिसकी दूसरी आँख से भी कम सूझता था। मैंने सोचा कि यह तीनों यहाँ गलत स्थान पर आ गए हैं।

तभी मैंने सुना कि किस प्रकार सिपाही लोग उसके लिए योजना बना रहे हैं। एक-एक करके वे रोज उसे पत्र लिखते—उसके सौंदर्य की प्रसंशा—प्यार की याचना!

इसी घटना की ओर इशारा करके सिद्दाराव ने कहा, 'कोई भी औरत इनसे अनजान नहीं रहती। वह सब जानती रहती है।'

एक दिन मैं सच्चाई जानने को जब उसकी कानी नौकरानी चली गई तो उसके रसोई घर में गया। वहाँ कोई न था, मैं दूसरे कमरे में गया। एक मेज पर वह स्त्री बैठी थी। एक हाथ में एक प्याला और दूसरे में पुस्तक लिए हुए। मुझे देखते ही पुस्तक अपने कलेजे से लगाकर उसने कहा, 'कौन है! कौन है?'

मैंने अपने बारे में बताया। वह पीले रंग का फ्राक पहने थी और उसके सुन्दर बाल उसके कंधेपर थे। मुझे वह स्वर्ग की परी सी दिखी। उसकी आँखों में पहले क्रोध था जो अब आश्चर्य में बदल गया था।'

मैं वापस चला तो उसने कहा, 'जरा रुकना।' फिर प्याला पुस्तक टेबिल पर रख कर उसने कहा, 'तू अजीब लड़का है—इधर आ।'

मैं लजा कर उसकी ओर बढ़ा। उसने मेरा हाथ अपनी छोटी-छोटी उंगलियों से पकड़ लिया, 'सच कहना किसी ने तुम्हें यहाँ आने को सिखाया तो नहीं है?'

'नहीं! मैं कहने आया हूं कि तुम जल्दी ही यहाँ से दूर चली जाओ'

'क्यों ?'

'नहीं तो वे सिपाही तुम्हें धोखा देंगे।'

सुनकर वह अट्टहास करके हँसी और बोली, 'क्या तुम बढ़ रहे हो ? क्या तुम्हें किताबें अच्छी लगती है ?'

'मेरे पास पढ़ने लिखने को समय नहीं है।'

'अगर चाहो तो समय अवश्य मिल सकता है।, कहते हुए उसने दो ग्रेवेन का एक सिक्का मुझे दिया। जिसे इन्कार करने में मैंने अपने को असमर्थ पाया।

उसके बाद कई दिनों तक मेरे मन पर वह स्त्री छायी रही। एक बार उससे मैं फिर मिला। परन्तु इस बार देखा कि उसके सिर पर लाल रूमाल बँधा था और आँखें सूजी हुई थीं। उसने मुझे काली जिल्द की एक किताब दी परन्तु मैं उससे कारण न पूछ सका। मैं किताब लेकर चुपचाप भारी मन से लौट आया। किताब को मैंने बड़े यत्न से रखा। पहले तो उसपर कागज चढ़ाया फिर नई धुली कमीज में लपेट लिया ताकि कोई गन्दी या खराब न कर दे ?'

वे लोग नेवा* नामक पत्रिका के ग्राहक थे। वे उसे सिलाई की गई डिजाइनें और पहेलियों के लिए ही मंगाते थे कभी पढ़ते न थे।

शनिवार को मैंने उस पुस्तक का कपड़ा उतारा और पढ़ा। शाम तक मैं खिड़की पर बैठा पढ़ता रहा यह पुस्तक एक उपन्यास थी। मैं बाद में रसोईघर में जाकर पढ़ता ही रहा कि दरवाजे की घंटी बजी। मैं फौरन समझ गया कि कौन

*नेवा—एक प्रसिद्ध पत्रिका जो लेनिनग्राड (तब के पीटर्सबर्ग) के पास से होकर बहने वाली नदी के नाम पर थी।

और क्यों बजा रहा है। मोमबत्ती पूरी जल गई थी। झटपट मैंने पुस्तक चुल्हे के नीचे छिपा दी। तभी घर की दाई ने डाँटा, 'क्या तू बहरा है? सुनता नहीं कि घंटी बज रही है।'

दौड़कर मैंने दरवाजा खोला। मालिक ने डाँटा 'क्या सो गया था।' भीतर आते ही बूढ़िया ने देखते ही जान लिया कि मोमबत्ती क्यों समाप्त हो गई। इसने पूछा, 'बता तू क्या कर रहा था?' मैंने उस समय तो कोई उत्तर न दिया परन्तु जब मालिक व मालकिन खाने की मेज पर बैठे तब बुढ़िया ने मेरा मामला पेश किया—'देखो, इससे पूछो कि पूरी मोमबत्ती कैसे जला दी। इस तरह एक दिन यह घर में भी आग लगा देगा।'

बहुत हल्की सी डाँट पड़ी और अन्त में जब मालिक माल-कन और बुढ़िया भी सो गई तो मैंने उस गुप्त स्थान से पुस्तक निकाला। और खिड़की के पास लाया। चांदनी रात थी, परन्तु इतने बारीक अक्षर पढ़ने के लिए अपर्याप्त। फिर भी पढ़ने ही लगा कि वह बुढ़िया चुपचाप नंगे पाँव आई और इस प्रकार घूरने लगी कि जैसे अब पुस्तक छीनकर फाड़ डालेगी। परन्तु उस समय कुछ न हुआ और नाश्ता के समय मालिक ने डांटकर पूछा, 'तुझे वह किताब कहाँ से मिली?'

दोनों महिलाओं ने एक दूसरे से कुछ कहा तो विक्टर ने पूछा, 'यह किसकी बदबू है?'

जब मैंने कहा कि मुझे पादरी ने दिया है तब उन्हें आश्चर्य हुआ कि पादरी ने उपन्यास कैसे दिया परन्तु वे चुप हो गए और बाद में एक भाषण दिया,

'पुस्तकें पढ़ने वाले, लुटेरे और हत्यारे होते हैं।'

'तुम क्या पागल हुए हो जो इस तरह की बातें उसके दिमाग में भर रहे हो।' मालकिन ने कहा।

मैं पुस्तक को लेकर सिदोरोव के पास गया और उससे अपनी पूरी कहानी बतादी। उसने साफ तौलिए में पुस्तक लपेटी और संदूक में छिपा दिया। कहा, 'उनकी बातें मत सुनो। यहाँ आकर पढ़ाई किया करो और मैं यदि न रहूं तब वहाँ उस मोमबत्ती के पास चाभी रखी रहेगी। निकाल लिया करना।'

मेरे मालिक द्वारा पढ़ाई के लिए इतनी नाराजी ने मेरे मन में पढ़ने के लिए अजीब भावना भर दी। मैं पुस्तक समाप्त करने के लिए पागल हो रहा था। बुढ़िया सदा मुझपर नजर रखती और कहती, 'किताबी कीड़े! किताबें पढ़कर आदमी पतित होता है। उस किताबी कीड़े को देख-उस औरत को। वह इतनी बेकार है कि बाजार से सौदा भी नहीं खरीद ला सकती। लेकिन वह यह जानती है कि अफसरों से किस प्रकार व्यापार की बातें करे।'

मेरे मन में हुआ कि मैं चिल्ला उठूँ, 'यह झूठ है।' पर मैं डर के मारे कह न सका। उन्हीं दिनों एक बार मुझे रास्ते में उसकी रसोइयां मिली और कहा, 'आज ही पुस्तक वापस कर देना।'

दोपहर को खाना-खाने पर जब घर में सभी झपकी लेने लगे तब मैं बहुत सकुचाता हुआ उसके पास पहुँचा। आज वह दूसरे तरह के कपड़े पहने थी—ब्लाउज और स्कर्ट। उससे यह बताते हुए मेरी आंखों में आंसू आ गए कि मैं पुस्तक समाप्त नहीं कर पाया क्योंकि मुझे पढ़ने की इजाजत नहीं मिली।

'ओफ! कैसे बेवकूफ हैं वे लोग!' उसने अपनी पुतलियाँ हिलाकर कहा, 'तेरा मालिक तो अच्छा आदमी है! परन्तु तू चिन्ता न कर। मैं उसे पत्र लिखूँगी।'

'नहीं, नहीं मत लिखना ! मैंने कहा, 'वे तुम पर हँसेंगे और हँसी उड़ाएँगे। क्या मालूम नहीं कि वे सभी तुम्हारे विरोधी हैं। वे तुम पर हँसते और मूर्ख समझते हैं।'

मेरी बात सुनकर उसने अपनी उँगली ओठों पर रख ली। मैंने संकोच से सिर नीचा कर लिया। परन्तु वह कुर्सी पर बैठकर बेतरह हँसने लगी। 'वाह वाह।'

फिर मुझ पर निगाह जमाकर उसने कहा, 'अच्छा, तो क्या करना चाहिए यही बताओ ! तुम तो अजीब आदमी हो।'

तभी अचानक मैंने सामने के शीशे में अपनी शक्ल देखी, मेरे सिर के बाल सचमुच इतने बढ़ गए थे कि अजीब अवश्य लगते थे। तभी वह बोली 'अच्छा, जब भी तुम्हें पढ़ने को समय मिले तो आकर यहाँ पढ़ा करना। मैं किताबें दूँगी।'

मैंने बड़ी करुण दृष्टि से रैक में लगी पुस्तकें देखीं। उस स्त्री ने हाथ बढ़ाकर कहा, 'अच्छा विदा।'

बहुत लज्जा से मैंने उसका हाथ छुआ और भागा।

मुझे वह जाने क्यों बहुत अच्छी लगी।

नौ

कपड़े काटने वाले की स्त्री की सभी पुस्तकें बड़ी कीमती दिखती थीं। इसलिए मुझे हर समय डर लगा करता था कि कहीं बुढ़िया किसी दिन उन्हें चूल्हे के हवाले न कर दे।

मैं सुबह जिस दूकान पर रोटी खरीदने जाता था वहीं सस्ती पुस्तकें भी मिलती थीं। इसका मालिक एक कुरूप, मोटे ओठों वाला, सफेद आँखों वाला आदमी था। जिसे देखकर ही घृणा उपजती थी। उसने अपनी दूकान को जवानों तथा आवारा स्त्रियों के मिलने का अड्डा बना रखा था। उसी दूकान पर मेरे मालिक का भाई भी जाता - पीता - जुआ खेलता। लेकिन इससे भी अजीब बात यह थी कि दूकानदार की स्त्री व उसकी बहिन भी शराब के नशे में चूर सिपाहियों और अन्य इसी प्रकार के ग्राहकों से हँसी दिल्लगी करतीं परन्तु वह बुरा न मानता। इतना होने पर भी वह सदा यही कहा करता था कि उसका रोजगार ठीक नहीं चल रहा है।

मेरा पढ़ना भी अजीब था। जिस पुस्तक को मैं निश्चित समय में पढ़ना चाहता वह मुझे सबों के सो जाने के बाद मोमबत्ती के सहारे पढ़नी पड़ती। लेकिन यह खूँसट बुढ़िया यह भी न देख सकती और प्रतिदिन रात को सोने के पूर्व वह किसी लकड़ी के सहारे मोमबत्ती नाप लेती और सुबह मोमबत्ती छोटी मिलने पर वह उपद्रव मचाती।

एक बार तो विक्टर ने उसे बताया, 'वह मोमबत्ती के सहारे ही तो पढ़ता है। मैं जानता हूं कि वह किताबें कहां से पाता है—उसी स्टोर से। वहाँ रखता है छिपाकर।'

बुढ़िया मेरे सुरक्षित स्थान की ओर दौड़ी। किताब उसके हाथ लग गई और उसने उसे जला दिया। इससे मुझे क्रोध हो आया। परन्तु विवश होकर मैं चोरी-चोरी पढ़ाई करता ही रहा। लेकिन बुढ़िया के हाथों काफी पुस्तकें पड़ गईं और उसने उन्हें नष्ट कर दिया। फलस्वरूप मैं दूकानदार का सैंतालिस कोपेकों का कर्जदार हो गया। अपने कर्ज के लिये वह मुझे सताने लगा। एक दिन बहुत रुखाई से उसने कहा, 'क्या तू मेरी दूकान पर दान लेने आता है? मैं समझता हूँ कि तुझे जेल भिजवाकर ही मुझे रुपये वसूलने पड़ेंगे।'

मेरी कमाई का भी एक पैसा मेरे हाथ न पड़ता। पूरा रुपया सीधे नाना के पास जाता। मैं बहुत घबड़ा गया कि मेरे लिये क्या होने वाला है? एक बार तगादे के रूप में उसने मुझे कुछ अनुचित बातें कह दीं। मैंने उसके तराजू पर से एक बड़ा बटखरा उठाया और तानकर उसके सिर पर मारा। पर वह बच गया और बोला, 'क्या बात है? मैं तो मजाक कर रहा था।'

मैं जानता था कि वह मजाक नहीं था। मैंने अन्त में निश्चय किया कि अब मैं उतना रुपया चोरी करके ही उससे छुट्टी पाऊँगा।

अचानक दूसरे दिन मालिक के कपड़े साफ करते मैंने उसकी पतलून की जेब में कुछ रुपयों की खनखनाहट सुनी। कुछ तो जेब से निकलकर फर्श पर बिखर

भी गए। एक बार दो रुपये सीढ़ी के पास गिरे थे तब मैं कई दिन बाद मालिक को वापस कर आया था। तब मालकिन ने मालिक से कहा था, 'जेब में पैसे गिनकर रखा करो।'

'नहीं वह चोरी न करेगा। मैं जानता हूँ ।' मालिक ने कहा था।

वह घटना याद आ गई। चोरी की हिम्मत न पड़ रही थी। कई बार मैंने जेब से रुपये निकाले गिने और फिर रख दिये। पूरे तीन दिन तक मैं इसी उधेड़बुन में रहा अन्त में मैंने बहुत आसानी से और झटपट फैसला कर लिया।

मालिक ने अचानक कहा, 'पेशकोव क्या बात है ? तू कैसा होता जा रहा है ? क्या तेरी तबियत ठीक नहीं है ?

मैंने उसे मन की सच्ची बातें बता दीं। दिया तब उसने कहा, 'देख, यह तेरी पुस्तकों के ही कारण है। अभी या कभी भी निश्चय रूप से पुस्तकें आदमी को मुसीबत में डाल ही देती हैं।'

उसने मुझे आधा रूबल दिया और सावधान किया 'लेकिन इसके बारे में मेरी पत्नी या माँ से कुछ न कहना नहीं तो बड़ा उपद्रव होगा।' फिर तनिक हँसकर कहा, 'और पुस्तकों के लिये चिन्ता न करना। मैं [illegible] से एक पत्रिका का ग्राहक बन जाऊँगा ताकि तुम्हें पढ़ने को आसानी हो जायगा।'

[illegible] पढ़ना मुझे पसन्द न था क्योंकि जोर से पढ़ने से मेरी समझ में कुछ न आता था। मेरा मालिक

'दी मास्को लीफ' का ग्राहक बन गया। मैं उनके नाश्ते के समय जोर-जोर से पढ़कर पत्रिका के कुछ अंश उन्हें सुनाता और वे खुश होते।

कभी-कभी 'दि मास्को लीफ' में लिओनिड ग्रेव की कवितायें होतीं जो मुझे बहुत प्रिय लगतीं। मैंने उसकी कुछ कवितायें नकल भी कीं। परन्तु उन दोनों स्त्रियों की राय थी, 'कविता तो केवल नाटक के पात्रों के बोलने की भाषा है।'

वे जाड़े की रातें मुझे अपने जीवन की परीक्षा की रातें मालूम हुईं। खिड़की के बाहर रात मुर्दे की तरह खामोश थी। वहीं एक कमरे के एक कोने में मैं भेड़िये की तरह रातभर दुबका पड़ा रहता था।

कमरे में मेज के एक कोने पर मालकिन बैठकर सीना-पिरोना करती। उसके सामने मेज पर झुक कर विक्टर बैठता जो अपना नक्शे बनाने का काम करता रहता और बीच बीच में चिल्ला उठता—'टेबिल मत हिलाओ।'

दूर पर मालिक बैठता जिसके आगे सुन्दर कढ़ाई का कपड़ा बिछा रहता। अक्सर जब वह मुझे खाली देखता तो अपने काम की मदद के लिये पुकार लेता।

मुझे मालिक के काम में मदद करने में आन्तरिक प्रसन्नता होती। उसके साथ ही मैं सुई से काम करता। ऐसी व्यस्तता में उसके बालों की एकाध लटें उसके माथे पर झूलने लगतीं। वह अक्सर काम करते-करते रुक जाता और भावमग्न होकर कुछ सोचने लगता। तब उसकी पत्नी डाँट देती 'क्या सोचने लगे।'

कुछ नहीं, कुछ खास नहीं।' वह कहता और फिर काम में जुट जाता। परन्तु ऐसे प्रश्नों से मैं खीझ उठता। भला कोई अपने मन में उठे विचारों को भी बताने को बाध्य क्यों हो?

"'द मास्को लीफ' का अङ्क मेरा शाम का पूरा वक्त काटने को काफी न होता। और मैं दूसरी पत्रिकायें भी अपने बिछौने के नीचे रखने लगा। एक दिन मालकिन ने पूछा, 'अरे, उनमें पढ़ने को क्या है? केवल तस्वीरें होती हैं।'

बिछौने के नीचे धीरे-धीरे अच्छा खासा पुस्तकालय तैयार हो गया। मेरा काफी समय कटने लगा। एक दिन मेरे सौभाग्य से शराबी नौकरानी के न होने के कारण बुढ़िया बाग में सोई। मुझे विक्टर की चिन्ता न थी क्योंकि सबों के सो जाते ही वह चुपचाप कपड़े पहन कर गायब हो जाता। फिर सुबह के पहले कभी वापस न आता। मुझे अलग से कोई मोमबत्ती जलाने को न मिलती। न खरीदने की मुझे सुविधा ही थी। इसलिए दूसरों की जली हुई मोमबत्तियों की मोम इकट्ठी करके मैं उसमें सूत लगाकर अपने लिए काम चलाऊ मोमबत्तियाँ बना लेता।

उन सचित्र पुस्तकों से मैंने कुछ अनजाने देशों और वहाँ के निवासियों के बारे में ज्ञान प्राप्त किया।

उन्हीं दिनों एक रात को जब हम लोग सो रहे थे तभी अचानक गिरजे की घंटियाँ बज उठीं। सभी जाग गए। सभी खिड़कियों से बिना पूरे कपड़े पहने ही लोग झाँकने लगे। और पूछने लगे, 'क्या बात है? क्या कहीं आग लगी है?'

तभी जीन कसा हुआ एक घोड़ा आगया। बुढ़िया ने कहा कि पादरी को किसी ने लूटा होगा।

मालिक ने कहा, 'क्यों माँ, चुप भी रहो। देखूँ क्या बात है?'

तभी विक्टर कपड़े पहन कर आया, बोला, 'मैं जानता हूँ क्या बात है।'

मालिक की आज्ञा से मैं छत पर यह देखने गया कि कहीं आकाश लाल तो नहीं। परन्तु आकाश ठीक था। मैंने आकर यही सूचना दी।

'ओफ़! फिर क्या है?' मालिक ने कहा। उसने अपनी कालर उठा ली और बाहर चला।

''बाहर मत जाना! बाहर मत जाना!' उसकी पत्नी ने रोका।

'बेवकूफ़।'

विक्टर कहे जा रहा था, 'मैं जानता हूँ कि क्या बात है।' वह भी भाई के पीछे बाहर चला गया लेकिन दूसरे ही क्षण दरवाजे की घंटी बज उठी। मालिक ने खामोश सीढ़ी पर आकर किवाड़ बन्द कर लिए। धीरे से कहा, 'जार की हत्या की गई है।'

'जार की हत्या? कैसे?' बुढ़िया ने पूछा।

'हाँ हत्या। मैंने एक अफसर से पूछा है—देखें अब क्या होता है।

तभी विक्टर भी आया और लापरवाही से अपना कोट खींच कर उसने कहा, 'मैं जानता था कि लड़ाई छिड़ने वाली है।'

सभी ने चा की मेज पर भी धीरे-धीरे इसी विषय की बहस जारी रखा। गलियों में भी खामोशी छा गई थी। बस्तियाँ भी चुप हो गई थीं।

कई दिनों तक चारों ओर इसी की चर्चा रही। प्रत्येक व्यक्ति इसी प्रकार की बातों को एक रहस्यमय फुसफुसाहट के साथ करते थे। मैं बहुत कोशिश करके भी घटना के विषय में अधिक न जान पाया। अन्त में, जब कर मैंने सिदोरोव से पूछा तो उसने डाँट दिया, 'जानता नहीं इस विषय की चर्चा करने की मनाही है।'

मेरी उत्सुकता कम न हो सकी। क्योंकि प्रतिदिन ही विक्टर इसीके संबंध की कोई न कोई नई व अजीब सी बातें आकर घर में बताता।

रविवार को गिरजा से लौट कर बुढ़िया ने पूछा कि खाना तैयार है? मैंने घबड़ाहट में 'हाँ' कह दिया यद्यपि खाना तैयार न था। फल स्वरूप मुझ पर इतनी मार पड़ी कि मैं अधमरा हो गया और मुझे दूसरे दिन मेरा मालिक अस्पताल ले गया।

एक बहुत ही रूखे और कुरूप दिखने वाले डाक्टर ने मेरी परीक्षा की और कहा, 'यह तो अत्याचार की हद है। इसकी तो जाँच-पड़ताल होगी।'

सुनकर मालिक घबड़ा गया। उसने फुसफुसा कर डाक्टर से कुछ कहा। परन्तु डाक्टर ने डाँट दिया, 'नहीं, नहीं। यह नहीं हो सकता।'

फिर डाक्टर ने मुझसे पूछा, 'क्या तुम शिकायत करना चाहते हो?'

मैंने कहा, 'नहीं नहीं, मुझे केवल आराम कर दो।'

मुझे दूसरे कमरे में ले जाकर दवा लगाई गई। डाक्टर ने पूछा, 'क्या तुम्हें बहुत मार पड़ी है?'

'नहीं पहले इससे भी अधिक मार खा चुका हूं।' मेरे उत्तर पर डाक्टर हँसा और मुझे पुनः लाकर मालिक के सुपुर्द किया और दूसरे दिन फिर आने की हिदायत की।

रास्ते में मालिक ने कहा, 'पेश्कोव! जरा सोच तो कि मुझे तुझसे अधिक मार पड़ती थी और तेरे लिए तो कम से कम मैं दया दिखाने को हूँ ही जब कि मेरे लिए कोई न था। दूसरे को सताने के वक्त आदमी बिल्कुल राक्षस बन जाता है।'

मालिक की बातों से मुझे काफी सांत्वना मिली। घर आने पर देखा कि स्त्रियों ने डाक्टर की बातों को सुनने में काफी दिलचस्पी प्रकट की। फिर तो सबों को जैसे विवश होकर मेरे प्रति दया दिखानी पड़ी। सबों ने चूमचूम कर मेरा जी भर दिया।

मेरे शिकायत न करने की बात से सबों ने मुझे बहुत स्नेह दिया और इससे लाभ उठाने को मैंने आज्ञा मांगी कि मैं उस कपड़े काटने वाले की स्त्री से किताबें मांग कर पढ़ सकूँ। 'ना' करने की उनमें शक्ति न थी। यद्यपि उस बुढ़िया ने कह ही दिया, 'कितना धूर्त राक्षस है!'

दूसरे दिन मैं उस स्त्री के यहां पहुंचा। उसने कहा, 'मैंने सुना है तुम बीमार होकर अस्पताल गए हो। मुझे सब मालूम है।'

मुझे बहुत संकोच हुआ कि उसे भी मेरी दुर्दशा का पता लग ही गया। उस दिन बहुत सी किताबें लाया। जी भर कर पढ़ाई करता रहा। एक दिन बुढ़िया से जब न रहा गया तो उसने कहा, 'इस तरह तू अवश्य ही अंधा हो जायगा।'

मैंने जितनी भी किताबें पढ़ी उनमें मुझे केवल यही मिला कि किस प्रकार बुरे लोग अच्छे लोगों पर अन्याय व अत्याचार करते हैं। मुझे इस प्रकार की कहानियों से ऊब होने लगी। यहाँ तक कि अक्सर मैं कुछ पुस्तकों के प्रथम अध्याय ही पढ़ कर पूरी पुस्तक का आभास पा जाता था।

फिर उस स्त्री ने मुझे एक किताब और दी जो मुझे बहुत अच्छी लगीं। कुछ हास्य की थीं कुछ व्यथा की। इसी स्त्री के पुस्तकालय से मैंने वाल्टर स्काट, और विक्टर ह्यूगो आदि का परिचय पाया।

इस स्त्री के प्रति मेरी भावनाएँ अजीब तरह से विकसित होती रही। सदा ही जब मैं उसके पास जाऊँ तो साफ कमीज पहन लूँ तथा अपने को सुन्दर बनाने की आशा में बाल में कंघी भी कर लूँ। परन्तु सब करने पर भी वह मेरे जाने पर केवल एक ही बात करती, 'क्या इसे पढ़ लिया ? कैसी लगी ?'

'बहुत अच्छी नहीं।'

'क्यों ?'

'इन सब के बारे में खूब जान गया हूँ ?'

'किन सब के बारे में ?'

'प्यार के !'

उसकी आँखों में एक चमक जागृत हुई और हँस कर उसने कहा, 'लेकिन सभी पुस्तकें प्रेम विषयक ही तो नहीं होतीं।'

वह अपनी आराम कुर्सी पर बैठ गई। मेरा जी चाहा कि आज मैं फिर कहूँ, 'कहीं चली जाओ ! सभी अफसर चिट्ठियाँ लिख कर तुम्हारा मजाक उड़ाया करते हैं।'

लेकिन जाने क्यों कहने की मेरी हिम्मत न पड़ी। इस औरत को लेकर हर जगह काफी गंदी चर्चा चलती। मुझे बहुत

बुरा लगता क्योंकि मैं जानता था कि यह सभी गप्पें झूठी हैं। उससे दूर रह कर मैं उसके प्रति बहुत सहानुभूति पूर्ण बातें सोचता परन्तु उसके सामने, उसकी चमकदार आँखों के सम्मुख मैं सदा ही हत प्रेम हो जाता था।

अचानक वसन्त आते ही वह एक दिन गायब हो गई। कुछ दिनों के बाद उसका पति भी चला गया।

फिर उस घर में नए किरायेदार के आने के पूर्व एक बार मैं खाली मकान देखने गया मैंने खाली कमरे, सूनी दीवारों को घूम-घूम कर देखा। रंगीन कपड़ों के कतरन, कागज के टुकड़े, दवाइयों की शीशी के डिब्बे और तेल की टूटी शीशियाँ और गंदा फर्श ही दिखा।

फिर मैं एक बार उससे मिल कर उसे धन्यवाद देने को आकुल हो उठा परन्तु बेकार!

—दस—

कपड़े काटने वाले की स्त्री के गायब होने के पूर्व वहाँ तेज काली आँखों वाली एक स्त्री उसकी लड़की और उसकी सफेद बालों वाली बूढ़ी माँ जो दिन रात सिगरेट पीती—को देखते थे। वह स्त्री सुन्दर थी और घमण्डिन भी। उसकी आँखें ऐसी तेज जैसे वह दूर से ही सब कुछ देख रही हो। उसके दरवाजे पर सदा ही उसका सिपाही नौकर तुफायेव, उसका घोड़ा और उसकी पत्नी दिखाई पड़ती।

शाम को उसके यहाँ उसके मित्रों की मंडली आती। वे पियानों वाइलिन और गिटार पर गाते, नाचते। उसके यहाँ बहुत अधिक आने वालों में भूरे बालों व लाल चेहरे वाला मेजर ओलेसोव था। वह भी बहुत अच्छा गिटार बजाता था।

अपनी माँ की तरह ही वह पाँच वर्ष की बालिका भी काफी सुन्दर थी। उसकी दादी घर की देख-भाल में सारा समय लगाती। उसकी मदद तुफायेव करता। घर में कोई नौकरानी न थी। वह लड़की सदा ही दरवाजे पर खेला करती। मुझे जाने क्यों वह बहुत ही प्यारी लगती थी और मैं अक्सर अँधेरे में जाकर उसके साथ खेलता भी था। बाद में तो वह मुझे इतना परच गई कि अक्सर मुझसे कहानियाँ सुनते-सुनते वह गोद में ही सो जाती और मैं ही उसे बिछौने पर ले जाता। वह काफी तेज भी थी। कभी-कभी तो यदि कोई विचार उसके मस्तिष्क में

आता तो वह फौरन खेल के बीच में रुक जाती और पूछती, 'कहो, यह पादरियों के स्त्रियों जैसे लम्बे बाल क्यों होते हैं ?'

या कभी कहती, 'मैं खुदा को कहूंगी कि तुम्हारा बहुत बुरा हो। जानते हो खुदा काफी बुरा भी करता है।'

या कहती, 'नानी तो कभी-कभी पागल हो जाती है परन्तु माँ सदा हँसती रहती है। वह बहुत सुन्दरी है। यही जोसेफ भी कहता है।' वह अपनी माँ के बारे में बहुत बातें करती और मेरे लिए एक नई दुनिया के दर्शन होते। मेरे सामने महारानी मारगोट की कहानी नाच उठती और पुस्तकों के प्रति मेरी आस्था बढ़ने लगती और मैं इस तरह जीवन को बहुत गहराई से देखने का आदी हो गया।

एक बार मेरी गोद में लड़की सो गई। तभी घोड़े की पीठ से उसकी माँ उतरी। उसने लड़की के सिर पर हल्की सी चपत लगाई और बोली, 'क्या सो रही थी ?'

'हाँ।'

'अच्छा।'

वह सिपाई तुफायेव घोड़े को आगे बढ़ा ले गया। उसने कहा, 'लाओ, इसे मुझे दो।' कहकर अपनी बाहों में बेटी को ले लिया।

'मैं पहुँचा दूं ?' मैंने पूछा।

'वाह, क्यों ?' वह मुझ पर चिढ़कर चीख उठी। जैसे अपने घोड़े पर चीख रही हो। उसके चीखने से लड़की की नींद भी टूट गई। यद्यपि चीखें सुनने का मैं आदी था परन्तु इसका चीखना मुझे अप्रिय लगा।

एक या दो मिनट बाद वह बाहर रहने वाली स्त्री आई क्योंकि लड़की बिना मेरे सुलाए सोने को तैयार न थी। मैं भीतर गया। मां उसके कपड़े उतार रही थी।

'देख वह आ गया। राक्षस!'

'नहीं राक्षस नहीं—मेरा दोस्त!'

मैंने उसे सुला दिया। जब वह सो गई तब उसकी माँ ने मुझे बुलाकर पूछा, 'कहो तुम क्या चाहोगे?'

'कुछ नहीं—कोई किताब पढ़ने को दीजिए!'

'तो तुम्हें किताबें अच्छी लगती हैं। कहाँ तक पढ़े हो।'

मैं कुछ बता न सका। उसने मुझे एक पीली जिल्द की किताब दी, 'इसे पढ़कर लौटा देना तो और दूँगी—इसकी तीन जिल्दें और हैं।'

मैं 'राजकुमार मेसकेरेस्की पीटर्सबर्ग का रहस्य' बहुत ध्यान और दिलचस्पी से पढ़ने लगा।

जब वह पुस्तक मैंने लौटाई तो उसने पूछा, 'क्या अच्छी लगी?' मैंने संकोचवश कुछ न कहा। उसने दूसरी पुस्तक दी और कहा, 'इसे पढ़ना और खराब न करना।'

यह पुश्किन की कविताओं का एक संग्रह था। मैं इन्हें इस प्रकार पढ़ता गया जैसे किसी भिन्न रंग पदार्थ को पी रहा होऊँ। मैं पुश्किन की कविताओं से इस प्रकार प्रभावित हुआ कि गद्य मुझे नीरस लगने लगा। मैं उनकी [illegible] अवसर [illegible] की मुलाकात रखता शायद केवल [illegible] में ही उनका ध्यान मैं छोड़ पाता।

मेरी पढ़ने के प्रति अभिरुचि का मेरे मालिकों को खूब

पता था। बुढ़िया अक्सर कहती। 'तू बहुत ज्यादा समय पढ़ने में गंवाता है। चार दिन से बर्तन ठीक से साफ नहीं हुए।'

जब मैंने वह किताब लौटाई तो उस स्त्री ने पूछा, 'कहो कैसी लगी? क्या तुमने पुश्किन के बारे में सुना है।'

मैंने पुश्किन के बारे में अब तक कुछ अखबारों में पढ़ा था परन्तु उसकी बात सुनने के लिए मैंने कहा, 'नहीं' तब उसने पुश्किन के जीवन और उसकी मृत्यु[१] के बारे में थोड़ा सा बताया। अन्त में उसने चमकदार आंखें नचाकर कहा, 'देखा, किसी स्त्री का प्यार कितना खतरनाक है।'

मुझसे रहा न गया और अपने सम्पूर्ण ज्ञान के बूते पर मैंने कहा, 'खतरनाक तो है परन्तु हर कोई तो प्रेम में पड़ जाता है और स्त्रियों को भी अपने भाग का नुकसान उठाना ही पड़ता है।'

उसने गहरी दृष्टि से मुझे देख कर पूछा, 'तुम यह सब समझते हो? अगर तुम सदा ही इसे मन में रखो तो बड़ा अच्छा हो। क्या तुम्हारे मालिक तुम्हारे रिश्तेदार हैं?'

"हाँ।" मैंने कहा परन्तु मुझे स्पष्ट ज्ञात हो गया कि उत्तर सुन कर उसे तकलीफ हुई।

गली में अधिक रहने की मुझे मनाही थी। उन दिनों निजनी नोवगोरोड का मेला एक विशेष व्यक्ति के हाथ में था। उसके निर्माण का ठीका मेरे मालिक ने लिया था। मैं मालिक का बनाया नकशा मंजूरी के लिए अफसर के पास ले गया। लिफाफे में नकशे के साथ पचीस रूबल के नोट भी थे। जिन्हें

---

१ पुश्किन की हत्या उसकी पत्नी के एक प्रशंसक ने की थी।

अफसर ने अपनी जेब के हवाले किया और बिना नकशा देखे ही उसे मंजूर कर दिया। इसी प्रकार मालिक की ओर से मैंने इन्स्पेक्टरों और अन्य अफसरों को भी घूस खिलाया।

इसी सिलसिले में अक्सर मेरा मालिक अफसरों से मिलने आता और वे लोग आधी रात के बाद तक बातें करते। मैं बाहर बैठा इन्तजार करता तथा खिड़की से झाँककर अफसरों की बीबियों की उस विलासिता को देखता जिसका वर्णन मैं फ्रांसीसी उपन्यासों में पढ़ चुका था। परन्तु किताब देने वाली स्त्री मुझे बेहद अच्छी लगती जिसका अपने मन में मैंने रानी मारगोट नाम रख लिया था। उसका एक लम्बा सा मित्र अक्सर एक वाइलिन लेकर आता था। वह इसे इतनी खूबी से बजाता था कि रास्ते चलने वाले भी ठहर जाते थे और अक्सर आस-पास के काफी लोग इकट्ठे हो जाते थे।

एक दिन मैं शाम को उसके कमरे में गया। बाहर से ही उसके पास किसी पुरुष के होने की बात मुझे पता लग गई थी तभी उसने पुकारा, 'कौन है? अरे तुम! आओ, आओ!'

मैं शरमा गया क्योंकि उस अफसर को वहीं मैंने बैठा देख लिया था जहाँ वह पलंग पर लेटी थी।

'मेरा मित्र' रानी मारगोट ने मेरा परिचय दिया। मुझे अचम्भा हुआ कि वह मुझे अपना मित्र समझती थी। 'इतना डर क्यों रहे हो?' कह कर उसने मेरे कन्धे पर हाथ रख दिया और कहा, 'तुम बड़े आदमी बनोगे। अच्छा अब चले जाओ।'

मैंने उसकी अलमारी में एक किताब रखकर दूसरी ले ली

और चला आया। मुझे अपनी इस रानी के विषय में कल्पना कर के आश्चर्य हुआ कि वह भी साधारण स्त्रियों की तरह अपना प्रेम हर को बांटती है। एक दिन उसने कहा, 'तुम रूसी किताबें पढ़ा करो। रूसी जीवन के बारे में जानो।' फिर अपने बालों की पिन को ठीक करती हुई उसने कई रूसी लेखकों का नाम गिना दिया। फिर तो उसने नियमपूर्वक मेरी शिक्षा की ओर ध्यान देना भी प्रारम्भ कर दिया।

फिर तो मुझे जो रूसी पुस्तकें पढ़ने को दी गईं उसमें मैं इतना डूबा कि लगा कि जिन्दगी की मुसीबतों में मैं ही अकेला नहीं हूं।

जब नानी आई तो मैंने उससे बहुत प्रफुल्लित हृदय से रानी मारगोट के बारे में बताया। अपनी नाक में सुँघनी ठूँसकर नानी ने कहा, 'ठीक है। आस-पास अच्छे आदमियों को ही खोज लेना बड़ी बात होती है। अच्छा मैं जाकर उससे मिलूँगी।' परन्तु मैंने मना कर दिया, 'नहीं इसकी दरकार नहीं है।'

अक्सर मेरी आंखों की पुतलियाँ फूल आती थीं जिससे मेरी आंखें खुल नहीं पाती थीं। मेरे मालिक ने समझा कि मैं अन्धा हो रहा हूँ। मुझे एक डाक्टर के यहाँ भेजा गया जो कई दिनों तक मेरी पुतलियाँ धोता और सफाई करता रहा। बाद में आंखों पर पट्टी बांध दी गई और मैं जैसे अंधकार में डूब गया। इतवार के पहले दिन पट्टी खुली मैंने अनुभव किया कि मैं कब्र से उठकर आया हूँ। इतवार को सभी उत्सव मना रहे थे। मैं अर्दलियों के पास गया। वे सभी शराब के नशे में चूर थे। उसी शाम को नशे में ही रदसोलिन ने सिदोरोव

के सिर पर लाठी मार दी। बेहोश होकर सिदोरोव गिर पड़ा और डरकर यरमोखिन भाग गया।

चारों ओर यह खबर फैल गई कि सिदोरोव की हत्या हो गई और बहुत से लोग उसकी लाश देखने आ गए। बेहोश सिदोरोव को सभी मुर्दा ही समझ रहे थे कि ऐन वक्त पर धोबिन नातालिया कोजलोवस्की आ गई और भीड़ को हटा कर वह पास आई तो देख कर बोली, 'बेवकूफों ! यह अभी जिन्दा है। जल्दी थोड़ा पानी लाओ।'

लोग चीखे, 'तू क्यों बीच में पड़ती है। यह तेरे बस का रोग नहीं।'

'पानी !' वह इस प्रकार चिल्ला उठी जैसे आग लगी हो। बैठकर उसने अपने नए कपड़ों की चिन्ता किए बगैर ही उस घायल सिपाही का सिर अपनी जांघ पर रख लिया। लोग धीरे-धीरे खिसकने लगे। मैं धोबिन की आंखों से बरसती चिनगारी को साफ देख रहा था। मैं ही पानी लाया और नातालिया के कहेनुसार उसके मुँह पर छींटे देता रहा! थोड़ी देर में उसे होश आया, आंखें खुलीं, वह कराह उठा।

'उठाओ!' नातालिया ने कहा और मेरी मदद से उसे उठाकर रसोई घर में लेजाकर खाट पर लिटाया। फिर सिर पर गीली पट्टी बदलने की मुझे सलाह देकर बड़बड़ाती हुई चली गई।

बड़ी देर के बाद उसने पूछा, 'क्या मामला है?' क्या मैं गिर पड़ा था?' फिर कहा, 'मुझे तो मार ही डाला।' मुझे इस पर हँसी आ गई।

इस पर उसे क्रोध आ गया, 'अरे, मेरा, स्वर्गवास हो गया और तू हँस रहा है! तू जा यहाँ से, भेड़िया!'

'मूर्खता मत करो।' मैंने कहा।

तभी नातालिया, यरमोखिन के साथ आई। नातालिया ने दोनों को डांटा और सोने की आज्ञा दी। दोनों डर कर छोटे बच्चों की तरह सो गए। एक खाट पर और दूसरा फर्श पर। फिर बाहर आकर मुझसे बोली, 'देखा, क्या होता है वोद्का पीने से। तू कभी मत पीना।' फिर कुछ देर के बाद उसने कहा, 'मेरा पति भी खूब पीता था, लेकिन मैंने उससे शराब छुड़वा दी।'

'तुम बहादुर हो।' कहते समय मैं सोच रहा था ईव ने भी किस प्रकार खुदा को मूर्ख बनाया था।

'औरत को बहादुर होना ही चाहिए। पुरुष की दूनी। इसीलिए तो खुदा ने स्त्री को बनाया है।' नातालिया ने कहा।

तभी मालिक व मालकिन अन्दर आ गए। देखते ही मालकिन ने कहा, 'यह धोबिन के साथ? यह सब क्या हो रहा है?'

मुझे बहुत बुरा लगा खासकर जब मालिक ने हँसकर कहा, 'यही तो इसकी सीखने की उम्र है।'

दूसरे दिन सुबह मुझे लकड़ी वाले दरवाजे के पास एक पर्स पड़ा हुआ मिला जिसे मैं पहचान गया कि वह सिदोरोव का होगा और झट उसके पास ले गया। उसे पाते ही वह चीख पड़ा, 'मेरे रुपये कहाँ है? तीस रूबल! मुझे वापस कर!'

उसे यह यकीन नहीं आ रहा था कि मैंने इसी तरह पर्स पाया। यरमोखिन ने भी सिर हिलाकर कहा, 'जरूर, इसी ने चुराया है। इसे इसके मालिक के पास ले जाओ। सिपाही एक दूसरे की चीजें कभी नहीं चुराते।'

पता नहीं क्यों उसकी बातों से मुझे विश्वास हो गया कि चोरी उसीने की है और खाली पर्स मेरे दरवाजे पर छोड़ गया था। मैंने बिगड़ कर कहा, 'झूठा तूने ही चुराया है।'

मेरी बात पर उसका चेहरा फक् हो गया परन्तु दूसरे ही क्षण वह चीखने लगा, 'साबित कर, साबित कर।'

दोनों ने पकड़ कर मुझे बाहर लाकर शोर करना शुरू किया। सभी के सिर खिड़की से झांकने लगे। रानी मारगोट की माँ भी। मुझे लगा कि मैं उन स्त्रियों की नजर में अब गिर जाऊँगा।

मुझे दोनों सिपाही पकड़कर मालिक के सामने ले गए। मालिक ने सिर हिलाकर सिपाहियों की ही तरफदारी की। मालकिन ने भी उनका समर्थन किया, 'अवश्य ही इसी ने लिया होगा। कल रात यह धोबिन से घुलमिल रहा था। उसे दिया होगा।'

'अवश्य यही बात है।' यरमोखिन ने कहा।

मुझ पर मार तो पड़ी ही परन्तु सौभाग्य से यह किस्सा जल्दी ही समाप्त हो गया। क्योंकि शाम को मैंने सुना कि नातालिया चीखकर कह रही थी, 'नहीं! मैं क्यों चुप रहूँ? मैं तो तेरे अफसर से अवश्य ही कहूँगी।'

मैं फौरन ही भाँप गया कि मेरा ही किस्सा है। मेरे कमरे की सीढ़ी पर ही सब हो रहा था। नातालिया यरमोखिन

से कह रही थी, 'कल तुम मुझे रुपया दिखा रहे थे। आखिर वह कहाँ से आया? बताओ वह रुपया कहाँ से आया।'

तभी जब मैंने सुना तो फूल उठा जब सिदोरोव ने कहा, 'तो, यरमोखिन यह तेरी करतूत—।'

'और बच्चे को इसके लिए मार खानी पड़ी।'

मेरा जी चाहा कि दौड़कर जाकर मैं नातालिया का मुँह चुम्बनों से भर दूँ। तभी देखा कि खिड़की से मालकिन भी सब देख सुन रही थी।

तभी मालिक भी आ गया और प्यार से मुझसे बोला, 'तो पेश्कोव, तेरा हाथ इसमें नहीं था न!'

मैं बिना कुछ कहे सुने घूम गया। फिर थोड़ी देर बाद कहा, 'जैसे भी मैं उठने लायक हुआ कि चला जाऊँगा।'

सिगरेट का कश खींचकर उसने कहा, 'यह तो तेरी मरजी है। तू कोई छोटा बच्चा तो है नहीं।'

और चार दिन बाद मैं चला गया। मेरा जी बहुत चाहता था कि मैं रानी मारगोट से मिल लूँ पर ऐसा न कर सका। मुझे संकोच हुआ क्योंकि मैं समझता था कि वह मुझे भुलावेगी। परन्तु जब मैंने उसकी पुत्री से विदा ली तो कहा, 'अपनी माँ से कहना, बहुत-बहुत धन्यवाद।'

'अच्छा।' हँसकर उसने कहा, 'कल फिर मिलना।'

लेकिन उसके बाद हमारी भेंट बीस वर्ष बाद हुई। वह तब एक अफसर की बीवी थी।

ग्यारह

पुनः मैं एक स्टीमर के रसोई घर में काम करने लगा। रसोइया का सहकारी। मुझे सात रूबल प्रति मास मिलते थे। वहाँ का भंडारी बहुत मोटा, बदसूरत और गंजे सिर का था और उसकी चालीस वर्ष के आयु के लगभग की स्त्री, बहुत शृंगार करती थी।

रसोई का मैनेजर इवान बहुत शौकीन आदमी था। रोज-दाढ़ी बनाता था। उसकी काली मूंछें, उमेठे हुए ऊपर को उठते से लगते थे। अपने खाली समय में वह सदा मूँछों को ही उमेठा करता था। उस नाव में सबसे अच्छे व्यक्तित्व का जैक था। वह ताश का अच्छा खिलाड़ी था। ईवान के साथ चाय पीते समय उसने बताया, 'मैं तो पादरी हुआ जा रहा था, अगर पेंजा से वह स्त्री न आगई होती। उसने प्रस्ताव किया तू जवान है, और मैं अकेली विधवा। आओ हम लोग मिल जाएँ। मेरा अपना घर है और व्यापार भी। उसकी बातें मुझे अच्छी लगीं और मैं उससे मिल गया। और तीन साल तक मेरा उसका इतना साथ रहा जैसा चूल्हा और रोटी का।'

'तू झूठा है।' ईवान ने कहा।

'सुनो तो।' उसने आगे कहा, 'मेरा जी उसके साथ न लगा तो मैंने उसकी पांजी पर हाथ साफ किया और उसे पता

लगा तो उसने गरदन पकड़ कर मुझे घर से बाहर निकाल दिया।'

'तुम्हारे लिए यही उचित था।' कह कर सब हँस पड़े।

एक बार एक बुढ़िया यात्री का पर्स किसी ने उड़ा दिया। जब पता न चला तो कप्तान ने पाँच रूबल दिया और यात्रियों ने चंदा किया। जब बुढ़िया को रुपये मिले तो उसने बहुत बड़प्पन से कहा, 'तीन ग्रेवेन (तीस कोपेक) ज्यादा हैं।'

'रख लो, इसे भी रख लो।' लोगों ने कहा परन्तु जेक ने कहा, 'बढ़े रुपये मुझे दे, मैं खेलूँगा। तू रुपया रखकर क्या करेगी। अब तो जल्द ही तू कब्रगाह में पहुँचेगी।'

रुपयों के दर्शन से ही वह खुश हो जाता था। एक बार उसने मुझे ताश खेलने को बुलाया। मैं जानता न था तो उसने कहा, 'इतना बड़ा होकर खेलना नहीं जानता। फिर तो अवश्य सीख ले।'

खेलना शुरू किया। मैं आधा पौंड चीनी हार गया। फिर उसने रुपयों की बाजी लगाई। मेरे पास पाँच रूबल थे। वो लगाये और वो भी उसके हवाले हुए। मैंने अपने जाकेट की बाजी लगाई। उसकी कीमत भी पाँच रूबल के लगभग थी वह भी हार गया। फिर नया जूता लगाया। वह भी हार गया। इतना जीतकर जेक ने कहा, 'तू अभी तक खेलना नहीं सीख पाया। तुझे अब अपने सभी जूते कपड़े छोड़ जाने पड़ेंगे। लेकिन अपनी सभी हारी चीजें ले जा। मुझे नहीं चाहिये। मैं केवल सिखाने की फीस के रूप में एक रूबल लूँगा।'

मुझे उसपर बड़ी श्रद्धा उपजी। उसने फिर कहा,

'यह खेल खेल के लिये है । इसपर अधिक ध्यान नहीं देना चाहिये ।'

एक बार एक शराबी, मोटा व्यापारी अपने नशे में पानी में गिर पड़ा । जहाज रोका गया, इञ्जन बन्द किया गया । उसका चिल्लाना सुनाई पड़ रहा था । सभी यात्री आकर देखने लगे और भीड़ के कारण एक दूसर से टकराने लगे उस डूबने वाले का एक साथी भी था जो भी पिये हुये था और आकर वह सबों को धक्का देने लगा, 'मैं बचा लूंगा ।'

अब तक दो मल्लाह उसे बचाने के लिये पानी में कूद चुके थे और नावें भी छोड़ी जा चुकी थीं । जेक अपना भाषण दे रहा था, 'वह अवश्य डूबेगा । वह बच नहीं सकता । उसके कपड़े ऊपर तैर आये हैं इसीलिये तो औरतें जल्दी डूब जाती हैं । अपने लंहगे के कारण वे बच नहीं सकतीं ।

और सचमुच वह न बचा, डूब ही गया । दो घन्टे तक उसकी खोज हुई पर वह न मिला । अब डेक पर बैठ कर उसका साथी रोने लगा—'उसका पूरा परिवार है । वे लोग क्या कहेंगे ।'

जेक ने उसे सान्त्वना दी, 'तुम बेकार ही शोक कर रहे हो । कौन जानता है कि कौन कब मरेगा ।'

फिर मेरे पास आकर जेक ने कहा, 'दुनिया के हर कोने के आदमी चींटी से अधिक होशियार नहीं हैं । जब भी आदमी के संपर्क में आओगे मुसीबत में फँसोगे । मैंने हर तरह के आदमियों को देखा है । जिप्सीयों को भी ।'

हम लोग डेक पर बातें कर रहे थे। आकाश में चांदनी थी और सितारे पीले थे। थोड़ी देर बातें करके हम लोग अलग हुए। थोड़ी देर अकेले रहकर जब मैं ऊब गया तो फिर जेक के पास चला गया। और बातें करना चाहा,

'क्या मजाक है! भला क्या बातें करूँ?' पहले तो वह खीझा पर फिर कहने लगा, 'एक बार एक घोड़े की चोरी के सिलसिले में मैं पुलिस के चक्कर में फंस गया था। मेरा साईबेरिया जाना निश्चित सा था।' फिर वह रुक गया। जेक बहुत मिहनती भी था। अक्सर मैं उसके साथियों से पूछता, 'तुम्हारी जेक के लिए क्या राय है?'

'जेक, कोई गड़बड़ नहीं है।'

एक दिन जेक ने बताना शुरू किया। अपने एक तपेदिक के मरीज युवक वकील परिचित की और उसकी बांझ जर्मन पत्नी की कहानी। वह स्त्री एक मेवे के व्यापारी से प्रेम करती थी उस व्यापारी के तीन बच्चे और सुन्दर पत्नी भी थी। व्यापारी को जब उस स्त्री के प्रेम का पता लगा तो उसने एक चालाकी की। एक रात को अपने दो मित्रों को बाग में बुलाकर झाड़ी में छिपा दिया। जब वह जर्मन स्त्री आई तो उसने समझाना शुरू किया, 'मैं विवाहित हूँ। तुम्हारे योग्य नहीं हूँ। लेकिन मैं तुम्हें अपने दो मित्रों से मिलाऊंगा जिसमें से एक विधुर है और एक कुँवारा।'

'इस पर उस जरमन स्त्री ने उसे धक्के देकर बेंच पर गिरा दिया। मैं भी वहाँ सब झांक रहा था। दोनों मित्र झाड़ी से निकल आए और उस स्त्री के बाल खींचने लगे। तभी मैं भी कूद कर पहुंच गया। बीचबचाव में उनमें से एक

ने मेरे सिर पर पत्थर मारकर घाव कर दिया। और स्त्री ने छुटकारा पाकर कहा, 'जिस क्षण भी मेरा पति मर जाएगा, मैं जरमनों के बीच चली जाऊँगी।' तुम्हें यही करना भी चाहिए।' मैंने सलाह दिया। और सचमुच वकील के मरते ही वह चली भी गई। वह कितनी सुन्दर और अच्छी स्त्री थी! और वह वकील भी—खुदा उसे स्वर्ग दे।'

सुनकर भी मैं कहानी का अधिक रस न ले पाया। मैंने पूरी बात पूछी।

'क्या इतनी कहानी काफी नहीं?' जेक ने कहा।

अब तक किनारा पास आ गया था। अधिकांश यात्री डेक पर आने लगे। एक लम्बी दुबली काले कपड़े पहने स्त्री हमारे पास आरही थी। जेक ने पहले ही कहा, 'देखो, उसे कुछ तकलीफ है।'

दूसरों के कष्ट में उसे मजा आता था। जब वह कहानियाँ बताता तो किताबों में पढ़ने से ज्यादा मजा आता और मैं उसकी बातों पर अक्सर घंटों सोचा-विचारा करता।

मुझे भंडारी की स्त्री के लिए पानी लाना पड़ता था। मैं उसके केबिन के पास खड़ा उस स्त्री को निहारता, उसकी पीली देह को गौर से देखता। उसे देखकर मुझे रानी मारगोट की याद बरबस आ जाती। एक बार हंस कर उसने कहा। 'सुख से मुँह क्यों मोड़ता है?'

जेक ने बाप की तरह समझाया, 'होशियारी से काम लेना।'

मैंने जेक से पूछा, 'तुम्हारे पिता [illegible] के पास पत्नी है। तुम भी ब्याह क्यों नहीं करते?'

'मैं ! अरे वाह, शादी के बाद एक जगह जमना पड़ता है। घर बनाना पड़ता है । फिर सिपाही के जीवन का क्या ठिकाना !'

'तुम कभी खुदा की प्रार्थना करते हो, तो किस तरह !'

'बहुत तरह से प्रार्थना होती है ।'

मुझ पर वह सिपाही मेहरबान था । वह खाना रूखा-सूखा खाता और अक्सर पुकारता, 'आना, अलेक्सी, कुछ कविता हो जाय !'

मुझे कुछ कविताएँ याद थीं और कुछ मैंने नोट कर रखी थीं । वह लम्बी-लम्बी साँसे लेकर सुनता । एक बार बोला, कोई कवि है, मैंने सुना है—पुरकीन पुश्किन ।'

'लेकिन वह तो वर्षों पहले मार डाला गया ।'

'सो कैसे ?'

मैंने उसे संक्षेप में वह कहानी बताई जो मुझे रानी मारगोट ने सुनाई थी । इसपर जेक ने राय दी, 'औरतों ने बहुत से आदमियों को नष्ट किया है ।'

मैंने उसे बहुत सी कहानियाँ सुनाईं जो मैंने पुस्तकों में पढ़ा था। ड्यूमा के नायक मुझे बहुत भाते थे । उसका राजा हेनरी छठा मुझे बहुत पसन्द था ।

उपन्यास में हेनरी को बहुत अच्छा बताया गया है । उसे ही पढ़कर मुझे लगा कि संसार में सबसे प्यारा देश—फ्रांस—बहुत ही विशाल और वैभवशाली होगा । जहाँ हेनरी की हत्या की चर्चा थी उसे पढ़कर मेरी आँखों में आँसू आ गए । मैं क्रोध में दांत पीसने लगा । सुनकर जेक ने कहा,

'राजा हेनरी बहुत अच्छा आदमी था ।'

जब मैं हेनरी की कहानी सुनाता तो वह सहानुभूति से भर कर चुप रहता और बीच में कभी न बोलता । और जब मैं किसी कारण से एक क्षण को भी चुप हो जाता तो वह कह उठता, 'क्या समाप्त !'

'अभी नहीं ।'

'फिर चुप क्यों हो ?'

और मैं उत्साह से फ्रांस का वर्णन कर जाता ।

शरद् ऋतु में जब सूरज की किरणें पीली पड़ने लगीं तब जेक ने नौकरी छोड़कर हमें दगा दिया । एक दिन पहले ही उसने मुझे अपनी योजना बताई थी । एक यात्री के साथ वह चा की मेज पर बैठ कर बातें कर रहा था । यात्री ने कुछ बताया तो जेक ने कहा, 'नहीं—पसन्द नहीं ?

फिर उनमें बहुत देर तक बातें हुईं और वह चला गया । बाद में जेक ने मुझे बताया । 'यह अच्छा आदमी है । मैं उसके साथ काम करने जा रहा हूँ । पर्चं पहुँच कर मैं चला जाऊँगा । तुम सबों को विदा का नमस्कार करूँगा । पहले तो रेल से जाना होगा फिर थोड़ा पानी की यात्रा है फिर घोड़े पर तब कहीं इसके जिले में पहुँचेंगे ।'

'क्या तुम इसे जानते हो ?'

'कैसे जानता ! पहले तो कभी देखा नहीं ।'

दूसरे दिन सुबह कपड़े पहन कर वह आया और मेरी बाँह पकड़ कर कहा, 'साथ चलोगा ? वह तुम्हें भी रख लेगा ।'

पर मैं उसकी बातों में विश्वास न कर सका । जेक चला गया । अब मैं पछताने लगा—

ओह ! जेक कैसा आदमी था !

बारह

शरद ऋतु के अन्त में जब जहाजी यात्रा का मौसम समाप्त हो गया तो मैं मूर्ती रंगने का कार्य सीखने लगा। एक दो दिन के बाद ही दुकान की मालकिन बुढ़िया ने कहा, 'अब दिन छोटे तथा रात बड़ी होती है इससे दिन को तू दूकान पर काम कर और रात को सीखा कर।'

मेरा नया मालिक—दूकान का मैनेजर एक खूबसूरत जवान था। सुबह सुबह मैं जाड़े और ठण्ड में उसके साथ बाजार जाता जहाँ एक दोमंजिले पर दूकान थी। पहले यह कोई गोदाम था, यहाँ थोड़ा अंधेरा रहता था। इसमें एक लोहे का द्वार और एक लोहे की छड़ों की खिड़की थी। यह दूकान मूर्तियाँ, चित्र और चित्रों के चौखटे और पुस्तकों से भरी थी। इस दूकान के बगल में भी एक दूकान इन्हीं चीजों की थी जिसका मालिक काली दाढ़ी वाला एक व्यक्ति था। इसी के साथ इसका लड़का भी काम करता था जिसकी चूहों जैसी आँखें थीं।

दूकान खोलकर मैं फौरन गरम पानी का प्रबंध करता। फिर नाश्ता करने के बाद मैं दूकान सजाता। गर्द झाड़ता और फिर बाहर गली में खड़ा होकर ग्राहकों को अपनी दूकान बताता।

'ग्राहक चीज अच्छी नहीं देखते। दाम देखते हैं।'

धीरे-धीरे मैं सभी मूर्तियों और उनकी विशेषताओं व मूल्यों के विषय में जान गया।

बाजार के दिन बहुत भीड़भाड़ के दिन होते—बुध और शुक्र। इस दिन, किसान, बूढ़ी स्त्रियाँ कभी-कभी पूरा परिवार आजाता। 'आपकी क्या सेवा करूँ ?' मैं पूछता।

मैं अपने ताईं बहुत मिहनत करता परन्तु अच्छा विक्रेता न बन सका। एक दिन एक बूढ़े ने हमें डांटा—

'यहाँ अच्छी मूर्तियाँ नहीं बनतीं, मास्को में रिगोश्किन के यहाँ सबसे अच्छी होती हैं।'

अभी तक मेरे मालिक ने कभी मास्को की इस दूकान के बारे में नहीं बताया था। पूरे बाजार के लोगों का जीवन बहुत अस्वाभाविक था, किसी भूले भटके को वे जानकर गलत रास्ता बता देते थे—इसमें उन्हें बड़ा मजा आता था। वे दो चूहों को पकड़कर उनकी पूँछ बांध देते और उनका आपस में टकराना बड़ी दिलचस्पी से देखते और बाद में उन पर मिट्टी का तेल छिड़क कर जला देते और मजे से जलना देखते। और कभी-कभी कुत्ते की दुम में टीन का टुकड़ा बाँधकर उसकी परेशानी से मजा लेते।

जाड़े में व्यापार बहुत ढीलाढाला था। मैं बूढ़े पीटर से कभी-कभी घरेलू बातें करता। मैंने उससे कहा, 'जिस तरह ये दूकानदार रहते हैं वह ढंग मुझे अच्छा नहीं लगता।'

अपनी दाढ़ी में उँगलियाँ डालकर वह कहता, 'क्या तुम जानते हो कि वह कैसे रहते हैं ? क्या तुम उनके घरों में जाते हो ? वहाँ तो केवल उनका व्यापार है—दूकानें हैं। आदमी को उसके असली रूप में उसके घर में ही देखा जा

सकता है। और उनके घरेलू जीवन के बारे में तुम अधिक नहीं जानते।'

'ठीक है, पर क्या वे यहाँ भी वही नहीं सोचते जो घर में सोचते हैं।'

'तुम किसी के मन के विचारों को किस प्रकार जान सकते हो ? और तू दुनिया भर के लिये चिन्ता न किया कर ! इन सब के लिये तू बहुत छोटा है। तेरे उम्र के छोकरे को आँखों देखी बात ही जाननी चाहिये—दिमाग नहीं खपाना चाहिये।'

उसकी सीखों के सहारे मैं अपना समय काट रहा था।

तेरह

जहाँ मूर्तियाँ बनतीं और रंगी जाती थीं वह दो कमरे थे। एक में चार खिड़कियाँ थी और दूसरी में दो खिड़कियाँ थीं। इनमें केवल एक खिड़की बाग की ओर खुलती थी बाकी सड़कों या घरों की ओर। इस घुटन वाले कमरों में लगभग बीस आदमी कार्य करते थे। सभी पालेख, खोलुया और म्सटर के रहने वाले। वे सूती कमीज पहनते और गला खुला रहता। कुछ नंगे पाँव रहते कुछ सैण्डल पहनते। वे अक्सर काम के बीच में बिरहा गाते।

खिड़की के पास नकाशी करने वाला बैठता था। नाम था, गोलोवीव! फूली हुई नाक वाला बूढ़ा। पानफिल जुड़ाई करता उसका स्वभाव अच्छा न था। डेवीडोव पहला रंग पोतता था। सोरोकिन दूसरा रंग चढ़ाता। मिलीशीन पेंसिल से रेखायें बना देता।

मुझे यह अलग-अलग किए गए काम से तैयार कृति निर्जीव सी लगती। कुछ दिनों के बाद मैं भी इस कारखाने में शामिल हो गया। एक दिन मशहूर कारीगर, एक डॉन-कोज़ाक जिसका नाम कैपेन्डुखीन था, शराब पीकर आया। वह बहुत मजबूत और अच्छा दिखता था। उसे इस अवस्था में देखकर सभी दूसरे काम करने वाले भयभीत हो गए। सभी [illegible] एक दूसरे से कहते, '[illegible]!' चेहरा बनाने

वाला ईजेने सितानोव उसके सिर पर स्टूल मारकर गिरा देने में सफल हुआ। सभी ने मिलकर उसे तौलिए से बाँध दिया। वह जानवरों की तरह उसे दांतों से नोचने लगा। सीतानोव टेबिल पर चढ़कर उसपर कूदने को हुआ। उसके कूदने से अवश्य ही केपेन्डुखीन के छाती की हड्डी टूट जाती लेकिन लेरिओनोविच समय पर आगया। उसने डांट कर कहा, 'इसे उठाकर बड़े कमरे में डाल दो।'

कोजाक को घसीटकर बाहर किया गया। कुर्सियां जगह पर रखकर काम फिर पूर्ववत चालू होगया। सभी की यही राय थी कि उस शराबी की कभी न कभी इसी तरह के झगड़े में मौत होगी। मैं एकटक लेरिओनोविच को और उसके प्रभाव को देख रहा था। उसने केपेन्डुखीन से कहा, 'तुम बहुत अच्छे और सच्चे अर्थों में कलाकार हो। परन्तु अपनी कृतियों में तुम और जान डालो।'

कोजाक ने ध्यान से सुना फिर काफी मधुर आवाज में जो शराब के नशे के कारण तीखी मालूम होती थी कहा, 'अरे वाह, मेरे बाप। मैं तो जन्म का गायक हूँ अतः यह शिक्षा मेरे लिए नई नहीं है।'

नया कलाकार पाल ओडिन्स्तोव ने अंडा गिराते हुए रोक लिया। सभी मिलकर गा रहे थे—कोई सामूहिक गान! गाने के नशे में सभी अपनी सुध-बुध भूले हुए थे। इस प्रकार के गानों का नायक और नेता वही केपेन्डुखीन ही होता था। इसमें भिखारेव भी था। चलीस वर्ष का बूढ़ा लगने वाला गंजे सिर का व्यक्ति।

'पाल' उसने पुकार कर कहा, 'ओडिन्स्तोव, शुरू करो, न आता हो तो सुनो।'

और अपने लबादे में हाथ पोंछता हुआ पाल भी गाने में शामिल हो गया। झिखारेव बहुत कुशल कलाकार था क्योंकि वह मूर्तियों के चेहरे बहुत अच्छे बनाता था। उसे मूर्तियों का अनुभव भी खूब था। दूकान का सबसे अच्छा कारीगर होने पर भी सदा वह नए कारीगरों जैसे पाल और मुझ पर सदा मेहरबान रहता था। दूसरे तो हमारी ओर देखते भी न थे परन्तु वह नए-नए ढंग बताता रहता।

अक्सर अपने कार्य समाप्त कर के वह ओवरकोट पहनकर शराब खाने जाता। छोटे कारीगर उसे जाता देख मुस्कराते और बड़े कारीगर सीटी बजाते।

हर शनिवार को सुबह वह मलिक से पास पत्र लिख कर पाल से भिजवाता। और दोपहर को वह लेरिओनोविच से कहता, 'मैं नहाने जा रहा हूं।'

'वापस कब आओगे?'

'खुदा—।'

'कृपा करके मंगलवार तक तो आ ही जाना।'

नहा कर आता और कपड़े पहनता। चांदी के जंजीर वाली घड़ी बांधता और किसी से बोले बिना ही चला जाता। केवल पाल को और मुझे आज्ञा देता, 'शाम तक कमरे की सफाई कर लेना, टेबल भी साफ करना।'

सबों पर मस्ती का आलम छाया होता। सभी नहाते और अच्छा खाना खाते। शाम के बाद झिखारेव वापस आता, साथ में बियर और दूसरी शराब की बोतलें लाता। उसके पीछे-पीछे एक स्त्री होती। वह साढ़े छः फिट ऊँची थी और उसके सामने सबों के कारीगर खिलौने से दिखते। उसकी देह तो अच्छी थी परन्तु उसके स्तन बहुत बड़े थे। छोटी पहाड़ियों की तरह ऊँचे। वह चलती तो लगता कि वह उनके

बोझ से दबी हो। वह अवश्य ही चलीस के लगभग होगी परन्तु उसके चेहरे पर एक भी झुर्रियाँ न थी। बड़ी आँखें, चिकनी चमड़ी, प्यासा चेहरा। वह सबों से बातें करती, 'क्या हाल है? आज सचमुच बहुत जाड़ा है। यहाँ तो रंगों की गंध से घुटन हो रही है।' कुछ भी बोलने के पहले वह तेजी से सांस लेती थी। हम छोटे लोग उसे कुछ डर और प्यार से देखते। फिलारेव उसे सादर 'दोस्त' कहता। उत्तर में उसकी मुस्कान फैल जाती।

जब वह होती तो इतर की सुगन्ध भरी रहती। जैसे ताजी रोटी की सुगन्ध। बूढ़ा गोलोवीव उसे गौर से देखता। जब वह कुछ ज्यादा परेशान हो जाता तो देखकर वह कहती, 'हम अपनी जवानी में बहुत अच्छे न लगते थे। तीस की उम्र के लगभग मुझे एक कमाण्डर मिला था।'

केपेन्डुखीन बहुत न पीता था। उसकी बातों पर सारी दूकान कहं-कहों से गूँज जाती थी। सीतानोव पीकर पीला हो जाता था। उसके माथे पर मोती की तरह पसीना चमकता और भावुक आंखों में जैसे मोमबत्तियाँ जल उठतीं। बूढ़ा गोलोवीव अपनी उंगलियों से गीली आंखें सुखा कर पूछता, 'तुम्हारे कितने बच्चे हैं?'

'केवल एक।'

वहाँ टेबुल पर एक ओर एक भट्ठी पर लैम्प थी। उसी के धीमे प्रकाश में वह सबों को खाने-पीने की प्रार्थना कर रहा था। इस पर किसी ने कहा, 'तुम बूढ़े होकर इतना कष्ट क्यों उठाते हो? हर आदमी को अपना हाथ और अपना पेट है। सब खुद खाएं-पीएंगे। पेट में जितनी जगह होगी उतना सभी खाएँगे।'

'शान्त रहो मित्रों !' झिखारेव ने चीख कर कहा।

उस दिन गाना ठीक से न चला। सभी खाना और वोद्का से भरे थे। तब झिकारेव ने आज्ञा दी, 'अब रूसी नाच !'

'वाह, तुम कितने अजीब हो।' उस स्त्री ने कहा।

थोड़ी जगह खाली की गई। अपने छोटे भूरे स्कर्ट को हिलाती हुई वह उठ खड़ी हुई। उसकी पीली ब्लाउज़ और सिर पर बँधा लाल रूमाल चमक उठा।

झिखारेव को नाच न आता था। वह केवल बकरे की तरह झूमता और चमकदार जूतों की ऐड़ी रगड़ता। वह स्त्री भी अच्छा न नाची जब झिखारेव ने उसे अपने बाहों से घेर लिया तो एक अजीब रोशनी उसकी आंखों में चमकने लगी।

सितानोव ने कुछ व्यंग किया था जो अब तो मुझे ठीक याद नहीं। 'यह कोई प्यार तो नहीं है। धोखा है धोखा। इससे सबों को शर्म आनी चाहिए।'

मैं सोचने लगा कि सचमुच ही क्या यह धोखा है ? फिर रानी मारगोट ? मैं जानता था कि झिखारेव का प्यार सच्चा था। और मैं यह भी जानता था कि सितानोव को अपनी प्रेयसी—एक लड़की से निराशा मिली थी जो सड़कों पर घूमने वाली एक छोकड़ी थी।

यह स्त्री अब तक अत्यधिक भावुक होकर अपना रूमाल हवा में हिला रही थी और झिखारेव उसके पास ही मंडरा रहा था।

रात होने लगी थी। रात की कालिमा खिड़कियों से अन्दर आ रही थी। लैम्प धुँधली हो रही थी।

अब तक सबों का जी भर गया था। मुझे अचानक सीमन की याद आ गई। कैपेन्ड्युकीन के पीछे-पीछे पाल और सोरोकिन चले गए।

सितानोव इतना पी चुका था कि उसके चेहरे से लगता था जैसे वह रो पड़ेगा और वह बड़बड़ा रहा था, 'सोचो तो क्या कोई आदमी ऐसी स्त्री को प्यार कर सकता है ?'

लेरिओनोविच ने कंधा हिलाकर कहा, 'औरत औरत ही है। और कुछ जानना भी बेकार होता है।'

वे बात करते ही रहे और विषय बने दोनों व्यक्ति चले गए।

सितानोव ने पूछा, 'क्या दोनों चले गए।'

थोड़ी देर के बाद उसने फिर कहा, 'खुदा कहीं नहीं है।'

'तब हम कहाँ से आए ?' मैंने पूछा।

'यह हमें क्या मालूम !'

भला यह कैसे संभव है कि खुदा कहीं नहीं है। मैंने उससे पूछा और उसने कहा, 'खुदा बहुत ऊपर है, आकाश में। दिख रहा है।' और हाथ नीचे करके कहा, 'और आदमी नीचे है, पृथ्वी पर, क्यों ? ठीक है ? लेकिन एलेक्सी संसार में अच्छे लोग भी हैं।'

उससे बातें करना अच्छा लगता। क्योंकि वह साफ आदमी था। अगर कोई बात उसके मन में आती जो कहने की न होती तो भी वह अवश्य कहता। वह स्पष्टभाषी था। उसके साथ के कारण मेरी भी साफ कहने की आदत पड़ गई।

उसकी कापी में मैंने कुछ बहुत ऊँची स्तर की कविताएँ लिखी देखीं। कुछ इतनी गंदी थीं कि पढ़कर शर्म आती। मैंने उससे पुश्किन का जिक्र किया तो उसने मुझे पुश्किन की भी कविताएँ सुना दीं। फिर कहा, 'लेकिन और भी दूसरी दूसरे क़िस्म की कविताएँ हैं जो गहरा प्रभाव करती हैं। जैसे बेनेडिक्तोव की वह लाइन,

—ओह, हसीन औरत के यौवन का जादू !'

इसके अलावा उसकी और भी बहुत प्रिय लाइनें थीं जिन्हें वह अक्सर गाता। वह इससे भी भयंकर थीं।

'समझे !' उसने पूछा।

और यह कहने में मैं लजा गया कि जो कुछ वसे सुना दे रहा है उसे समझने में मैं असमर्थ हूँ !

चौदह

मेरा काम काफी आसान था। मैं तभी उठ जाता जब अन्य लोग सोते ही रहते और उठकर नाश्ता तैयार कर देता। जब वे चा पीते रहते तभी पाल और मैं कारखाने में झाड़ू बहारू करता।

शाम को मैं छुट्टी मनाता। कारीगरों को जहाज के अनुभव और किताबों की कहानियाँ सुनाता। उनके लिए मैं कथा-वाचक हो गया था। मेरा दावा था कि वे लड़कपन से ही इस कारखाने में थे इसलिए उनकी अपेक्षा मैंने दुनिया अधिक देखी थी। उनमें केवल फिखारेव ने ही मास्को देखा था जिसके बारे में वह कहता, 'वहाँ कोई रोता नहीं। वहाँ सभी अपने बारे में निश्चिंत हैं।'

बाकी लोग शूया या ब्लाडीमीर के आगे न गए थे। वे समझते थे कि पर्म बहुत दूर साइबेरिया में है। इसी प्रकार की कई गलत धारणाएँ वे अपने अज्ञानवश बनाए हुए थे। वे मेरी आँखों देखी बातों पर भी आश्चर्य प्रकट करते।

उन्हें देखकर मैं यह सोचने लगा कि पुस्तकों में जो लिखा है वह जीवन से कितना भिन्न है। किताबों में, स्मारी, लेक, फिखारेव व वोल्गिन लालालिया का जिक्र भी न था।

डेरीडोव अपने संदूक से गोलित्सिकी की कहानियों का फटा-संग्रह ले आता जो मैं पढ़कर उसे सुनाता। मैं और जगाड़ी से

भी किताबें ले आता और लगभग प्रति रात्रि को पाठचक्र चलता। वे शामें कितनी अच्छी तरह बीतीं। सभी ध्यान मुग्ध होकर सुनते।

नई पुस्तकें पाना फिर भी कठिन ही था। आग बुझाने वाले एक अफसर से मैं लरमनतोभ की एक पुस्तक ले आया। एक दिन मैं धीरे-धीरे पढ़ रहा था। लेरोनोविच ने कहा, 'भाइयों, खामोश।' और अपनी कुर्सी सितानोव के पास खींच लाया। मैं कोई कविता पढ़ रहा था। सभी धीरे-धीरे मेरे पास यों खिंचने लगे मानों मैं कोई चुम्बक होऊँ। जब पहला अध्याय समाप्त हुआ तो मैंने पाया कि सभी मेरे चारों ओर जुट गए हैं, एक दूसरे के कंधे पर हाथ डाले और सभी चेहरे मुस्कराते हुए या विचारों में खोए हुए। झिखारेव तो इतना भाव-विभोर था कि मेरा सिर उसने किताब में गाड़ दिया और कहा, 'और आगे पढ़ो।'

जब पूरी किताब पढ़ चुका तो उसने किताब ले ली और उसका शीर्षक देखकर कहा, 'कल फिर पढ़ी जायगी—इसे मैं अपने पास सुरक्षित रखूँगा।'

इस प्रकार लरमनतोभ को ताले में बन्दकर वह अपनी मेज पर वापस आ गया। कारखाने का कार्य पुनः पूर्ववत चलने लगा। सीतानोव खिड़की पर चला गया। रात को कार्य समाप्त कर जब हम लोग बाहर आए तो चाँदनी में ऊपर देख सीतानोव ने कहा, 'यह तारे यों लगते हैं जैसे कारवाँ हो।' हम लोग खाना खाने गए। दरवाजे पर ही फिखारेव ने कहा, 'वहाँ किताब का जिक्र न करना। यह अवश्य ही कोई जब्त किताब होगी।' मुझे खुशी हुई कि अवश्य ही इसी पुस्तक के लिए बहुत पहले पादरी ने कहा होगा।

खाने की मेज पर आज बात बहुत कम हुई जैसे सभी पहले से किसी बात से भरे बैठे हों। जब सोने जाने को हम कपड़े बदलने लगे तब झिखारेव ने कहा, 'हम लोगों को पुनः शुरू करना चाहिए।' सभी अपने-अपने बिछौनों से उठ कर मेरे चारों ओर पलथी मार कर बैठ गए। जब इस बार भी मैंने समाप्त किया तो झिखारेव ने टेबिल पर उंगली पटक कर कहा, 'कितनी सजीव तस्वीर!'

सितानोव ने कहा, 'मैं इसे अपनी कापी पर नकल कर लूँगा।'

झिखारेव ने कपड़े बदलते हुए सितानोव से कहा, 'चल न जरा पी जाए।'

'कहाँ शराब खाने!' सितानोव ने पूछा।

जब वे चले गए तो मैं पाल के पास आया—वह सिसक रहा था।

'क्या बात है?'

'वे ऐसे चरित्र हैं कि मैं बहुत अधिक घनिष्टता अनुभव करता हूँ।'

पाल और हम, दोनों मित्र थे। उसे निकाल दिया गया था। वह मास्को चला गया था। तीन साल बाद सुना उसे टाइफाइड ने नष्ट कर डाला। मुझे उसके लिए दुःख हुआ।

वह काफी बड़ा हो गया था। वह चिड़ियों, कुत्तों और बिल्लियों की खूब अच्छी शक्लें बना लेता था।

कभी-कभी पाल और हम अपने चेहरों पर तरह तरह के रंग पोत लेते और रंग-बिरंगे कपड़े भी पहन लेते। और तरह-तरह के मनोरंजक अभिनय करते।

पन्द्रह

खेतों पर से बर्फ पिघलने लगी थी। जाड़े के बादल आकाश से गायब हो गए थे। मेरे जन्म दिन पर कारीगरों ने मुझे फ्लेक्सी की मूर्ती बनाकर दी। उस अवसर पर झिखारेव ने जो भाषण दिया वह मुझे याद है।—'तू अभी है ही क्या, एक छोकड़ा, तेरह वर्ष का अनाथ। और मैं तेरी उम्र की चौगुनी उम्र का हूँ।' और इसी तरह परिहास से पूर्ण बहुत सी बातें कीं। आखिरकार केपेन्डुखीन ने कहा ही तो था, 'बस करो! देखो शर्म से उसके कान तक नीले हो गए हैं।'

जो भी हो, सभी मुझपर सहानुभूति रखते थे। उस दिन की भोर में भी मैं रोज की तरह दूकान गया। दोपहर को मैनेजर ने आज्ञा दिया, 'घर जाओ, छत पर की बर्फ साफ करो।'

शायद उसे मालूम न था कि वह मेरा जन्म दिन था। जब कारीगर लोग मुझे उपहार दे चुके तो काम के समय पहनने वाले कपड़े पहन कर मैं बर्फ साफ करने पहुँच गया। बर्फ बहुत अधिक थी इसलिए मैं फावड़ा लेकर जुट गया। जब मैनेजर भीतर आ रहा था तभी उसने देखा कि फावड़ा आधा टूट गया। उसने उसी टूटे भाग से मुझे धमकाया। फिर उसे चला कर मुझे आहत किया। मैंने भी फौरन ही बर्फ का एक टुकड़ा उस पर चला दिया। क्रुद्ध हो कर वह चला गया। मैं भी कारखाने

में आया कि उसकी भावी पत्नी—एक लड़की—ने आकर कहा, 'अलेक्सी, तुम्हें ऊपर बुलाया जा रहा है।'

'मैं नहीं जाता।' मैंने कहा।

'नहीं जाते ?' लेरिओनोविच ने पूछा, 'क्या मतलब ?'

मैंने उसे घटना बता दी। वह मेरे साथ ऊपर गया। सारा कारखाना मैनेजर के गरजने से गूँज रहा था। मैं जान गया कि मैनेजर से मेरी अधिक चलने को नहीं है। मैंने उससे कहा, 'मुझे पकड़ने के लिए फर्श पर तुम बर्फ बिछाते हो।'

'क्या कहा, गिर जाते होंगे। जानकर नहीं गिराता।'

कारखाने में मेरी पढ़ाई पर सख्त रोक लगा दी गई। 'तू क्यों इतना सिर खपाता है ? आवारा !'

वह सदा ही इस फेर में रहता कि मुझे पैसों की चोरी में फँसा दे परन्तु मैं उसकी चाल से पूरी तरह सतर्क था। एक दिन जब मैं चा के लिए गरम पानी ला रहा था तब मैंने सुना कि दूसरे कमरे में वह एक नए नौकर को समझा रहा था कि वह दूकान के नए रंग के लिए हमें चोरी लगाए। मैं जान गया कि यह लोग पूरी तरह मेरे पीछे पड़े हैं।

वह नौकर दरअसल में नया नहीं था बल्कि बहुत होशियार और पुराना आदमी था परन्तु उसमें पीने की बुरी लत बहुत अधिक थी। वह निकाल दिया गया था परन्तु अब फिर उसे काम दे दिया गया था।

एक दिन उसने मुझे आहत किया। पहले तो मुझे देख कर मुस्कराता रहा बाद में उसने मेरी टोपी उतार ली और मेरे बालों को नोचा। मैंने उसके चंगुल से छूटने की कोशिश की परन्तु वह मुझे दूकान में घसीट ले गया और चाहा कि मुझे किसी मूर्ति से भिड़ा दे ताकि कोई बड़ा नुकसान हो जाय

और मैं फँसू। परन्तु मैंने उसे ही हरा दिया। वह जमीन पर बैठ कर रोने लगा।

दूसरे दिन जब वह बैठा अपने नाक पर के घाव को धो रहा था जो कल ही लगा था, तब उसने मुझसे कहा, 'तुम क्या समझते हो कि मैं तुम पर कल हमला करना चाहता था। मैं इतना बड़ा मूर्ख नहीं हूं। मुझमें इतनी शक्ति भी तो नहीं। वह तो मालिक की आज्ञा से किया था।'

मैंने उस पर विश्वास किया और उसपर मुझे तरस भी आया। मैंने पूछा, 'अगर वह तुमसे किसी को जहर देने को कहे तब भी तुम जहर दे दोगे?'

'वह कह तो सकता है।'

इन सब झगड़ों की जड़ यह थी की मैनेजर की भावी पत्नी मुझसे बहुत जलती थी और सदा ही मेरी शिकायत करती रहती थी। क्योंकि सभी लोग उसे छेड़ा करते और वह विरोध न कर पाती और मैं यह सब देखा करता। कोई भी उसकी जेबों में एक दो मिठाई डाल कर थोड़ी देर उसे प्यार कर लेता था।

इस प्रकार की लड़की के सम्पर्क में आना मेरे लिए पहली घटना थी। एक दिन जब पाल और मैं ही कमरे में अकेले था तो उसने पूछा 'तुम लोगों को चूमना आता है या मैं सिखा दूँ।'

पाल ने कहा, 'मुझे खूब अच्छी तरह आता है।'

मैंने कहा, 'अपना चुम्बन अपने भावी पति के लिए ही सुरक्षित रखो।' इसपर उसने बहुत अधिक अपमानित अनुभव किया और कहा, 'तू जानवर है! एक युवती यदि तेरे प्रति दयालु हो तो इस प्रकार व्यवहार नहीं करना चाहिए। याद रख मैं तुझे बता दूँगी।'

पाल ने मेरा साथ दिया, कहा, 'यदि तुम्हारे भावी पति को तुम्हारे इस बात का पता लग जाए तो ?'

उसने क्रोध में उत्तर दिया, 'मुझे उसका डर नहीं। मेरा खानदान उससे ऊँचा है और कोई लड़की शादी के बाद ही पति से डरती है।'

उस दिन से वह पाल का पीछा करने लगी और मुझसे तो जलने ही लगी। मैंने निश्चय कर लिया कि इस बार जब नानी शहर आए तो मैं उसके साथ ही चला आऊँगा। यह जोड़ा उसने बलखाया में मिलाया था वहाँ वह फीते बनाने की लड़कियों को शिक्षा देती थी। नाना फिर कुनाविन गली में चला आया था पर मैं कभी उससे मिला नहीं था। वह भी जब कभी मेरे रास्ते से निकलता तो कभी भी मुझसे मिलने को क्षण भर भी न रुका। एक बार वह मुझे गली में मिल गया। मैंने नमस्कार किया तो उसने आँखों पर छाँह करके देखा फिर पहचान कर कहा, 'अरे तू। तू तो अब पूरी तरह कारीगर हो गया है। यह बहुत अच्छा है। आचला !' कह कर मेरे कंधे पर हाथ रखे वह चलता रहा।

मैंने देखा कि नानी को बहुत काम करना पड़ता। वह केवल अपने और नाना के पेट पालने के लिए न करती बल्कि मामा माइकल के बच्चों को भी पालती। उनमें शास्का भी था। वह अब बहुत सुन्दर युवक हो गया था परन्तु किताबों का कीड़ा। वह रंगसाजी की दुकानों पर काम करता था। उसकी एक बहन भी नानी के पास रहती जिसकी एक शराबी से शादी हुई थी पर उसने पीट कर उसे घर से निकाल दिया था।

मैं जब-जब नानी से मिलता, उसके व्यक्तित्व के प्रति अधिक श्रद्धालु हो जाता।

मुझे एक बात बड़ी अजीब लगती और बहुत अधिक इस विषय पर सोचा करता कि लोग शराब इतनी बुरी तरह क्यों पी लेते हैं और शराब पीकर औरतों से इस प्रकार का व्यवहार क्यों करते हैं जो अस्वाभाविक मालूम होता है। एक तरह से औरत और शराब ही क्या किसी को सुखी बना सकती है—यही मैं सोचा करता।

मुझे इस बात से बहुत ही कष्ट हुआ कि इतने अच्छे स्वभाव की नातालिया कोजलोवस्की भी दुश्चरित्र कहकर निकाल दी गई। मैंने सोचा कि नानो और रानी मारगोट के विषय में क्या होगा। रानी मारगोट तो सचमुच मेरे सपनों की रानी बन चुकी थी।

दरअसल में औरतें मेरे दिमाग पर छाई हुईं थीं। मेरे जी में सदा यह इच्छा रहती बल्कि हृदय में एक जलन रहती कि मेरा किसी स्त्री से संपर्क स्थापित हो जो अच्छे स्वभाव की हो और जिससे मैं निःसंकोच अपने मन की सभी बातें कह सकता।

पाल ने बड़ी सड़क के एक मकान में काम करने वाली नौकरानी से संबंध बना लिया था। वह कहता, 'कितनी अजीब बात है। पहले जिस स्त्री पर मैं बर्फ के टुकड़े फेंका करता था उसी के साथ अब बेंच पर बैठकर प्यार करता हूँ और इतना प्यार करता हूँ जितना दुनिया में किसी को नहीं किया।'

'तुम लोग क्या बात करते हो ?'

'सब कुछ ! वह मुझे अपने बारे में बताती है और मैं उसे अपने बारे में बताता हूँ। फिर हम लोग चूमते हैं। वह बहुत अच्छी है। और यही तो मुसीबत है कि सचमुच वह बहुत ही अच्छी है।'

मैं अब तक खूब धूम्रपान करने लगा था। अब तो तमाकू न पीता तो बेचैन हो जाता था। वोद्का के प्रति अधिक प्रेम नहीं हुआ क्योंकि उसकी गन्ध व स्वाद मुझे अधिक पसन्द न थी। बल्कि पाल पीता और कहता, 'अब घर जाऊँगा!' यद्यपि मैं जानता था कि वह अनाथ है, उसके कोई भाई या बहन नहीं है। उसके माता पिता तो बहुत पहले मर गए थे और आठ वर्षों से वह इसी प्रकार जीवन बिता रहा था।

वसन्त आते-आते मैंने निश्चय किया कि जहाज पर नौकरी की जाय और यदि जहाज अस्त्राखान में रुके तो फारस भाग जाऊँ। फारस ही क्यों चुना यह मुझे आज याद नहीं।

मैं अवश्य ही कहीं भाग जाता यदि यह घटना न घटती कि ईस्टर के दिन जब सभी कारीगर जा चुके थे मैं अकेला नदी के किनारे बैठा था कि मेरा पुराना मालिक—मेरे नानी का भतीजा—आ गया। वह भूरा कोट पहने था—दोनों हाथ जेबों में थे और ओठों में सिगरेट दबी थी। उसने कहा, 'कहो, पेश्कोव!'

जब हम दोनों ने ईस्टर का प्यार एक दूसरे को दिया तो उसने हाल-चाल पूछा। मैंने अपने फारस जाने की योजना बता दी। 'लेकिन यह विचार दिमाग से निकाल दो।' उसने राय दी। 'तुम फारस में भला क्या पाओगे? मैं जानता हूँ कि इस उम्र में दिमाग में कितने फितूर आते हैं।'

उसकी बातें इस समय अच्छी लग रही थीं। उसने अपने जेब से चांदी का सिगरेट का डिब्बा निकाल कर कहा, 'लो सिगरेट पिओ।'

'बल्कि मेरे साथ आकर काम करो।' उसने प्रस्ताव रखा, 'इस वर्ष मेले की नई इमारतों के लिए मैंने ठीका लिया है। तुम्हें वहाँ का 'ओवरसियर' बनाऊँगा। तुम्हें सभी वस्तुओं

का हिसाब रखना होगा ताकि लोग सामान खराब न करें। मैं तुम्हें प्रति माह पांच रूबल दूंगा और पांच कोपेन खाने को। औरतें तुम्हें तंग न कर सकेंगी। तुम सुबह जाओगे और रात को आओगे। उनकी ओर ध्यान ही न देना। और उन्हें भी इस बात का पता न लगने देना। और इतवार को फोनीन स्ट्रीट चले जाना। ठीक रहेगा न !'

हम लोग पुराने मित्रों की तरह अलग हुए। जब कारखाने वालों को यह पता लगा कि मैं जा रहा हूँ तो सभी दुखी हुए। पाल सबसे अधिक दुखी था, 'सबको छोड़कर कहाँ जाओगे ?'

फिर सबों ने रोकर बिदा किया। सूखी आँखों से मूर्तियों ने भी बिदा दिया।

भिखारेव ने मेरी किताबें न लौटाईं। कम से कम लरमनतोभ को मैं ले ही जाना चाहता था। तभी भिखारेव ने जेब में रुपये डाल दिए।

मैं सबों के आंसुओं के बीच चल पड़ा।

सोलह

मेले के मैदान में बाढ़ का पानी भरा था और नाव को मैं खे रहा था जिस पर मालिक बैठा था ।

'बाढ़ बढ़ती ही जा रही है ! सब काम रुक रहा है ।' सिगार का धुआँ फूँकते हुए उसने कहा । उसने मुझे काम के सभी स्थान दिखा दिए । उसका चेहरा मैं गौर से देख रहा था । उसकी दाढ़ी अच्छी साफ बनी थी और मूँछें कतरी हुई थीं तथा ओठों के बीच सिगार खुँसा था । वह चमड़े की जाकिट पहने और कंधे पर एक झोला लटकाए था । वह अत्यधिक बेचैन सा था । रह-रह कर अपनी चमड़े की टोपी वह आंखों तक खींच लेता फिर सिर पर चढ़ा लेता । वह अपनी उम्र से कम ही लग रहा था । कोई भी उसे देख कर यह अनुमान कभी न लगा सकता कि उस पर इतनी अधिक जिम्मेदारियों का बोझ होगा ।

मैं तो आश्चर्य चकित था । कभी-कभी बादलों को चीर कर सूरज की किरणें पानी पर पीले धब्बे बना जातीं । बड़े-बड़े मकान ऐसे लगते जैसे वे तैर रहे हों और अभी ओका के रास्ते वोल्गा में बहने लगेंगे । नाव के चारों ओर टूटी टोकरियाँ, टूटे फरनीचर और अन्य कूड़ा इकट्ठा हो गया था । कुछ रस्सियाँ इस तरह पानी की सतह पर तैर रही थीं जैसे मरे हुए सांप हों । एक छत पर से एक स्त्री पानी की ओर ताक रही थी ।

एक जगह मालिक ने कहा, 'यहाँ बाजार का चौकीदार रहता है। वह खिड़की से निकल कर नाव पर चोरों को खोजता फिरता है और जब कोई नहीं होता तो खुद भी चोरी करता है।'

एक अजीब वातावरण हमारे चारों ओर था। हर कुछ, खामोश, शून्य, अस्वाभाविक जैसे सपने की दुनिया। वोल्गा और ओका का संगम विस्तृत हो गया था।

हमारी नाव वृक्षों की डालों में फंस गई। मालिक घबरा गया था। मैं इस स्थान से पूरी तरह परिचित था। सिगार मुंह से निकाल कर उसने थूका। उसने कहा, 'पेश्कोवा जीवन से ऊब गया हूं। बिल्कुल ऊब गया हूँ। यहाँ कोई ऐसा नहीं जो समझदार हो। तुम अपनी प्रतिभा का विकास करना चाहते हो, लेकिन किसके लिए? इन बढ़ई, ईंटें पाथने वालों या धोबियों के लिए?'

वह दूर पहाड़ी पर बनी एक मसजिद की ओर देखकर इस तरह बोला जैसे किसी भूली बात को याद कर रहा हो, मेरी बियर और सिगार पीने की आदत पड़ी जब मैं एक जरमन के यहाँ काम कर रहा था। वे बहुत अच्छी जाति के लोग हैं। बियर बहुत अच्छा पेय है परन्तु सिगार उतना अच्छा नहीं। अगर एक पी लो तो बीबी कहेगी, 'यह क्या बदबू है? क्या किसी घुड़साल से आ रहे हो, जो इतनी बदबू आ रही है।' मैं बताऊँ मेरे भाई, कि हम जितना जियेंगे भूलें करेंगे। लेकिन सदा सच्चे बने रहो…… ।'

सामने के मकान में कुछ चीनी रहते थे जिनके दीवालों पर चीनी चित्र बने थे। मालिक ने अपने बंदूक से एक चित्र पर निशाना साधा। परन्तु इससे कोई नुकसान नहीं हुआ। न

निशाना ठीक लगा, उसने कहा, 'खाली गया।' उसे यह स्वीकार करने में तनिक भी संकोच न लगा। उसने दूसरी गोली भरी और मुझसे पूछा, 'लड़कियों के साथ तो खूब चल रही है न? क्या तुम उनका पीछा नहीं करते? मैं तेरह वर्ष की उम्र में ही प्रेम में फंस गया था।' फिर जैसे वह मुझे सपने की बातें बता रहा हो। उसने अपने प्रेम की कहानी बताई। जिस इन्जीनियर के यहाँ वह काम सीखता था उसके घर की नौकरानी की छोकड़ी।

'मैं सो न सका।' मेरा मालिक कहता गया, 'कभी-कभी मैं बिछौने से बाहर आ कर दरवाजे पर कांपता खड़ा रहता, कुत्ते की तरह। वहाँ कितना ठंडा था! मेरा मालिक भी उसके पास रात को आता था लेकिन पकड़े जाने की मुझे तनिक भी चिन्ता न थी। जब उसे पता लगता तो वह दुःखी होती और मुझे अन्दर बुला लेती, 'बेवकूफ! भीतर आ जाओ।'

इस प्रकार प्रथम प्रेम की मैंने कई कहानियाँ सुनीं। सबों में मुझे एक अजीब प्रकार की भावुकता का अनुभव हुआ। और मेरी धारणा बन गई कि प्रथम प्रेम ही सर्वश्रेष्ठ प्रेम होता होगा। तभी हँसकर मालिक ने कहा, 'लेकिन क्या यह कहानियाँ पत्नी से बताई जा सकती हैं? नहीं, इसमें नुकसान ही क्या है? लेकिन नहीं बताई जातीं। यह ऐसी कहानी है कि.........'।

वह जैसे अपने को ही सब सुना रहा था मुझे नहीं। जब वह चुप हो जाता तो मैं सोचने लगता। उसने फिर कहा,।

'सब से बड़ी बात है, जल्दी शादी न करना।' उसने सलाह दी, 'शादी के बाद जीवन में जकड़ना पड़ता है। अभी तो तुम जहाँ भी जिस तरह चाहो रह सकते हो। तुम फारस में मुसलमान बनकर रहो या तो मास्को में रहो। अभी तुम जीवन

को अपने ढांचे में ढाल सकते हो। लेकिन भाई, जब शादी हो जाएगी तब तुम्हें विवश होना पड़ेगा। पत्नी को काबू में नहीं रखा जा सकता। न तो पुराने जूते की तरह छोड़ा ही जा सकता है।' कहते-कहते उसके चेहरे का भाव बदल गया। उसने कहा, 'मैं कुनाविन गली जाऊँगा। मैं वहाँ रात भर रहूँगा। तुम घर जाकर बता देना कि मुझे ठीकेदारों के साथ रहना पड़ा है।'

वह गली में उतर गया और मैं वापस आया। स्त्रावेल्का में मैं रुक गया। नाव बांध दी और दोनों नदियों के संगम को देखता रहा। यहां सब दृश्य बहुत प्यारा था। लहरें भी तेज थीं। चारों ओर से मल्लाहों की पुकारों का शोर था। थोड़ी देर के बाद मैं वापस आया। रास्ते में कुमलिन में रुका। वहां से वोल्गा का दृश्य दिखाई पड़ता था।

घर पर मेरे पास काफी किताबें थी। रानी मारगोट का घर अब एक परिवार सरीखा हो गया था उसमें पांच जवान औरतें थीं। सभी एक दूसरी से खूबसूरत, प्यारी। और दो स्कूली लड़के थे जिनसे मैं किताबें लेता था। मुझे तुर्गनेव बहुत पसन्द आया। उसकी सूक्ष्म दृष्टि और सीधी बातें कहने का सीधा ढंग बहुत प्रभावोत्पादक था। मैंने पोमिआलोवस्की की 'दि स्लाक मारकेट' पढ़ा और मुझे मूर्तियों के कारखाने की सच्ची तस्वीर दिखाई पड़ी। रूसी पुस्तकें बहुत अच्छी लगीं। 'मरी आत्माएं', 'मुर्दों का घर', आदि शीर्षक यद्यपि ध्यान आकर्षित करते थे परन्तु मन न भरता था। डिकेन्स और स्काट ने बहुत प्रभावित किया। कई बार इनकी रचनाएँ पढ़ीं।

रात को छत पर जमघट होती। उनमें एक भाई, उसकी गुस्ती बहनें और व्याचसलाव व सोमारको भी होते। कभी कभी एक बहुत बड़े अफसर की लड़की मिस फ्रिनजीन भी

हमारा साथ देती। साहित्यिक चर्चा होती जिसमें मैं रस लेता। क्योंकि उन सबों में मैंने ही सब से अधिक पुस्तकें अब तक पढ़ा था। इसलिए कि अब तक के मेरे सभी साथी मुझसे बड़ी उम्र के थे अतः मैं इन सबों से अधिक होशियार भी था। मैं जब वापस आता तब भी उन्हीं के जीवन के बारे में सोचता—शायद यह जीवन कुछ मंहगा था। ये लोग अधिक तर युवती स्त्रियों और प्रेम की बातें करते और अपने-अपने प्रेमिकाओं के लिए कविताएँ बनाते जिसमें मैं बहुत सहायक होता। थोड़े दिनों में मैंने अचानक पाया कि मेरी व मिस फिटजीन की घनिष्टता बहुत बढ़ गई है।

उन लोगों की मंडली में पीछे न रहूं इसलिए मिस फिटजीन के लिए मैंने भी कविता बनाई। मुझे अधिक तो याद नहीं पर इसका अंत अच्छा न था। एक बार एक तालाब में उसे सैर कराने ले गया। अचानक वह गिर पड़ी और डूबने लगी, मैं फौरन ही कूदा और उसे बचा लिया। मुझ पर घूंसा तान कर उसने कहा, 'तुमने जान कर मुझे डुबाया था।' मेरा प्यार बेकार गया और उस दिन से वह मेरी दुश्मन बन गई।

शहर का जीवन बहुत अच्छा न लगा। मेरे मालिक ने अपने और अपने भाई की शक्ति से अधिक कार्य भार उठा लिया था इसलिए उसने मेरे सौतेले पिता को साथ लिया। एक दिन खाने के कमरे में मालिक के बगल में उसे बैठा देखकर मैं आश्चर्य में डूब गया। उसने मेरी ओर हाथ बढ़ाकर कहा, 'हलो।'

मुझे पीछे की सारी घटनाएँ याद हो आईं। मैंने उसकी उँगलियों पर अपना हाथ धर दिया। खाँस कर उसने कहा, 'तो हम फिर मिल ही गए।' मैं उठ कर बाहर चला आया।

हम और वह दोनों एक दूसरे से खिंचे रहते। अक्सर वह शान के स्वर में कहता, 'जब बाजार जाना तो, एक पौंड तमाखू मेरे लिए लेते आना, सौ सिगरेटों वाला एक डिब्बा।' मैंने जब भी इसके लिए रुपये पाए तो उनमें एक अजीब तरह की गर्माहट होती थी। अक्सर वह अपनी नुकीली दाढ़ी सीधी करके गहराई से बोलता, 'मैं यों तो बिल्कुल ही अच्छा नहीं होऊँगा। लेकिन अगर काफी मात्रा में गोश्त खाने को मिले तो मैं अच्छा हो सकता हूं।'

वह बहुत अधिक खाता था। उसके मुंह से सिगरेट कभी दूर न होती, केवल खाने के समय छूटती। उसके लिए मैं बहुत सी चीजें ला देता जिस पर बुढ़िया कहती, 'किस मुर्दे का इलाज कर रहे हो। वह अच्छा न होगा।'

मालिक की पत्नी भी उसे तरह-तरह की दवाइयां बताती। फिर उसके पीछे कहती, 'ऐसा भी क्या आदमी! हम लोग खाने की मेज को अच्छी तरह साफ किया करेंगे।'

'शांत रहो।' मालिक कहता, 'चिन्ता काहे की है! वह शीघ्र ही कब्र के नीचे होगा।'

उसके प्रति लोगों के व्यवहार ने मुझे विवश किया कि मैं अपने सौतेले पिता के प्रति दया दिखाऊँ। अपने जीवन के आरम्भ में मिले एक 'भलेमानस' से वह बहुत मिलता जुलता था।

मेरी मालकिन उससे अत्यधिक चिढ़ती। जब भी वह खाना खाने के बाद पानी से भीतर गला साफ करता।

रात को बुढ़िया खुदा से प्रार्थना करती, 'एक यह नई मुसीबत आ गई है। विक्टर का मामला फिर टल गया।'

एक बार मालिक ने अपने भाई से कहा, 'तुम अब फ्रेंच सीख रहे हो। अब शायद किसी स्त्री को भी लाओगे ?'

मेरा सौतेला बाप हँसा। पहली बार उसे हँसते देखा। तभी मालकिन ने टेबुल पर चम्मच पटक दिया, 'मेरे सामने ही इस तरह की बदतमीजी !'

अक्सर रात को वह उठ कर मेरी खाट के पास आता और अधिकतर मुझे खिड़की पर बैठ कर पढ़ता पाता। वह सिगरेट का धुआँ फेंक कर पूछता, 'पढ़ रहे हो ? कौन सी किताब है ?' फिर उसका नाम पढ़कर कहता, 'मैं समझता हूँ कि मैं पढ़ चुका हूं। लो सिगरेट पिओगे ?'

हम साथ बैठ कर सिगरेट पीते। फिर खिड़की के बाहर देखकर कहता, 'कितने दुख की बात है कि तुम कालिज में नहीं पढ़ रहे। तुममें बहुत योग्यता है।'

'मैं पढ़ रहा हूँ सो भी तो अध्ययन ही है।'

'नहीं यह काफी नहीं, तुम्हें स्कूल में ढंग की पढ़ाई करनी चाहिए।'

एक बार उसने कहा, 'तुम यहाँ से चले जाओ तो अच्छा हो। मैं तुम्हारा यहां ठहरना किसी तरह हितकर नहीं समझता।'

'मुझे काम में मजा आता है।'

'इसमें मजे की क्या बात है ?'

'इन लोगों के साथ काम करना बहुत मजेदार है।'

'ठीक कहते हो।' लेकिन बाद में एक बार कहा 'ये तेरे, मालिक लोग कितने मूर्ख हैं !'

उसने कभी मेरी माँ की चर्चा नहीं चलाई। न कभी उसका नाम लिया इससे उसके प्रति मेरी घृणा भड़क न सकी। मुझे याद तो नहीं कि यह विषय कैसे आ गया परन्तु एक दिन मैंने उससे खुदा की बात चलाई। उसने कहा, 'मैं नहीं जानता। खुदा पर मुझे विश्वास नहीं।'

इससे मुझे सितानोव याद आ गया। उसके विषय में मैंने चर्चा की। मेरे सौतेले पिता को देखकर किसी व्यक्ति के घुल-घुल कर मरने की सहज कल्पना की जा सकती थी। एक बरसाती दिन में उसने कहा, मुझे अत्यधिक कमजोरी लग रही है। शायद मुझे शीघ्र ही खाट पकड़नी पड़ेगी।

कई दिनों तक मैं काम में बुरी तरह फंसा रहा। फिर घर गया तो बुढ़िया ने एक बड़ा सफेद, लिफाफा देकर कहा, 'मैं देना भूल गई थी। कल आया था। एक स्त्री लेकर आई थी।'

उसमें एक कागज का टुकड़ा था। ऊसपर किसी अस्पताल का नाम था। और लिखा था, 'जब तुम्हें समय मिले मुझसे आकर मिलना। मैं मारटीनोवर की अस्पताल में हूं—ई० एस०।'

दूसरे दिन सुबह ही मैं अस्पताल गया। एक बड़ी खाट पर मेरा सौतेला बाप लेटा था और उसी पर मैं बैठ गया। उसने एक टक मुझे देखना शुरू किया। मैंने देखा कि खाट के सिरहाने स्टूल पर एक लड़की बैठी थी उसके हाथ उसकी तकिए पर थे। वह लड़की काफी दुबली-पतली थी। उसके लम्बे गोल चेहरे पर आँसू लुढ़क रहे थे। उसने रोनी आवाज

मैं कहा, 'यदि एक पादरी आ जाता। लेकिन यह नहीं चाहते।' कहते हुए उसने तकिया पर से हाथ उठा कर अपने कलेजे पर रख लिया मानो प्रार्थना की मुद्रा में हो।

मेरे सौतेले बाप ने बहुत कष्ट से आँखें खोलीं और छत की ओर ताका। फिर कहा, 'तुम आगए! मैं अच्छा न होऊँगा।'

इतना कहने में ही वह इतना थक गया कि उसने आँखें बंद कर लीं। मैंने उसकी लम्बे नाखूनों वाली नीली उँगलियाँ छुईं। लड़की ने फिर कहा, 'इजेने, हमारा परिचय करा दो।'

'तुम लोग परिचित हो लो।' उसने कहा, 'यह लड़की...।'

फिर वह चुप हो गया। उसका मुँह फैल गया और एक ऐसी आवाज निकली जैसे कौवा बोलता है। लड़की झपटी, कम्बल पर झुकी और तकिये में मुँह छिपा लिया।

बहुत शीघ्र मौत हुई और उसका चेहरा फिर पहले जैसा ठीक हो गया। लड़की की बाँह पकड़ कर हम दोनों अस्पताल से बाहर आए। वह तो पंगु की तरह चल रही थी, रोती हुई। एकाएक वह रुकी, मुझसे इस प्रकार चिपट गई जैसे डरी हो और बोली, 'मैं अब एक वर्ष भी नहीं जी सकूँगी। ऐ खुदा, यह सब क्या है!'

तब अपना हाथ बाहर निकाल कर उसने कहा, 'अच्छा नमस्कार! कल अन्तिम क्रिया होगी।'

'मैं तुम्हारे साथ घर चलूँ?'

'क्यों, यह रात तो नहीं है !'

खड़ा मैं उसे दूर तक जाते हुए देखता रहा। वह बहुत ही धीरे धीरे जा रही थी जैसे कोई जल्दी न हो अगस्त का यह महीना था। पत्तियाँ गिरना शुरु हो गई थीं। मैं अन्तिम क्रिया में शामिल न हो सका। और वही उस लड़की से मेरी अन्तिम भेंट भी थी।

सत्रह

मेले के मैदान में मेरा समय प्रातः ६ बजे से शुरू हो जाता। काम करने वाले बहुत दिलचस्प लोग थे। ओसिप, भूरे बालों वाला व्यक्ति बढ़ई-सरदार था, येफिम, पीटर, ग्रेगरी शिशलीन, आदि।

मैं पहले ही से उनसे बहुत घुलमिल गया था। प्रत्येक रविवार को ये लोग रसोई घर में इकट्ठे होते। मैं शिशलीन के पास गया कि इस गोल के शामिल हो जाऊँ। परन्तु उसने इन्कार कर दिया, 'अभी नहीं। अभी बहुत काम है। दूसरे वर्ष देखा जायगा।'

रविवार को सुबह गोलमेज के चारों ओर बेंच पर बैठे ये लोग जब मालिक का इन्तजार करते रहते तो बड़ी दिलचस्प बातें करते। मालिक आता, सबों से हाथ मिलाकर ऊँची जगह पर बैठता। फिर तो काफी देर तक हँसी मजाक की बातें होती रहती।

जो काम मुझे दिया गया था वह केवल यह था कि मैं इन लोगों पर सदा नजर रखूँ कि ये कोई सामान गड़बड़ न करें। मेरे मालिक के कार्य के अलावा भी वे कहीं न कहीं और भी कार्य करते थे अतः चीजों का गायब होना स्वाभाविक था। मेरा सबों ने उचित स्वागत किया। शिशलीन ने कहा, 'याद रखना कि तुमने मुझसे दल में आने की इच्छा प्रकट किया था। तुम अब मेरे ओवरसियर हो।'

ओसिप ने कहा, 'अपनी नजर पानी पर रखो, खुदा पर भरोसा रखो।'

अपना कार्य मुझे आसान न लगा। ये सभी अपने कार्य में काफी कुशल थे परन्तु चोरों की तरह मुझे उन पर नजर रखनी पड़ती थी। येफिन हर औरत को अजीब तरह घूरता। जब कुनाविन स्ट्रीट की स्त्रियाँ आतीं तो येफिन छत से नीचे आजाता और किसी कोने में खड़ा होकर उन्हें घूरता रहता। वह कहता, 'खुदा ने मेरे लिए कैसी अच्छी तितली भेज दिया है।'

यदि कोई स्त्री कह देती, 'यह आदमी बुरा तो नहीं।' तो वह बहुत खुश होता।

अक्सर उसकी इस प्रकार की हरकतों से ऊब कर ओसिप पूछता, 'तुम्हारी क्या उम्र है?'

'चौवालिस! पर मैं शरीर से इससे युवा हूँ—कोई भी स्त्री मुझे बूढ़ा नहीं कह सकती।'

इस पर पीटर भाषण की मुद्रा में कहता, 'तुम अब अपने पचासवें की ओर बढ़ रहे हो। अभी से होशियार न रहोगे तो इसका अंत बुरा होगा।'

ग्रेगरी कहता, 'तुम्हें अपने आप पर शर्म आनी चाहिए।'

ग्रेगरी के एक पत्नी भी थी जो देहात में रहती थी! ग्रेगरी की नजर भी उन स्त्रियों पर लगी थी। शिशकीन अपने दल का नेता था, एक बार मालिक की आज्ञा उसे सुनाते हुए मैंने कहा, 'तुम्हारा आदमी बहुत सुस्त है।'

सुनकर उसने ऐसा भाव बनाया कि मैं जान गया कि मुझे यह कहना न चाहिए था!

मालिक मुझे खाने को जो पांच कोपेक देता था वह पूरा न होता और मुझे अक्सर भूखा रह जाना पड़ता। कभी-कभी तो कारीगर लोग मुझे अपने साथ ले जाते और खिला पिला देते। उनके इस प्रकार की दावतों को मैंने कभी भी इन्कार नहीं किया था।

येफिम ने बहुतों से कर्ज ले रखा था, उसे डर था कि कहीं रुपया पाने वाले किसी दिन उसे पीट न दें। वह बड़ी शान्ति से कहता, 'वे यह क्यों नहीं समझते कि यदि मेरे पास रुपया होगा तो फौरन ही उन्हें दे दूंगा।'

'ओह, गरीबी का कड़ुवा स्वाद भी क्या है।' ओसिप कहता। येफिम को चुप देखकर पूछता, 'खामोश क्यों हो?'

'मैं सोच रहा था, कि किस तरह मैं एक बहुत शरीफ स्त्री से शादी करूँ। यदि रुपया होता तो कर्नल की लड़की ही ठीक थी। खुदा ही जानता है कि मैंने उसे कितना प्यार किया है। क्योंकि भाइयों, एक बार एक कर्नल के घर की छत मैं बना...'

'हाँ हाँ हम लोगों को उसकी विधवा लड़की के बारे में मालूम है।' पीटर ने बीच में ही टोका।

लेकिन येफिम कहता ही गया, 'कभी-कभी बिल्कुल सफेद कपड़े पहन कर वह बगीचे में आती। मैं उसे छत पर से देखता रह जाता। वाह, अगर किसी को ऐसी स्त्री मिल जाए!'

'मिल तो जाए! खाने-पीने का क्या होगा?' पीटर ने पूछा।

ऐसे प्रश्नों से येफिम कभी चिन्तित न होता, 'हमें अधिक खाना भी तो नहीं चाहता, फिर वह इतनी धनी भी तो है।'

'तो तुम यह ऊँचे पैमाने की जिन्दगी फ़र्श से शुरू कर रहे हो?' हँसकर ओसिप ने पूछा।

येफिन सदा ही स्त्रियों की बातें करता था। वह मिहनती भी था इससे वह जब काम समाप्त कर लेता तो स्त्रियों की ओर ही ताकने लगता।

ओसिप से किसी भी विषय पर बातें हो सकती थीं। ग्रेगरी की बातों में खुदा बहुत रहता, वह विश्वास के स्वरों में कहता।

'कुछ लोग खुदा पर विश्वास नहीं रखते। यह जानते हो ना।' मैंने पूछा।

'तुम्हारा मतलब क्या है?' उसने उत्तर में प्रश्न किया।

'वे भगवान के अस्तित्व पर विश्वास नहीं रखते।'

'अच्छा! लेकिन वे यह नहीं जानते कि खुदा के बिना वे भी कुछ नहीं हैं।'

ग्रेगरी बड़ा शराबी भी न था। दो गिलास में वह भर जाता था।

मैं एक किताब मेले के मैदान में ले गया। नाम था, 'बढ़ई-समाज'। इसके लिए सबों ने दिलचस्पी दिखाई। 'हम लोग मिल कर रात को सामूहिक पाठ करेंगे।'

अट्ठारह

ओसिप को देखकर मुझे सदा जेक की याद आती क्योंकि सचमुच वह उससे बहुत मिलता-जुलता था। और ओसिप के चेहरे पर नाना व स्मारुरी के चेहरों की भी कभी-कभी झलक मिल जाती थी। मेरे मस्तिष्क पर जिन चेहरों की छाप पड़ी थी उनमें यह व्यक्ति सब से अधिक गहरा निशान बना चुका था। उसके जिस वस्तु ने मुझे अधिक प्रभावित किया वह था उसका दोहरा व्यक्तित्व। एक तो कारीगर के रूप में, दूसरा एक मस्त और अल्हड़ व्यक्ति के रूप में। वह मुझे अत्यधिक चतुर व्यक्ति लगता था इसलिए मैं अधिक से अधिक समय उसके साथ बिता कर उसे बहुत गहराई से समझने की कोशिश कर रहा था। परन्तु मैं अपने इस कार्य में बहुत सफल नहीं हो पा रहा था। उसे देख कर लगता जैसे वह अभी कम से कम सौ वर्ष तक इसी तरह बिना किसी परिवर्तन के बना रहेगा।

जून के प्रारम्भ में एक दिन एक दाढ़ी वाले, नंगे सिर वाले बग्घी के कोचवान ने बहुत अधिक शराब पी लिया था। उसका ओंठ कटा था और उसकी बग्घी में शराब में [illegible] शिशा-लीन एक लाल दिखने वाली लड़की की बाहों में पड़ा था। वह लड़की बड़बड़ा रही थी—'क्या बदमाशी है! मेला अभी शुरू कहाँ है? यह कमबख्त मुझे मेला दिखाने लाया था!'

उस स्त्री ने उसे तनिक ही धक्का दिया और वह धरती पर आ रहा। सभी ठठा कर हंस पड़े। उसी समय बग्घीवाले ने कहा, 'ओफ ! अब तो घोड़े आराम करना चाहते हैं !'

ग्रेगरी के नीचे काम करने वाले लोग अपने प्रधान की दशा पर हँसते न थकते थे। केवल टाम नहीं हँस रहा था। वह मेरे बगल में खड़ा धीरे-धीरे कह रहा था, 'क्या बात है ! उसकी स्त्री सचमुच अद्‌भुत सुन्दरी है।'

बग्घी वाला लगातार चलने की जिद कर रहा था। वह स्त्री उतरी। ग्रेगरी की टांग पकड़ कर खींचा, चढ़ाया और कहा 'गाड़ी बढ़ाओ !'

थोड़ा हँस कर सभी अपने-अपने कार्य में लग गए। मैं ग्रेगरी और उसकी स्त्री के विषय में सोचकर चक्कर में पड़ गया।

मुझे आश्चर्य था कि ग्रेगरी किस प्रकार प्रधान बन गया और टाम तुकशोव उसका सहयोगी। अच्छे कपड़े पहनने पर टाम किसी बड़े परिवार का लड़का मालूम पड़ता। कुछ पढ़ा लिखा भी था। वह ग्रेगरी का हिसाब-किताब रखता था।

जब मैंने उससे पूछा कि वह स्वयं ही ठेकेदारी क्यों नहीं करता तो उसने उत्तर दिया, 'मैं इस चक्कर में क्यों पड़ूँ मैं तो किसी धनी विधवा के फेर में हूं जिससे विवाह करके धनी बनूँ।'

जब मेला शुरू हुआ तो उसने एक होटल में बेयरा का काम कर लिया जिससे सभी को आश्चर्य हुआ। अक्सर उसके साथी काम करने वाले होटल में इसीलिये जाते कि अपने साथी के दर्शन पा जाएँ। होटल में ग्राहकों की ही

तरह मित्रों से आकर वह पूछता, 'आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ ?'

'क्या तुम्हें हमारी याद नहीं ?'

'कहाँ तक किसे याद रखा जाए ?'

तीन साल के बाद हमने जब उसे स्टालिनग्राड में देखा तब भी वह बेयरा ही था। लेकिन उसके कुछ दिनों बाद ही अखबार में पढ़ा कि टाम चोरी में पकड़ा गया है।

इसी तरह ईंटों के सौदागर पीटर और उसके सहयोगी अर्दी-लोन के लिये मुझे आश्चर्य था। पीटर क्योंकर उसका मालिक हो सका ? एक दिन एकाएक वह गायब हो गया। वह विधुर था। इसलिए डर कर फिर खोजने निकला। बाद में ओसिप भी गया और मैं भी साथ गया। रास्ते में ओसिप ने कहा, 'एलेक्स। इससे तुम शिक्षा लो।'

हमारी मंजिल जहाँ समाप्त हुई वह कुनाविन का एक अंधेरा कोना था जहाँ हम लोग एक बुढ़िया से मिले। थोड़ी देर की फुसफुसाहट के पश्चात हमलोगों को वह एक अंधेरे और छोटे से कमरे में ले गई जहां अस्तबल की दुर्गन्ध आ रही थी। वहाँ एक खाट पर एक स्त्री सो रही थी जिसके सोने में भी एक अजीब भाव प्रदर्शन का आभास मिलता था। बुढ़िया ने उसे हिला कर जगाया, उठो उठो।'

'अरे वाह, क्या बात है ? कौन है ? क्यों उठूँ ?'

'जासूस !' ओसिप ने कहा और थूक कर फिर शुरू किया, 'जासूस इनके लिए शैतान से भी बढ़ कर हैं।'

तभी बुढ़िया ने दीवाल पर टंगे एक शीशे को हटा दिया

और दीवाल पर चिपके कागज को मोड़ा और कहा, 'देखो क्या यही आदमी है।'

जहाँ कागज मोड़ा गया था वहाँ दीवाल में एक छेद था। उससे देखकर ओसिप ने कहा, 'हाँ वही है। उस औरत को निकालो।'

मैंने भी उसी छेद से देखा। खिड़की बंद थी। एक तातार स्त्री नंगी बैठी अपनी चोली की मरम्मत कर रही थी। उसके पीछे खाट बिछी थी जिसकी तकिए पर हम लोग अर्दालीन का सिर और उसकी दाढ़ी देख रहे थे।

एक झटके से स्त्री ने चोली पहन ली और खाट की ओर बढ़ी कि अचानक वह हमारे कमरे में आ गई।

ओसिप ने उसे गौर से देखा और डांटा, 'हूँ, चुड़ैल!'

उस तातार स्त्री के साथ हम लोग उस कमरे में गए। खाट पर ओसिप बैठ गया, 'कहो!'

'मुझे यहां जबरदस्ती बन्द किया गया है।' अर्दालीन ने कहा।

'सो कैसे?'

उत्तर में अर्दालीन ने मेज पर रखी वोद्का की एक खुली बोतल उठा ली और पीने लगा। फिर अर्दालीन ने कहा, 'वह बेचारी तातार स्त्री। जैसा कि येफीम कहता था......!'

तभी दीवार के पीछे से स्त्री चीख उठी। सभी का ध्यान उस ओर चला गया। ओसिप ने कहा, 'मैंने उसे भी देखा है।'

मुझसे अर्दालीन ने कहा, 'अच्छा भाई, तुमने भी तो देख लिया न कि मैं कैसा आदमी हूँ।'

मैं तो किसी भयंकर द्वंद्व की कल्पना किए था पर यहाँ तो

देखा कि दोनों कंधे से कंधे मिलाए बैठे हैं और हँस-हँस कर बातें कर रहे हैं। स्त्री दीवाल के उधर से अजीब-अजीब आवाजें पैदा कर रही थी परन्तु सबों ने इसकी उपेक्षा ही की।

ओसिप ने पूछा, 'सब पैसे खतम ?'

'नहीं, कुछ पीटर ने ले लिए थे।'

'तो अभी तुम्हारा भागने का इरादा नहीं है ?'

'क्यों ?'

'तो तुम्हारा दिमाग फिर गया है।'

तभी वह तातार स्त्री एक झटके से भीतर आई और अपना कपड़ा लत्ता लेकर चली गई। ओसिप ने कहा, 'युवती है।'

अर्दालोन ने कहा, 'येफिम गलत नहीं था। उसके दिमाग में हर समय तातार स्त्रियाँ ही चक्कर काटती हैं। लेकिन तातार स्त्री बहुत सुख देती हैं। वे देह में आग लगा देती हैं।'

'अच्छा होशियार रहना नहीं तो उससे छुटकारा न पा सकोगे।' ओसिप ने आगाह किया और नमस्कार कर के उठा।

वापस आते समय मैंने ओसिप से पूछा, 'वहां क्यों गए थे ?'

'सिर्फ देखने के लिए। मैं उन्हें बरसों से जानता हूं। वह कोई पहला व्यक्ति नहीं जो इसके चंगुल में फंसा है।' फिर क्षण भर चुप रह कर कहा, 'यह सब वोद्का का नशा है, लेकिन इसके बिना जीवन कितना सूना भी तो होता है।'

'वोद्का के बिना ?'

'हाँ, पीकर देखो, जैसे दूसरी दुनिया में पहुँच जाओगे।'

अर्दालोन कई दिन के बाद काम पर वापस आया। लेकिन बहुत कम दिनों के लिए। बसन्त में मैंने उसे बन्दरगाह के मजदूरों के बीच देखा। हम दोनों ने मित्रों की तरह

नमस्कार किए। दोनों ने साथ ही साथ चाय भी पिया। उसने कहा, 'याद रखो, मेरा हाथ कितना अच्छा था। मैं बहुत कमा सकता था।'

'लेकिन क्यों नहीं कमाया ?'

'नहीं, मैं ऐसे काम पर थूकता हूँ।'

मैंने देखा कि साल भर पहले यह अर्दालोन कितना शांत व्यक्ति था और अब कितना धूर्त हो गया है। वह जैसे हर से लड़ने को तैयार था, उसने कहा, 'मैं यहाँ सब का नेता हूं।'

ओसिप को पता लग गया था कि मैं उससे मिलता हूं। उसने एक दिन पिता की तरह स्नेह पूर्ण डांट बताई, 'बेटे होशियारी से रहना।'

मैंने उसे समझाना चाहा कि मुझे केवल उनके मस्ती के जीवन के प्रति ही आकर्षण है। वह हँस पड़ा, 'हवा की चिड़ियाँ।'

उसके अलावा एक दिन मालिक ने भी मुझे आगाह किया।

फिर तो धीरे-धीरे मैंने उधर जाना छोड़ दिया। एक बार मैं वहीं छत पर अर्दालोन और रोबनोक के साथ बैठा हँसी मजाक में मजा ले रहा था कि अचानक एक स्त्री आई। सामने एक कपड़ा फेंक कर उसने कहा, 'दोस्तो ! यह पेटीकोट कोई खरीदेगा ?'

अचानक चारों ओर से स्त्रियाँ दौड़ आईं और बेचनेवाली को घेर लिया। मैंने फौरन पहचान लिया कि यह कोचिन नाता-लिया थी। उसने सौदा बेचा और चौथे चली। जब तक मैं दौड़े जाऊँ वह गायब हो गई थी। परन्तु अन्त में मैंने खोज ही लिया, 'कहो कैसी हो ?'

'अरे वाह, तुम यहाँ कैसे ?' मुझे देख कर वह बिल्कुल

घबड़ा गई थी। मैंने उसे बताया कि मैं वहाँ रहता नहीं यों ही आया था।

'वाह यह भी भला कोई आने का स्थान है? तो तुम अब औरतों के चक्कर में हो।'

मुझे एक होटल के दरवाजे पर ले जाकर उसने कहा, 'आकर एक गिलास चा पिओ।'

मेरे प्याले में चा उंडेलते हुए उसने कहा, 'मैंने अभी ही नाश्ता किया है। और कल रात को मैंने बहुत शराब पी थी पर यह न बताऊँगी कि किसके साथ पी थी।'

मुझे उस पर तनिक दुख ही हुआ। मैं उसकी बेटी के विषय में जानने को बहुत उत्सुक था। जब उसने थोड़ी चाय और शराब पी तब उसमें उस गली की साधारण स्त्री की स्वाभाविकता स्पष्ट दिखाई पड़ी। लेकिन ज्योंही मैंने उसकी बेटी के लिए प्रश्न किया कि वह एकाएक गम्भीर हो गई।

'तुम क्यों इतने उत्सुक हो? मेरे बेटे, उस पर हाथ न लगा सकोगे। उसे अपने दिमाग से निकाल दो।' और थोड़ी देर में जब उसने और अधिक पी लिया तो बोली, 'मेरी बेटी और मुझमें कोई संबंध नहीं है। मैं तो केवल एक धोबिन हूँ—वैसी पढ़ी लिखी लड़की की माँ नहीं बन सकती। वह अध्यापिका बन कर चली गई है जहाँ वह एक धनी मित्र के साथ रहती है सो——' एक क्षण रुक कर फिर बोली, 'और तुम गली की स्त्रियों के पीछे---'

थोड़ी देर तक मुझे शून्य दृष्टि से देखकर उसने कहा, 'अब तुम यहाँ न आना। मैं प्रार्थना करती हूं।'

उसके आँखों से अचानक आँसू बहने लगे जिससे मैं भी द्रवित हो उठा। उसके आँसू चा के प्याले में चू पड़े। प्याले

खिसका कर उसने आँखें पोंछ लीं और मैं उसे अधिक सहन न कर सका। उठ कर कहा, 'नमस्कार।'

'क्या ? जा रहे हो ?' उसने शून्य में ही जैसे कह दिया।

मैंने वापस आकर अर्दालोन को खोजा ताकि मैं उससे नातालिया के विषय में बातें कर सकूँ। परन्तु वे दोनों ही न मिले—न अर्दालोन न रोबेनोक। बाहर आकर मैंने नातालिया को देखा जो रो-रोकर रुमाल गीलाकर रही थी और वह अपने बाल भी हाथ से संवार रही थी। उसके पीछे ही अर्दालोन और रोबेनोक आ रहे थे। वे चीखे, 'आओ तुम भी शामिल होकर इसका मजा लो।'

गुस्से में नातालिया घूमी। उसके बड़े-बड़े स्तन हिले, आंखें आग बरसाने लगीं। वह चीख उठी, 'आओ मुझे मारोगे ?'

मैंने अर्दालोन को कस कर जकड़ लिया। उसने मुझे आश्चर्य से देखा। मैंने डाँटा, 'तुम्हे क्या हो गया है ? उसे छूना मत !'

वह ठठाकर हँस पड़ा, 'तो वह तेरी प्रेयसी है ? वाह नातालिया !'

रोबनोक भी हँसी में साथ दे रहा था। मैंने उसे धक्का दिया। डर कर वह भाग गया। उसके बाद मैं उधर फिर कभी न गया। एक बार अर्दालोन मुझे मिला और मैंने उसे बताया कि नातालिया को उनके सताने के कारण मैं कितना दुखी हूँ तो उसने हँस कर कहा, 'तो तुमने सब को गम्भीरता पूर्वक लिया। हम लोग तो केवल मजाक कर रहे थे।'

'तुम्हें मजाक करने का क्या हक था ?'

मेरा कंधा उसने हिलाया। फिर कहा, 'मैं समझता हूं।'

उसने पी रखा था। इसीलिए उस दिन भी क्रोध आने पर भी मैंने उसे क्षमाकर दिया।

उन्नीस

जाड़े के कारण मेले में कोई कार्य न था अतः मेरी शामें बिल्कुल खाली रहती थीं। फिर मैं मालिक के परिवार को 'मास्को गजट' पढ़कर सुनाया करता लेकिन रात का काफी समय मैं अपने पसन्द की किताबें पढ़ने में बिताता।

एक दिन जब घर की स्त्रियाँ गिरजा गईं थीं और बीमार होकर मालिक पड़ा था तो उसने प्रश्न किया, 'क्या यह सच है कि तू कविताएँ बनाता है, तो एक पढ़ कर मुझे भी सुना।'

मैं इन्कार न कर सका और कुछ कविताएँ सुनाईं जो उसे प्रभावित न कर सकीं। परन्तु उसने कहा, 'कोशिश करो। शायद तुम पुश्किन जैसा लिखने लगो। क्या इसे पढ़ा है ?'

रविवार को दोपहर के खाने के बाद से नौ बजे तक मैं बेकार रहता था। मैं इधर-उधर घूमा करता। याम्स्की स्ट्रीट के एक होटल का मालिक संगीतप्रिय व्यक्ति था। वह गवैयों को बुलाता था और उन्हें, वोद्का, बियर और चाय पिलाता था।

गाने वाले ऊँची जगह पर बैठते। उनमें सबसे अच्छा क्लेशोव नामक था। उसकी सुरीली आवाज और उसका छोटा

शरीर अनुपात से ठीक ही था। क्लाउजी लीजा नामक एक स्त्री भी दूर बैठकर उसका संगीत सुनती।

एक बार जब गाना गाकर वह चला गया तब होटलवाले ने उसे छेड़ना शुरू किया, 'क्लेशोव के साथ एक मजाक रहे तो कितना अच्छा हो।'

लेकिन उसने इन्कार कर दिया। होटल वाला हमेशा ही क्लेशोव को खूब पिला देता था। लेकिन दो तीन गीत गाकर वह ऊनी चादर लपेट लेता और टोपी पहन कर चल देता। यह संभवतः उसे बुरा लगता और उसके जाने के बाद वह दूसरे गवैये को बुलाकर गाना सुनता। दूसरे सुनने वाले कहते, 'नहीं वह इससे अच्छा गाता है।'

मैं बराबर क्लेशोव के गुण गाया करता। एक दिन मालिक ने कहा, 'मैं भी सुनूँगा।'

एक रात को मैंने प्रबंध किया। गानों का प्रभाव यह हुआ कि मेरा मालिक रोने लगा। मैंने घर जाते समय भी क्लेशोव का साथ दिया। रास्ते में उसने कहा, 'पेश्कोव, हम लोग होटल में खाना खाएँगे।' हम लोग होटल में गए और जब बैठ गए तो उसने कहा,

'हमारा जीवन भी क्या है? किसी से दिल की दो बातें नहीं की जातीं। पत्नी तो केवल बच्चों की माँ होती है। पत्नी का प्यार केवल तब तक रहता है जब तक बच्चा न हो।'

उसकी बातें मेरे कानों में कई दिनों तक गूँजती रहीं। एक दिन मालिक ने कहा, 'मुझे एक दाशा मिल गया है। एक स्त्री, जिसका उसका पति साइबेरिया का बन्दी बना दिया गया है। मैंने उसे रुपये दिए, लगभग अस्सी रूबल। पर उसने कहा कि मुझे प्यार तो करती है। लेकिन उसके पति ने उसके लिए

ही पाप किए और सजा पाई। वह अपने को उससे अलग नहीं समझती। वह नहीं चाहती कि मैं उससे अधिक मिलूँ।'

वह रुका और मैं भाँप गया कि वह शराब पिए है। वह कह रहा था, 'छः बार मैं उसके पास गया पर वह न मिली। अब तो शायद कहीं चली गई है।'

बीस

तीन वर्षों तक मैं वहाँ ओवरसियर की तरह रहा जब मैं काम करता होता तो चोरी से बढ़ई ताला आदि चोरी कर लेते मालिक को शक हुआ कि मैं भी चोरों में हूं।

मैं वहाँ से ऊब गया था। तुर्गनेव के उपन्यास मुझे अब बहुत भाते थे। मेले से लौटते समय शाम को पहाड़ी पर से खड़े होकर काफी देर तक मैं वोल्गा की छवि देखा करता।

एक बार जब मैं इसी धुन में क्रेमलिन पहाड़ी के नीचे एक पार्क की बेंच पर बैठा था तब मेरा, मामा जैक आकर बैठ गया। मैंने उसे आते न देखा था। न एकाएक देखकर पहचान ही सका। मुझे नानी से पता लग गया था कि जैक अब काम काज न करके सबों से बिना कारण ही लड़ता फिरता है। वह आज देखने में बहुत अस्वस्थ लगा। बहुत देर मैं उससे बातें न कर सका। मैं बार-बार सोच रहा था कि पूछूँ कि उसने किस प्रकार सिगान को क्रास से नीचे दबा कर मार डाला था। पर मैं पूछ न सका। मुझे पता लगा कि वह अब जेलखाने का एक सिपाही (वार्डर) बन गया है। बड़ी देर तक कैदियों की बातें होती रहीं।

जब हम लोग विदा हुए तो काफी रात बीत गई थी। मैं शहर के बाद खेतों को पार करने लगा—आधीरात हो चुकी थी। धीरे-धीरे मैं वोल्गा के किनारे आ पहुँचा। वहीं बैठ कर मैं सोचने लगा कि कब वह समय आवेगा जब इन्सान दूसरे के लिए जीना सीखेगा।

तीसरा भाग

—:o:o:o:—

जहाँ जो सीखा

— १ —

और अब मैं कजान के विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिये जा रहा था। पढ़ने का यह विचार मुझे एक विद्यार्थी मित्र यवरीनोव ने दिया था। वह बहुत प्यारा युवक था, बहुत सुन्दर और औरतों की तरह मासूम आँखों वाला। वह नानी के कमरे में ही रहता था। तभी मेरी उसकी जान पहचान भी हुई थी। अक्सर मेरे हाथों में पुस्तक देखकर अचानक उसे दिलचस्पी पैदा हुई और वह मेरा मित्र बन गया। वह इस बात के लिये पूरी तरह धारणा बना चुका था कि मुझमें मेरी विलक्षण प्रतिभा है जिसका विकास होना ही चाहिए। अपने माथे पर झुक आये बालों को बहुत शान से पीछे फेंक कर उसने निर्णय दिया, 'तुम तो विद्या के लिये पैदा ही हुये हो!'

यवरीनोव इतना प्रभावित कैसे! वह बातों में मेरी तुलना महान लोमोनोसोव* से करता जो मेरी ही तरह अपने आप शिक्षा ग्रहण कर के महान बना था। यवरीनोव के ही मुकाम

*लोमोनोसोव को रूसी साहित्य का आदि लेखक मानते हैं। यह अपने वैज्ञानिक खोजों के लिए भी काफी मशहूर है।

पर उसके साथ ही मैं कजान गया। उसने मुझे बताया कि मुझे कुछ परीक्षायें देनी होंगी फिर मुझे वजीफा मिलेगा। और पांच साल में मैं एक शिक्षित व्यक्ति हो जाऊँगा। यह यवरीनोव के दिल की कोमलता का एक सुबूत है जो उस समय १९ वर्ष का था।

यवरीनोव के जाने के दो सप्ताह बाद मैं भी गया। नानी ने विदा किया, 'देख सब के साथ लड़ने को तैयार न रहना। क्योंकि क्रोध और झगड़ालू आदत तुझमें बहुत आ गई है। अपने नाना को ही देख। आज इसी आदत के कारण उसकी क्या हालत है। जीवन भर वह कटुता ही बटोरता रहा। अच्छा जा।'

फिर आंखों के आंसू पोंछ कर उसने कहा, 'शायद हमारी अब भेंट न हो क्योंकि तेरे पांव में तो चक्र है। तू घूमता रहेगा और मैं मर जाऊँगी।'

फिर मैं भी उस प्यारी सी नानी के प्रति तनिक लापरवाह हो गया। कभी ही कभी उससे मिलने आता। फिर अचानक मुझ यह भावना प्राप्त हुई कि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिये क्योंकि कोई दूसरी महिला मुझे शायद ही इतना प्यार करे।

डेक पर से मैं विदा के समय देखता कि वह एक हाथ से तो क्रास बना रही थी और दूसरे से शाल के किनारे से आंखें पोंछ रही थी।

और अब मैं फिर तातारी कजान में हूँ! एक बहुत
[illegible] मंजिले मकान में। गली की अंतिम छोर पर!

इसी मकान में बाहर की ओर एक अँधेरा कमरा भी था जिसमें लावारिस कुत्ते और बीमार बिल्लियाँ रहतीं और मर भी जाती थीं। यह घर भी मेरी पाठशालाओं में एक था।

यवरीनोव की माँ और दो बेटे खिड़की वाले भाग में रहते थे। बाजार से लौट पहले ही दिन जब वह आई और अपनी खरीदारी की वस्तुएँ मेज पर बिखेर दिया तभी मुझे उसके मानसिक परेशानी का अन्दाजा लग गया। वह बहुत नाटी सी स्त्री थी। उसके चेहरे को देखकर उसके अन्तर की चिन्ता का आभास मिलता था।

एक सुबह! मेरे पहुंचने के लगभग तीन दिनों बाद, जब दोनों बेटे खाट पर ही थे, मैं उसको सब्जी बनाने में मदद देने के इरादे से रसोई घर में गया। उसने मुझसे पूछा, 'तुम कज़ान क्यों आए?'

'विश्वविद्यालय में भरती होने के लिए?'

सुनकर उसकी फैली हुई पुतलियाँ ऊपर को उठीं और पीले माथे पर रेखायें उभरीं। इसी बीच चाकू से उसकी उँगली भी कट गई।

कटी उँगली चूसते हुये वह कुर्सी पर बैठ गई। लेकिन दूसरे ही क्षण उठ खड़ी हुई। उँगली में रूमाल लपेट लिया और दृढ़ता से कहा, 'तू आलू अच्छा छील सकता है!'

वाह! मुझे जहाज की रसोईगीरी का नाज था।

'और तू समझता है कि तुझे विद्यालय में जगह मिल जायेगी?'

उस समय मैं मजाक न समझता था और हर चीज को बहुत गम्भीरता से ग्रहण करता। मैंने उसे अपनी योजना बताई कि किस प्रकार मैं निक यवरीनोव के बताये रास्ते पर ज्ञान के मंदिर में घुसना चाहता हूँ।

'ओफ ! निक, निक !' वह तनिक चीखी ।

ठीक उसी क्षण निक रसोई में आया—अपना हाथ मुँह धोने । वह अभी भी नींद के खुमार में था ।

उसने मुझे बताया था कि साधारणतया स्त्रियाँ, पुरुषों के मुकाबले में अधिक भावुक होती हैं । इसलिये मैं उसकी माँ से बातें करते समय सदा सतर्क रहता था ।

यह वर्णन करना कठिन है कि निक किस तरह सदा ही गुरु की तरह मेरे मस्तिष्क में कुछ नया ज्ञान भरने को आतुर रहता, और मैं भी उसकी सीखों को अमृत की तरह ग्रहण करता ।

निक जाने क्यों मुझे एक अच्छा मनुष्य बनाने पर तुल गया था लेकिन उसे इतना अधिक समय न मिलता था जितना वह चाहता था । मेरे कारण अपनी उस जवानी में वह तनिक और जिम्मेदार भी हो गया जो उसकी बेचारी दुखिया माँ के लिये उसकी ओर से उचित न था । मैं इससे खूब परिचित था कि वह किस तरह अपने बेटों को पेट भरने का सदा धोखा देती और मुझे भी खाना खिलाती थी । इससे उसकी दी हुई रोटी का असर मेरे मन पर यों पड़ता जैसे किसी ने मेरी आत्मा पर पत्थर रख दिया हो । मैं खुद भी किसी काम की तलाश करने लगा ।

मुझे उनका खाना न खाना पड़े इसलिये मैं सुबह ही निकल पड़ता था । लेकिन जब मौसम खराब होता तो मैं किसी जले मकान में शरण लेता जहाँ कुत्ते और बिल्लियों की लाशें ही पड़ी होतीं और वहीं मैंने अनुभव किया कि विश्वविद्यालय में पढ़ने का मेरा विचार बिल्कुल कल्पना ही है और यदि मैं फारस गया होता तो अधिक काम का होता । [illegible] उस ओर मैं कल्पना करने लगता कि वहाँ क्या हो सकता है ! इस प्रकार

आँखें बन्द कर के सोचना यानी दिन में ही सपने देखना एक प्रकार से मेरे लिये आदत की चीज हो गई। मुझे न तो अब किसी की मदद अच्छी लगती न मैं अधिक भाग्य पर भरोसा करता। मुझ पर दुर्दिन की जितनी भी मार पड़ती मैं उतना ही दृढ़ और आत्म विश्वासी होता गया।

पेट की भूख से परेशान होकर मैं वोल्गा के किनारे डेक पर चला जाता। वहाँ गर्मियों में कोई भी दिन भर में पन्द्रह से बीस कोपक तक कमा सकता था। मैं भी वहाँ के मजदूरों में शामिल हो गया। वहाँ के दुर्व्यवहार मुझे बुरे नहीं लगे।

बाराकीन जो पहले किसी अध्यापकों के कालेज का विद्यार्थी था, अब यहाँ काम करता था। उसने मुझे बहुत प्रभावित किया। उसने मुझसे पूछा, 'तुम लड़कियों की तरह अपना सारा बदन इस प्रकार क्यों ढके रहते हो? तुम्हें बेइज्जती का डर है? किसी लड़की के लिए यह उचित है परन्तु तुम्हारे लिये यह एक मुसीबत है।'

दाढ़ी-मुच्छ विहीन, अभिनेताओं की तरह लगने वाला, तेज और सुन्दर बाराकीन काफी पढ़ा लिखा भी था। उसकी प्रिय पुस्तक थी, 'दी काउन्ट आफ मॉन्टेक्रिस्टो'।

बाराकीन स्त्रियों से भक्ति करता था। स्त्रियों के विषय में बातें करते समय वह काँप उठता था। मैं स्त्रियों के विषय में उसे गौर से सुनता।

'औरत, औरत!' कहते हुये उसके पीले चेहरे पर लाली दौड़ जाती और आँखें चमक उठतीं, 'एक औरत—सब कुछ! उनमें किसी पाप नहीं है। बस वह जीती है, प्यार के लिए इससे अधिक या कम कुछ नहीं।'

कहानी सुनाना उसका एक खास गुण था वेश्याओं के ऊपर उसके करुण और अनचाहे प्यार के ऊपर उसने बहुत कुछ

लिखा था। इस विषय पर बनाये उसके गीत वोल्गा के किनारे गाए भी जाते थे। उनमें से एक तो बहुत ही मशहूर था—'गंदे कपड़े, गरीब और सुन्दरता भी नहीं······कौन इससे शादी करेगा'

निरन्तर ग्रुसोव भी मेरे प्रति अच्छा ही व्यवहार करता था। वह रहस्यपूर्ण, सुन्दर और शरीफ व्यक्ति, उसकी उँगलियाँ, पतली पतली जैसे किसी संगीतज्ञ की हों। गाँव के पास उसकी दूकान पर लिखा था, '—बहुत अच्छी तरह घड़ियों की मरम्मत होती है।' सचाई यह है कि उसका काम चोरी के माल को बेचना था।

वह मुझे सीख देता, 'चोरी न करना' अपनी भूरी दाढ़ी हिला कर वह फिर कहता, 'पेश्कोव, मैं तुम्हारे लिये दूसरी अच्छी राह देख रहा हूँ। तुम पर किसी का प्रभाव है।'

'प्रभाव ! तुम्हारा मतलब ?'

'जो किसी उत्सुकता वश ही कोई काम करे।'

मैं वाशकिन की भाषण कला और बातों में नये शब्दों के प्रयोग पर मुग्ध था। एक बार उसने कहा था, 'बर्फ से ढंकी रातों में मैं उसी तरह हूँ जैसे ओक के वृक्ष पर बैठा कोई उल्लू। और मेरी प्रेमिका, उसी आँखों में आत्मा की पवित्रता चमकती है। 'डार्लिंग' वह जब कहती तो उसके शब्दों की ईमानदारी बोल उठती—'मैं धोखा नहीं दे रही।' मेरा मन जानता था कि वह झूठ कह रही है परन्तु मैं विश्वास न कर पाता।'

और जब वह अपनी कहानी बताता तो उसका शरीर सिहरने लगता उसकी आँखें बन्द हो जातीं और हाथ वह हृदय पर रख लेता।

और त्रुसोव ! उसके पास सुनाने के लिये साइबेरिया की अनेक कथाएँ थीं। खीवा, बुखारा की कहानियाँ।

अक्सर गरमी की रातों में छोटी सी नदी कजानका के पार जाकर हम लोग पिकनिक करते। वहाँ अधिकतर व्यक्तिगत बातें होतीं। अपनी पत्नियों की बातें और किसी भी स्त्री की बातें।

मैंने भी कई रातें उनके साथ बिताईं। ऊपर काला आकाश और टिमटिमाते तारे थे। वोल्गा पास थी अतः उसमें जहाजों के ऊपर की बत्तियाँ उस कालिमा के बीच सुनहली मकड़ी की तरह लगतीं।

वहाँ जो बातें होतीं उन्हें सुनकर तनिक दुख ही होता क्योंकि वे अपने अपने दुखी विचार ही जीवन के प्रति प्रकट करते। सभी अपनी अपनी सुनाते रहते। और किसी दूसरे की बात पर कोई भी ध्यान न देता। किसी न किसी झोपड़ी के नीचे बैठे और वोद्का या बियर पीते हुये वे अपनी स्मरण शक्ति से सब घटनायें बताते रहते।

'और मेरे साथ ऐसा हुआ।' उसी अँधेरे में से ही किसी की आवाज आई। और प्रत्येक कहानी के अन्त में एक फुसफुसाहट सुनाई पड़ी, 'हो सकता है। ऐसी घटनायें अक्सर घटती हैं।'

इतना होने पर भी मैं उन्हें—बाशकीन और त्रुसोव—को पसन्द करता था। उनकी बातों में मैं एक युवकोचित रोमांच का अनुभव करता। अब तक पढ़ने के नाम पर कुछ गम्भीर विषय की पुस्तकें भी मैं पढ़ गया था।

इन्हीं दिनों मैंने एक नई बात का अनुभव किया। गवरीलोव के घर के पास के एक छोटे से मैदान में स्कूलों के विद्यार्थी खेलने आते थे। उनमें से एक था जार्ज पोलनेव; उसके प्रति मैं भयंकर रूप से आकर्षित हुआ। जापानियों की तरह सीधे और काले उसके सिर के बाल थे। उसका चेहरा अनेक काले

दागों से भरा था जैसे किसी ने बारूद उसके चेहरे पर रगड़ दी हो। वह बहुत चतुर, खुशदिल और खेल में बहुत तेज था। उसके बहुत तगड़े और गठे हुये शरीर में उसकी बीसों पैबन्द वाली कमीज पर पतलून व फटे जूते बहुत सुन्दर लगते थे। वह जीवन की हर नई घटना को बहुत उत्साह से ग्रहण करता था।

मेरी मुसीबतों के विषय में उसे पता लगा तो मुझे वह अपने साथ ले गया और यह योजना बनाई कि मैं देहाती स्कूल का अध्यापक बन जाऊँ। इसी योजना के अन्तर्गत मैं एक मकान में ले जाया गया जिसे 'मारूसोवका' कहते थे। मुझे मालूम हुआ कि कजान के विद्यार्थियों में यह मकान तीन पीढ़ी से मशहूर है।

ऐसा लगा कि इस बहुत बड़े मकान में हर समय तूफान चला करता हो। इसमें विद्यार्थी, वेश्याएँ और बेकार आदमी ही रहते थे। जार्ज सीढ़ी के पास बरामदे नुमा एक कमरे में रहता था। खिड़की के पास ही उसकी खाट पड़ी रहती थी। इसके अलावा केवल एक कुर्सी व एक मेज—बस यही फर्नीचर थे। इसी बरामदे में तीन कमरों के दरवाजे खुलते थे। दो में वेश्याएँ रहती थीं और तीसरे में गणित का एक अध्यापक। वह बहुत ऊँचा और लाल बालों वाला था। उसके गन्दे कपड़े स्थान स्थान पर इस बुरी तरह फटे थे कि उसका मुर्दे की तरह गला हुआ शरीर देखा जा सकता था। दिन रात वह गणित के प्रश्नों में ही उलझा रहता। बीच बीच में सूखी खाँसी खाँसता रहता।

वे वेश्याएँ उसे लेकर काफी परेशान रहतीं—अक्सर उस पर दया करके रोटी, चाय और चीनी वे उसके दरवाजे के बाहर रख आतीं। और जब वह उन्हें भीतर उठा ले जाता तो

थके घोड़े की तरह नथुनों से तेज साँस लेता। एक रात को तो मैं उसके पागल पने की चीख पर उठ बैठा। वह चीख रहा था, 'यह जेल ! पिंजरा है, जामेट्री एक जेल है।'

मैंने बाद में जाना कि वह गणितज्ञ इस फेर में था कि वह ईश्वर के अस्तित्व को गणित द्वारा प्रमाणित करे। लेकिन वह अपना यह काम पूरा किये बगैर ही मर गया।

जार्ज अपनी जीविका एक अखबार में बारह कोपेक प्रति रात प्रूफ पढ़कर कमाता था। एक दिन जब मैं कुछ भी न कमा सका तो सिर्फ चाय और चार टुकड़े रोटी पर ही काटा। मेरी पढ़ाई चलती थी, अतः काम को बहुत कम समय मिलता।

जार्ज व हम दोनों ही एक खाट से काम चलाते। वह दिन को खाट पर सोता और मैं रात को। प्रति सुबह वह अपनी प्रेस की ड्यूटी से लाल आँखें व बिगड़े चेहरे के साथ आता। हमारे पास अपना कोई रसोई घर तो था नहीं, अतः मैं पास के होटल से भाग कर गरम पानी लाता। खिड़की के पास बैठ कर रोटी व चाय खाते। जार्ज चाय के साथ मुझे वे सभी ताजा खबरें सुनाता जो उसने प्रूफ पढ़ने में देखा था। जार्ज उस मकान की मालकिन—चाँद सी सुन्दर मालकिन पर मुग्ध था यह मुझे मालूम था। वह स्त्री स्त्रियों के पुराने कपड़ों का और गृहस्थी की अन्य वस्तुओं के खरीदने व बेचने का व्यापार करती थी। जार्ज गरीबी के कारण किराया न दे पाता तो उसे तरह तरह के मजाक करता, गाने सुनाता। अपनी जवानी में मालकिन ऑपेरा में गाया करती थी जिसके कारण गाने के प्रति उसका स्वाभाविक मोह था। फलस्वरूप गाना सुनते समय उसके आँखों में आँसू भर आते थे। जिन्हें वह उँगलियों से पोंछती और उँगलियाँ गन्दे रूमाल से।

'तुम भी क्या कलाकार हो जार्ज !' वह बहुत कोमलता से कहती ।

हम लोगों के ऊपर ही कुछ अमीर युवक रहते थे। उनमें एक युवक था, विद्यार्थी। साधारण कद, चौड़ी छाती, और उसके गट्ठे स्त्रियों की तरह कोमल, असाधारणतया छोटा सिर, जैसे कंधों में घुसा जा रहा हो, उसके ऊपर लाल बालों का गुच्छा। उसके रक्तहीन चेहरे में दो हरी आँखें यों चमकती थीं कि देखकर अजीब भावना मन में पैदा होती थी। बड़ी मुसीबतों से वह भी घर से बिना किसी सहायता के विश्वविद्यालय में पढ़ रहा था। वह गाना भी जानता था। मालकिन ने उसका सम्बन्ध एक व्यापारी की स्त्री से करा दिया था जो चालीस वर्ष के लगभग के उम्र की थी और उसका एक लड़का व एक लड़की भी स्कूल में पढ़ते थे। वह पतली और चौड़ी औरत सिपाही की तरह कठोर मालूम होती थी। वह सदा काले कपड़े पहनती तथा पुराने फैशन का हैट लगाती थी।

वह उस विद्यार्थी के पास या तो भोर में आती या शाम को अँधेरा शुरू होने के आस पास। प्लोतनेव और हम उसका दरवाजे से घुसना, मार्च करते हुए चलकर कमरे तक जाना देखा करते। उसका चेहरा भयानक था, दोनों ओठों को यह यों दाबे रहती जैसे ओंठ हों ही नहीं।

वह विद्यार्थी उससे विमुख रहता और छिप भी जाता परन्तु वह बड़ी सतर्कता से उसे खोज लेती जैसे उसने उसका कर्ज लिया हो या वह जासूस स्त्री हो।

'मैं तो अब चला जाऊँगा।' वह जब थोड़ा शराब पिए होता तो कहता, 'मैं गवैया तो कभी बन नहीं सकता।'

'तो यह मूर्खता बन्द क्यों नहीं करते?' प्लोतनेव ने पूछा।

'लेकिन मुझे खेद है। काश, कि तुम जानते कि वह स्त्री कौन है.........लेकिन आप चिन्ता न करें।'

हम लोग काफी जानते थे। अक्सर हम लोगों ने उसे सीढ़ी पर खड़े होकर कहते सुना था, 'खुदा के वास्ते, मेरे प्यारे, खुदा के वास्ते.........।'

हमारे चाय और रोटी के भोजन के पश्चात, जार्ज सोने चला जाता और मैं दिन के काम के लिये निकल पड़ता। अगर भाग्य अच्छे होते तो मैं घर आते समय रोटी और उबली मछली लाता। हम और प्लोतनेव अपना अपना हिस्सा खा लेते, प्लोतनेव प्रेस चला जाता।

मैं अकेला, मारूसोवका के आसपास घूमकर वहाँ के रहने वालों के जीवन को देखता जिनमें हमें बहुत नवीनता मिलती। इस घर में दिन भर कोलाहल मचा रहता। सिलाई के मशीन की आवाज, गाने वालों का अभ्यास करना, एक अर्धविक्षिप्त अभिनेता अपना पार्ट याद किया करता। और उन वेश्याओं के यहाँ से भी अजीब अजीब ध्वनि आया करती। यह सब देखकर मेरे मन में प्रश्न उठता, 'यह सब क्या है?'

वहीं एक युवक और था। उसके बड़ी सी तोंद थी जो उसके पतले पावों के ऊपर बहुत बुरी लगती थी। उसका बड़ा सा मुँह, घोड़ों की तरह बड़े दाँत! उसका नाम रख दिया गया था, 'लाल घोड़ा' वह किसी महाजन से झगड़ गया था जिसके लिए कहता, 'अगर वह मुझे मार भी डाले तो भी वह पकड़ा तो जायेगा। जब से तीन वर्ष [illegible] में [illegible] में उसे [illegible] हूँ।'

'तो यही तेरे जीवन का लक्ष्य है, घोड़े!'

'हाँ!' वह कहता, 'जब तक यह काम पूरा न हो मैं किसी दूसरे के लिये सोच नहीं सकता!

अपने वकील के यहाँ घंटों बर्बाद करके जब वह आता तो साथ में कुछ खाना और शराब लेता आता जो किसी भी विद्यार्थी को बुलाकर साथ ही खाता पीता। वह केवल 'रम' पीता था।

'रम' का नशा चढ़ने पर वह कहता, 'मैं सबों को प्यार करता हूँ। बस वह भर मुझसे नहीं बच सकता—उसे मैं बर्बाद कर दूंगा यदि वह मार भी डाले ....।' फिर पागल पने में वह विद्यार्थियों को डांटता, 'तुम लोग कैसे रहते हो? भूख, जाड़ा, गरीबी? यह सब क्या? ऐसा जीवन बिताकर तुम शिक्षा कैसे ग्रहण करोगे—शायद जार ही यह जाने।' फिर अपने जेब से रुपये निकाल कर कहता, 'लो, लो, तुम्हें जरूरत होगी।' गवैये और दूसरे लोग उस पर झपटते पर वह कहता, 'नहीं नहीं, तुम्हारे लिए नहीं—यह विद्यार्थियों के लिए हैं।'

लेकिन कोई विद्यार्थी उसके रुपये न लेता।

एक दिन 'लाल घोड़ा' दस रुपया की नोट लेकर आया और मेज पर रखा और बोला, 'क्या तुम इसे चाहते हो? मैं तो नहीं चाहता।'

एकाएक वह हमारी खाट पर लेट गया। उसे जैसे फिट आ गया हो। तत्काल ही हमने पानी डाल कर उसे ठीक किया। जब वह सो गया तो प्लेतनेव ने उन नोटों को अलग करना चाहा परन्तु वे इस तरह एक दूसरे से चिपके थे कि पानी में डालकर उन्हें छुड़ाना पड़ा।

लाल घोड़े का कमरा ही खराब था। हर समय शोर, धुआँ, गन्दगी। मैंने पूछा कि जब वह रह सकता है तब होस्टल में क्यों नहीं रहता?

'आत्मा की शान्ति के लिए मित्र!' फिर उसने कहा।

'कुछ गाना होना चाहिये! एक गाना सुनाओ।' उसने ब्लेतनेव से कहा। अपने घुटने पर गिटार रखकर जार्ज ने गाया, 'लाल सूरज उग आ।' उसकी महीन आवाज आत्मा को तृप्त कर रही थी।

सब कोई खामोश बैठे थे। काफी लोग इकट्ठे हो गये थे। उस व्यापारी की स्त्री ने कहा, 'तुम बहुत ही अच्छा गाते हो।'

मारूसोवका के पीछे दो गलियाँ थीं। दूसरी के अन्त में निकीफोरिच का छप्पर था। यह लम्बा बूढ़ा आदमी हमारे जिले में पुलिस कप्तान था। उसके छाती पर अनेक तगमें लगे थे। वह बहुत शिष्ट था। उसकी चमकती और तेज आंखों के कारण वह काफी चतुर भी दिखाई पड़ता था। वह हम लोगों के मकान पर निगाह रखता था। अक्सर दिन में वह आता भी था। अक्सर वह चुपचाप आकर खिड़कियों से भीतर के दृश्य भी देखा करता।

उस जाड़े में मारूसोवका के रहने वाले कुछ किरायेदार पकड़ गये थे। उनमें एक फौजी अफसर स्मीरनोव, और सिपाही सुरातोव भी थे जिनके पास सेंट जार्ज के कई पदक भी थे। इनके अलावा सोलन्तीन, ओलसीआन्कीन, ग्रिगोरिच, क्रिस्तोव और कुछ और थे। इन पर एक गैर कानूनी प्रेस चलाने का जुर्म था। गिरफ्तार होने वालों में एक और था जिसे हम लोग '[illegible]' कहते थे। सुबह ज्योंही मैंने जार्ज को उसकी गिरफ्तारी का समाचार दिया कि उसने घबड़ा कर कहा, '[illegible], जितनी जल्दी संभव हो......' और मुझे पता बताया और कहा, 'होशियारी से जाना वहाँ जासूस लगे होंगे।' मैं उसकी आज्ञा लेकर भागा।'

यह रहस्यमय कार्य मुझे काफी दिलचस्प लगा। वह किसी ठठेरी की दूकान थी, वहाँ घुँघराले बालों वाला एक युवक मिला। वह काम तो कर रहा था लेकिन मजदूर जैसा दिखता नहीं था। कोने में सिर पर चमड़े की पट्टी बांधे एक बूढ़ा भी काम कर रहा था।

'मेरे लिए कोई काम है ?' मैंने पूछा।

बूढ़े ने लापरवाही से कहा, 'नहीं, तेरे लिये नहीं।'

युवक ने मुझे गौर से देखा, और तभी मैंने धीरे से उसके पांव में ठोकर मारी। गुस्से से उसकी नीली आँखें चमक उठीं। उसने हाथ यों उठाया जैसे मारेगा लेकिन मेरे इशारे से शायद वह समझ गया और एक सिगरेट जलाते हुये मुझे ऊपर से नीचे देखने लगा।

'तुम टिखोन हो।' मैंने पूछा।

'मैं—हाँ।'

'पीटर गिरफ्तार हो गया है।'

वह मुझ पर गिरता गिरता बचा, 'क्या, पीटर ?'

'हाँ वह लम्बा बाला व्यक्ति जो राक्षस की तरह चलता था।'

'तो क्या हुआ ?'

'पकड़ गया।'

फिर मैं घर आया। खुश था कि मैंने अपना काम बखूबी पूरा किया। यह मेरे जीवन का सर्वप्रथम जासूसी कार्य था। जार्ज प्लेखनेव ने समझाया, बहुत तेजी मत दिखा, अभी तुझे बहुत सीखना है।'

इसके बाद यवरीनोव के माध्यम से मेरा परिचय भी अजीब अजीब लोगों से हुआ। इसके बाद ही एक मीटिंग हुई। वह जगह शहर से बाहर थी। रास्ते भर यवरीनोव मुझे

समझाता रहा कि मीटिंग की बात को बिल्कुल गुप्त रखना होगा। सामने हम लोगों को एक खेत दिखा। यवरीनोव ने वहाँ एक पीली छाया की ओर इशारा किया। कहा, 'जा, जा, उससे कहना कि तू नया साथी है।'

यह सभी रहस्य मुझे बहुत दिलचस्प लगे।

जो आदमी खेत में दिखाई पड़ा था, उसे जब कब्रगाह के पास मैंने पकड़ा तो पाया कि वह छोटे कद का एक तेज दिखने वाला युवक है। आँखों में चिड़ियों की तरह चमक थी। वह भूरे रंग का ओवरकोट पहने था जैसे स्कूल के लड़के पहनते हैं लेकिन अन्तर इतना था कि लोहे के बटनों की जगह पीतल के बटन लगा लिये थे। फटी टोपी में अब तक स्कूल का चिन्ह बना था। यों देखने में वह एक बूढ़े पक्षी की तरह लगता था।

जहाँ हम लोग बैठे वहाँ झाड़ियों की छाया थी। उसकी बातें बहुत सूखी थीं और मेरे मन में जाने क्यों उसके प्रति अनिच्छा हो गई। पहले तो उसने मेरी पढ़ाई के विषय में कई प्रश्न किये बाद में अपने दल में शामिल होने की सलाह दी। मैंने उससे हामी भर दी और हम अलग हुये।

उस दल में चार पांच व्यक्ति ही थे जिसमें यवरीनोव भी था और मैं उनमें सबसे छोटा था और [illegible] के [illegible] अनभिज्ञ। हम लोगों के मिलने की जगह [illegible] का कमरा था। वह एक अध्यापकों के स्कूल का विद्यार्थी था बाद में उसने अपनी कहानियों का एक संग्रह [illegible] से छपाया था। लगभग [illegible] पुस्तकें [illegible] ने आत्महत्या कर ली। कितने ही मैं ऐसे व्यक्तियों से मिला हूँ जिन्होंने अपनी इच्छा से अपना जीवन समाप्त कर लिया है।

मिलोवस्की एक बढ़ई की दूकान में एक सड़े कमरे में रहता था। वह बहुत अच्छा साथी न था। उसी कमरे में अर्थ-शास्त्र पढ़ने हम लोग जुटते थे परन्तु वहाँ मुझे बहुत ऊब आती थी।

एक दिन हमारे अध्यापक ने देरी की। हमने समझा वे आयेंगे ही नहीं सो दिन मजे में काटने के लिये हम लोगों ने थोड़ी सी वोदका रोटी और खीरा का प्रबन्ध किया। और ज्योंही हम लोगों ने शुरू किया था कि उसकी छाया खिड़की पर दिखाई पड़ी। हम लोग किसी प्रकार भी वोदका छिपा न सके कि टेबिल पर उसकी नजर पड़ गई। लेकिन देखकर भी उसने एक शब्द न कहा जिसके फलस्वरूप मेरे मन में यह अनुभव हुआ कि उसके समक्ष मैं कितना बड़ा अपराधी हूँ यद्यपि वोदका लाने का मेरा प्रस्ताव न था।

अपनी इस पाठशाला के ऊब के बीच भी मैं अक्सर तातारों की बस्ती में घूम आता था जो बिल्कुल ही दूसरे प्रकार का जीवन बिताते थे। उनकी भाषा भी अजीब थी।

सितम्बर के महीने में पारसी वस्तुओं का एक जहाज वोल्गा में आया। माल उतारने के लिये मुझे काम मिल गया। हमारे दल में ४० व्यक्ति थे। हमारा मुखिया चेचक के दागों वाले चेहरे का एक अधेड़ व्यक्ति था। यह दल राक्षसों की तरह काम कर रहा था। दो दो मन के बोरे थे, यों उठाते जैसे खिलवाड़ कर रहे हों। काम के लिये पागल इन युवकों के बीच मुझे बहुत अनुभव हुये।

काम के बीच ही में पानी बरसने लगा। लेकिन सभी काम में जुटे ही रहे। तन पर मुझे बहुत मज़ा लगी। जब काम समाप्त हो गया तो हम लोग एक डोंगा से कज़ान वापस आ गये। सब से पहले वोदका पीने शराब खाने में आये।

वहाँ बाशकिन ने मुझे ऊपर से नीचे तक देखकर कहा, 'तेरे साथ इन्होंने कैसा व्यवहार किया ?'

मैंने सच बता दिया।

'मूर्ख।' उसने कहा, 'मूर्खों में मूर्ख! पागल!' कहते कहते उसकी देह मछली की तरह हिली। कमरे के कोने से किसी ने गाया।

'उस अँधेरी रात में……।

बगीचे में औरत घूम रही थी।'

तभी लगभग एक दर्जन व्यक्तियों ने तालियाँ बजाकर आगे गाया—

'और शहर के चौकीदार ने देखा कि औरत जमीन पर लेटी थी।'

फिर सारा कमरा, हँसी, डाँट, उछल कूद और हिनक ठहाकों से भर गया।

—दो—

मेरा परिचय आन्द्रीव डेरेनकोव से कराया गया। वह एक छोटी सी पंसारी की दूकान किए था। वह काफी तेज आदमी था। उसके छोटी सी साफ दाढ़ी थी। उसके पास सैकड़ों जब्त किताबें थीं जिन्हें वह कजान के विद्यार्थियों और अन्य क्रान्तिकारियों को दिया करता था।

उसकी यह दूकान एक धार्मिक व्यक्ति के घर के एक भाग में थी। इस दूकान के पीछे का दरवाजा एक बड़े कमरे से लगा हुआ था। उसी कमरे में ये जब्त किताबें भरी थीं। उनमें काफी पुस्तकें हाथ की लिखी थीं जैसे नोट बुकों में उतारी गई हों। उनके नाम थे—ऐतिहासिक पत्र, हम क्या करें! जार की भूख। बहुत अधिक पढ़ी जाने के कारण ये काफी बुरी हालत में थीं।

जब मैं पहली बार दुकान में आया तो डेरेनकोव किसी ग्राहक से बातें कर रहा था, उसने इशारे से मुझे उसी कमरे में जाने का संकेत किया। उस कमरे में एक वृद्ध व्यक्ति बैठा था। उसने दाढ़ी हिलाई। फिर मुझे देखकर कहा, 'मैं आन्द्रीव

का बाप हूँ। तू कौन है? मैं समझता हूँ तू कोई परेशान विद्यार्थी है।'

मुझे खिड़की के पास खड़ा छोड़ वह रसोई घर की ओर चला गया। मैंने देखा कि एक जवान लड़की रसोई घर के दरवाजे पर खड़ी थी। वह बहुत गोरी थी, बाल घुँघराले थे, और गोल चेहरे में दो आंखें बिजली की तरह चमक रहीं थीं। वह क्रिस्मस के कार्डों पर बने चित्रों सी सुन्दर लगी।

'तुम डरते हो? मैं क्या इतनी डरावनी हूँ?' उसने बहुत धीमी आवाज में कहा और मेरी ओर बढ़ी। मैं खामोश था। इस घर में सब कुछ कितना अजीब था।

बहुत सम्हाल कर वह चल रही थी। आकर वह कुर्सी पर बैठ गई। उसने बताया कि उसे अच्छे हुये केवल चार दिन हुये हैं। तीन महीने तक हाथ पाँव में लकवा के कारण वह खाट पर थी। 'यह नसों की बीमारी है।' उसने कहा।

मैं सोचने लगा।

'मैंने तुम्हारे बारे में बहुत सुना है।' उसने उसी प्रकार कहा, 'मैं देखना चाहती थी कि तुम कैसे हो?'

उसकी आँखें मेरी देह में चुभ सी रही थीं। उससे बातें करना मेरे लिये कठिन था। मैं बातें शुरू न कर सका। घब-राहट में मैं दीवारों पर लगे हर्जेन, आरवीन और पीसेवाल्स्की के चित्रों को देखता रहा। तभी मेरी ही उम्र का एक युवक दुकान से आया और सीधे रसोई घर में चला गया। फिर उसने पुकारा, 'कहाँ हो मेरिया!'

'एलेक्स, यह है मेरा छोटा भाई।' उसने कहा, 'तुम बोलते क्यों नहीं? शरमाते क्यों हो?'

तभी आन्द्रीव डेरेनकोव आया। जेबों में दोनों हाथ डाले था। आकर उसने अपनी बहन के सिर पर के सुन्दर बालों को सहलाया फिर मुझसे पूछा, 'तुम किस प्रकार का काम चाहते हो?' उसके पीछे पीछे एक दुबली पतली लाल बालों और हरी आँखों वाली एक लड़की आई। मुझे घूर कर वह बोली, 'आज इतना ही काफी है।' कहकर वह मेरिया को लिवा गई। मेरिया नाम बहुत साधारण था अतः मुझे अधिक नहीं भाया।

मैं भी अजीब मनस्थिति में वापस आया। लेकिन दूसरे शाम को फिर मैं गया। पता नहीं क्यों मुझे उनके जीवन के प्रति आकर्षण था।

उस बूढ़े पिता ने उसी प्रकार कृत्रिम हँसी से कहा, 'मुझे मत छूना।'

आन्द्रीव का हाथ टूटा था यह मुझे आज मालूम हुआ जब वह केवल जैकेट पहने हुये मेरे सामने आया। उसका छोटा भाई एलेक्स उसकी दूकान में मदद करता था, एक और विद्यार्थी भी उसका सहायक था लेकिन वह केवल रविवार को ही आता था। वह पंगु बहिन कभी ही कभी आती तो मुझे परेशानी होती। यह घर एक सूदखोर स्त्री का था। वह स्त्री भी देखने में बिल्कुल गुड़िया सी थी। केवल आँखें तेज व कठोर थीं। लाल बालों वाली उसकी लड़की नास्त्या भी उसके साथ ही रहती।

विद्यार्थी गण नये अखबारों से [illegible] काट कर लाते और [illegible] में मदद करते। [illegible] मोटी मोटी किताबें सदा [illegible]

उस गुप्त पुस्तकालय में लगभग एक दर्जन लोग प्रतिदिन आते। उनमें एक जापानी—पैन्तेलीमन सातो नामक विद्यार्थी भी था। कभी-कभी बड़े ऊँचे कंधों वाला एक व्यक्ति भी आता—उसकी बड़ी-बड़ी दाढ़ी और तातारों की तरह घुटा हुआ सिर भी था। बहुत कसी हुई भूरे रंग की जैकेट, गर्दन तक बटन बन्द किये रहता। जब कभी वह घूरकर मुझे देखता तो मैं डर के मारे घबड़ा जाता। उसकी खामोशी भी मुझे परेशान करती थी। मुझे आश्चर्य था कि हरकुलीस जैसा यह व्यक्ति बोलना भी जानता है या नहीं।

सभी उसे खोखोल कहते थे। मैं समझता हूँ कि केवल आन्द्रीव ही उसका ठीक नाम जानता रहा होगा। इतना तो मैं जान गया था कि उसे दस वर्ष का देश निकाला था और वह याकुत्स्क* में था। इस बात से मेरे मन में उसके प्रति अधिक आकर्षण बढ़ा परन्तु मेरे दब्बू स्वभाव के कारण परिचय न हुआ! सभी के बारे में फौरन जानने की मेरी लालसा का ही यह फल था। मैं अन्य सभी लोगों [illegible] वाले, और दूसरे सभी। मैं जैक ओ[illegible]। था पर इस व्यक्ति को न जाना जिसके सामने सभी दुबके रहते थे।

आन्द्रीव डेरेनकोव ने बताया था कि उसकी सारी आमदनी दूसरों के लाभ के लिए ही खर्च होती थी। अक्सर अकेले में जब सभी लोग चले जाते तो रात काटने को वह मुझसे बातें करने लगता था। हम [illegible] [illegible] में [illegible] पर [illegible] बातें करने लगते थे। वह अक्सर कहता, "ये जो लोग आते हैं वे एक दिन सैकड़ों

* [illegible]

हजारों की तादाद में आवेंगे और रूस पर इन्हीं का अधिकार हो जायगा।' वह मुझसे दस वर्ष बड़ा था। मैंने अनुभव किया कि वह लाल बालों वाली नास्त्या से बहुत प्रभावित है। वह उसकी उत्तेजनापूर्ण आँखों से कतराता भी है। औरों के सम्मुख वह बहुत बड़प्पन से उससे बातें करता था। लेकिन बहुत उत्सुक निगाहों से वह उसके प्रत्येक हाव-भाव को भी समझता रहता था। जब कभी उससे वह अकेले में बातें करता तो उसे लज्जा भी आती थी

कोने में बैठी उसकी छोटी बहन भी उनकी नाटकीय बातें गौर से देखा करती थी।

शरद ऋतु के आते आते बिना काम-काज के मेरा जीवन एक भार सा हो गया था। अपने चारों ओर के वातावरण में अवश्य ही मैं खुश था लेकिन मैं ज्यादा काम न करता और दूसरों की रोटी ही खाता था जो अक्सर मेरे गले में फँसती सी जान पड़ी। जाड़ों के लिये मैंने काम की तलाश की। अपने इस जीवन को मैंने अपनी कहानियों में भी चित्रित किया है परन्तु यह जीवन सम्पूर्ण मेरे लिये मानसिक और शारीरिक दोनों ही रूपों में कष्टप्रद था।

मुझे वसील सेमेनोव की दूकान में काम मिल गया। यहाँ का काम मेरे मित्रों और मेरे बीच एक दीवार की तरह था। कोई मुझसे मिलने न आता और चौदह घंटे रोज काम करके मैं किसी तरह भी डेरेनकोव से न मिल पाता। क्योंकि छुट्टियों के दिन मैं केवल सोकर थकान मिटाता था। लेकिन वहाँ के अन्य काम करनेवालों का भी मुझे काफी स्नेह मिल गया था। यहाँ जिन लोगों का मेरा साथ हुआ था वे भी अजीब लोग थे! काम के बाद कुछ निश्चित गलियों में वे थकान मिटाने आते और बोतल या औरत की खोज में मारे-मारे फिरते। तत्पश्चात

के दिन 'खुशी के घर' में जरूर जाते । एक सप्ताह पहले से ही इस की तैयारी होती । फिर उस तिथि के बाद उनके संस्मरण सुनने लायक होते थे । वे अपनी विजय की बातें करते कि उन्होंने कितनी औरतों से प्रेम किया । उस 'खुशी के घर' में कोई भी एक डबल देकर पूरी रात किसी स्त्री के साथ बिता सकता था । लेकिन मेरे भीतर किसी स्त्री से सम्पर्क की कल्पना अजीब कम्पन पैदा कर देती । फिर भी मेरी दिलचस्पी इस ओर कम न हुई ।

मेरा यहाँ किसी भी स्त्री से प्रेम सम्बन्ध कायम न हो सका था, इससे मैं वहाँ बड़ी बुरी स्थिति में पड़ गया था । स्त्री और पुरुष दोनों के विरोधों का मैं पात्र बन गया । अक्सर वे मुझे बाहर चले जाने को कहते ।

'क्यों ।'

'तुम्हारा यहाँ रहना आवश्यक नहीं ।'

यद्यपि मैं इन शब्दों का अर्थ खूब अच्छी तरह समझता था फिर भी मैंने प्रश्न किया तो उत्तर मिला, 'हम नहीं चाहते कि तुम यहाँ रहो । दूर रहो नहीं तो हमारा मजा किरकिरा हो जायगा ।' [illegible] आर्डीपोस कहता ।

चालीस वर्ष की अधेड़ स्त्री थेरेसा बोव्हदा इसे चलाती थी—वह पोलैंड की स्त्री थी । उसने मुझे देखकर एक लड़की से कहा, 'इसे सम्हाल, मेरे अच्छे साथी के लिये तो कोई भी दुल्हन मिल ही जायगी ।'

[illegible] वह । वो और जब दिखे होती थी तो उसे समझा-ना कठिन होता था । अक्सर जब वह [illegible] दोनों को भिन्न-भिन्न मनुष्यों के लिये उसकी पहचान देख कर मैं दंग रह जाता ।

'ये विद्यार्थी बड़े बुरे होते हैं।' उसने कहा, 'भला वे लड़कियों के साथ क्या नहीं करते ! फर्श पर साबुन रगड़कर फिसलन पैदा करके एक के बाद एक कई लड़कियों को गिरा देते हैं।'

'तुम झूठ कह रही हो।' मैं कहता।

'नहीं। भला किसी लड़की के लिये मैं ऐसा क्यों कहूँगी—अगर यह सच न हो। क्या मैं पागल हुई हूँ ?'

सुननेवाले हमारी वार्तालाप बहुत ध्यान से सुनते थे।

'ये धर्म की शिक्षा पानेवाले लड़के लावारिस होते हैं—ये या तो चोर, या बदमाश होते हैं या बुरे आदमी।'

थेरेसा की कहानियाँ, लड़कियों की, विद्यार्थियों और सरकारी नौकरों के प्रति शिकायतें मुझे बुरी लगतीं। लड़कियाँ कहतीं, 'ये पढ़े लिखे लोग हमसे अच्छे नहीं होते।'

मुझे यह सब सुनकर अच्छा न लगता। मैंने देखा कि इन काले कमरों में जैसे शहर की गन्दगी का भंडार हो और यहाँ लोग अपनी गंदगी छोड़कर ताजे होकर वापस जाते हैं। मैंने पाया कि शिक्षित लोगों के प्रति यहाँ पर एक प्रकार का असन्तोष था, उसका कारण था कि शिक्षित अशिक्षित का अधिक भेद नहीं था और इस प्रकार के वेश्यालय दुनियादारी सीखने के विश्वविद्यालय के समान थे। जब कभी मैं यहाँ की लड़कियोंकी ओर से बहस करता तो दूकान के मेरे साथी कहते, 'जरा इन लड़कियों से बातें कर के तो देखो ! वे कहानी का दूसरा रुख ही बतावेंगी।'

मैं जानता था कि आज का जीवन बहुत मंहगा हो गया है और ऐसे जीवन में यदि घृणा का साम्राज्य हो गया तो आश्चर्य नहीं। इसे लेकर मेरा सदा ही साथ काम करने वालों से झगड़ा होता रहता। इन चीजों को देख सुन

कर मुझे बहुत ही क्रोध आता परन्तु मैं उसपर विजय पाने को प्रयत्नशील रहने लगा।

एक रात भयङ्कर जाड़ा पड़ा। मैं डेरेनकोव के घर से अपनी नानबाई की दूकान आ रहा था कि रास्ते में मैं एक व्यक्ति से टकरा गया और वह गिर पड़ा। हम दोनों ने एक दूसरे को 'अन्धा' कहा लेकिन मैंने रूसी भाषा में और उसने फ्रेंच में।

मेरी उत्सुकता बढ़ी। मैंने उसे उठने में मदद किया। वह बहुत हल्के वजन का व्यक्ति था। मुझे धक्का देकर उसने डाँट कर कहा, 'भले आदमी! मेरा हैट कहाँ है। लाओ मेरा हैट, मुझे सरदी लग रही है।'

उसका हैट खोजा। बर्फ से उठाया, झाड़ा-पोंछा, और उसके सिर पर रख दिया। लेकिन उसने उतार लिया और चीखकर कहा, 'दूर हट जाओ।'

फिर वह आगे बढ़ा, फिर अचानक वह फिसल गया और मैंने जाकर देखा कि वह एक बुझी हुई बत्ती के खम्भे से लिपट कर कह रहा है—'लीना, मैं मर रहा हूँ! लीना!'

देखा कि वह पिये था। सोचा कि इस प्रकार छोड़ देने से शायद यह रात को ठण्ड खाकर मर जाये। सो मैंने उसके रहने का स्थान पूछा।

'हमें याद नहीं कहाँ जाना है। हम किस सड़क पर हैं?' मैंने सुना कि सचमुच उसके दाँत किटकिटा रहे थे। उसने शायद गरम करने के लिये हाथ मुँह पर रक्खा।

कुछ देर में मुझको सड़क पर ले गया। वहाँ एक झोपड़ी के सामने रुककर उसने धीरे से कहा, 'श—श, खामोश!' और धीरे धीरे दरवाजा खटखटाया।

लाल घरेलू कपड़े पहने एक स्त्री ने दरवाजा खोला और हम लोग भीतर गये। उसने चश्मा लगाकर मुझे सिर से पाँव तक देखा। उस आदमी की देह ठंड से अकड़ रही थी। मैंने कहा कि शीघ्र ही कपड़े उतार कर उसे बिस्तरे में लिटाना चाहिये।

'अच्छा!'

'हाँ और उसके हाथ धुला दो।'

बिना कुछ कहे हुये वह स्त्री इधर उधर देखने लगी।

'क्या तुमने भी शराब पी है?' मैंने पूछा परन्तु उत्तर न मिला। वह मेज पर फैले ताश के पत्तों को छूने लगी और वह आदमी कुर्सी पर बैठ गया। मैं उसे उठाकर कोच पर ले गया और उसके कपड़े उतारने लगा। मुझे यह सब बहुत आश्चर्यजनक दिखाई पड़ रहा था। वह स्त्री अपने ताश में ही लगी रही। थोड़ी देर बाद उसने हल्की आवाज में पूछा, 'ब्रोजेस! क्या मिस्का से मिले थे?

हमें अलग हटाकर वह सीधा बैठ गया और कहा, 'वह तो कीव चला गया।'

'कीव?'

'हाँ वह जल्दी ही आवेगा।'

'अच्छा!'

'हाँ! हाँ!'

'अच्छा।' उसने फिर कहा

एकाएक कोच से उछलकर [illegible] स्त्री के सामने घुटनों के बल बैठ कर फ्रेंच भाषा में गिड़गिड़ाने लगा। स्त्री ने कहा, 'लेकिन मैं तो चुप हूँ।'

'सुनो, मैं रास्ता भूल गया था। बाहर बहुत तेज तूफानी

ठंडी हवा चल रही है । मुझे लगा जैसे मैं मर कर जम गया । तुमने ज़्यादा पी तो नहीं ।'

यह व्यक्ति लगभग चालीस वर्ष का था । लाल चेहरे पर मोटे होठों पर काली कड़ी कड़ी मूँछें थीं ।

'कल हम कोबा चलेंगे ।' उसने इस ढङ्ग से कहा जैसे आज्ञा और प्रश्न दोनों भाव स्पष्ट छिपे ।

'हाँ कल जरूर ! तुम सो जाओ !'

'मिस्का आज नहीं आयेगा ?'

'इस बर्फ के तूफान में नहीं आएगा । चलो सो जाओ ।' टेबिल पर से लैम्प उठाकर उसने उसे एक आलमारी के पीछे रास्ता बताया मैं चुपचाप बैठा रहा ।

जिओवांस वापस आया । बोला, 'वह सोने चली गई ।'

टेबिल पर बोझ देकर वह बीच में खड़ा हो गया, 'तुम न होते तो आज मैं मर जाता । तुम जो भी हो, तुम्हें धन्यवाद !'

'तेरी पत्नी ?' मैंने तनिक झिझक से पूछा ।

'हाँ मेरी पत्नी, मेरी जीवन संगिनी ।' बहुत धीरे से कहते हुये उसने अपने हाथों से सिर को रगड़ा ?'

'कुछ चाय बन सकती है ?'

उसने नौकर को पुकारा पर कोई उत्तर न आया । मैंने कहा कि वह खुद ही केटली ऊपर रख दे । उसे अभी तक शायद [illegible] कि कुछ हुआ है । वह मुझे रसोईघर में ले गया : [illegible] थी कि [illegible] थी । वहाँ उसने फिर कहा, 'यदि तुम न होते तो मैं ठंड से समाप्त हो गया होता । तुम्हें धन्यवाद । और [illegible] होता, या खुदा ।'

[illegible] से उसने कहा, 'वह बीमार है । वह अब तक अपने बेटे का इन्तजार कर रही है—दो वर्षों से ।

वह मास्को में संगीतज्ञ था—दो वर्ष पूर्व उसने आत्महत्या कर ली है।'

चाय पीते समय उसने बताया कि उस स्त्री के पास गाँव में मकान भी है। वह अपने बेटे को पढ़ाती थी। वह उससे प्रेम करने लगा था। उसने अपने पति को छोड़ दिया था जो जर्मन था। वह आपेरा की गायिका बन गई थी। उसने पहले पति ने सब कुछ किया परन्तु इनका प्रेम अटूट बना रहा।' यह सब बताते समय उसकी आँखें चूल्हे के पास ही जमी थीं। उसने इतनी जल्दी चाय समाप्त की कि उसका मुँह अवश्य ही जल गया होगा। उसने कहा, 'और तुम! नानबाई की दूकान के काम करने वाले, पर ऐसा लगता तो नहीं।'

वह देखने में भी अजीब लगा। जैसे वह आधा पागल हो। मैंने भी अपने जीवन के बारे में उसे थोड़ा सा बताया।

उसने मुझसे एक पुस्तक के बारे में पूछा कि मैंने पढ़ी है या नहीं। मैंने तो पढ़ी नहीं था, उसने कहा,

'मुझे वह कहानी बहुत अच्छी लगी। जब मैं तुम्हारी उम्र का था। तब मैंने एक पुस्तक पाली थी। मैं विरिजा में शिक्षा लेने जाने वाला था पर मैं [illegible] मेरे बाप ने मुझे घर से अलग कर [illegible]। अर्थात ऐसी चीज है जिससे बहुत सांत्वना मिलती है। काम के बिना प्रगति भी नहीं होती। लेकिन केवल मजदूरी ही नहीं। खेत का काम भी संसार के लिये बहुत आवश्यक है। और यों तो आदमी की इच्छायें जितनी कम हों, वह उतना ही खुश रहता है।' फिर उसी दरवाजे को देखकर फिर कहा, 'मेरी बात सुनो, आदमी को बहुत कम आवश्यकता है—एक टुकड़ा रोटी और एक औरत, बस!'

तीन

डेरेनकोव की दूकान से अधिक आमदनी न होती। अक्सर रोटी खाते हुए अपराधी की तरह हँसकर वह कहता, 'हमें कोई रास्ता खोजना ही चाहिए।'

कई बार मैंने उससे पूछा, 'तुम इस पुस्तकालय का क्या करोगे ?'

उसका उत्तर बहुत टालू होता, 'भला कौन पढ़ना या कुछ जानना चाहता है ?'

'लेकिन तुम तो जानते हो कि कौन कितना चाहता है।'

मैंने अनुभव किया कि लोग अच्छी चीजें न पढ़कर मौज की चीजें पढ़ना चाहते हैं जिससे घंटे दो घंटे के लिये वे अपने कठिन जीवन से नाता तोड़ सकें। लोग जानना नहीं चाहते बल्कि अपने जीवन की मुसीबतों को भूलने का उपाय चाहते हैं। मैंने अनुभव किया कि ऊटपटांग साहित्य में लोगों की दिलचस्पी अधिक है।

डेरेनकोव की राय थी कि एक नानबाई की दूकान ही खोली जाय। मुझे याद है कि उसने कितने उत्साह से यह हिसाब लगाया था। तैंतीस प्रतिशत का मुनाफा इस काम में होगा। मैं उसका सहयोगी होता और उसके 'परिवार का व्यक्ति' होने के कारण यह भी देखने का काम था कि कोई आटा, अंडे, मक्खन या अन्य चीजें न चुराये।

इसी बहाने उस गंदे स्थान से हटकर हमलोग साफ पर छोटे से घर में आये। मेरे साथ काम करनेवाला एक व्यक्ति था, भूरे बालों वाला, नाटे कद का, नूकीली दाढ़ी और धुंआ सा चेहरा।

वह बेहया चोर भी था। पहली रात को ही उसने दस अंडे, तीन पौंड आटा और एक डबल रोटी चुराई।

'यह सब क्यों किया?'

'एक छोटी लड़की के लिये।' अपनी नाक सिकोड़कर उसने कहा। 'बहुत प्यारी, छोटी सी लड़की।'

मैंने उसे चोरी न करने की बहुत शिक्षा दी। लेकिन मेरी बातों का कोई प्रभाव न पड़ा। उसी रात को खिड़की के पास लेटकर वह खीझ रहा था, 'वाह, क्या मजाक है, मेरे उम्र का एक तिहाई यह छोकरा! एक दिन में ही मेरा उस्ताद बनना चाहता है। मुझे शिक्षा देता है!'

फिर मुझसे कहा, 'इसके पहले कहाँ काम करते थे? लगता है कि पहले कहीं तुम्हें देखा है। क्या सोमिओनोव के यहाँ? याद है? नहीं! तो शायद तुम्हें कभी सपने में देखा होगा।'

मैंने देखा कि सोने में वह बहुत तेज था। किसी भी करवट चाहे जितनी देर वह सो सकता था। सोते समय उसके चेहरे पर अजीब अजीब भाव आते थे। वह सपने भी खूब ही देखता था। उसने बिलकुल सच ही बताया था, 'मैं सपने में धरती के नीचे के दृश्य देख लेता हूं। वहाँ मशीनें, सन्दूकें, लोहे के बर्तन रुपयों से भरे पड़े हैं। एक बार एक पूरी ट्रंक चाँदी से भरी हुई देखा था। एक बार जागा तो जाकर उसे खोजा! लगभग दो फुट खोदा, तो जानते हो क्या पाया? कोयला और

कुत्ते का कंकाल। उसके नीचे से औरत की आवाज आ रही थी।'

इस तरह की बातें बताते समय भी ईवान लेटोनिन हँसता न था। हाँ जब वह मुस्कुराता तो नाक की शक्ल बदल जाती और नथुने फैल जाते। उसके सपनों में कोरी कल्पना कम होती।

शहर में एक चाय के सौदागर की लड़की की आत्महत्या की बड़ी सनसनी थी क्योंकि उसकी बिना प्रेम की शादी कर दी गई थी और उसने शादी के पश्चात् फौरन ही आत्महत्या कर ली थी। हजारों जवान उसके शव के साथ गये। कुछ युवकों ने उसकी कब्र पर भाषण देना चाहा, तो पुलिस को भीड़ को भगाना पड़ा। रास्ते में उत्तेजित विद्यार्थी समूह की बातें हम लोगों को घर के भीतर तक सुनाई पड़ रही थीं।

इस घटना पर भी लेटोनिन की राय थी, कि लड़की ने बेवकूफी की। उसे हमारी दूकान की स्थिति का ठीक-ठीक शायद पता न था। दोनों लड़कियाँ, डेरेनकोव की बहन और उसकी एक सखी, बड़े-बड़े गुलाबी होठों वाली लड़की सदा ही वहाँ रहतीं लेकिन दूकान का काम उनके योग्य न था अतः वे सदा ही किताबें पढ़ती रहतीं। विद्यार्थी आते रहते। कमरे में सदा ही फुसफुसाहट और अनन्त बहस होती रहती। डेरेनकोव भी कभी ही कभी आता। तब मैं ही दूकान का एक तरह से मैनेजर था।

'क्या तुम मालिक के रिश्तेदार हो?' लेटोनिन ने पूछा, 'या तुम उसके दामाद होनेवाले हो? नहीं? यह नहीं होगा। और ये विद्यार्थी यहाँ हर समय क्यों घुसे रहते हैं? सम्भव है, इन लड़कियों के पीछे पड़े हों। लेकिन नहीं, लड़कियों में कोई अधिक आकर्षण नहीं है।'

अक्सर सुबह, पाँच या छ: बजे के लगभग एक छोटी सी लड़की दूकान के पास आती। वह पुकारती 'ईवान।'

एक रुमाल से वह सिर ढँके रहती। मैं ईवान को जगाकर उठाता। वह पूछता, 'कैसे आई ?'

'यों ही।'

'रात को नींद आई ?'

'हाँ।'

'कोई सपना देखा ?'

'याद नहीं।'

अब तक शहर में खामोशी ही रहती। केवल कहीं-कहीं से कभी-कभी गाड़ियों की आवाज आ रही थी। उगते हुये सूर्य की मुलायम किरणें खिड़की पर आ रही थीं। उसे देखकर ईवान कहता,

'पेश्कोव, यही समय है, कुछ मिठाइयाँ छाँट कर निकालो।'

मैं लोहे की थाली निकालता और वह बिना किसी संकोच के ही आठ दस केक या अन्य वस्तुयें उसको दे देता।

जब वह चली जाती तो अपनी शान में वह बेतरह बातें बनाता। दिन चढ़ते चढ़ते मैं एक दर्जन रोटियाँ लेकर डेरेनकोव की दूकान की ओर भागता। वापस आकर केक आदि लेकर विद्यार्थियों के होस्टल जाता। जहाँ लड़के नाश्ता करने को तैयार रहते। वहाँ जब मैं पैसों के भुगतान का इन्तजार करता होता तो सुनता कि टाल्सटाय पर कोई बहस चल रही थी। गुसेव नामक एक प्रोफेसर टाल्सटाय का बहुत विरोधी था।

सप्ताह में एक बार प्रोफेसर नेकलदोव भी आया करते। वे जबड़ों के प्रोफेसर थे और व्याख्यान में वे अपने मरीजों को ही पेश करते। आज उन्होंने जिस मरीज को बुलाया उसकी लंबाई

देखकर मैं हंसी न रोक सका। क्षणभर रुककर उसने मुझे गौर से देखा।

मुझे लगा जैसे उसकी आँखें मेरे कलेजे में छेद कर देंगी। डाक्टर बेखतरेव अपने मरीज से बातें कर रहे थे। वह मरीज पागल था। डाक्टर और मरीज में जो बातें हुईं उनमें मुझे बहुत आनन्द आया। विद्यार्थी ध्यान लगाए सब सुन रहे थे। उसी रात घर आकर मैंने एक कविता एक पागल व्यक्ति पर लिखी—नाम रखा—'मालिकों का मालिक, खुदा का सलाहकार व मित्र!' उस पगले की याद मेरे लिए एक बोझ बन गई।

रात और दिन काम के कारण एक रहते। अतः मैं दोपहर को सोता! जब रोटियाँ सेंकने के लिए चूल्हे में रख दी जातीं तो मैं पुस्तकें पढ़ता। यह जानकर काम में मैं काफी चतुर हो गया हूँ—ईवान आलसी होता गया। वह कहता, 'साल दो साल में तुम पूरे नानबाई हो जाओगे। लेकिन तुम अभी छोटे हो इसलिये तुम्हें अभी कोई महत्व न देगा न तुम्हारी बात ही सुनेगा।' वह मेरा किताब पढ़ना भी बुरा मानता। वह समझाता कि सोना अधिक अच्छा है पर कभी उसने यह न पूछा कि मैं क्या पढ़ता हूं।

उसका सारा समय सपने देखने या उस लड़की के साथ बीतता। जब कभी वह रात को आती तो उसे लेकर वह आँटे के बोरों वाले कमरे में ले जाता और अगर सरदी होती तो मुझी से कहता, 'क्या आधे घन्टे के लिए कहीं जाओगे?'

मैं उन्हें अकेला छोड़ देता परन्तु सोचता कि मैंने जो कुछ पुस्तकों में पढ़ा है उससे वास्तविकता कितनी भिन्न है।

डेरेनकोव की बहन दूकान के पीछे के कमरे में रहती थी। उसकी केटली गरम करने का काम मेरा था। मैं उससे अब भी

कतराता था क्योंकि मेरे मन में उसकी बच्चों की सी आंखें उसी तरह चुभती थीं।

मैं किसी काम से घबराता न था। मैं जब सवा मन का आँटे का बोरा उठाता तो ईवान कहता, 'तुम्हारे बहुत ताकत है, परन्तु इसका कोई उचित उपयोग नहीं होता।'

अब तक मैं काफी किताबें पढ़ गया था। फलस्वरूप मेरे मन में कविता के प्रति एक मोह पैदा हो गया था और मैं अपने अच्छे शब्दों में अपने मन के भावों को प्रकट किया करता था। डेरेनकोव की बहन असाधारण रूप से कोमल थी—शरीर से भी, शब्दों से भी। वह हर समय हँसा करती। मैं समझता कि वह मुझपर से वह असर हटाना चाहती है जो मुझ पर उसे पहली बार देखकर पड़ा था। अक्सर वह मुझसे पूछती, 'तुम क्या पढ़ रहे हो?'

मैं कुछ भी उत्तर न देता यद्यपि मन में होता कि प्रश्न करूँ कि तुम क्यों जानना चाहती हो?

एक बार ईवान ने अपने प्रेम की चर्चा करते हुए कहा, 'तुम मूर्ख हो। यहाँ प्राण देते हो, क्यों नहीं मालिक की बहन से शुरू करते?'

मुझे गुस्सा आ गया। मैंने उसे धमकाया कि इस प्रकार की बातें अगर वह फिर कभी करेगा तब मैं लोहे से उसका सिर फोड़ दूंगा। मैं उस कमरे में चला गया जहाँ आँटे के बोरे रखे थे। पीछे से ईवान ओसोतिन कह रहा था कि मैं उस पर क्यों नाराज़ हो रहा हूं। पागलों की तरह, मुझे केवल मुस्काने का ज्ञान ही तो प्राप्त है।

कमरे में चूहे आवाज कर रहे थे। बाहर हल्की सी बूँदा-बांदी हो रही थी। दूकान में वह लड़की भी जो डेरेनकोव के पास आती थी। कुछ समय आधी रात से ज्यादा समय बीत

चुका था। सामने के कमरे की खिड़की से हल्का हल्का गाना सुनाई पड़ रहा था। मेरे मन में ख्याल आया कि मेरिया मेरी बाहों में है जैसे ईवान की बाहों में वह लड़की होगी।

इस कल्पना से जाने क्यों मैं खुद घबड़ा गया। सामने के कमरे की खिड़की से भीतर देखने के लिए मैंने झाँका। हल्के परदे पड़े थे—नीली रोशनी जल रही थी। खिड़की की तरफ मुँह करके वह लड़की बैठी लिख रही थी। उसकी आधी मुँदी आँखें मुस्कुरा रहीं थीं। धीरे से उसने पत्र को मोड़कर लिफाफे में रखा। अपनी जीभ से किनारे को गीलाकर उसे चिपकाया और टेबिल पर रखा। उसकी बड़ी उँगली मेरी छोटी उँगली से भी पतली थी।

फिर उसे उठा लिया। खोला और पढ़ा। दूसरा लिफाफा लेकर उस पर नाम लिखा। फिर उसे अपने सिर के ऊपर ले जाकर हिलाया, फिर रख दिया और कमरे के दूसरे किनारे पर जहाँ उसकी खाट थी गई। अपनी ब्लाउज उतार दी, उसकी बाहें बहुत गोल थीं, सुन्दर सी। फिर उसने लैम्प को उठाया और बुझा दिया।

मैं सदा सोचा करता था कि यह लड़की अकेली कैसे रहती होगी, लेकिन लाल बालों वाले उस लड़के को मैं बिल्कुल पसन्द न करता था जो अक्सर आता था।

तभी मुझे ईवान ने पुकारा।

दूकान का काम इतना चल निकला था कि देरेनकोव ने एक बड़ी जगह तलाश की और एक अन्य सहकारी भी रखने का निश्चय किया। मैं अत्यन्त प्रसन्न हुआ क्योंकि मुझे बहुत अधिक काम का बोझ उठाना पड़ता था। 'नई दूकान में तुम प्रधान कार्यकर्ता होगे।' ईवान ने कहा, 'और मैं मालिक से कहूँगा कि तुम्हें अब से कम दस रूबल प्रति मास और मिलें।'

यह मैं जानता था कि प्रधान मैं रहूँगा तो उसी का कितना लाभ होगा। काम में उसकी बिल्कुल दिलचस्पी न थी। मैं तो काफी काम भी करता था, पढ़ना अवश्य कम हो गया था।

ईवान ने कहा, 'यह बहुत अच्छा है कि तुमने पढ़ना छोड़ दिया। लेकिन यह कैसे सम्भव है कि तुम्हें सपने न आते हों। शायद तुम भूल जाते हो या बताना न चाहते हो। परन्तु सपने की बातें बताने में कोई बुराई नहीं है।

अवश्य ही वह व्यक्ति मेरे प्रति अच्छे व्यवहार ही प्रदर्शित करता था। मालिक का कृपापात्र हूँ इसका उस पर अधिक असर न था।

नानी की मृत्यु हो गई। यह सूचना मुझे उसके दफ़नाने के सात सप्ताह बाद ममेरे भाई के पत्र से मिली। उसके पत्र की टूटी-फूटी भाषा से मुझे ज्ञात हुआ कि किस प्रकार वह भीख माँगते समय गिरजाघर की सीढ़ी पर गिर पड़ी थी। उसकी टाँगें टूट गईं थीं। बाद में ज्ञात हुआ कि किसी ने उसे डाक्टर को भी नहीं दिखाया। चिट्ठी में लिखा था, 'हमलोगों ने उसे कब्रगाह में गाड़ दिया। हमलोगों के अलावा वहाँ कई भिखारी भी थे जो चिल्ला रहे थे। नाना तो बदहवासों की तरह हर समय कब्र के पास की झाड़ी में बैठा रोया करता है। शायद वह भी अब शीघ्र ही मरेगा।'

[illegible] है कि नानीजी [illegible] की तरह [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कि [illegible] करता कि [illegible] कितनी [illegible] और [illegible] का प्यार [illegible] थी। [illegible] बाद

कई दिनों तक आती रही पर कोई ऐसा न था जो मुझे सांत्वना देता सो मेरा सन्ताप अपने आप मेरे मन में जलकर सूख गया। कई बरसों बाद, [illegible] की पढ़ते समय वे यादें फिर हरी हो गईं जिसमें एक गाड़ीवान अपने घोड़े से अपने बेटे की मृत्यु की बातें बताकर अपना जी हल्का करता है। मुझे [illegible] कि मेरे [illegible] एक कथा भी नहीं [illegible] चूहे ही मिल रहे थे जिन्हें सुनाकर जी हल्का करता।

इन्हीं [illegible] सिपाही मेरा पीछा छाया की तरह करने लगा। वह बहुत लम्बा-चौड़ा व्यक्ति था। चाँदी के तारों की तरह उसके बाल सिर पर खड़े रहते थे। चेहरे पर साफ बनी हुई छोटी छोटी दाढ़ी थी। उसने कहा,

'मैंने सुना है तू खूब पढ़ता है। आखिर कौन सी किताबें पढ़ता है? महात्माओं की जीवनियाँ या बाइबिल।'

मैंने कहा कि दोनों ही पढ़ता हूँ। इससे उसे आश्चर्य और निराशा हुई।

'यह पढ़ना तो ठीक है पर क्या तुमने कभी काउन्ट टाल्स-टाय की किताब भी पढ़ी है?'

मैंने टालसटाय की पुस्तकें अवश्य पढ़ी हैं पर ऐसी कोई नहीं जिससे पुलिस का आदमी पूछताछ करे। "हाँ वह बहुत मामूली किस्म की किताबें हैं जिसे कोई भी लिख सकता है।"

पुलिस ने पूछा, 'मैंने सुना है कि उसने कुछ ऐसा लिखा है जिसे पढ़कर लोग पादरियों के विरोधी बन जाते हैं। अगर ऐसी कोई किताब पकड़ी जाती है तब ....।'

मैंने ये नाम उसकी पुस्तकों में अवश्य पाये थे फिर भी वे पढ़ने में बहुत रूखी सूखी पुस्तकें थीं। फिर भी मैं पुलिस के आदमी से बातें करने का ढङ्ग जानता था।

इस प्रकार की थोड़ी बहस के बाद उस बूढ़े सिपाही ने मुझे अपने घर में चलकर एक प्याला चाय पीने की दावत दी।

उसके मन का रहस्य मेरे लिये कोई रहस्य न था। मैं यह जानता था कि चाहे जितनी विनय से उसके दावत को इन्कार किया जाय, उसका शक मुझ पर और दूकान पर बढ़ेगा ही।

मैं उसका मेहमान बना। जिस स्थान पर वह रहता था उसका एक तिहाई भाग तो चूल्हे ने ढँक लिया था, बाकी भाग के आधे हिस्से में दो खाटें थीं जिन पर सूती छींट का परदा पड़ा था और कई तकिए दिखाई पड़ती थीं। बाकी भाग में एक मेज, दो कुर्सियाँ और खिड़की के पास एक बेंच थी, जिस पर निखिफोरिच इस प्रकार बैठ गया कि रोशनी और हवा दोनों ही रुक गईं। मेरे बगल में उसकी स्त्री बैठी जो लगभग बीस वर्ष की थी—उसकी छातियाँ अधिक उभरी थीं, ओंठ खूब लाल थे और आँखों के देखने से बहुत बीभत्स दृश्य उपस्थित होता था।

'मेरी धर्म की संतान सेन्वेता, मैंने सुना है कि अक्सर तुम्हारे दूकान जाती है। वह छोटी सी लड़की।' सिपाही ने कहा। 'स्त्रियाँ सभी द्वेषी होती हैं।'

'सभी!' उसकी पत्नी ने पूछा।

'इसमें कोई छूट की बात नहीं, सभी होती हैं। द्वेषी भी हैं—चाहे कोई वेश्या हो या रानी।'

उसकी स्त्री उसकी बातें सुन रही थी परन्तु मेज के नीचे उसके पाँव मेरे पाँवों को धक्का दे रहे थे। निखिफोरिच लगातार नए नए उदाहरणों से स्त्रियों के चरित्र की बात कहता जा रहा था।

'उदाहरणार्थ, एक विद्यार्थी है ज़ोसनेज।'

उसकी स्त्री ने सजग हो कहा, 'सुन्दर तो वह नहीं पर भला है।'

'कौन ?'

'वही मिस्टर प्लेतनेव।'

'उसे मिस्टर मत कहो। पढ़ाई समाप्त करने के बाद मिस्टर कहाने योग्य होगा। और वह भला है के क्या माने ?'

'वह युवा है और खुशदिल!'

'बन्दर, पिल्ला!'

'जबान सम्हाल कर बोलो!' स्त्री ने डाँटा।

लेकिन स्त्री की बात न सुनकर उसने मुझसे कहा, 'तुम प्लेतनेव से परिचय करो। वह अच्छा आदमी है।'

मैंने अनुमान किया कि उसने अवश्य ही मुझे कभी न कभी प्लेतनेव के साथ देखा होगा। सो मैंने कहा, 'मैं उसे जानता हूँ।'

'सचमुच!'

यह साफ था कि इसे सुनकर वह तनिक घबड़ाया। मैं जानता था कि प्लेतनेव कुछ पर्चे छापता है।'

टेबिल के नीचे मुझे अपने पावों से छेड़ते हुए उस स्त्री ने उस बूढ़े को चिढ़ाया। क्षण भर चुप रहकर उसने कहा,

'हम बादशाह की एक मक्खी से तुलना कर सकते हैं।'

'खुदा के लिये क्या कह रहे हो।' स्त्री ने डाँटा।

'तू मुँह बन्द कर! राक्षसिन! मैं जो चाहूंगा कहूँगा। तू भोंदी है। चाय का प्रबन्ध कर।' फिर मुझसे कहा, 'मक्खी के [illegible] अवश्य भागा। इसी धागे में बादशाह से लेकर [illegible] सिपाही तक सभी [illegible] हुये हैं। इसी धागे पर सारा जार का साम्राज्य टिका है। और [illegible] की मदद से

नाम पर रानी पादरियों को यह धागा तोड़ देने को घूस दे रही है।'

फिर मेरी तरफ जरा घूमकर उसने कहा, 'मैं यह क्यों कह रहा हूँ जानते हो? तुम चतुर आदमी हो। अपने बूते पर जीवन काट रहे हो। लेकिन विद्यार्थी लोग दिन रात वहाँ डेरेनकोव के घर में क्यों घुसे रहते हैं? एक दो होते तो मैं समझ सकता था पर इतने अधिक, वाह! मुझे विद्यार्थियों से कुछ नहीं कहना। आज वे विद्यार्थी हैं कल अफसर होंगे। विद्यार्थी अच्छे होते हैं पर किसी भी विद्रोह में पहले कूदते हैं—जार के विरोध में आये तो कानून के विरोध में आवेंगे—समझे!' आगे वह बोल न सका क्योंकि दरवाजा खुला और एक नाटे कद का लाल नाक वाला बूढ़ा व्यक्ति हाथ में एक वोदका की बोतल लिए हुए आया जिसका असर उस बूढ़े पर प्रत्यक्ष था।

'मेरा ससुर!' निकिफोरिच ने परिचय दिया। थोड़े ही मिनटों बाद मैं विदा हुआ। दरवाजा बन्द करते समय उसकी स्त्री तनिक दूर्वा दिखी। उसने धीरे से कहा, 'देखो न बादल कितने लाल हैं जैसे आग लगी हो।' लेकिन उस समय केवल बादल का एक टुकड़ा ही था जो भी सुनहला था।

कुछ भी हो उस पुलिस के आदमी ने सरकारी कार्य प्रणाली का ठीक ठीक ब्योरा मुझे दिया। शीघ्र ही उसके बनाये गये मकड़ी के जाल का मैं भी [illegible] करने लग गया।

उस रात जब [illegible] लौट रहे तब डेरेनकोव की तरफ से मुझे [illegible] [illegible]। और [illegible] पूछा लेकिन उसे पूछने की [illegible]। [illegible] थी कि पुलिस के आदमी से मेरी क्या बातें हुईं? मैंने जब सब बताया तो जैसे उसे विश्वास न

हुआ और वह 'डियर, डियर' करके कमरे भर में चुहिया की तरह यों नाचती रही जैसे उसे विश्वास न हो रहा हो। उसने पूछा।

'क्या ईवान तुम्हें सताता है? क्या उसकी वह छोकरी भी निकीफोरिच की रिश्तेदार नहीं है? हम जाकर इसका······ उसे गोली मार दूँगी।'

पता नहीं क्यों गोली मारने का विचार मुझे बहुत अच्छा न लगा।

'अपने प्रति सतर्क रहना।' मुझे उसने आगाह किया। और अपनी तेज आँखों से मुझे सदा की तरह परेशान करती रही। यह बातें बन्द करके मुझे देखकर, और अपने पीछे दोनों हाथ बाँधकर उसने मुझसे अजीब भाव भंगिमा में पूछा. 'तुम इतने उदास क्यों हो?'

'मेरी नानी मर गई है!'

मेरे उत्तर से उसे हँसी आ गई। मुस्कुरा कर उसने पूछा 'क्या तुम बहुत प्यार करते थे उसे?'

'हाँ बहुत अधिक! और कुछ पूछना है?'

'नहीं!'

वापस आकर मैं अपनी कविताओं के साथ जुट गया। उसकी एक पंक्ति अब भी याद है—'तुम जो दिखाई पड़ती हो, वास्तव में वह नहीं हो।'

यह निश्चय हुआ कि दूकान में विद्यार्थियों का आना जितना भी कम किया जा सके, किया जाय। जब वे नहीं आते तो मुझे पढ़ी हुई पुस्तक के कठिन अंश समझने में दिक्कत पड़ने लगी। मैंने सभी प्रश्न नोट बुक में नोट कर लिये। एक बार जब मैं सो रहा था तब ईवान ने मेरी नोट बुक पढ़ ली। मुझे जगा कर उसने पूछा—'यह तुमने क्या लिखा

है—गैरिबाल्डी ने राजा का पीछा क्यों न किया ? यह गैरिबाल्डी कौन है ? और उसे राजा का पीछा करने की आज्ञा मिली कब थी ?"

उसने नोट बुक को चूल्हे में डाल दिया फिर कहा, 'वाह क्या मजाक है ! तुम किताबी कीड़े—यही मूर्खता करते रहते हो । सारातोग में इस प्रकार के किताबी कीड़ों को जेल भेजा गया था । हाँ……पाँच वर्ष पूर्व । क्या समझते हो कि तुम पर निखिफोरिच की निगाह नहीं है । देखो महाशय, राजा का पीछा करना छोड़ दो !'

उसका व्यवहार तो मित्रता का था इसलिए जैसा मैं चाहता था उत्तर न दे सका । क्यों कि कुछ दिन पूर्व ही मुझे यह आदेश मिला था कि उससे अधिक गड़बड़ बातें न की जाएं !

—चार—

उन दिनों एक पुस्तक सामूहिक रूप से पढ़ी जा रही थी और उस पर बहुत उत्तेजनापूर्ण बहस भी हो रही थी। मैंने लावरोव से एक प्रति माँगी पर उसने कहा, 'एक भी प्रति पाना असम्भव है। लेकिन शीघ्र ही एक सामूहिक पाठ होगा तो उसमें तुम्हें शामिल करूँगा।'

और आधी रात को आगे आगे लावरोव और लगभग पचास क़दम पीछे मैं चल रहा था। जिस खेत को हम पार कर रहे थे वहाँ काफ़ी सन्नाटा था। हम लोग पूर्व निश्चय के अनुसार ख़ामोशी से आगे बढ़ रहे थे। ज़मीन में हम दोनों की छाया साफ़ दिखती थी। एक बाग़ के दरवाज़े पर वह रुका और बढ़कर मैं उसके पास पहुँच गया। आगे बढ़कर एक घर की दीवाल की खिड़की पर उसने दस्तक दी। उसे एक दाढ़ी वाले बूढ़े आदमी ने खोला जो वहीं अँधेरे में खड़ा था।

'कौन है ?' उसने पूछा।

'हमें जैक ने भेजा है।'

'तो आ जाओ।'

उस घटाटोप अंधकार में भी कमरे में कई आदमियों की उपस्थिति का पता लगता था। हल्की सी फुसफुसाहट सुनाई पड़

रही थी। तभी किसी ने मेरे चेहरे के सामने दियासलाई जलाई। दीवाल के पास कई काली छायाएँ दिखाई पड़ीं।

'सब आ गये हैं ?'

'हाँ।'

'पर्दे गिरा दो और यह अन्दाज करलो कि कोई रोशनी न आ सके।'

किसी ने डाँटकर पूछा, 'यह किसका सुझाव था कि इस प्रकार के बेकार घर में मीटिंग हो।

'श······श······चुप !'

कोने में एक लैम्प जलाया गया। दिवाल से लगकर जमीन पर तीन व्यक्ति बैठे थे। खिड़की से लगकर लम्बे बालोंवाला, दुबला व्यक्ति बैठा था। उसे और एक दाढ़ी वाले अन्य व्यक्ति को छोड़कर बाकी सभी को मैं जानता था। धीमी आवाज में उस दाढ़ीवाले व्यक्ति ने कहा, 'मैं परचा पढ़ूँगा।'

मुझे सभी बातें धीरे से कहने तथा सब कुछ गुप्त रखने की बात से बहुत रोमांच हुआ। वह व्यक्ति धीरे-धीरे पढ़ रहा था कि किसी ने कोने से कहा, 'बेकार है।'

फिर बहस होने लगी—और फुसफुसाहट में पढ़ने वाले की आवाज खो गई। खिड़की पर से एक ने कहा, 'क्या यही पढ़ाई है ?' यह लम्बे बाल वाले युवक ने कहा था। इससे सभी चुप हो गये, केवल पढ़ने वाले की आवाज सुनाई पड़ती थी। दिया-सलाइयाँ अभी [illegible] लोगों के चेहरे पे [illegible] जलती सिगरेट के लाल निशान में उनकी [illegible] आँखें दिखाई पड़ रही थीं।

पढ़ाई बहुत देर तक चलती रही। मुझे [illegible] लगी। यद्यपि [illegible] के बीच में वे जिस प्रकार के [illegible] और [illegible] शब्दों का प्रयोग कर रहे थे वे मुझे बहुत अच्छे लगे।

तभी एकाएक पढ़ने वाले की आवाज रुक गई। कमरे भर में क्रोध की बातें होती रहीं। थोड़ी देर बाद खिड़की पर से वही युवक बोला, बेकार की बहस से अच्छा है काम की बातें करें।'

मुझे भी बहस से दिलचस्पी न थी। तभी खिड़की से झुककर उस व्यक्ति ने पूछा, 'क्या तुम पेश्कोव हो, नानबाई की दूकान से ? मैं फेदोसेव हूँ। हमारा परिचय हो जाना चाहिये : यहाँ अब कुछ रखा ही नहीं है। यह तो इसी तरह बड़ी देर बहस चलती रहेगी। हमें अब चलना चाहिये।'

फेदोसेव युवकों की एक संस्था का संचालक था। उसका पीला पर आकर्षक चेहरा और गहरी तेज आँखों ने मुझे आकर्षित किया। खेत पार करते समय उसने मुझसे पूछा कि मेरे मित्रों में कितने और कौन कौन लोग हैं, मैंने कौन कौन सी किताबें पढ़ी हैं, मेरा कौन समय खाली रहता है। 'मैंने तुम्हारी दूकान के बारे में सुना है। हमें आश्चर्य है कि केक ही सेंक, सेंक कर तुम अपनी जिन्दगी क्यों बरबाद कर रहे हो ?'

मैंने बताया कि मैं तो खुद ही इससे ऊबा हुआ हूं। उसने बहुत प्रेम से मुझसे हाथ मिलाया, जैसे मेरी बात सुनकर वह खुश हुआ हो। मुझसे उसने बताया कि तीन सप्ताह के लिये वह जा रहा है। अब वह आवेगा तो खबर देगा तब हम लोग मिलेंगे।

दूकान बड़ी तो हुई लेकिन मुझे अच्छा न लगा। नए घर में आने पर मेरा काम बहुत बढ़ गया। केक आदि तैयार करने के अलावा स्कूलों और लड़कियों के हास्टल में मैं ही चीजें पहुँचाने भी जाता। इतनी अधिक लड़कियों के बीच मुझे अजीब

सा लगता। उनके प्रति मेरा आकर्षण बढ़ा तो मुझे लगा जैसे मकड़ी का वही अदृश्य जाल यहाँ तक भी फैल गया है।

एक बार एक बहुत उन्नत वक्षस्थलों वाली स्त्री ने मुझे रोक कर कहा, 'यह पत्र दे देना मैं तुम्हें दस कोपेक दूंगी।'

मेरे उत्तर की परीक्षा में खड़ी वह अपने ओंठ काट रही थी तथा उसकी काली बड़ी, भावुक आँखों में आँसू छलछला रहे थे। मैंने दस कोपेक लेने से तो इन्कार कर दिया लेकिन पत्र एक जज के बेटे को दे आया। बड़ी असावधानी से आधा रूबल की रेजकारियाँ गिनकर उसने मुझे दिया लेकिन जब मैंने स्वीकार न किया तो उसे अपने पाजामें के जेब में वापस रख लिया लेकिन लापरवाही के कारण पैसे जेब में न जाकर जमीन पर बिखर गये। उसने पैसे बटोरते हुए तनिक घबराहट में कहा, 'अब मैं क्या करूँ? अच्छा मैं सोचूँगा। नमस्कार!'

वह क्या करेगा या क्या सोचेगा—मैं नहीं समझ पाया परन्तु उस लड़की पर मुझे तनिक दया ही आई। कुछ दिनों बाद अचानक वह स्कूल से गायब हो गई। पन्द्रह वर्ष बाद जब उसे हमने फिर देखा तो वह जीवन के प्रति बहुत क्रूर हो गई थी।

सुबह केक देने के बाद मैं तनिक झपकियाँ ले लेता था। रात को मुझे केक बनाने में मदद देनी पड़ती थी और बनने के पश्चात् शिनेगापुर के मार्ग की दुकानों में अर्धरात्रि के पूर्व ही पहुंचाना पड़ता था। उसके बाद कहीं मैं दो या तीन घंटे को आँखें मूँद पाता था। एक प्रकार से यही मेरा जीवन था।

मेरे मित्रों में मिल के मजदूर, कोस्तोवनिकोव, और अलाफुसोव थे और एक बहुत बूढ़ा बुनकर निक खाजोव जो

लगभग रूस की सभी कपड़े सिलने की मिलों में काम कर चुका था।

'इस धरती पर मैं अपनी जीवन यात्रा के सत्तानवें वर्ष में हूँ मैक्सिम।' उसने कहा। उसका उपनाम 'जरमन' रखा था। क्योंकि मूँछें वह जरमनों की तरह रखता था। 'मैं सरकस पसन्द करता हूँ। सोचो न कि घोड़ों को, जानवरों को कितना सिखाया जाता है!'

एक बार कहीं उसने झगड़ा कर लिया था तभी मेरी उसकी भेंट हुई थी। उसे दो घूंसे पड़ चुके थे। मैंने बीच बचाव किया था। 'तुम्हें क्या चोट आई है?' मैंने पूछा।

'नहीं नहीं, लेकिन तुम्हें इतनी मुहब्बत क्यों हो रही है?'

इस प्रकार हमारी मित्रता शुरू हुई फिर उसने कहा, 'देखो, तुम्हारे बदन में ऊपर एक सिर भी है। उसका प्रयोग किया करो। समझे!

जैक शापोश्नीकोव नामक एक बढ़ई से परिचय था। वह गिटार बहुत अच्छा बजाता था। वह कहता, 'मैं खुदा में विश्वास नहीं करता। मैं न तो कुछ सोचता हूँ न करता हूँ। मैं अच्छा आदमी भी नहीं हूँ। खुदा शायद मेरे जीवन के दुःखों को नहीं जानता या उसमें इतनी हिम्मत नहीं कि मेरी मदद कर सके। या तो खुदा को संसार की हर चीज मालूम न रहती हो या हर शक्ति उसमें न हो या वह दयालु न हो या यह सब धोखा हो, जिन्दगी भी एक धोखा हो!

जैक के यहाँ से आते समय बजोव ने कहा 'मैंने इस प्रकार खुदा का विरोधी दूसरा न देखा। यह आदमी बहुत दिन नहीं रह सकता! बेचारा कितना नाराज था?'

'लेकिन बातें मजेदार कहता था।'

बहुत जल्दी जैक से उसकी गहरी दोस्ती हो गई। मैं उसे अब अक्सर बहुत बेचैन पाता। मैंने उसे 'ज़ार की भूल' पढ़ने को दिया, जिसे पढ़कर उसने कहा, 'अक्षरशः ठीक ही लिखा है।'

सर्वप्रथम बार उसने एक लीथो द्वारा छपा परचा देखा जिसे देखकर वह बहुत प्रभावित हुआ। उसने पूछा, 'यह किसने भेजा, कितना सुन्दर लिखा है। उसे धन्यवाद भेज दो।'

नई बातें सीखने-जानने को वह जैसे बेचैन रहता। जैक की सनक की बातों और मेरे किताबी ज्ञान दोनों पर वह बराबर ध्यान देता। फिर अट्टहास करके वह कहता, 'आदमी ने भी क्या दिमाग पाया है!'

उसकी आंखें कमज़ोर थीं। इससे वह पढ़ता कम था लेकिन उसकी बुद्धि को देखकर आश्चर्य होता था। एक दिन उसने जैक से पूछा, 'तुम हर समय खुदा के विरोध में ही क्यों सोचा करते हो?'

जैक ने बड़े इतमिनान से उत्तर दिया, 'मैं क्या करूँ। बीस वर्ष से अधिक मैं खुदा पर विश्वास करता रहा। मैं तब खुदा की बातों पर बहस भी नहीं करता था।'

रयजोव तातार जिले का रहने वाला था। मित्रता तो चलती रही परन्तु मेरे पास कोई अपनी जगह न थी इससे मित्रों को मैं कभी दावत न देता और वे मेरे पास कभी न आते। कुछ सिपाही मेरे ग्राहक थे। वे अपने कप्तान के लिए और कभी कभी अपने लिये भी केक व अन्य वस्तुएँ लेने आते। मुझे यह आदेश था कि उनसे ज्यादा हिलूँ मिलूँ नहीं अन्यथा इस दूकान का उपयोग ठीक से न हो सकेगा। इधर मेरा जी काम में ज्यादा न लगता। अब तो रोजगार की आव-

श्यकता का विचार किए बिना भी दूकान का पैसा घर पर खर्च होने लगा जिसका फल यह हुआ कि अक्सर आटे के लिए भी पैसा न बचता। आखिर एक दिन डेरेनकोव ने बहुत गम्भीरता से अपनी दाढ़ी के बाल खींचते हुये कहा, 'देखो, अब दिवाला होने वाला है।'

उसकी हालत अच्छी न थी। लाल बालों वाली नास्त्या गर्भवती थी। अब डेरेनकोव और वह दोनों ही एक दूसरे से कतराते। अक्सर वह मुझसे सहानुभूति की आशा करता व कहता, 'यह बड़ा बुरा है, सभी चीजें गायब हो जाती हैं। कल ही मैं आधे दर्जन जोड़े मोजे अपने लिए लाया था—आज सभी गायब हैं।

मुझे आश्चर्य सिर्फ इसलिये हुआ कि यह व्यक्ति दूसरों के लिये व्यापार चला रहा था और आज यही व्यक्तिगत बातें क्यों करने लगा है। इसके अलावा आजकल उसके परिवार का प्रत्येक व्यक्ति उसके लिए परेशानी का कारण बन गया था। उसका बूढ़ा बाप अचानक धर्म के लिए पागल हो गया था। उसका छोटा भाई चकले का प्रतिदिन का घूमने वाला बन गया था। उसकी बहन घर में इस प्रकार व्यवहार करती थी जैसे वह अजनबी हो किसी से उसे मतलब न हो। वह उस लाल बाल वाले लड़के के प्रेम में पागल हो रही थी। अक्सर उसकी आंखें आंसू से तर और सूजी हुई देखी जाती थीं। और परिणाम यह हुआ कि मैं उस लड़के से घृणा करने लगा।

मुझे ऐसा शक हुआ कि शायद मैं भी उससे प्रेम करने लगा हूँ। साथ ही सामने के घर वाली लड़की के प्रति भी मेरे मन में कोमलता जागृत हो गई थी। मुझे हर तरफ प्रेम की बौछार ही दिखती थी। संसार में हर ओर की [illegible] के प्रति

अपने मन में एक अजीब प्रेम का मैं अनुभव करता। अब हर समय लगता कि यदि किसी स्त्री से प्रेम सम्बन्ध न जुड़ सके तो कम से कम मित्रता अवश्य हो जानी चाहिये।

मैं अपने असली मित्रों को पहचान न पाता। अधिकांश ऐसे थे जो मुझे गीली मिट्टी समझ कर सदा ही कोई न कोई मेरा स्वार्थ पूर्ण उपयोग करना चाहते थे।

जार्ज प्लेतनेव गिरफ़ार करके सेंटपिटर्सबर्ग के क्रेस्ती जेल में बन्द कर दिया गया था। एक दिन सुबह निकिफोरिच के यहाँ गया तो यह सूचना मिली। उस समय उसके सभी तकमें उसके सीने पर लगे थे जैसे वह परेड से लौटा हो। पहले तो अपने हाथ में टोपी लेकर फिर टहलते हुये उसने बताया, 'प्लेतनेव कल रात गिरफ्तार कर लिया गया।' कहते समय उसका गला भी भर आया था।

मैं जानता था कि प्लेतनेव अपनी गिरफ्तारी की किसी भी क्षण आशा करता था। रबजोव व मुझे उसने आगाह भी किया था। निकिफोरिच ने मुझसे कहा, 'तुम अब मुझसे मिलने क्यों नहीं आया करते?'

उसी रात को मैं फिर उसके पास गया। शायद वह सो कर उठा था और अधलेटा हुआ सा बैठा 'क्वास' पी रहा था। उसकी पत्नी खिड़की पर बैठी उसका पाजामा सी रही थी। मुझे देखते ही वह बोला, 'देखा न अब पकड़ गया। उसके कमरे में एक घड़ा मिला जिसमें वे जार के विरुद्ध पर्चे छापने की स्याही बनाते थे।'

फर्श पर थूक कर उसने चिल्लाकर पत्नी से कहा, 'मेरा पाजामा दे!'

बिना सिर उठाये ही वह बोली, 'एक मिनट!'

फिर पत्नी की ओर इशारा करके वह बोला, 'यह उसके लिये दु:खी है। यह उसके लिये रो रही थी। यों तो मैं भी उसके लिये दु:खी हूँ पर सवाल यह है कि एक विद्यार्थी को भला जार का विरोध करने की क्या पड़ी थी ?'

फिर कपड़ा पहनते हुये उसने कहा, 'मैं जरा जाऊंगा·······
·······वह घड़ा, तुम·······।'

उसकी पत्नी जब तक वह चला न गया खिड़की के बाहर ही देखती रही। फिर उसने खिड़की के दरवाजे पर अपना हाथ पटक कर कहा, 'स्कंक !'*

आँसू के कारण चेहरा भी फूला सा लगता था और एक आँख तो सूजन के कारण बन्द थी। जल्दी से चूल्हे के पास जाकर उसने केतली चढ़ाई और कहा, 'मैं इसे अब मजा चखाऊँगी। उस पर तुम एक बात का भी विश्वास न करना—वह तुम्हें फंसाने के चक्कर में है। वह झूठा है। उसके दिल ही नहीं है। वह तुम लोगों के बारे में खूब जानता है। जीवन भर वह लोगों को फँसाता रहा है—यही तो उसका काम रहा है।'

वह मेरे बहुत-बहुत पास आ गई और तनिक अधिकार के स्वर में बोली, 'मुझे चुम्बन दो !'

मैंने देखा कि उसके प्रस्ताव के बाद भी मुझे बहुत उत्साह न आया लेकिन उसकी आँखों में इतनी प्यास दिखाई पड़ी कि मैंने उसके गले में एक बाँह डाल दी उसके रूखे बालों को सहला कर पूछा, 'फिर वह आजकल किसके फेर में है ?'

'फिसर स्ट्रीट में कोई ! तुम क्या नाम भी जानना चाहते हो ! देखो वह आ गया।—बस मैं एक का ही नाम जानती

*उत्तरी अमरीका में पाया जाने वाला एक जानवर।

हूँ—प्लेतनेव का।' और कह कर फिर चूल्हे के पास चली गई।

निकिफोरिच एक बोतल वोद्का, कुछ पाव रोटियाँ और चाय ले आया। हम चाय के मेज पर बैठे। मेरिया साथ ही थी। वह मेरे चेहरे की ओर गौर से देख रही थी। और वह कह रहा था, 'ज़ार आदमियों के लिये खुदा है।'

फिर मेरी ओर घूम कर वह बोला, 'तुम तो काफी पढ़े लिखे आदमी हो! तुमने बाइबिल पढ़ी है? क्या तुम उसमें जो भी लिखा है उसे ठीक मानते हो?'

'मैं नहीं जानता!'

'मैं समझता हूँ कि उसमें अधिकांश बेकार ही हैं। जैसे भिखारियों को उसमें बहुत महत्व दिया गया है। गरीबों के बारे में भी— लेकिन हमें देखना है कि सचमुच के गरीब और जो अपने को गरीब मानते हैं उनमें अन्तर है या नहीं!'

'क्यों?'

क्षण भर चुप रहकर वह मुझे गौर से देखता रहा, फिर बहुत सज्जनता से कहा, 'मेरी अपनी राय है कि बाइबिल में लिखा है और जीवन का आज जो रूप है उसमें अन्तर है। देखो न प्लेतनेव ने किस प्रकार अपने को बरबाद किया।'

मैं अवाक होकर उसे आश्चर्य से सुनता रहा। 'तुम तो होशियार आदमी हो। तुम पढ़े लिखे हो पर क्या तुम्हारा नाम-धाम होगा। सोचा ऐसा है? तुम तो ज़ार की सेवा कर के अच्छी तरह सफलता पा सकते हो।'

मैं सोच रहा था कि पूछूं कि किशार स्ट्रीट पर कौन उसका शिकार है। यद्यपि एक का नाम मैं जानता था— सरजेलोमोव

जो अभी ही देश निकाले के बाद वापस आया था। तभी उसकी स्त्री ने टोका, 'नव बज चुके हैं!'

'रहने भी दो!' कह कर निकिफोरिच उठ खड़ा हुआ और अपनी वरदी का बटन बन्द करने लगा। 'अच्छा विदा! याद रखिये कि कभी कभी आप का आना अच्छा भी लगता है!'

उसके घर से वापस आकर मैंने प्रण किया कि निकिफोरिच के साथ अब कभी चाय नहीं पिऊँगा। उन्हीं दिनों एक 'टालसटायन' शहर में आया। इतना ऊँचा, तेज, मोटे ओठों और काली सुन्दर दाढ़ी वाले व्यक्ति को मैंने पहले न देखा था। उसकी आंखों से जैसे शोले निकल रहे हों। प्रोफेसर के घर में एक मीटिंग हुई। अधिकांश युवक थे और उनके बीच एक सुन्दर सा काला लबादा पहने हुये पादरी। वह 'टालसटायन' ही बोल रहा था। बायां हाथ उसके शब्दों के साथ हिल रहा था और दायां उसके पैंट के जेब में था।

'अभिनेता है!' किसी ने फुसफुसाकर कहा।

मुझ पर उसके व्यक्तित्व का गहरा प्रभाव पड़ा। मैंने पता लगा लिया कि उसका नाम है क्लोपस्की और वह कहाँ रहता है! दूसरे दिन शाम को मैं गया। पास ही गाँव में वह उस मकान में रहता था जिसकी मालकिन दो युवती लड़कियाँ थीं। वह बाग में एक पेड़ के नीचे टेबिल बिछाये दोनों लड़कियों के साथ ही बैठा था। वह सफेद कपड़े पहने था—सफेद कमीज, सफेद पैंट, उसकी चौड़ी छाती का आभास मिलता था। वह कुछ खा रहा था। एक लड़की खड़ी उसे परोस रही थी और दूसरी पेड़ के सहारे खड़ी खासी आनन्द से उसको एक टक देख रही थी। दोनों लड़कियाँ एक सा अपने आप पर मुग्ध सी लग रही थीं।

बात चीत में उसने कहा, 'प्यार से ही किसी को जीता जा सकता है। बिना प्यार के जीवन कुछ नहीं है। जो कहते हैं कि संघर्ष जीवन का अंग है वे अंधे हैं। आग को आग से ही नहीं दबाया जा सकता।'

थोड़ी देर बाद एक दूसरे के हाथों में हाथ डाले लड़कियाँ चली गईं। पीछे से उन्हें देखते हुए उसने मुझसे पूछा, 'अच्छा बतलाओ, तुम कौन हो?'

मेरी कहानी सुनकर उसने कहा कि आदमी जीवन की हर स्थिति में आदमी ही है। जीवन के नजदीक होने के माने हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को प्यार किया जाय।

मैं उसकी बात ध्यान से सुन रहा था और अनुभव भी कर रहा था कि मैं उसे उबा ही रहा हूँ। उसने जम्हाई लेकर कहा, 'प्रेम के प्रति समर्पण ही तो जीवन का नियम है। और सुनो भाई, माफ करना। इस समय मैं थका हूँ।'

उसने फिर आँखें बन्द कर लीं। मैं वहाँ से चला आया लेकिन मेरे मन में ऐसा हो रहा था जैसे वह बहुत ईमानदार व्यक्ति नहीं है।

कुछ दिनों बाद, अपने एक डाक्टर मित्र को जो कंआरा और शराबी था, उसे घर पहुंचाते समय मेरी भेंट कोपस्की से हो गई। वह [illegible] रात को सोया न होगा क्योंकि उसकी आँखें लाल थीं और चेहरा उतरा हुआ था। वह भी शायद उस दिन पिये था।

वहाँ कोपस्की ने मुझे [illegible] बाँहों में [illegible] लिया और डाक्टर से बोला, 'डाक्टर इनसे पूछो कि यह किस फेर में है? यह आजकल अंधेरे के चक्कर में है।'

डाक्टर हँसा, उसने नीली आँखों से मुझे पहचाना. 'अरे यह तो [illegible] है। इसका मेरा दो जन्मों का सम्बन्ध है।

कह कर उसने मुझे अपने मेज के दराज की चाभी दी और कहा, 'खोलकर जितना हो तुम्हारा वह निकाल लो।'

उस दिन की भेंट के बाद ही मुझे पता चला कि कोप्स्की ने उन दोनों लड़कियों से अपने प्रेम सम्बन्ध को सर्वविदित करा दिया है जिनके घर में वह रहता था।

दोनों लड़कियों से एक साथ प्रेम भला कैसे चल पाता सो आपस में दोनों लड़कियों की खटक गई और दोनों बहनों ने कोप्स्की से घृणा करना शुरू कर दिया। बाद में तो दोनों ने नौकर से कहला दिया कि उसके लिये अब घर में स्थान नहीं है अतः उसे वह घर ही नहीं शहर भी छोड़ देना पड़ा।

प्रेम की परिणति कितने रूपों में होती है, यह मेरे लिये एक समस्या बन गई थी। मेरी सारी शिक्षा का फल अब तक यही था कि मेरे भीतर क्रिश्चियन धर्म का बहुत असर था और सदा ही यह भावना रहती कि अन्य व्यक्तियों को मैं भाई मानूँ परन्तु आँखों के आगे जो कुछ देखता था बिल्कुल भाईचारे की बात न थी। जीवन का जो रूप मेरे सामने था वह घृणा और कष्ट की अटूट कड़ी का रूप था। मेरे पास केवल पुस्तकें पढ़कर समय काटने के अलावा कोई दूसरा चारा न था।

अक्सर दरवाजे पर घंटे भर बैठकर मैं देखता कि मजदूर, अफसर और अन्य लोगों में जीवन के प्रति कितनी असमानता है और वे किस तरह जीवन के भिन्न-भिन्न रास्तों पर चल रहे हैं।

यह सब देखकर मुझे तनिक दुःख ही हो रहा था। लावरोव जानवरों का डाक्टर था। उसे कुछ बीमारियाँ थीं जो अच्छी न हो रही थीं अतः ऊबकर वह जहरीली दवाइयाँ खाता ताकि शीघ्र ही उसके जीवन का अन्त हो जाय।

'खुद तो जानवरों का इलाज करता है और खुद ही मर रहा है ।' उसके साथी दर्जी मेडनीकोव ने कहा जिसके साथ एक ही कमरे में वह रहता था । मेडनीकोव के एक सात साल की लड़की, और एक ग्यारह साल का लड़का था । पत्नी को वह अक्सर बाँस की छड़ी से पीटा करता था ।

रात को गली की लैम्पों को जला दिया गया था । लेकिन थोड़ी बूँदा बूँदी हो रही थी और एक प्रकार का धुँधलापन छाया हुआ था । एक वेश्या एक शराबी व्यक्ति की बाँह पकड़े, उसे घसीटती हुई गली में कुछ बड़बड़ाती हुई चली जा रही थी । रह रह कर वह उसे झकझोर भी देती थी । उसने कुछ कहा जिसके उत्तर में उस स्त्री ने कहा,

'यह तकदीर है !'

'ठीक' मैंने सोचा, 'मेरी भी इसी शराबी की हालत है । मैं भी इसी तरह घसीटा और झिझकोरा जा रहा हूँ । मुझे भी उलझे दिमाग के लोग घसीट रहे हैं । मैं इन सबों से कितना ऊब गया हूँ !'

मैं जाने किस शक्ति के द्वारा औरतों की ओर, किताबों की ओर, मजदूरों की ओर और विद्यार्थियों की ओर खिंचा जा रहा था । मैं न तो इधर का होता था न उधर का ।

जैक शेपोरनीकोव, के बारे में मैंने सुना कि वह अस्पताल में है । मैं उसे देखने गया । ज्योंही मैं अन्दर गया कि एक मोटी, चश्मा पहने, और भद्दे चेहरे वाली सफेद कपड़े पहने स्त्री ने बताया, 'वह तो मर गया ।'

जब मैं मुस्करा, अचानक वापस न आकर उसे ही घूरता रह गया तो वह क्रुद्ध होकर मुझ पर जैसे झपटी, 'तुम अब क्या चाहते हो ?'

मुझे भी क्रोध आ गया और मैंने उसे चुड़ैल कह दिया।

'निकोलाई, आकर इस आदमी को बाहर निकालो !'

निकोलाई पीतल के छड़ों को पालिश से चमकाने में व्यस्त था। एक छड़ से मेरे पीठ में धक्का मारा। मैंने उसे उलट कर अपनी बाँहों में उठा लिया और कमरे के बाहर लाकर अस्पताल के दरवाजे की सीढ़ी पर बैठा दिया। वह चुप लगभग वहीं बैठा रहा। फिर मुझे घूरकर कहा, 'कुत्ते !'

मैं दरजाविन पार्क* में चला गया और कवि की मूर्ति के नीचे बेंच पर बैठा। जाने क्यों मेरे अन्दर ऐसी भावना उठी कि मैं कुछ ऐसा कार्य करूँ जो बहुत बुरा व अशोभन हो ताकि लोग आकर झगड़ा करें और मैं उनपर टूट पड़ूँ। लेकिन वह छुट्टी का दिन था अतः पार्क सूना था और आस-पास कोई न था। केवल हवा चलकर सूखी पत्तियाँ उड़ा रही थी और कभी-कभी पास के लैम्पपोस्ट पर चिपके इश्तहार का एक उखड़ा कोना फड़फड़ा रहा था। हवा में काफी नमी आ गई थी, आसमान और काला हो गया था। मूर्ति जैसे मुझ पर झुक आई थी। उसे घूर कर मैंने सोचा, 'इस संसार में वह एक अकेला व्यक्ति रहता था, शेपोश्नीकोव, जिसने अपनी सारी शक्ति खुदा से लड़ने में खर्च कर डाली। लेकिन अब वह नहीं है। एक साधारण आदमी की तरह साधारण मौत पाई है। और वह मूर्ख निकोलाई, उसे चाहिये था कि मुझसे लड़ता, पुलिस आती और मुझे जेल ले जाती।'

मैं ल्योनिद को देखने गया। पाया कि वह टेबिल पर बैठा एक लोहे लैम्प के सहारे अपने जैकेट की मरम्मत कर रहा है 'कौन मर गया ?' मैंने बताया।

---

* कवि ग्योरगिय दरजाविन के नाम का पार्क।

उस बूढ़े ने वह हाथ उठाया जिसमें सुई पकड़े था। फिर अजीब भाव में बोला, 'हम सभी मर जाएँगे। यही बेहूदा तरीका है, बच्चे! वह मर गया न! मैं एक अन्य व्यक्ति से मिला था, वह भी मर गया। मैंने सुना है कि विद्यार्थियों ने हड़ताल की है, क्या यह सच है? लो यह जैकेट लो सिओ। मुझे दिखाई नहीं पड़ रहा।'

उसने मुझे वह गूदड़ जैकेट, सुई और तागा दे दिया और अपने दोनों हाथ पीछे बाँधकर कमरे में टहलने लगा, 'अब या कभी भी, यहाँ न वहाँ, कहीं न कहीं लौ निकलेगी। क्या यह शहर है! मैं यहाँ से चला जाऊँगा। लेकिन कहाँ जाऊँगा? मैं सब जगह तो हो आया हूं।' कहते हुए वह कोने में रुका रहा फिर आकर मेज के किनारे बैठ गया।

'मैक्सिम, मेरे बच्चे! खुदा का विरोध करने की ठीक की आदत ठीक न थी। किसी को खुदा व राजा के काम में दखल नहीं देनी चाहिए। जवान होकर अन्धे बन जाना उचित नहीं। अच्छा, चलो चाय पिएँ।'

जाते समय अँधेरे में मेरी बाँह पकड़कर उसने कहा, 'मेरी बात को याद रखना, एक दिन आवेगा जब जनता का सब्र अपनी सीमा पार कर जाएगा और अपने क्रोध में वे सब कुछ समाप्त कर देंगे।'

हम लोग चाय न पी सके क्योंकि एक चकले के सामने झगड़ा हो रहा था। कुछ मल्लाहों को मिल के मजदूर भीतर नहीं घुसने दे रहे थे।

'हर छुट्टी को यहाँ इसी तरह झगड़ा होता है।' रुज़ोव ने कहा, तभी उसने कुछ मजदूरों को पहचाना और उन्हें [illegible] हिलाया, 'इन [illegible] को [illegible] लाओ भी!'

अन्त में दरवाजा टूटने की आवाज आई। इसी बीच दो आदमी फाँदकर छत में चले गये और वहाँ उन्होंने बड़ी ऊँची आवाज में गाया—

'डाकू नहीं, चोर नहीं, लुटेरे नहीं हम,
नदी और समन्दर के आदमी हैं हम।'

इस प्रकार दिन बीत रहे थे। विद्यार्थियों के दंगे शुरू हो गए थे पर इसका कारण मुझे न मालूम था।

अपने खाली समय में मैं वाइलिन सीखने लगा। अक्सर रात को दूकान बन्द होने पर बजाता। मुझे गाने के प्रति काफी दिलचस्पी थी। लेकिन एक दिन मेरे संगीत अध्यापक ने जो एक थियेटर में काम करता था, उसने मेरी अनुपस्थिति का लाभ उठाया। मैं लापरवाही के कारण रुपयों की दराज बन्द करना भूल गया था। उसने अपनी जेबें रुपयों से भर लीं। लेकिन उसके जाने के पूर्व ही मैं समय से पहुँच गया। पकड़े जाने पर बहुत धीमे स्वर में उसने कहा, 'मुझे तमाचे मारो।' उसकी आँखें बरस रही थीं और ओठ फड़क रहे थे।

मैंने उसे रुपये वापस दराज में रख देने को कहा। उसने रुपये रख दिये और जाने लगा, लेकिन दरवाजे पर रुककर उसने दस रूबल के लिये प्रार्थना किया।

मैंने उसे दे दिए लेकिन उसी दिन से मेरी संगीत-शिक्षा बन्द हो गई।

दिसम्बर में मैंने आत्महत्या कर लेने का निश्चय किया। इसका कारण मैंने अपनी कहानी 'मकर के जीवन की एक घटना' में स्पष्ट किया है। मेरा प्रयत्न असफल रहा।

पांच

एक जगह से मैं एक रिवाल्वर मांग लाया उसमें चार गोलियाँ थी। मैंने अपने हृदय पर गोली चलाई पर बच गया। एक महीने बाद अपने ऊपर बहुत ग्लानि आई और मैं पुनः दूकान में लौट आया। लेकिन इस बार अधिक न रहा। मार्च में एक शाम को मैंने देखा कि खोखोल नामक एक व्यक्ति मेरे कमरे में बैठा इन्तजार कर रहा है। खिड़की पर बैठ कर वह एक बहुत मोटी सिगरेट पी रहा था। मेरे आते ही शिष्टाचार में समय न गंवा कर उसने कहा,

'तुम्हें कुछ फुर्सत है?'

'बैठ जाओ, बातें करें!'

हमेशा की तरह ही उसने काली चमड़े की जैकेट पहन रखी थी। 'मेरे साथ चलोगे?' उसने पूछा, 'क्रास्नोविदोवो गांव में मैं हूं, वोल्गा से नीचे की ओर लगभग तीस मील। मेरी वहां दूकान है, तुम सम्हालना होगे? तुम्हारा ज्यादा समय भी नष्ट न होगा। वहां पुस्तकों का अच्छा संग्रह भी है और मैं तुम्हें पढ़ाई में अन्य सहायता भी दूंगा। क्या राय है?'

'हां!'

'मैं शुक्रवार को तुम्हारा कुवरातोव में इन्तजार करूँगा। क्रास्नोविडोवो के लिये वैसिली पेन्कोव की नाव पूछना। यों तो मैं वहां मिलूँगा ही। अच्छा तब तक के लिये विदा।'

उठकर उसने अपना चौड़ा पंजा मेरी ओर बढ़ा दिया। दूसरे से अपनी जेब घड़ी निकाल कर देखा और कहा, 'इसमें केवल छः मिनट लगे। मेरा नाम है माईकेल रोमास।'

फिर बिना देखे वह चला गया।

दो दिनों के बाद मैं क्रास्नोविडोवो की ओर चल पड़ा। वोल्गा की बर्फ अभी अभी ही गली थी।

स्टीमर में मेरे पास बैठे रोमास ने 'कहा, मुझे वे किसान अच्छे नहीं लगते जो दूसरे किसानों से काम कराते हैं।'

दोपहर को हम लोग क्रास्नोविडोवो पहुंचे। मैं नये घर के एक साफ सुथरे कमरे में गया जहां चमकदार आँखों वाली एक स्त्री मेज ठीक कर रही थी। रोमास ने किताबों के कुछ बक्से खोले और चूल्हे के पास एक आलमारी में उन्हें सजा दिया।

'तुम्हारा कमरा ऊपर है।' मुझसे उसने कहा।

मेरे कमरे की खिड़की से गाँव के दृश्य दिखाई पड़ते थे।

हम लोग खाने बैठे। ईसोट भी मेज पर बैठा बातें कर रहा था। मेरे पहुंचते ही बात बन्द हो गई। रोमास ने कहा, 'आओ!'

'हम लोगों ने तय किया है कि सब अपने से ही करना पड़ेगा। तुम्हारे पास रिवाल्वर है न! और नहीं तो छड़ी लिये रहा करो। देखो बारीनोव और सुस्लकिन से दूर रहना होगा। औरतों की तरह उनकी जबान है। और तुम्हें क्या मछली मारना अच्छा लगता है?'

'नहीं।'

ईसोट का खाना समाप्त हो गया था, कहा, 'बहुत सम्हल कर रहना होगा।'

जब वह चला गया तो रोमास ने कहा, 'बहुत तेज और साफ कहने वाला आदमी है। लेकिन अफसोस की बात है कि इसने पढ़ाई नहीं की। तुम जरा इसकी मदद करना।'

रात को बहुत देर तक हम जागते रहे। उसने मुझे स्टाक दिखाया और चीजों के दाम की लिस्ट दी। 'गाँव के दो दूकान-दारों के हाथ भी हम बिक्री करते हैं।'

'मैं समझ गया।'

दूकान तो बन्द थी लेकिन रोशनी जलती देख एक आदमी दरवाजे पर चक्कर काट रहा था।

'उसे देखो, वह मीगन है। एक भिखारी। जानवर, सारी खुराफातों की जड़। कोई भी बात मुँह से न निकालना जब वह रहे।—और हाँ तुम पढ़ते बहुत हो लेकिन पढ़ाई ऐसी न हो कि आदमियों से व्यवहार टूट जाए।'

फिर 'कोठे' पर मैं जाते समय उसने मुझे किताबें दिखाईं, हर विषय के प्रसिद्ध लेखकों के प्रसिद्ध ग्रन्थ।

चाय पीते समय उसने अपने विषय में बताया,—उसका पिता चरनिगोव में लुहार था। उसने सबसे पहला काम क्रीव रेलवे स्टेशन पर तेल देने वाले का किया: वहाँ कुछ क्रान्ति-कारियों का उसका साथ हो गया। मजदूरों का एक स्कूल खोलने की योजना वह बना रहा था उसी में वह पकड़ा गया और दो वर्ष की कैद हुई। फिर याकुत्स्क में दस वर्ष तक निर्वासित रहा।

'पहले तो याकुतों के साथ रहना बड़ा कठिन मालूम हुआ। वहाँ का जाड़ा सचमुच दिमाग तक जमा देता था। वहाँ दिमाग काम नहीं करता। फिर पता लगा कि मेरे अलावा अन्य रूसी भी वहाँ हैं। सरकार ने इतनी कृपा की थी सभी को आपस में मिलने की सुविधा थी। उनमें एक विद्यार्थी भी था जिसका नाम कोरालेन्को था। वह भी अब वापस आ गया है। कुछ दिन साथ रहने के बाद हम अलग हो गये थे। हम लोग कई बातों व आदतों में समान थे। वह हर प्रकार के काम कर लेता था। अब तो वह पत्रिकाओं में लेख लिखता है और सुना है कि बहुत अच्छा लिखता है।'

आधी रात तक हम लोग चलते रहे। पहली बार जीवन में किसी से एकरसता का मजा मिला। आत्महत्या की कोशिश की बात सोच कर मुझे अपने आप पर बड़ी लज्जा मालूम होती थी। मैं समझता हूँ ऐसे अवसर पर रोमास का मेरे जीवन में आना बहुत लाभदायक सिद्ध हुआ। इसे मैं कभी न भूलूंगा।

रविवार को दूकान खोली गई और फौरन ही गाँव वालों ने दरवाजा छेंक लिया। मैथूव बारीनोव पहला व्यक्ति था जो आया। देखने में वह बहुत कुछ स्त्रियों जैसा लगता था।

एक दुबला पतला व्यक्ति फटा सा कोट पहने आया।

'आओ मीगन; बारीनोव ने स्वागत किया, 'आज रात को क्या चुराया ?'

'तुम्हारा रुपया,' हँसकर मीगन ने कहा।

हमारा मकान मालिक भी आ गया और हमारा पड़ोसी पानस्कोव जैकेट और खिलाड़ियों की तरह कपड़े पहने आया। मीगन को तनिक क्रोध से देखकर उसने कहा, 'तुम पर मेरा गुस्सा बढ़ता जा रहा है।'

'बिना एक दूसरे को मारे अब हम जी नहीं सकते !' मीगन ने उत्तर दिया।

पानखोव ने कहा, 'मैं अभी केवल छियालीस वर्ष का हूँ।

'पिछले क्रिस्मस में तुम तिरपन के थे। यह तुमने ही कहा था आखिर यह झूठ क्यों बोले ? बारीनोव ने पूछा।

बहुत गम्भीर दाढी वाला बूढ़ा सुरलोव और मल्लाह इशोट अन्य दस आदमियों के साथ आये। दरवाजे से लगकर ही बैठा खोखोल अपना पाइप पीता हुआ सबों की बातों का रस ले रहा था। रोमास इन लोगों का इकट्ठा होकर गप्पबाजी करना पसन्द करता था। वह इस समय अपनी पाइप की राख झाड़ रहा था। उपस्थित लोगों में बहस छिड़ी थी। कुछ इस पक्ष के थे जमींदार अच्छे हैं कुछ इस पक्ष के कि महाजन अच्छे हैं, सूदखोर !

सामने नदी में एक जहाज आ रहा था। इसी समय एक शराबी बूढ़ा पाँव लड़खड़ाने से सड़क पर गिर पड़ा। गप्पों की बातों का जोर कम हो गया।

मैंने चा पीते समय खोखोल से पूछा कि उसे किसानों से बातें करने को कैसे समय मिलता है।

'क्यों ?' उसने पूछा और मेरी बात सुनकर कहा, 'उनसे बातें करने से ही मैं अपने गाँव पहुँच जाता हूँ।

उसने पाइप में तमाखू भरी और जलाया और इस प्रकार बातें की कि मुझे उनके शब्द सदा याद रहे। ये किसान बहुत दार्शनिक होते हैं ! अपने पड़ोसी पर भी शक ही करते हैं। पड़ोसी पर, हर नये आगन्तुक पर ! इनका जीवन कठोर है। आज ये जमींदारों से जमीन ले ली है। खुद ही मालिक है। इसके माने आजादी तो नहीं—लेकिन वे कहते हैं कि यह

आजादी है। कैसी आजादी है, यह किसी दिन जार समझाएगा। इन्हें जार पर विश्वास भी अटूट है। उसने जैसे जमीन हथिया ली उसी तरह व्यापारियों की जहाज व दूकान भी ले सकता है। यह तो किसानों को बताना पड़ेगा कि वे जार से छीन कर शक्ति अपने हाथों में ले सकते हैं। वे अपना यह अधिकार पा सकते हैं कि अफसर अपने बीच से ही चुने। सभी अपने हों, सिपाही, गवर्नर और जार भी!

'लेकिन यह समझाने में शताब्दी लगेगी।'

'और नहीं तो क्या तुम समझते हो कि इस क्रिसमस में ही हो जाय।'

फिर वह चला गया। करीब ग्यारह बजे मैंने पास ही कहीं गोली की आवाज सुनी। मैं उस वर्षा और अंधकार में भी बाहर निकल पड़ा तभी छाया की तरह रोमास आता दिखा और मेरे प्रश्न पर कहा, 'मैंने गोली चलाई थी!'

'किस पर?'

'कुछ लोग लाठियाँ लेकर आये थे। मैंने कहा छोड़ दो रास्ता, नहीं तो, गोली मार दूँगा। सो हवा में गोली छोड़ी थी किसी का नुकसान नहीं हुआ।'

कमरे के बीच खड़ा होकर, कपड़ा उतारते हुये, दाढ़ी से पानी निचोड़ते हुये और घोड़े की तरह हांफते हुये उसने कहा, 'मेरे जूते तो नष्ट हो गये, जाने दो। बदल लूंगा। हाँ, तुम रिवाल्वर साफ करना जानते हो? इसे साफ करलो, कुछ तेल भी डालो नहीं तो जंग लग जाएगा।'

बगल के कमरे में कंघी करते हुये उसने कहा, 'जब भी गाँव में जाना तो सतर्क रहना। खासकर रात में और छुट्टी के दिन। वे शायद किसी दिन तुम्हें भी सताएं। पर कभी लाठी लेकर न जाना। लाठी से वे भड़क उठते हैं—समझते हैं उन्हें

चुनौती दी जा रही है। यों अधिक डरने की भी बात नहीं— वे तनिक बुजदिल भी हैं।'

अजीब जीवन हो गया था। प्रतिदिन कुछ न कुछ नवीन सा लगता। मैं इतिहास की किताबें पढ़ता तो रोमास ने कहा, 'मन में समझ लो कि विज्ञान पढ़ने से ही दिमाग बढ़ता है।'

एक दिन उसने कहा, 'कई लोग तेरे ताकत की चर्चा करते थे। आज एक लाठी तू ले और एक मैं। देखें किसमें अधिक दम है।'

हमें रसोई घर में दो लाठियां भी मिल गईं। और हम लोग भड़े। खोखोल देख कर हँस रहा था।

इसोट अच्छा आदमी था। वह वोल्गा का बहुत भक्त था। आकाश के तारों को देखकर वह कहता, 'खोखोल कहता है कि उनमें भी जीवन है। तुम्हारी क्या राय है?

वह अच्छा आदमी था यद्यपि उसका कोई वंशज न था न कोई जायदाद। मछुओं का जीवन ही ऐसा है। लेकिन वह किसानों से तनिक चिढ़ा था, 'वे अच्छे लोग नहीं हैं। वे बड़े चालाक हैं। बड़े स्वार्थी—छिः!'

औरतें इस व्यक्ति के पीछे पड़ी रहतीं। 'मैं इस मामले में सौभाग्यशाली हूँ। बहुत से यदि मुझसे नाराज रहते हैं पर मैं क्या कर सकता हूँ। लेकिन अगर कोई भी तुमसे प्रेम करे तो तुम दूर कहाँ तक रहोगे? उसका पति उससे घोड़ी की तरह काम लेता है—कभी प्यार नहीं, आराम नहीं। और मैं तो औरतों को खुश रखने को शायद पैदा ही हुआ हूं। मैं जानता हूं किसी ब्याहता से प्यार करना पाप है लेकिन……'

यह कह वह उत्साह से हँस पड़ा फिर कहा, 'तुम जानते हो। मेरे पास भी एक औरत थी। शहर से आई थी। क्या तुम

था, दूध की तरह सफेद चमड़ी, बाल चमकदार और नीली आँखें! मैं उसके हाथ मछली बेचने जाता तो बहुत विवशता से उसे घूरता।'

'तुम क्या चाहते हो?' उसने पूछा।

'यह तुम आसानी से समझ सकती हो।' मैंने कहा।

'आज रात को इन्तजार करना, मैं तुम्हारे पास आऊँगी।' उसने कहा।

'और वह आई। केवल मच्छर परेशान कर रहे थे। उसने कहा, 'ये तो खा जायेंगे।' और दूसरे ही दिन उसका पति जो एक जज था आ गया।'

इसोट कुकुश्किन का बहुत प्रशंसक था। कुकुश्किन के पास जमीन न थी। उसकी स्त्री को शराब पीने की आदत थी। वह भी मजदूरी करती थी। वह छोटे कद की बहुत मजबूत और स्वस्थ औरत थी। अपना मकान किराये पर उठा कर वह एक छोटे कमरे में रहती थी। झूठी अफवाहें फैलाने की उसे बीमारी सी थी। जब कोई खबर न होती तो खुद ही कुछ गढ़ लेती।

गाँव में कुकुश्किन का कोई महत्व न था। हाँ उसे लोग हँसी मजाक का साधन अवश्य समझते थे। लोग उसे भिखारी और [illegible] कहते थे लेकिन पैनकोव उसे बहुत 'रहस्यमय वीर' समझता था।

कुकुश्किन सब प्रकार के छोटे मोटे कार्य कर लेता था। उसे चिड़ियों से बहुत प्रेम था। उसने एक जोड़ी [illegible] पाली थीं।

वह एक बार पढ़कर भूल जाता था फिर दुबारा कभी न पढ़ता था। [illegible], इसोट और पैनकोव अक्सर आते और आधी रात तक रहते। [illegible] बड़बड़ाता रहता, [illegible] को

उत्पत्ति, विदेशों का जीवन, विद्रोह सब विषय। पैनकोव का प्रिय विषय था—फ्रांस की क्रांति। 'वहाँ जीवन ने करवट बदला है।' वह कहता।

पैनखोव ने ही अपना मकान दूकान खोलने को रोमास को दिया था। वह कहता था कि यदि उसके पास कोई व्यापार होता तो वह शहर में रहता। वह असंतुष्ट था यही कारण था कि वह बहुत शक्की भी था।

पैनकोव का मेरे प्रति पहला व्यवहार कोई बहुत अच्छा न था। वह मुझसे बहुत शान से बातें करता। मुझे उसमें अविश्वास की झलक मिली। मैं उससे तनिक सतर्क रहता।

मुझे एक शाम की याद आ रही है। एक साफ पुते हुये कमरे में। खिड़कियाँ बन्द थीं। एक टेबिल पर एक लैम्प। इसके सामने एक व्यक्ति बैठा था, ऊँचा ललाट, दाढ़ी। वह कह रहा था, 'जीवन में जानवरों की प्रवृत्ति से जितना दूर रहा जाय उतना अच्छा।'

तीन किसान बैठे थे। इसोट भी इस तरह गम्भीर बैठा था जैसे वह बहुत गहराई से सब समझ रहा हो। कुकुश्किन इस तरह मुँह बना रहा था जैसे मच्छड़ काट रहे हों। पैनकोव अपनी मूँछे ठीक कर रहा था। थोड़े बहस के बाद मैं अपने कमरे में आकर खिड़की से सोते हुये गाँव और सूने खेतों को देख रहा था। तारों की किरणें जैसे अँधेरे में छेद कर रही थीं।

मैं गाँव की रूखी जिन्दगी से खूब परिचित हो गया था। मैंने पढ़ा था और सुना था कि गाँव के लोग शहर वालों के मुकाबले में अधिक ईमानदार होते हैं। कुछ लोग गाँव में भी

खुश थे। मैं शहर का होने के कारण अपने को तनिक बड़ा मानने लगा था। मुझे शहर के कुछ अन्य व्यक्ति याद हैं :—

कालुगिन और नेवी

घड़ीसाज, डाक्टरी औजारों की भी मरम्मत होती है, सीने की मशीन, गाने के बाजे आदि सभी मरम्मत होते हैं,

एक छोटी सी दूकान के छोटे से दरवाजे पर यह लिखा था। दरवाजे के अगल बगल दो खिड़कियाँ थीं। भीतर एक खिड़की के सामने कालुगिन बैठता था। वह आँखों पर मोटे शीशे का चश्मा चढ़ाये था। दूसरी पर नेवी बैठता उसके बाल काले और घुंघराले थे। वह अत्यधिक लम्बा था। उनके पीछे दुकान में तरह तरह की मशीनें व चीजें भरी थीं। मेरी इच्छा थी दिन भर खड़ा मैं उन चीजों को देखा करता परन्तु वहाँ खड़े होने से उनकी रोशनी रुक जाती थी और वे बिगड़ उठते थे।

इतना होने पर भी देहात में मेरा पूरी तरह जी न लगता और वहाँ के निवासी किसी भी तरह मेरे दिमाग में नहीं आते।

उनकी बातों का मुख्य विषय था—स्त्रियों की बुराई करना। 'कलेजे का दर्द' 'छाती का दर्द' 'पेट का दर्द'—इनकी चर्चा अधिकांश होती। स्त्रियाँ भी बड़े बुरे स्वभाव की—अक्सर ही आपस में गाली गलौज! एक बार एक मुर्गे [illegible] के जन्म के लिये, जिसके [illegible] की कीमत चार [illegible] भी [illegible] परिवार लाठी लेकर लड़े। एक बुढ़िया की बाँह और एक लड़के

का कंधा टूटा। यह प्रति दिन की घटनाएँ थीं।

युवक लोग तो हर समय लड़कियों को छेड़ते और बेवकूफ बनाते थे। किसी लड़की को खेत में अकेले पा जाते तो उसका स्कर्ट उलटकर सिर पर बाँध देते। इसे वह 'लड़की को 'फूल बनाना' कहते। नंगी होकर लड़कियाँ गाली देतीं, चीखतीं पर उन्हें तो इस खेल में मजा आता। बड़ी मुश्किल से उसका पिंड छूटता। गिरजा घर में भी युवक पीछे से युवतियों की पीठ में कुछ तेज चीज चुभो देते। कुछ तो इसी के ही लिये गिरजाघर आते थे। एक इतवार को तो पादरी ने डाँटा भी था, 'जानवरों, अपनी गंदी हरकतों के लिये तुम्हें और कहीं जगह नहीं मिलती!'

'मैं समझता हूँ कि युक्रेन के लोगों में धर्म के प्रति अधिक कोमल भावनाएँ होती हैं।' रोमास ने कहा, 'यहाँ तो खुदा के लिए सच्चा प्रेम है ही नहीं।'

बच्चे यहाँ के बुजदिल होते थे। मेरी उनकी न पटी। उन्हों ने तीन बार मुझे पीटने की असफल कोशिश की। एक बार पाँव में चोट आ गई थी। मैंने इसकी चर्चा रोमास से नहीं की। लेकिन मुझे लँगड़ाते देखकर वह समझ अवश्य गया था।

यद्यपि उसने मुझे मना कर रखा था फिर भी मैं अक्सर रात को वोल्गा के किनारे घूमने चला जाता था। कभी कभी इसोट भी मेरे साथ होता था। रात को वह दिन से अधिक लम्बा लगता तथा सुन्दर भी। एक रात वहीं बगल में बैठकर वह कह रहा था, 'औरतें सब समझती हैं यदि उनसे बिल्कुल शुद्ध हृदय से बातें की जाएँ। यहाँ आने के पूर्व मेरी नाव में एक स्त्री थी उसने पूछा, 'जब हम मर जाएँगे तो हमारा क्या होगा? मुझे स्वर्ग व नरक पर विश्वास नहीं है।' ऐसा थे जो कितनी होशियार……।'

इसोट बहुत अच्छे दिल का आदमी था। उसे गिरजाघर के खुदा पर बहुत विश्वास था। थोड़ी देर बातें करके वह बिल्कुल गम्भीर हो गया। फिर कहा, 'यही होता है।'

'क्या ?'

'मैं अपने बारे में कहता था। देखो न जीवन कितना अजीब है !'

'हाँ बिल्कुल अजीब !' मैंने कहा।

उस अँधेरे में भी पानी की अपनी चमक थी। ऊपर चाँदी का सफेद आकाश था। तारे ऐसे लगते थे, जैसे सोने की चिड़ियाँ उड़ रही हों।

छः

सेब के पेड़ों में फूल लगे थे। सारा गाँव मस्ती की सुगन्ध से भर गया था। खेत से घर तक फूल यों लगते जैसे पेड़ों पर किसी ने रंगीन कपड़े लपेट दिये हों। छुट्टियों के दिनों में लड़कियाँ और युवतियाँ चिड़ियों की तरह चहक रही थीं और पुरुष जैसे नशे में चूर मुस्कुराते थे। इसोट तो सचमुच जैसे नशे में हो। वह जाने क्यों अब पहले से अधिक सुन्दर हो गया था। वह खूब सोया करता, हर समय नींद से चूर। कुकुस्किन तो कभी कभी उससे बहुत भद्दा लेकिन स्नेहपूर्ण मजाक भी करता।

'आज का जीवन कितना अच्छा है! जीने में भी क्या मजा है! हृदय इसका वर्णन नहीं कर सकता। यही याद तो मरते दम तक बनी रहती है।'

'तुम अधिक मजा न लेना नहीं तो किसी पति द्वारा मार भी खाओगे!' हँसकर ग्रोग्रोल ने आगाह किया।

'यह तो उनका अधिकार है,' इसोट ने उसी तरह जवाब दिया।

भास्कर पुलकल की मोटी आवाज की तरह खेतों, बगीचों व नदी के किनारों से गीतों की आवाज आती।

शनिवार की रात को हमारी दूकान अड्डा बन गई थी। सेमन, बूढ़ा सुसलोव, बारीनोव और क्रानोव आते और गहरी बहस में डूब जाते। इनमें से यदि कोई चला जाता तो उसकी जगह दूसरा कोई अवश्य आ जाता और यह बहस आधी रात तक चलती रहती। कुछ लोग शराब पी लेते थे खासकर युद्ध से वापस कोस्तीन जिसकी एक आँख व दो उँगलियाँ नष्ट हो चुकी थीं। अक्सर खोखोल उसे छेड़ देता तो वह मारने दौड़ता। लोग उसे पकड़कर शांत करते। इसमें सबों को बड़ा मजा आता। फिर कोस्तीन कहता, 'जाकर मेरे लिये वोदका लाओ!'

'क्यों?'

'मेरे कारण तुम लोगों ने इतना मजा जो लिया!' इस पर हंसी का तूफान उठ आता।

एक बार छुट्टी के दिन चूल्हा जलाकर रसोइयाँ चली गयी थी। मैं दूकान में बैठा था कि अचानक रसोई घर से इस प्रकार आवाज आई जैसे कोई राक्षस सिसक रहा हो। सारा घर काँप रहा था, टीन के डिब्बे जो ऊपर रखे थे गिरने लगे। खिड़कियों के शीशे बज रहे थे और जैसे धरती में कोई नगाड़ा बज रहा हो। मैं रसोईघर की ओर भागा जहाँ से काले धुएँ के बादल बाहर आ रहे थे, कुछ टूटने फूटने की भी आवाज आ रही थी।

मुझे दबोच कर खोखोल चिल्लाया, 'बाहर भागो।'

बाहर ही से रसोइयां चिल्लायी, 'यह क्या है?'

रोमास उस धुएँ के बीच से ही दौड़ा आया। अजीब आवाज आ रही थी। वह चिल्लाया, 'पानी लाओ, पानी!'

पानी छिड़ककर आग को थोड़ा शान्त किया गया। जमीन पर बिखरी लकड़ियों में आग अब भी सुलग रही थी। मैंने एक एक लकड़ी को पकड़ कर बुझाना शुरू किया।

'सावधानी से !' खोखोल ने कहा, वह रसोइया को भी खींच लाया। 'दूकान बन्द कर दो। और एलेक्स देखो, होशियार रहना कहीं फिर न आग तेज हो जाए।'

वह कुछ चूल्हे के पास बिन रहा था। मैंने पूछा, 'क्या है ?'

'यह देखो !' उसने कहा, 'किसी दुष्ट ने लकड़ी में बारूद लपेट दिया था।' कह कर लकड़ी को एक ओर करके उसने हाथ साफ किया। 'अच्छा हुआ कि अक्सीनिया बाहर चली गई थी नहीं तो वह अवश्य ही जल जाती।'

बाहर लड़के खुशी से चिल्ला रहे थे। 'आग ! आग ! खोखोल के यहाँ आग लगी है !'

किसी स्त्री के चीखने की बाहर से आवाज आई। दूकान के भीतर से ही अक्सीनिया चीखी, 'वे भीतर घुसे आ रहे हैं।'

रोमास एक तौलिए से अपनी दाढ़ी पोंछ रहा था। लोग बाहर तरह तरह की बात कर रहे थे। 'इन्हें गाँव से निकाल दो, रोज ही एक न एक खुराफात होती रहती है।'

एक बूढ़ा हाथ में कुल्हाड़ी लिए घुसा आ रहा था।

'कहाँ जा रहे हो ?' रोमास ने पूछा।

'आग बुझाने।'

'पर यहाँ तो कहीं आग नहीं है।'

इधर उधर देखकर वह बूढ़ा चला गया। रोमास ने बाहर निकल कर भीड़ से कहा, 'किसी ने एक लकड़ी में बारूद लपेट कर चूल्हे के पास रख दिया था लेकिन उससे अधिक नुकसान नहीं हो सकता था।'

भीड़ में से किसी ने कहा, 'हाँ, इतनी बड़ी जगह के लिए कम से कम चालीस पौंड बारूद चाहिए।'

भीड़ में से दूसरी आवाज आई, 'पुलिस को बुलाओ।'

भीड़ के छंटने में कुछ समय लगा। भीड़ अपना कुछ निशान भी छोड़ गई। हम लोग थक कर चाय पीने बैठे अकसीनिया अपने असाधारण आवाज में जो आज जाने क्यों बहुत दयालु लग रही थी बोली, 'जब तक अधिकारियों से शिकायत न की जायगी, ये अपनी बदमाशियाँ बन्द नहीं करेंगे।'

'क्यों तुम इन चीजों से परेशान हो जाते हो ?' रोमास ने पूछा।

काश, कि सभी लोग इसी तरह सहनशील होते !

मुझसे रोमास ने बताया कि वह कजान जाने वाला है फिर पूछा कि मेरे लिये कौन सी किताबें लावे। उसके प्रति अब मुझे बहुत आदर व प्यार उमड़ने लगा था। एक दिन उसने सुसलोव से कहा, 'भला यह कैसी बात है कि तुम तो दादा बन चुके हो लेकिन कभी ईमानदारी से ताश नहीं खेलते ! इससे लोगों की निगाह में तुम गिरते ही हो !'

'हाँ यह मैं अनुभव करता हूँ।' सुसलोव ने स्वीकार किया।

बाद में रोमास ने मुझे समझाया कि उसकी अनुपस्थिति में मुझे क्या करना चाहिए। ऐसा लगा जैसे आग वाली घटना के विषय में वह सब कुछ भूल गया है जैसे कोई मक्खी का काटना भूल जाय।

कोई आया, पेनखोव, चूल्हे की तरफ देखकर पूछा, 'क्या आग लगी थी ?'

'हाँ, बैठो चाय पियो।'

'नहीं मेरी पत्नी इन्तजार कर रही होगी।'

'कहां से आ रहे हो ?'

'इसोट के साथ मछली मार कर !'

खोखोल के साथ उसकी बातें इसी तरह छोटे छोटे वाक्यों में होती थीं। जैसे बड़ी बातें करके वे थक चुके हों।

'यह जार भी क्या है !' इसोट ने कहा।

'कसाई है, कसाई।' कुकुश्किन ने कहा।

'दिमाग भी नहीं है,' पेनकोव ने कहा, 'वह सभी राजकुमारों की हत्या करा चुका है। उसके दरबार में विदेशी बहुत हैं। इसके कोई माने ही नहीं है छोटा जमींदार इससे अच्छा। एक मक्खी को राइफल से मारा नहीं जा सकता लेकिन मक्खी भेड़िये से ज्यादा तंग कर सकती है।'

कुकुश्किन एक बाल्टी में गीली मिट्टी लाया, चूल्हा बनाने के लिये। उखड़ी ईंटों को सजाते हुये वह बोला 'इन मूर्खों के सिर में दिमाग नहीं होता। वे जाने क्यों परेशान करने पर लगे हुये हैं !'

खोखोल ने एक सहयोगी फलों का बाग बनाया था। पेनकोव, मुसलोव आदि कई ने उसको सहयोग भी दिया था। यहाँ तक की खोखोल ने भी मदद दिया था।

मैं सोगन के प्रति उसके सुरीले गाने के कारण काफी आकर्षित था। गाते समय वह आँखें बन्द कर लेता था और उसके चेहरे पर शांति छा जाती थी काली रातों में जब सन्नाटे के साथ ही आकाश को काले बादल छाए रहते तो उसे गाने का जी होता। अक्सर ऐसी शामों को वह कहता, चलो वोल्गा चलें।' वहाँ पानी में टाँगें डाल कर वह बैठता। तब फिर कहना शुरू करता, 'जब कोई मुझसे बड़ा आदमी कोई बात कहता है तो मैं सुनता हूँ। भला, इन देहातियों की क्यों सुनूँ ? इनमें अन्तर क्या है—वही सफ़ेद और [illegible] हो कर न !'

नीचे काली नदी बहती ऊपर काला आकाश तैरता। इसी समय पहाड़ी पर से एक कुत्ते के रोने की आवाज आई। लगा जैसे वह कह रहा हो—ऐसी जिन्दगी में जीना व्यर्थ है।

नदी के पास सब शान्त था—'वे ख्लोलोव को मार डालेंगे और साथ में तुम्हें भी, अगर तुम बहुत सतर्क न रहोगे!' कहा फिर गुनगुनाने लगा।

उसकी आखें बन्द, आवाज धीरे धीरे बढ़ रही थी, उँग-लियाँ हवा में ही थिरक रहीं थीं।

मैं अन्धकार की गहनता से तनिक डर रहा था। इतना अँधेरा कि लगता था जैसे अब कभी यहाँ सूरज न उगेगा। इस अँधेरे में ही भीगन को क्यों शांति मिलती है। उसके शांत चेहरे को देखकर मैं सोच रहा था, 'इन आदमियों का जीवन भी क्या है!'

मेरी बारीनोव की भी पटती थी। वह बेवकूफ, झूठी अफवाहें फैलाने वाला आवारा। मास्को में वह रह चुका था। वहाँ के बारे में बताता, 'नरक है नरक! चौदह हजार वहाँ गिरिजा घर हैं। वहाँ महान पीटर है जिसके विरोध में एक अमीर महिला अपने प्यार के हार के कारण उठी थी। वह उसके साथ सात साल रही थी। तीन बच्चे हुये थे। फिर अचानक वह उससे अलग हो गया था इसीलिये तो वह पागल होकर विद्रोहिनी बनी है।'

मैंने कहा, 'यह सब बकवास है।'

वाह यह मुझे एक बहुत विद्वान व्यक्ति ने बताया था और तू......।'

कीव के बारे में वह कहता, 'वह शहर हमारे गाँव की तरह ही है। वह भी नदी के किनारे, पहाड़ पर है। लेकिन मुझे नदी का नाम याद नहीं। वहाँ के लोगों में तातार और

पोलिश खूब हैं। उनकी अलग जाति नहीं। वहाँ दस दस पौंड के मेंढ़क होते हैं और वहाँ वाले उन्हें खाते हैं। वे बैलों पर चढ़ते हैं, खेत जुतवाते हैं। यह भी अजीब जानवर हैं। वहाँ सत्तावन हजार साधू हैं और दो सौ तिहत्तर पादरी। भला मेरी बातों को काटो तो······? मैंने सब आँखों से देखा है। तू वहाँ कभी गया भी था? नहीं गया न, हाँ! बच्चे मैं सब चीजों का ठीक ठीक हिसाब रखता हूं।'

बारीनोव को सभी संख्या याद रहती हैं। मैंने उसे गुणा व भाग करना सिखाया लेकिन उसे पसन्द न आया। उसकी एक और विशेषता थी कि वह बच्चों की सी स्वच्छ हँसी हँसता था। उसे देखकर मुझे कुकुश्किन की याद आती थी क्योंकि दोनों की शक्ल भी काफी मिलती थी।

बारीनोव ने केस्पियन सागर में भी मछली मारी है। उसके बारे में वह कहता, 'वह अजीब समुद्र है। वहाँ जाकर कभी कोई आ नहीं सकता। वहाँ का जीवन भी बहुत शांत है।

अपने गाँव में बारीनोव की स्थिति एक लावारिस कुत्ते की थी। लेकिन मीगन के गानों की तरह उसकी कहानियाँ भी प्रसिद्ध थीं।

मेरे लिए सभी लोग आश्चर्य के नायक थे। बूढ़ा सुसलोव कहता, 'सब कुछ खुदा करता है।' मेरे लिए यह शब्द बुजदिली के हैं।

फिर भी इनके बीच रहना बड़ा अच्छा था। कभी-कभी पेनकोव अपनी पत्नी के साथ आता। छोटी सी स्त्री लेकिन आँखों में गजब की चमक! वह कोने में बैठ कर बातें सुनती और तरह-तरह की भाव-भंगिमा बनाती।

अक्सर तोमास के कुछ अजीब-अजीब मित्र आते। अकसानियाँ उन्हें खाना और शराब देती। वे अक्सर रात को

सोते भी लेकिन उनके रहने की बात केवल हमें व अकसीनियाँ को ही मालूम रहती।

अक्सर शहर से मेरिया डेरेनकोव भी आती। लेकिन उसकी आँखों में वह चितवन मुझे दिखाई न पड़ती जिससे पहले मैं परेशान होता था। अब उसकी आंखों में एक युवती की चितवन थी। उसे अपने पर तनिक घमण्ड भी था क्योंकि वह लम्बी दाढ़ीवाला उसे अब प्यार करने लगा था। वह अधिकतर नीले कपड़े ही पहनती। उसकी आवाज भी संगीत की तरह थी—वह बालों में भी नीले रिबन ही बांधती। वह जब आती तो मैं यही कोशिश करता कि मेरी भेंट न हो तभी अच्छा है।

जुलाई के मध्य में इसोट गायब हो गया। लोगों ने बताया कि वह डूब गया। लोग यह भी कहते कि अवश्य ही वह नाव पर सो गया होगा। उस समय रोमास कज़ान में था। शाम को कुकुश्किन दूकान में आया। बहुत उदास था, एक बोरे पर बैठ गया। फिर सिगरेट जलाकर पूछा, 'रोमास कब तक आवेगा ?'

'मैं नहीं जानता पर क्या मामला है।'

अजीब तरह से मुझे घूरकर उसने ओंठ काटे। मैं समझ गया कि वह कोई बुरी खबर लाया है और बहुत बेसब्री से इन्तजार कर रहा है। अन्त में बहुत प्रयत्न के साथ बोलते हुए उसने कहा, 'मैं इसोट की नाव के पास मीगन के साथ गया था। उस पर कुल्हाड़ी के दाग हैं। इसके माने हैं कि इसोट मारा गया है, मारा गया मेरा विश्वास है।'

थोड़ी देर यों ही बैठा रहकर वह चला गया।

कुछ दिनों बाद बच्चों ने नदी के किनारे उसकी लाश देखी। जहां बहुत से किसान और पदाधिकारी इकट्ठे हो गये।

सभी इस निर्मम हत्या पर दुःख प्रगट कर रहे थे। एक अफसर की पतोहू! वह युवती स्त्री बहुत रोई। पहाड़ी पर से स्त्रियों और बच्चों का एक झुण्ड आकर इकट्ठा हो गया।

भीड़ में से हल्की सी आवाज आई, 'यह बहुत गड़बड़ी करता था......।'

'कौन कहता है? कुकुस्किन गड़बड़ी करता था, यह बेकार ही मारा गया था। इसोट तो शांतिप्रिय आदमी था।'

कुकुस्किन भीड़ को चीर कर प्रकट हो गया, 'शांतिप्रिय था तो क्यों मारा गया?'

उपस्थित स्त्रियां एक साथ हँस पड़ीं। एक ने उसे एक तमाचा मारा और कहा, 'सब तेरे ही कारण है। तू कुत्ता है।'

मेरी ओर देखकर वह चीखा, 'हट जा, आज कसके लड़ाई होगी।'

इसके पहले ही उस पर अनेक घूँसे पड़ चुके थे। उसके ओंठ से खून भी बहने लगा था। तभी मारीनोव आ गया, 'अब हम लोगों को हट जाना चाहिये।' कहकर वह चला गया।

मेरे सामने इसोट का कुचला हुआ शरीर तैर रहा था। मुझे उसकी अच्छी अच्छी बातें याद आने लगीं।

दो दिन बाद खोखोल आया। वह किसी बात पर खुश था। मेरी पीठ थपथपाकर पूछा, 'तुझे सोने को तो न मिला होगा, मैक्सिम?'

'इसोट मार डाला गया।'

'क्या क......हां......?'

फिर वह जैसे काठ का हो गया, 'किसने मारा यह पता लगा?' फिर वह बिस्तर पर जाकर बोला, 'मैंने उसे पहले ही आगाह किया था। क्या पुलिस आई थी?'

'हाँ कल!'

मैंने बताया कि सिपाही तो आए थे बाद में कल के झगड़े के कारण कुकुश्किन को पकड़ने गए हैं। मैं रसोईघर में गरम होने के लिये केटली चढ़ाने चला गया।

चाय के समय रोमास ने कहा, 'बेचारे, ये सब से अच्छे आदमी को ही मारते हैं। वह बहुत अच्छा आदमी था, खुशमिजाज, चतुर और ईमानदार।'

खोखोल बहुत भावुक बना बैठा था। उसने किताबों को देखकर कहा, 'काश, मैं किताबें लिख पाता, लेकिन नहीं मेरे विचार ठीक नहीं हैं।'

वहाँ से अपने कमरे में जाकर भी मैं खिड़की पर बैठा रहा। मेरी आंखों के सामने किनारे पर पड़ा इसोट का शरीर ही नाच रहा था। मुझे लगा जैसे वह मुझसे कह रहा हो, 'भलों के प्रति दया रखना एलेक्सी! इसी की जरूरत है।'

तभी सीढ़ी पर भारी कदम सुनाई पड़े। रोमास झुककर भीतर आ रहा था। आकर वह मेरी खाट पर बैठ गया। फिर अपनी दाढ़ी अपने हाथ में लेकर कहा, 'मैं शादी करने वाला हूं, जानते हो?'

'यहां कोई स्त्री कैसे रहेगी?' मैंने पूछा।

रोमास ने मुझे यों घूरा जैसे मुझसे कुछ आगे सुनना चाहता है लेकिन मैंने कुछ कहा ही नहीं। 'मैं मेरी डरेनकोव से शादी करनेवाला हूं।'

मुझे बरबस हँसी आ ही गई। उस क्षण के पूर्व मैंने कभी यह सोचा भी न था कि 'मेरिया' को 'मेरी' भी कहा जा सकता है। मुझे कल्पनामात्र से ही हँसी आ गई। मुझे याद है कि बहुत प्यार से भी उसके पिता या भाई ने उसे 'मेरी' न कहा था।

'हँसे क्यों?'

'कुछ नहीं यों ही! सचमुच यों ही!'

'शायद तुम सोचते होगे कि मैं उसके लिए बहुत बूढ़ा हूँ !'

'कदापि नहीं।'

'तुम उसे प्यार करते थे, ऐसा उसने बताया है।'

'हाँ मैं समझता हूँ—शायद था।'

'क्या अब समाप्त हो गया ?'

'हाँ ऐसी ही मेरी धारणा है ?'

'हाँ, तुम्हारी उम्र में प्रेम एक विचार होता है। लेकिन मेरी अवस्था में यह बात नहीं।'

फिर वह उठकर खड़ा हो गया और फिर बोला, 'तो मैं शादी तो कर ही रहा हूँ।'

'क्या जल्दी ही ?'

'हाँ।' कहकर वह चला गया। झुकना उसके लिये आवश्यक ही था। मैं खाट पर सोने चला गया और सोचा कि इस ब्याह के पूर्व मैं चला जाऊँगा।

अगस्त के प्रारम्भ में रोमास कजान से वापस आया। दो बड़ी नावों में सामान लाया। एक में बिक्री का सामान। दूसरे में घर-गृहस्थी की चीजें। यह सुबह के आठ बजे थे। खोखोल उठ आया था और चाय पी रहा था। वह कह रहा था, 'रात को नदी की यात्रा अच्छी होती है।' फिर कुछ सूँघकर फिर पूछा, 'क्या तुम्हें भी धुयें की गन्ध लग रही है ?'

उसी क्षण अक्सीनिया चिल्ला उठी, 'आग, आग !' हम लोग दौड़े। जहाँ हमलोग मिट्टी का तेल, अनाज का तेल, रखते थे वहीं आग लगी थी। पीली लपटें छत को छू रहीं थीं। हमलोग यह दृश्य देखकर हतप्रभ रह गये। अक्सीनिया बाल्टी में पानी ले आई थी। खोखोल ने उसी को छोड़ा। फिर वह बोला, 'इससे काम नहीं चलेगा। पीपों को हटाओ मक्सिमिच ! और अक्सीनिया तू दूकान में जा देख !'

मैं दौड़कर एक मिट्टी के तेल का पीपा उठाने लगा। लेकिन देखा कि उसका ढक्कन खुल गया था और तेल बाहर आकर बह रहा था। आग किसी तरह दब नहीं रही थी। छत तो फटने लगी थी। जब मैंने आधा खाली पीपा ही हटाया और गली में ले गया तो वहाँ देखा कि गली में काफी तादाद में स्त्रियाँ व बच्चे इकट्ठे हो गये हैं। खोखोल और अकसीनिया दूकान के सामान निकालकर गली में रख रहे थे। तभी एक पके बालों वाली स्त्री ने कराह कर कहा, 'ओह, बदमाशों ने क्या किया ?'

अब तक वहाँ घना धुआँ भर गया था और कुछ दिखाई न पड़ता था। लकड़ी के चिटखने व दीवाल के फटने की आवाज आ रही थी मैं इसी धुएँ में फँस गया। मैंने सहायता के लिये खोखोल को पुकारा। उसने खींचकर मुझे अलग किया। फिर कहा,

'भागो, किसी भी क्षण यहाँ विस्फोट हो सकता है।'

मैं घर में घुसा ताकि अपने कमरे से किताबें बचा सकूँ। वहाँ से किताबें मैंने खिड़की की राह बाहर फेंकना शुरू कर दिया। तभी जोरों का धड़ाका हुआ। ऊपर नीचे सर्वत्र आग ही आग। ऐसी आवाज आ रही थी। जैसे कोई लोहे के दाँतों से लकड़ी चबा रहा हो। मैं आग में फँस गया। मेरे होश उड़ गये। अवाक् खड़ा मैं मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहा था। लाल दाढ़ी वाला एक लाल चेहरा खिड़की से प्रकट हुआ। मुझे लगा कि मैं मर रहा हूँ। मुझे याद है कि मेरे बाल तक जलने लगे थे। [illegible] गले में—आंखों में भी दर्द हो रहा था। खोखोल का कोट सिर पे बांध कर ओढ़कर मैं निस्सहाय होकर खिड़की से कूद पड़ा। फिर मुझे होश नहीं कि क्या हुआ। जब मैं

आया तो नाली के पास पड़ा था और मेरे बगल में रोमास था। पूछा उसने 'अच्छे हो ?'

मैंने सिर घुमाकर देखा—आग ने घर को राख कर दिया था।

'अब क्या हो !' डरी आँखों से देखकर रोता हुआ खोखोल बोला। 'मेरे पांव में चोट है क्या ?' मैंने पूछा।

खोखोल ने गौर से देखा और फिर एक झटका दिया। मुझे थोड़ा दर्द तो हुआ पर मैं शीघ्र ही सबों के साथ सामान ढोने लगा।

रोमास ने कहा, 'मुझे विश्वास था तुम जल जाओगे। जब मिट्टी के तेल का पीपा फटा और तेल ऊपर छत पर उछला। फिर पूरे घर भर छा गया। मैंने तो समझा कि एलेक्सी मर गया !'

उसकी खामोशी फिर आ गई। चीजों को गांजते हुये उसने कहा, 'अक्सीनिया ! तू सामान देख। नहीं तो सब चोरी चला जायगा मैं आग को बुझवा लूँ।'

उस समय जलते घर के ऊपर लपटों के साथ सफेद कागज के टुकड़े उड़ रहे थे। व्यथित होकर रोमास ने कहा, 'यह किताबों की दुर्दशा है। मैं उन्हें कितने शौक से रखता था !'

चार मकान जल चुके थे। आग शांत न हो पा रही थी और दाहिने बाएँ दोनों ओर बढ़ी जा रही थी। हर ओर लोग सामान बचाने में लगे थे, चिल्ला रहे थे, आग, आग, पानी ! पानी !'

रोमास ने आदमियों को तय किया कि वे वोल्गा से पानी लावें। तभी मैंने देखा कि अकवार और कुजमिन के साथ कुछ अमीर किसान चले आ रहे हैं। उन्होंने कोई मदद न की केवल अपने हाथ व छड़ी उठा उठा कर राय देते रहे।

अब तक मकान के दूसरे हिस्से पर आग का हमला हो चुका था। तभी दीवाल का एक भाग नीचे गिरा। मैं करीब करीब उसके चपेट में आ गया था।

'तुम्हें चोट आई!' रोमास ने पूछा।

हम लोग आग बुझाने में लगे थे। तभी उस भले किसानों की भीड़ से किसी ने कहा, 'जानकर लगाई गई है।'

कुजमिन नामक दूकानदार ने भी इसी प्रकार कुछ कहा। मैंने कितनी ताकत से काम किया था कहा नहीं जा सकता। जब मैं गिर पड़ा तो रोमास ने कहा, 'अब जरा आराम करो।'

कुकुश्किन और बारीनोव भी धुएँ से काले हो गए थे उन्होंने भी मुझे सांत्वना दी।

तभी मैंने देखा कि दो सिपाहियों के बीच रोमास और उसके पीछे अफसर व अन्य धनी लोग उस स्थान की ओर जा रहे थे जहां सामान भरा गया था।

आशंका से मैंने देखा। उसकी कमीज गीली थी ही अब फट भी गई थी। टूटे स्थान पर मैं जहाँ सामान इकट्ठा किया गया था वहाँ अफसर ने कहा, 'दरवाजा खोलो।'

'दरवाजा तोड़ डालो, चाभी खो गई है।' रोमास ने बताया। मैंने दौड़ कर एक लाठी उठा ली और वहीं जा खड़ा हुआ। अफसर ने कहा, 'ताला तोड़ना गैर कानूनी है।'

कुजमिन ने मुझे इशारा किया। 'यह भी है। यह भी।'

रोमास ने बताया कि मैं चुप ही रहूँ। उन्हें शक है कि मैंने यहाँ सामान चुरा लिया है और दूकान में आग लगा दी है।

ताला तोड़ा गया 'यहाँ तो कुछ नहीं, खाली है।'

'कुछ नहीं!'

'ये बदमाश हैं।'

'ये सब डाकू हैं। किसानों की सहयोगी संस्था खोलते हैं। लुटेरे!'

'खामोश!' रोमास चीख उठा, 'देख लिया न! मैंने कुछ छिपाया तो नहीं! अब क्या चाहते हो? मैं ही क्यों न जला देता सब कुछ!'

'इसका बीमा था?'

तभी कुछ आगे बढ़े, चिल्लाये, 'देखा, इनके पास लाठी भी है।'

'लाठी, ओह?'

'एलेक्स चुप रहना, चाहे जो कहें, चुप ही रहना।' खोखोल ने कहा।

एक लंगड़े किसान ने कहा, 'इन्हें ढेले मार कर गाँव से निकाल देना चाहिये।' वह काफी दूर पर जाकर एक ईंटा उठा रहा था फिर वह हम पर चलाता कि कुकुश्किन उस पर भेड़िये की तरह टूट पड़ा और दोनों ही नाले में लुढ़क गये। कुकुश्किन के पीछे से, पेनकोव, बेरीनोव, और एक दर्जन अन्य व्यक्ति आये।

'आओ एलेक्सी! हम लोग चलें।' रोमास ने कहा। अपने मुँह से पाइप निकाल कर पैंट के जेब में ठूँस लिया।

'किनारे [illegible] है। सब फिक्रें [illegible] गईं' खोखोल ने कहा। हम लोग नदी में गये, स्नान किया। फिर किनारे के एक टीले पर बैठ कर एक एक गिलास चाय पिया।

तभी पेनकोव भी आ गया खोखोल ने पूछा, 'तुम्हारा क्या हाल है?'

पेनखोव ने कहा, 'मेरे घर का तो बीमा था।'

बड़ी देर तक वहाँ चुपचाप सभी एक दूसरे को अजनबी की तरह देखते बैठे रहे।

'तुम्हारा अब क्या इरादा है, रोमास ?'

'अभी सोच रहा हूं।'

'अच्छा हो कि यहाँ से चले जाओ।'

'देखो, सोचूँगा।'

'बाहर, आओ !' पेनखोव ने कहा, 'मेरे पास एक विचार है, तुमसे बाहर बताऊँगा।'

मैं भी बाहर आया और एक झाड़ी के किनारे बैठकर नदी का बहाव देखता रहा। सूरज डूब रहा था फिर भी काफी गरमी थी। एक अजीब भारीपन मेरे मन पर छा गया था। फिर भी थकान के कारण मैं सो गया।

और सपने में देखा कि मैं मर गया हूं।

जागा तो देखा कि सामने थाली की तरह गोल चाँद निकला था। बारीकोव मुझ पर झुका कह रहा था, 'खोखोल बहुत चिन्तित होकर तुम्हें खोज रहा है।'

फिर चलते चलते बोला, 'इस तरह हर जगह सोया मत करो।' तभी एक झाड़ी से मीगन की आवाज आई, 'मिला !'

'हाँ मेरे साथ है।'

रोमास मुझसे नाराज था। 'तू वहाँ क्या कर रहा था ?' जब सिर्फ हमीं दोनों थे तब उसने बहुत विवशता की ध्वनि में कहा, 'पेनकोव का विचार है कि उसके साथ रहें। लेकिन मैं तुझे इसकी राय नहीं दे सकता। वह एक दुकान खोलना चाहता है। यों तो जो कुछ मेरा बचा था मैंने उसी के हाथ

बेच दिया है। मैं शीघ्र ही बीयत्का जाऊंगा और तुझे भी बुला लूंगा। क्या तुम्हें यह विचार पसन्द है?'

'मैं सोचूंगा।'

'अच्छी बात है।'

वह भी खामोश हो गया और खिड़की पर बैठकर वोल्गा की ओर देखने लगा।

'क्या तुम्हारा दिमाग ठीक नहीं है?' रोमास ने पूछा, 'वे लोग तो बुरे हैं ही, उन पर नाराज होना मूर्खता है।'

उसकी इस बात से मुझे तनिक धैर्य बंधा। लेकिन जो कुछ घटनाएं घटी थीं उन्हें मैं भूल नहीं पा रहा था। जिस दिन रोमास गया उसने कहा, 'लोगों से लड़ना मत! क्योंकि किसी भी क्षण क्रोध आ सकता है। इससे अपना बुरा ही होगा। जो कुछ हो उसे सहना और यही सोचना कि हर बात का अन्त होता ही है। और फिर जो आएगा वह अवश्य ही अच्छा होगा। अच्छा विदा, मित्र, हम लोग शीघ्र ही मिलेंगे।'

लेकिन हम लोग मिले पन्द्रह वर्ष बाद। जब दस वर्ष के निर्वासन के बाद वह याकुत्स से आया।

रोमास के जाने के बाद मेरी वही स्थिति थी जो किसी पिल्ले की बिना मालिक के होती है। बारीनोव के घर के एक कोठरी में मैं रहता था। मैं अच्छे, अमीर किसानों का काम करता था—गल्ला जमा करता, आलू खोदता और बाग का काम देखता।

एक बरसाती रात को उसने कहा, 'एलेक्स, तुम तो बिना फौज के सरदार हो। क्या कल हम लोग समुद्र की ओर चलेंगे? सच पूछो तो हमारे करने को यही काम है।'

यह पहली बार था जब वह इस प्रकार मुझसे बोला था। वह भी आज कल कुछ परेशान था। वह इस प्रकार चारों ओर सूनी नजर से देखता जैसे किसी जंगल में रास्ता भूल गया हो।

उसने फिर पूछा, 'कहो एलेक्सी ? क्या कल हम लोग चलेंगे ?'

और हम लोग दूसरे दिन चले गये !

हम लोग एक स्टीमर में बैठे यात्रा कर रहे थे। ऊपर काले बादल छाये थे। नीचे पानी का कलकल ! चारों ओर अँधेरा। मेरी जहाज के ड्रायवर से जान पहचान हो गई। मैंने उसका नाम पूछा, उसने छुटी हुई आवाज में पूछा, 'तुम क्यों जानना चाहते हो ?'

जब शाम को कजान से चले थे तब मैंने देखा था कि भालू जैसा दिखने वाला आदमी अच्छा था। एक काठ के मग में वोदका की पूरी बोतल उंडेल कर पानी की तरह पी गया फिर सेब खाकर स्वाद बदला। फिर जब जहाज हिला तो कहा, 'खुदा, हाफिज !'

अस्त्राखान के निजनी के मेले का शोर यहाँ तक सुनाई पड़ रहा था। बारीनोव लगातार इसी की बातें कर रहा था।

'तुमसे क्या ताल्लुक है ?' उसने डांटा।

'मैं सोच रहा था, तुमसे क्या ?'

अवश्य ही हम लोग बिना पैसे दिये यात्रा कर रहे थे पर इसके यह माने नहीं कि वे हमें भिखारी समझें बारीनोव मुझ

पर कूद रहा था, 'तुम्हें यह आदमी अच्छा लगता था न! तुम्हारे ही कारण मैं इस पर चढ़ा हूँ।'

अंधकार इतना घना था कि कुछ भी न जान आता था। ड्रायवर ने मुझे अपने मदद के लिये बैठा लिया। लेकिन इस आदमी से बातें करना तो असम्भव ही था जो हर बात का उत्तर देता था, 'तुमसे क्या मतलब?'

मुझे आश्चर्य था कि इस आदमी के सिर में क्या है। एकाएक उसने कहा, 'डूब गया!'

'क्या?' मैंने पूछा पर कोई उत्तर न मिला।

बहुत दूर से अँधेरे को चीरकर कुत्तों की आवाज आ रही थी। 'यहाँ के कुत्ते अच्छे नहीं हैं!' अचानक उसने कहा।

'कहाँ के?'

'सब ओर, चारों ओर के!'

'तुम कहाँ के रहने वाले हो?'

'वोलोग्दा।'

फिर एकाएक वह यों बोला जैसे किसी बोरे के खुल जाने से आलू निकल पड़ें—'यह आदमी जो तेरा चाचा है न। मेरी राय में यह मूर्ख है। किसी का चाचा अच्छा हो तो उसकी किस्मत खुल जाती है।' फिर क्षण भर बाद कहा, 'तुम्हें पढ़ना आता है? जानते हो कानून कौन बनाता है?' मुझे बोलने का अवसर न देकर उसने फिर कहा, 'कुछ लोग कहते हैं, जार, कुछ कहते हैं, पादरी लोग। कानून कठोर होना [illegible]'

इस समय सर्दी के कारण मैं सोना चाहता था। उसकी बात पूरी तरह सुन भी नहीं रहा था।

तभी उसी समय एक व्यक्ति उसके पास आया और मैं सोने चला गया। जब जागा तब तीन आदमी (मल्लाह) उसे पकड़ कर

दीवाल से धक्का दे रहे थे।

'तुम डूब जाओगे !' आदमियों ने उसे समझाया।

'नहीं नहीं, मैं नहीं डूबूँगा। मुझे जाने दो। नहीं तो मैं उसे मारूँगा ही—जब हम सिमबिकर्स में उतरेंगे ....'

'अच्छा अब चुप रहो।'

लोगों ने उसे छोड़ दिया। उसने कहा, 'धन्यवाद।'

सिमबिकर्स में हम दोनों को उतार कर एक मल्लाह ने कहा, 'तुमसे मेरा काम न चलेगा।'

किनारे पर हमलोग धूप खाने बैठे रहे। हम दोनों के पास सैंतिस कोपेक थे। हम लोगों ने होटल में चाय पिया।

'अब क्या करना होगा ?' मैंने पूछा।

'क्यों, थोड़ी ठीक हो जायगा !' बारीसोव ने कहा।

हमलोग समारा तक स्टीमर पर गये। इस बार किराए के स्थान पर हमलोगों ने जहाज का काम किया। सात दिन में कैस्पियन के किनारे के बन्दरगाह पर पहुँचे।

सात

डोबरिंका डिपो में मैं रात का पहरेदार था। शाम को छः बजे से सुबह छः बजे तक मैं चहलकदमी करता रहता। बर्फ जोरों की पड़ रही थी। उसी बर्फ की बरसात के बीच दो काली छायाएं दिखाई पड़ीं—कोजाक आटा के चोर! मुझसे छिपने के लिए वे बर्फ में ही छिपने लगे। लेकिन मैं अत्यधिक सतर्क था। थोड़ी देर के बाद ही वे मेरे पास आये—मुझे घूस देना चाहा। बाद में गाली दी।

'यह सब कुछ नहीं।' मैंने कह दिया।

वे मुझे परेशान करते रहे। मेरा कोई इरादा न था कि मैं उनकी बातें सुनूँ क्योंकि मैं जानता था कि गरीबी के कारण वे चोरी करने नहीं आए बल्कि वे रुपया, शराब और औरत के लिए आए हैं। बाद में तो अक्सर वे मुझे बहकाने के लिए सेंट पिटर्सबर्ग के एक कोजाक की बहुत सुन्दर सी विधवा को मेरे पास भेजते रहे।

वह कहती, 'ये लोग बहुत होशियार हैं। दूसरे श्रेणी के आटे का ही एक बोरा है ये, ठीक? नहीं? अच्छा तीसरे श्रेणी के आटे का ही एक बोरा सही।'

आमबोव का बैकोव, तूल्हा इब्राहिम और उस्मात का तातार सभी उसके चक्कर में आ चुके थे। वह उनके सामने खुली छाती दिखाती हुई खड़ी हो जाती, 'अपने लिये अच्छा मौका छोड़ो मत। मुझ जैसी मधु को छोड़कर पछताओगे।'

अवश्य ही उसकी बातों से उन्हें लालच हो आती। उसकी आवाज बिलकुल दृढ़ होती और उसके सुन्दर चेहरे में बिल्ली की आँखों की चमक! फलस्वरूप इब्राहिम उसको लेकर किसी छोटे से कमरे में घुस जाता और उसके साथी रलेज पर बोरे लादते होते।

उस स्त्री की बेशर्मी से मेरे मन में विद्रोह की अग्नि भड़क उठी। उसके सुन्दर चेहरे और आकर्षक देह के प्रति घृणा ही उपजी। अक्सर उसके आलिंगन की चर्चा करके इब्राहिम थूक देता और कहता, 'डाइन!' और बैकोव तो कहता, 'उसे मार डालना चाहिये।'

छुट्टियों के दिन वह अच्छे कपड़े पहनती। अच्छा जूता। गुलाबी रूमाल में उसके बाल बँधे होते। वह उस दिन शहर में जाकर पढ़े-लिखे लोगों को फँसाती।

जब उसने मुझपर हाथ बढ़ाया था तो मैंने उसे भगा दिया।

गर्मी में चाँदनी रात में एक बार जब झपकी लग गई तो आँख खुलने पर देखा कि सामने तुइसी खड़ी है। उस चाँदनी में उसकी सुन्दरता और घुल गई थी। वह अपने कोट के जेबों में हाथ डाले खड़ी आँखें नचा रही थी। 'घबड़ाओ नहीं।' उसने कहा, 'मैं केवल टहलने निकली हूँ।'

मैंने आकाश में देखा, तारों को देखकर साफ पता लगता था कि आधी रात से ज्यादा का समय है। 'क्या यह घूमने के लिये गलत समय नहीं है।'

'औरत एक रात्रि-जीव है।' लुइसी मेरे बगल में बैठती हुई बोली, 'और तुम सो क्यों रहे थे? क्या इसी के लिये तुमने नौकरी की है?'

उसने अपनी जेब से कुछ निकालकर मुँह में डाला और चूसती हुई बोली, 'सुना है कि तुम पढ़े-लिखे हो? बताओ ओबोलाक शहर कहां है?'

'मैं नहीं जानता!'

'यही जगह है जहाँ वर्जिन मेरी हुई थी।'

'तो तुम्हारा मतलब उस शहर से है!'

'हाँ वह कहाँ है?'

'साइबेरिया में।'

'मैं वहाँ जाऊँ तो? लेकिन बहुत दूर है।'

'क्यों?'

'अपने प्रायश्चित के लिये। मैं पापिनी हूँ। तुम पुरुषों ने मुझे पाप के गढ़े में गिराया! क्या तुम्हारे पास सिगरेट है?'

उसने सिगरेट जलाकर कहा, 'यह किसी कोजाक से मत बताना। वे स्त्रियों के सिगरेट पीने के खिलाफ हैं। उस रात जाने क्यों मुझे उसका चेहरा बहुत आकर्षक लगा।

एक टूटने वाले तारे के कारण क्षण भर को आकाश में एक सुनहरी रेखा खिंची। क्रास बनाकर उसने कहा, 'खुदा उसकी आत्मा को शांति दे। एक दिन मेरा सितारा भी इसी तरह टूटेगा। तुम्हें आज की रात कैसीलाग रही है। 'मुझे तो बहुत अच्छी लग रही है।' कहकर उसने सिगरेट फेंक दी फिर पूछा, 'क्या कुछ आनन्द की इच्छा है?'

जब मैंने इन्कार कर दिया तो वह बोली, 'सभी तो कहते हैं मेरे साथ उन्हें आनन्द मिलता है।'

बहुत धीरज से मैंने समझाया कि लोगों की इस कलंक कहानी में उसके व्यवहारों का कितना हाथ रहा है। फिर एक ओर देखकर उसने बड़े दृढ़ शब्दों में कहा, 'बहुत विवशता ने मुझसे यह सब कराया। ये पुरुष……!' 'मैं कितनी सताई गई हूँ।'

'पुरुष' कहने का उसका अपना ढङ्ग था। लगता जैसे वह किसी अन्य अर्थों में कह रही है। फिर सिर पीछा करके उसने आकाश की ओर ऊपर देखा आह छोड़कर कहा, 'इसमें मेरा दोष नहीं है। मैं बिलकुल दोषी नहीं हूँ।'

थोड़ी देर की शान्ति के बाद वह उठ खड़ी हुई। फिर कहा, 'मैं स्टेशन मास्टर के पास जा रही हूँ।'

वह चाँदनी में हिलती हुई दूर जा रही थी और मैं उसके शब्दों से मानों दबा बैठा था, 'पुरुष……'मैं कितना सताई गई हूँ।'

इस प्रकार जितने लोग मेरे जीवन में आए सभी मेरी आत्मा पर एक न एक छाप छोड़ते ही गए। वह स्टेशन मास्टर! पेत्रावस्की, चौड़े कंधों वाला, लम्बी बाहों वाला व्यक्ति! उसकी बड़ी-बड़ी काली आँखें बहुत ही प्रभावशाली थीं। उसकी दाढ़ी बड़ी-बड़ी, घनी और काली थी। सब मिलाकर वह एक जानवर का रूप ही प्रकट करता था। गुस्सा भी बहुत तेज था। जब क्रुद्ध होता तो नथुनों से [illegible] लगती थी। वह बहुत कठोर प्रकृति का आदमी था। यह अफवाह थी कि अपनी पत्नी को पीटकर उसने मार डाला है।

उसके पास आनेवालों में एक तो पुलिस का दरोगा, मांसखोर था! गंजा सिर, लोमड़ी की सी आँखें! दूसरा व्यक्ति जो उसके पास आता, वह था [illegible] स्टेफेकिन, जो देखने सुनने में इन दोनों से भला था। उसके

यहाँ साबुन बनाने के काम करने वाले मजदूरों को कई बार जहर खाना पड़ा जिससे उस पर कई बार मुकदमा भी चल चुका था। उसे जुर्माना भी देना पड़ा था। तीसरा व्यक्ति एक शराबी भी आता था जिसका नाम वोरोशिलोव था। उसके नीली-नीली बहुत प्यारी आँखें थीं इसीलिये उसे 'आँखों का चोर' कहते थे।

अकसर उसके साथ गाँव की कुछ लड़कियाँ, स्त्रियाँ और लुइसी भी होती। एक कमरे में जिसमें बहुत सी कोच बिछी होतीं उसी में सब जुटते। बीच ही मेज पर सिगरेट के धुएँ के तूफान के बीच, उबाले हुए सेब, जाम और वोदका से भरी एक बड़ी बोतल रखी होती। वे खूब पीकर जब मस्त हो जाते तो वाशखीर गिटार बजाना शुरू करता। वे उस समय उठकर दूसरे कमरे में चले जाते जहाँ सिर्फ कुर्सियाँ रखी होती थीं।

अच्छा गाना होता। औरतों की आवाज भी बहुत सुरीली आ रही थी। एक कजाक स्त्री कुवासोवा बहुत बढ़िया गाती। लुइसी उसके सामने फीकी पड़ जाती। फिर नाच होता। सभी नशे में पूरी तरह चूर! औरतें भी पिए होतीं। उनका उछलना कूदना देखने योग्य होता।

एक बार पेत्रोवस्की के कहने पर मैं भी शामिल हुआ क्यों कि मुझे कई गाने याद थे। लेकिन मैं उनके साथ उतना मजा न पा सका। 'शाम पेरकोव' बस चिल्लाया। औरतों को चूमने के पूर्व भी वह इसी तरह जानवरों की तरह चिल्लाता था।

मैं तो खोल कर गाता रहा। उन्हें गाने इतने पसन्द आए कि कई बार सभी ने मुझे चूमा।

"पियो थोड़ा, कोई बुरा न होगा।" पेत्रोवस्की ने आग्रह किया।

तुइसी ने अपना हाथ ऊपर कर के कहा, 'मैं तो इसके प्यार में पागल हो रही हूँ—मैं इसे प्यार करती हूँ—यह मैं सब के सामने कह रही हूँ।'

फिर वे मुझे अपनी ऐसी दावतों में बराबर बुलाते रहे।

खिड़की के बाहर, स्टेशन की लैम्पों के मनहूस धुएँ में, ट्रेनों की लाल बत्तियाँ और इंजिनियरों व तेल देने वालों की लैम्पों का हिलना दिखाई देता। जब ट्रेन सीटी देती तो खिड़की हिलने लगती।

मुझे ये सभी आदमी बेकार लगे। उनके बीच मुझे घुटन हो रही थी।

'औरतों को नंगी कर दो।' एक बार पेत्रोवस्की ने आज्ञा दिया।

यह काम उसके साथी स्तेपाखीन ने किया। बहुत सहूलियत से एक-एक कपड़े को खोलकर अलग-अलग कोने में रखा।

नंगी औरतों को पुरुषों ने घेर लिया और उनके नंगे शरीर के अंगों की वे उसी तरह तारीफ करने लगे जैसे अभी कुछ पूर्व वे गाने व नाचने की तारीफ कर रहे थे। फिर वे लोग दूसरे कमरे में चले गये। वहाँ जो कुछ हुआ उसका वर्णन शब्दों में सम्भव नहीं।

मुझे एक आदमी की पशुता पर आश्चर्य था लेकिन स्त्रियों के प्रति कठोर व्यवहार करते हुये देखकर मुझे आश्चर्य होता क्योंकि कुछ पूर्व ही उनके नग्न सौंदर्य में भी वे धार्मिकता का अनुभव कर रहे थे। पेत्रोवस्की ने उसी नशे में साफ कहा, 'हम इन्सान कहाँ हैं। मेरे अन्दर तो बहुत बड़ा राक्षस है।'

औरतें दर्द से चीखती होतीं फिर भी इसका विरोध न करतीं। लुइसी चीख कर पेत्रोवस्की से कहती, 'मुझे बहुत तकलीफ है। अब कोई दूसरी...।' उसकी बिल्ली की तरह वाली आँखें फैल गई थीं। मुझे डर लगा कि पेत्रोवस्की उसे मार न डाले।

एक बार स्टेशन मास्टर के यहाँ से उसके साथ आते समय मैंने पूछा कि वह इसको क्यों होने देती है।

'इससे उन्हें भी तो बहुत तकलीफ होती है। मास्टर तो रोने भी लगता है।'

'क्यों?'

'वह स्टेशन मास्टर बूढ़ा है न। उसमें अब ताकत नहीं है। और दूसरे अफरीकन और स्तेपवीन—लेकिन तुम नहीं समझ सकते। मेरे पास ऐसे शब्द नहीं कि समझा सकूँ।'

'तुम्हें सब चीजें जाननी और समझनी चाहिये।' मुझसे ये शब्द अक्सर रोमास ने कहा था। अब मैं हर चीज में अपनी नाक डालता। और जीवन के विभिन्न पहलुओं में बहुत भीतर घुसने के कारण मैंने जीवन से घृणा निकाल दी। क्योंकि किसी को भी किसी से घृणा का अधिकार नहीं है।

फिर मैं तीन या चार महीने डोबरिन्का स्टेशन पर रहा। मुझे पेत्रोवस्की से कोई शिकायत नहीं थी लेकिन उसकी छः फुट ऊँची रसोइया मुझे सताया करती। वह लगभग चालीस साल की क्रिमीन सेरियन। वह काफी पढ़ी लिखी थी। वह पेत्रोवस्की के सब से सुन्दर मित्र मास्तीव पर मोहित हो गई थी। जब दावतों में वह परोसती तो उसे बहुत ललचाई आँखों से देखती अक्सर वह जमीन पर लेट कर अपनी छाती कूटती और कहती, 'मैं मर रही हूँ मैं बीमार हूँ।'

वह एकान्त में मासलोव को पकड़ कर अपनी बाहों में कस लेती और बच्चों की तरह उसे प्यार करती। उसका असली नाम मासलोवन था बल्कि मारटीन था। वह भी कहता, 'यों तो शरीर से यह भैंस है लेकिन इसका हृदय सोने का है।'

पहले तो वह माँ की तरह उसे स्नेह देती थी लेकिन एक दिन मैंने उससे उसके बारे में पूछा। वह यों जल उठी जैसे उस पर गरम पानी छोड़ दिया हो। आँखों से आग बरसने लगी।—'भागो यहाँ से। तुझे तो जहर दे दूंगी—लोमड़ी की औलाद!'

उस दिन से मेरियन मुझसे बहुत क्रूरता से व्यवहार करती। स्टेशन मास्टर के घर की कई चोरी को उसने मेरे सिर पर मढ़ने की कोशिश की। रात भर मैं पहरेदारी करता, सुबह ही वह मुझे बताती—लकड़ी चीरो और रसोई में लाओ, चौका साफ करो और आग भी जलाओ। इसके बाद पेत्रोवस्की के घोड़े का काम फिर अन्य काम जिसमें आधा दिन समाप्त हो जाता और मैं न तो पढ़ पाता न सो पाता। वह अपनी बातें छिपाती भी न थी, कहती, 'मैं तुझे काकेशस। भगा कर ही छोड़ूँगी।'

मैंने मेरियन की क्रूरता का बयान करते हुये अफसर को एक अर्जी भेजी जिसके फलस्वरूप मेरी बदली बोरीसोगलेब्स्क स्टेशन को हो गई। वहाँ मुझे चौकीदारी और बोरों के मरम्मत का काम मिला।

वहाँ मेरा परिचय शिक्षित समुदाय से हुआ। सभी 'अविश्वासी*' थे, सभी को जेल और निर्वासन हो चुका था,

*सरकार की नजरों में आदमी, जिन पर क्रान्तिकारी होने का शक था।

लेकिन सभी विद्वान और विदेशी भाषाओं के पंडित—कुछ कालेज से निकाले गये विद्यार्थी मास्टर, एक नाविक अफसर और दो सेना के अफसर।

सब वहाँ थे—लगभग साठ। सभी वोल्गा किनारे के शहरों के थे। एक व्यापारी, जिसका नाम था अबादुरोव, के यहाँ सभी काम करते थे। उस व्यापारी का रेल से चोरी न होने देने का ठीका था। इन लोगों के लायक यह काम तो था नहीं।

एक दिन मैं अपने मित्र पाल क्रिकोव के साथ बियर पीता हुआ बातें कर रहा था—'आखिर ऐसे लोगों को वे नौकरी ही कैसे देते हैं। इन्हें तो रेगिस्तान में भेजना चाहिये! कुछ पहले तो इन्हें पीटर्सबर्ग में फांसी दी जाती थी।'

क्रिकोव भी खूब पढ़ा लिखा था। उसके पास बीस किताबें थीं। एक विद्रोहियों के विरोध में मुझे देकर उसने कहा, 'इससे तुम जान जाओगे कि वे कैसे हैं लेकिन उन्हें पता न चले कि तुम्हारे पास यह किताब है।'

वह अकेला ही विद्रोहियों के विरोध का विरोधी न था। मेरा परिचय [illegible] नामक लेखक से हुआ जो रेलवे के [illegible] था। जब वह खाँसता तो उसका [illegible] लगता।

उसका [illegible] था। दरवाजों पर गहरे रंगीन परदे थे और भीतर गुलदस्ते सजे थे। वह वोदका पीता और प्याज के टुकड़े चूसता। जब कोई साथी होता तो वह चिल्ला कर कहता, '[illegible] भी [illegible] है। मैं तो खून से लिखता हूँ। [illegible] में बताओ कि [illegible]

[illegible]

है ? अक्सर ही उसकी चीजें बड़ी पत्रिकाओं में छप जाती हैं परन्तु मेरी......।'

उसकी कहानियाँ कुछ प्रान्तीय पत्रिकाओं में प्रकाशित होती थीं। एक या दो बार देश व्यापी पत्रिका में उसकी चीज छपी थी। उस पत्रिका का नाम था 'डीयलो।'

खाट के नीचे से पाण्डुलिपियों का एक बस्ता जो भूरे रंग के चादर में बँधा होता, निकालता, गर्द झाड़ता और धूल के कारण खांस कर कहता, 'यह रहीं—इन्हें मैंने हृदय के खून से लिखा है, खून से।'

उसका चेहरा पीला था, ऐसे अवसरों में आँखें गीली हो जातीं। उसने अपनी एक लम्बी कहानी सुनाई जिसमें एक किसान और सिपाही का किस्सा था। पढ़कर उसने कहा, 'कितनी बढ़िया लिखी गई है। देखो इसमें आत्मा को कितनी शान्ति मिलती है।'

मुझे कहानी की चिन्ता न थी लेकिन लेखक की भावनाओं को देखकर मुझे आँसू आ गये। मैंने घर पर पढ़ने के लिए पाण्डुलिपि माँगी। मैंने देखा कि उसने कुछ अमीर विधवाओं का बहुत मार्मिक चित्रण किया था। मुझसे अपने मन की भड़ास निकाल कर उसने वोदका का एक गिलास और पिया फिर कहा, 'कुछ सीखने की कोशिश करो। कविताएँ लिखना मूर्खता है। तुम नेक्रसव* नहीं हो सकते। तुममें कला की प्रतिभा नहीं। तुम भावुक नहीं—रूखे हृदय के हो। तुम्हारी कविता! कहें—पुश्किन तक ने कविताओं के चक्कर में अपनी शक्ति का दुरुपयोग किया।'

उसकी मकान मालकिन बहुत मोटी थी। उसकी छातियाँ साधारण रूप से बड़ी थीं। उसकी पीठ किसी भी कुर्सी में

---

*रूसी जमाने का मशहूर कवि।

बड़ी कठिनाई से समा पाती। स्टारोस्टीन ने उसे उसकी एक वर्ष गांठ पर एक बहुत बड़ी आराम कुर्सी भेंट में दिया था। भावावेग में उसने स्टारोस्टीन को दबोच कर चूम लिया फिर मुझे देखकर बोली, 'इससे शिक्षा लो कि स्त्रियों से कैसा व्यवहार किया जाता है।'

मार्च के महीने में चारों ओर फूल खिल गये थे। बसन्ती बयार में हल्की सी संगीत पूर्ण आवाज आती थी। मुझ पर भी वातावरण का गहरा प्रभाव पड़ा। मैं उन्हीं दिनों शेक्सपियर पढ़ रहा था।

उसका पति एक मास्टर था जो प्रति शनिवार को अपनी पत्नी को स्नानगृह में बन्द कर के पीटता था अक्सर पड़ोसी यह दृश्य देखने के लिये मित्रों को बुला लेते। अक्सर वह स्त्री जो काफी मोटी थी, नंगी ही स्नान घर से भाग कर बाग में छिप जाती। मैं वहाँ तमाशा देखने वालों को देखता। एक बार मैं इन लोगों से लड़ गया और मुझे थाने पर जाना पड़ा। भीड़ में से किसी ने कहा, 'तुम्हें चिढ़ क्यों लगती है। हर एक व्यक्ति ऐसे दृश्यों में मजा पाता है। मास्को में भी ऐसे दृश्यों पर रोक नहीं है।

मैं जिस रेलवे के क्लर्क के कमरे के एक कोने का किरायेदार था उसकी पत्नी और भाई सभी मिलकर रोज मुझे सोने में विघ्न डालते। एक दिन उसके भाई और उसकी मैंने दोनों तोड़ पिटाई की। वे [illegible] केवल खाने की फिक्र में दिन रात काट देते।

वहाँ मैंने जो कुछ देखा उसे देखकर मेरे मन की उत्सुकता बढ़ती ही गई। इस विद्यार्थी—समाज में भी मुझे दो लड़कियों से परिचय करना प्राप्त करना पड़ा। वे दोनों बहनें थीं। [illegible] नामक एक अफसर जो अंग्रेजी पर [illegible] था इन

दोनों को 'पवित्र प्रेम' का पाठ पढ़ाता और भाषण देता था। जिसके फलस्वरूप एक दिन उन लड़कियों के भाई का एक पत्र भाम्फिन को मिला, 'अगर तुमने मेरी बहनों को यह शिक्षा देना बन्द न किया तो मैं तुम्हारी शिकायत तो करूंगा ही साथ ही तुम्हारे कान भी घूसों से तोड़ दूंगा।'

मेरे सामने दो दुनियां थीं। एक तो अपनी दुनिया दूसरी पेत्रोवस्की के यहाँ की दुनिया। मैं अपने को इस कार्य में असफल पाता कि दोनों दुनियाओं को जोड़ सकूं।

आज तीस वर्ष बाद जब मैं ये घटनाएँ लिखने बैठा हूँ और ये फिर मेरे सामने स्पष्ट हो गई हैं तब मैं अपने को बहुत अशक्त पाता हूँ क्योंकि मेरे पास वे शब्द नहीं हैं जो इनका ठीक ठीक चित्रण कर सकें।

सिर्फ वाम्फनोव ने बड़ी ऊँची आवाज में कहा, 'ओफ, कितना घृणित! मैं तो वहाँ ऐसा हूँ जैसे कीचड़ में बैल फँस जाए। मुझे शक है कि कहीं तू भी उन्हीं में न मिल जाए! तुम्हारा जीवन अभी कच्चा है, ऊबड़ खाबड़ और उनका बन चुका है। हमें तो आश्चर्य है कि पेत्रोवस्की ने अब तक तुम पर कोई वार क्यों नहीं किया। जानते हो एक बार उसके घर की तलाशी हो चुकी है—एक दूसरे मामले में, चाय का एक बड़ा गट्ठर गायब हुआ था। टेबिल में से एक कागज निकालकर उसने इंस्पेक्टर को देकर कहा था 'मैंने सचमुच चोरी की है! सब का ब्यौरा इसमें है।' कहकर वाजनोव चुप हो गया। उसने अपना सिर खुजलाया फिर हँसकर कहा, 'चोरी बता दी—सच्चा रूसी है। मैं पूछता हूँ तुम क्या इस तरह कह सकते थे!' फिर कुर्सी से उठते हुये उसने कहा, 'हम रूसी भी महान हैं। शायद इसीलिए हमारी परेशानियाँ भी अनगिनत हैं।'

सिर्फ वाम्फनोव ही था जिससे मेरे विचार मेल खाते थे। तोम्स्क का विद्यार्थी जो कीव विश्वविद्यालय में बड़ी कठिनाइयों

के बीच विद्याग्रहण कर रहा था। वहीं उस पर सरकार के प्रति विद्रोह का अभियोग लगाकर सात महीने को जेल भेजा गया था। उसके लम्बे बाल होने से कोई उसे पादरी समझता। शरीर का बहुत बड़ा, लम्बा और चौड़ा होने के कारण कोई उसे विद्यार्थी न मानता। उसकी आवाज मधुर थी और आँखों से सज्जनता टपकती थी। वह बातें करते समय सदा अपने दोनों हाथ जेबों में डाले रहता था। किसी बात पर जोर देना होता तो वह सिर ही हिलाता। अक्सर वह आधी बात करके रुक जाता फिर उसे कभी पूरी न करता। एक बार उसने खोए से मन से कहा, 'मेरी समझ से मनुष्यता इतिहास में तीन हजार वर्ष बाद आई—और! मैं शहर वापस जा रहा हूँ। क्या चलोगे ?'

मई के अन्त में मेरी बदली वोल्गा-डोन ब्रांच में क्रुताया स्टेशन पर हो गई। जहाँ मुझे तरक्की मिली थी और मैं तौलने-वाला पल्लेदार हो गया था। वहीं पहली जून को मुझे बोरी-सोग्लेस्क से हमारे दफ्तरी मित्र मीशा का पत्र मिला जिससे ज्ञात हुआ कि कब्रगाह के बगल वाले खेत में बुझानेव ने गोली मार ली है। बुझानेव का एक पत्र भी संलग्न था, 'मीशा, मेरी चीजें बेचकर मकान मालिक को सात रूबल और तीस कोपेक देना। हुचैल की किताबों की जिल्द बँधवा कर क्रुताया में पेरकोव के पास भेज देना। स्पेन्सर की किताबें भी उसी के लिये हैं। बाकी तुम्हारी हैं। केवल मीक व लेनिन की पुस्तकें कीव में निम्न पते पर जाएँगी। अच्छा मित्रों विदा!'

पत्र पाकर यों रह गया जैसे मेरे हृदय में किसी ने छेद कर दिया है। मुझे इस आदमी के जीवन के अन्त पर हार्दिक कष्ट हुआ।

उसने क्यों आत्महत्या की ? मुझे याद आया, एक बार एक

हजाम की दूकान पर उसने कहा था, 'एलेक्सी जानते हो ! दुनिया का सबसे अच्छा गाना कौन है ?'

एक फ्रेंच गाना उसने गाया जो उसे बहुत प्रिय था। कुछ ही महीनों में मैं उसके कितने नजदीक आ गया था। यह मैं शब्दों में नहीं बयान कर सकता।

मास्को के एक होटल में मेरी ही मेज पर बहुत लम्बा चश्मा पहने एक व्यक्ति आकर बैठ गया। वह नीली कमीज और भूरा सूती पैन्ट पहने था जो गुठनों पर पैबन्द सहित बहुत छोटा होता था। एक जूते का तल्ला रबर का था दूसरा चमड़े का। उसका नाम था 'एलेक्सी ग्लैडकोव !' वह बाद में बहुत अच्छा व्यक्ति सिद्ध हुआ। वह कानून पढ़े था, लेकिन काम वह अजीब अजीब करता था, जैसे थियेटरों की नोटिसें लिखना। धनी व्यापारियों की पत्नियों की आवश्यकता की चीजें वह खरीद देता। कहता, 'रूसी विशेषकर महिलाएँ बहुत कंजूस हैं।'

मेरे जीवन में ऐसे अनेक लोग आये जिन्हें मैं शक की निगाह से देखता लेकिन वे मुझमें काफी दिलचस्पी लेते थे। वह एक अधपक्के मकान में रहता था। कच्चे फर्श से दुर्गन्ध आती थी। एक कोने में एक बिल्ली लेटी थी और लकड़ी की बेंच पर एक व्यक्ति बैठा था।

'पीमेन मासलोव बहुत बड़ा रसायनिक व विद्वान।' ग्लैड-कोव ने परिचय दिया। काफी नाटे कद का वह व्यक्ति देखने में बिलकुल बालक लगता था। इन लोगों के साथ कुछ दिन बीते। जीवन में कुछ कठोर पहलू और भी सामने आये।

आठ

मई की एक सुबह ! मैंने सितम्बर में निझनी पहुंचने के इरादे से आस्त्रिस्थान छोड़ दिया। कुछ दूर ही मैं मोटर पर [illegible] अधिकांश पैदल ही चलना पड़ा। डोन के किनारे [illegible] रायाजान तक आया। रायाजान से [illegible] मास्को की ओर मुड़ा। रास्ते में मैं टाल्सटाय के घर गया। लेकिन टाल्सटाय घर पर नहीं था। श्रीमती टाल्सटाय ने बताया कि वह ट्रोइट्ज-सरजीवस्क के गिरजेघर में है।

किताबों से भरी एक झोपड़ी के दरवाजे पर वह खड़ी थी। मुझे वह रसोईघर में लिवा ले गईं। वहाँ एक केक व काफी का एक प्याला दिया।

सितम्बर करीब-करीब बीत गया था। बरसात के कारण जमीन गीली थी। अवश्य ही सौंदर्य के लिये यह मौसम बहुत महान था लेकिन पैदल यात्रा करनेवालों के लिये बिलकुल खराब। चलने में [पाकड़े] के जूते भी गीले हो जाते थे।

मास्को में मैंने ट्रेन के गार्ड से प्रार्थना किया कि मुझे वह [कम से कम] जानवरों वाले डिब्बे में सवार होने की आज्ञा दे दे

जिसमें आठ बैल भरे थे जो निझनी जा रहे थे। पाँच बैल तो सीधे थे लेकिन तीन बैलों ने रास्ते भर हर कोशिश की कि मैं वहाँ न बैठूँ और चला जाऊँ। अन्त में परेशान होकर ट्रेन के गार्ड ने मुझसे यह काम लेना शुरू किया कि मैं रास्ते भर आगे इन आठों साथियों को ठीक से चारा खिलाता चलूँ।

फिर बैलों के साथ मैंने जीवन के चौबीस घंटे काटे। मेरे जेब में एक नोटबुक पड़ी थी जिसमें मैंने बहुत कुछ लिख रखा था। उसमें एक कविता भी थी, 'प्राचीन ओक का गीत।' मेरे विचार में उस समय की मेरी वह महान रचना थी। इसमें मैंने वे सभी विचार गूँथ दिए थे जो मेरे जीवन के गत दस कठोर वर्षों में मेरे मन में आये थे।

उन दिनों कारोलिन निझनी में रहता था। मैं उसके यहाँ कई बार गया लेकिन उसे अपनी रचना दिखाने की हिम्मत न पड़ी। वह सदा बीमार रहता था।

मैं उससे कजान में भी मिला था अब अपने निर्वासन से लौटकर वह यहाँ रहा था।

'यहाँ आना मेरे लिये इतना जरूरी तो था नहीं।' यही उसके पहले शब्द थे जो उसने एक बहुत छोटे से कमरे में घुसते समय कहे। फिर बीच में खड़ा होकर अपनी हथेली पर रखी एक छोटी घड़ी को बहुत गौर से देखा। उसके दूसरे हाथ की उँगलियों के बीच सिगरेट खुंसी थी। थोड़ी देर बाद वह लम्बे कदमों से कमरे में चहल कदमी करने लगा। थोड़ी देर में कमरे में लगभग एक दर्जन विद्यार्थी जो देखने में अमीर लगते थे, आगये।

कुछ भरे हुए गले से कारोनिन ने अपने निर्वासित जीवन के बारे में बताना शुरू किया। वह बिना किसी को देखे बोले जा रहा था। लगता जैसे वह अपने आदमी नहीं पर

रहा है। बीच में रुकता भी। अपनी उँगलियों से बालों में कंघी करता और इन छोटे-छोटे वाक्यों में उत्तर देता, 'हो सकता है, लेकिन मुझे पता नहीं, मैं नहीं जानता, मैं कह नहीं सकता।'

कारोनिन ने उसी प्रकार युवकों से व्यवहार किया। मेरा परिचित और मित्र अनातोल और हम एक प्रकार से अब तक किताबी कीड़े रहे हैं। कारोनिन जैसे व्यक्ति से भाषण द्वारा ज्ञान लाभ करना एक नई बात थी।

लगभग आधी रात को पक्काएक कारोनिन ने अपना भाषण रोक दिया। बीच में खड़ा हो गया, जैसा धुँए का कोई खम्भा। अपने हाथ को उसने अपनी दाढ़ी पर रगड़ा। जैसे पानी से धो रहा हो फिर कमरे के नीचे किसी गुप्तजेब से उसने घड़ी निकाली और नाक के पास लाकर गौर से देखा और कहा, 'लो, अब मुझे जाना पड़ेगा। मेरी बेटी बीमार है। अच्छा नमस्कार!'

निझनी में वहाँ के शिक्षितों के बीच कारोनिन टाल्सटायन आन्दोलन चला रहा था। सिमबिर्स्क में भी वह एक बस्ती बनवा रहा था। अपना 'बोर्क कालोनी' नामक कहानी में उसने इसका चित्रण भी किया है।

उसने मुझे भी साथ लेने की कोशिश की 'क्यों न अपनी इसी धरती पर बस जाओ। शायद जिसके खोज में तुम हो वह यहीं मिल जाए।'

लेकिन मेरे अनुभव भी मेरे साथ थे। मास्को में मैं बहुत बड़े टाल्सटायन नोवोसेलोव नामक प्रसिद्ध व्यक्तियों के परिचय से आया था जो वास्तव टाल्सटायन का जानी दुश्मन था।

लम्बा आदमी, शायद उसने शरीर को ही महत्त्व दिया था। मेरा परिचय आरेलोव से हुआ जो लिओपार्डी और फ्लावर्ट का अनुवादक था। मुझे नोवोसेलोव बहुत पढ़ा लिखा भी लगा। मुझे यह भी ज्ञात था कि प्रसिद्ध लेखक कोरोलेन्को भी तब निझनी में ही रहता था। कुछ कारणों से मैं उसकी रचना 'मकर का सपना' को पसन्द न करता था। एक बार मैं अपने एक मित्र से बातें कर रहा था कि उसने मुझे इशारा किया, 'वह, कोरोलेंको!'

मैंने एक विशालकाय व्यक्ति को भारी कदमों से चलते देखा। पानी बरस रहा था इसलिये चूते हुये छाते के नीचे मुझे केवल घुंघराले बालों वाली दाढ़ी दिखाई पड़ी।

कोरोलेन्को के इस दर्शन के कुछ दिनों बाद ही मैं गिरफ्तार हो गया और निझनी के प्रसिद्ध चार मीनार वाली जेल में रखा गया।

मेरा मुकदमा खुफिया पुलिस के प्रधान जेनरल पोजनान्सकी ने खुद ही चलाया था। उसने अपने पीले हाथों में मुझसे छीने हुये कागजों को लेकर कहा, 'तो, तुम कविताएँ लिखते हो, लिखा करो। अच्छी कविताएँ पढ़ने में मजा भी आता है।'

जहाँ तक जेनरल की बात है उसके कोट के बटन टूटे थे और उसकी पैंट मिली—फटी थी। उसकी तैरती सी आँखें बहुत निश्चित सी लगतीं। मैंने गोर्की के भाषण में कहीं कहीं पोजनान्सकी का जिक्र पढ़ा था।

'तुम क्रांतिकारी हो!' उसने पूछा, 'तुम यहूदी तो नहीं! तुम लेखक हो न! तो मैं तुम्हें छोड़ दूंगा। तुम अपनी रचनायें लेकर कोरोलेंको के पास जाना, वह इन्हें ठीक कर देगा। उसे

जानते हो ? नहीं ? अच्छा, वह बहुत शान्त प्रकृति का लेखक है—तुर्गनेव के टक्कर का।'

उसके पास से दुर्गन्ध आती थी। बोलता तो लगता जैसे एक एक शब्द वह कठिनाई से बोल रहा हो। फिर मुझे देखकर पूछा, 'समझे !'

उसके मेज पर अनगिनत तगमें पड़े थे। वह एक एक का इतिहास बताता रहा और मैं गौर से सुनता रहा। फिर मुझे छोड़ दिया गया।

लेकिन कुछ ही दिनों बाद फिर मुझे जेनरल के सामने खड़ा किया गया। उसने पूछा, 'तुम अवश्य ही जानते हो कि सोमोव कहाँ छिपा है। तुम मुझे बता दो तो इसी क्षण तुम्हें छोड़ दूंगा और देखो किसी अफसर से पूँछताछ करने पर उसका अपमान नहीं करना चाहिये।' फिर वह एकाएक मेरी ओर घूम कर हँसकर बोल उठा, 'और अब तुम चिड़ियों को मारते हो या नहीं ?'

इस हास्यास्पद भेंट के बाद फिर दस वर्ष बाद मुझे निझनी की पुलिस ने पकड़ा और मुझे फिर वहीं उपस्थित होना पड़ा। एक युवक ने आकर मेरे कान में कहा, 'याद है, जेनरल पोजनान्सकी ?' उसने कहा, 'टाम्स्क में वह मर गया। वह सदा तुम्हारे साहित्यिक गति विधि से परिचय रखता था और इस बात को अकसर कहता था कि तुम्हारी प्रतिभा को सर्व प्रथम उसी ने पहचाना था। अपने मृत्यु के पहले उसने कहा था कि यदि तुम चाहो तो वे सभी तगमें ले सकते हो जो तुम्हें पसन्द आये थे !

इसे सुनकर मैं भावना विभोर हो गया। जेल से छूट कर मैंने वे तगमें निझनी म्यूजियम को भेंट कर दिये।

बहुत इच्छा रहने पर भी फौज में भरती न हो सका। एक बहुत लम्बा चौड़ा हँसोड़ डाक्टर ने परीक्षा करके यह निर्णय दिया—'अयोग्य, जवान आदमी तुम फौज के लिये ठीक नहीं हो। तुम्हारे पावों की नसें ठीक नहीं और तेरे फेफड़े में कई छेद हैं।'

इसके बाद ही मेरी भेंट एक इञ्जीनियर से हुई, जिसका नाम ठीक तो याद नहीं शायद पारकीन या पारकोलोव था। वह क्रुश्का की लड़ाई में था अतः अफगानी सीमा के जीवन का बहुत सुन्दर वर्णन करता था। उस बसन्त में उसे पामीर* जाना था—नकशा बनाने। वह व्यक्ति बहुत ऊँचा था। वह फेरोलोव के ढंग पर चित्रकारी भी करता था। सैनिक जीवन के बहुत अच्छे चित्र बनाये थे। उसमें यह असाधारण प्रतिभा मैं पहली भेंट में ही पहचान गया था।

उसने मुझसे कहा, 'हमारे दल में आ जाओ। मैं तुम्हें पामीर लिवा चलूंगा। फिर वहाँ संसार का सबसे सुन्दर दृश्य; रेगिस्तान!'

'अच्छा देखेंगे।' मेरे मन में भी रहस्यमय रेगिस्तान देखने की जाग उठी। जब उसने सुना कि मैं फौज में नहीं लिया गया तो उसने कहा, 'कोई बात नहीं। तुम एक अर्जी लिखकर हमारे दल में भरती हो जाओ बाकी मैं खुद देख लूँगा।'

मैंने अर्जी दी लेकिन कुछ दिनों बाद पारकोलोव ने बताया, 'तुम पर राजनीति विचारों के कारण भरोसा नहीं किया

---

*मध्य-एशिया में एक विशाल पर्वत माला।

जा सकता । अब कुछ नहीं हो सकता ।' उसने नीचे देख कर दु:खी होकर कहा, 'तुमने मुझसे यह क्यों छिपाया ?' मैंने उसे बताया कि यह खोज मेरे लिये भी उसी की तरह आश्चर्यपूर्ण है पर शायद उसे विश्वास नहीं हुआ। कुछ दिनों बाद ही उसने निझनी छोड़ दिया । बाद में मास्को के एक दैनिक पत्र में उसके आत्महत्या संबंधी छोटी सी खबर छपी । अपने स्नानघर में उसने उस्तुरे से अपनी जीभ तराश ली थी ।

मेरा जीवन फिर बड़ी कठिनाइयों और उलझनों से भर गया। आखिर एक दिन मैंने कोरोलोन्को को अपनी रचनाएँ दिखाने का निश्चय किया। उन्हीं दिनों ऐसा हुआ कि तीन दिनों तक लगातार बर्फ गिरती रही । हर छत पर जैसे सफेद रूमाल किसी ने ओढ़ा दिया हो ।

कोरोलोन्को एक लकड़ी की झोपड़ी में ऊपरी भाग में रहता था । उसके सामने ही एक राक्षस जैसे डीलडौल का व्यक्ति जो देखने में बहुत डरावना भी था, बर्फ हटा रहा था। ज्योंही मैं उसके दरवाजे पर पहुँच कर बर्फ के एक टीले पर चढ़ा कि वह गरज उठा, 'तुम कौन हो, किसे खोज रहे हो ?'

'कोरोलोन्को !'

'कहो, मैं ही हूँ।'

कठोर चेहरा, और घनी दाढ़ी के बीच दयालु आँखें । मैं इसलिये नहीं पहचान सका कि गली में जब देखा था तब चेहरा ढँका था । मैंने उससे अपने आने का कारण बताया तब जैसे वह कुछ याद करने की मुद्रा में बोला, 'तुम्हारा नाम तो परिचित सा लगता है । शायद तुम

वही हो जिसके बारे में कुछ वर्ष पूर्व रोमास ने बताया था, क्यों ?'

उसने मुझे सीढ़ी का रास्ता बताया फिर पूछा, 'तुम्हें जाड़ा नहीं लगता, इतने कम कपड़े पहनते हो ?' फिर जैसे अपने ही किसी भाव में खो गया, 'रोमास भी क्या आदमी है ? आजकल वह कहां है ? शायद वोयस्का में, क्यों ?'

कोने का एक कमरा जिसकी खिड़की बाग की ओर खुलती थी। दो मेज, तीन कुर्सियां और किताब की आलमारियां। अपनी गीली दाढ़ी को उसने रूमाल से सुखाया फिर मेरी रच-नाएँ उलटने पलटने लगा।

'मैं इन्हें अवश्य पढ़ लूँगा।' उसने कहा, 'बहुत अच्छी लिखावट है, साफ, और ठीक, फिर भी पढ़ना कठिन होता है।' फिर उसे बन्द करके उसने कहा, 'रोमास ने मुझे लिखा था कि वहाँ के किसानों ने उसे पीटा फिर उसके घर में आग लगा दी थी ? तब तो तुम शायद उसके साथ ही रहते थे।'

कहते हुए वह पाण्डुलिपि के पृष्ठ उलटता रहा। 'विदेशी मुहावरों का प्रयोग केवल अत्याधिक आवश्यकताओं पर ही करना चाहिये। कायदे से तो उन्हें छोड़ ही देना चाहिये। रूसी भाषा तो इतनी धनी है कि किसी भी विचार को अच्छी तरह व्यक्त किया जा सकता है।' वह यह कहता, बीच बीच में रोमास और वहां के जीवन के बारे में भी पूछता जाता। अचानक उसने कहा,

'तेरा चेहरा बताता है कि तूने जीवन के कठोर दृश्य भी देखे हैं। तू कड़े शब्दों का प्रयोग अधिक करता है। वे जरा प्रभावपूर्ण होते भी हैं।

मैं मानता हूं कि रूखे शब्दों का मैंने अधिक प्रयोग किया है। यद्यपि समय मिला होता तो मैं अधिक मधुर शब्द अपने भंडार में जोड़ता। फिर मेरी कविताएँ पढ़ कर कोरोलोंको तनिक मुस्कुराया। उसने जो भी मेरी रचनाओं में दोष बताये उन्हें लेकर कई दिनों तक मैं बहुत परेशान रहा।

मैं एक बहुत ऊँचे लेखक के साथ परिचय प्राप्त कर चुका था। उस बार मैं उसके पास दो घन्टे से कुछ अधिक ही रहा। लगभग एक पखवारे के बाद, लाल बालों वाला प्रोफेसर, डेरियाजिन मेरी रचनाएँ वापस दे गया। कोरोलोंको ने कहलाया था 'वह पढ़कर काफी चिन्तित हुआ है। मुझमें प्रतिभा है लेकिन मुझे प्रकृति से अभी और कुछ सीखना है। हास्य में रूखापन होता है। लेकिन इसके लिये चिन्ता करने की बात नहीं। और कवितायें तो सभी पागलपने की हैं।'

मेरी पाण्डुलिपि के आवरण पर बायें ओर पेन्सिल से लिखा था। 'तुम्हारी प्रतिभा का सहज ही अन्दाजा लगाया जा सकता है। अभी केवल उन्हीं घटनाओं पर लिखो जिनका खुद ही जीवन में अनुभव किया हो। मुझे फिर दिखाना। मैं कविता पर राय नहीं दे सकता। इस विषय में भी कुछ बहुत ही गजब की है।' भावों के विषय में कोई राय न थी। इस अद्भुत व्यक्ति ने अपने प्रभाव का कहीं जिक्र नहीं किया।

पाण्डुलिपि में पाँच पेज लगे थे। उसमें एक कविता थी और एक निबन्ध। मैंने सभी लिखी हुई रचनायें फाड़ डालीं। चूल्हे में जला दिया। मैंने निश्चय किया कि वह लिखूँगा जिसका अनुभव हुआ है। एक कविता मैंने लिखा कर

लिखा था। किसी को बताया नहीं था, न दिखाया था। शायद मैं खुद भी इसे समझ नहीं पा रहा था।

अब मैं लोगों के बीच पागल कवि की तरह समझा जाता था। लोगों की अच्छी राय न थी। न तो अपनी रचनाओं से मुझे ही सन्तोष था। इच्छा होती कि कुछ न लिखूँ—न कविता न गद्य। फिर लगभग दो वर्ष जब तक निझनी में रहा मैंने एक पंक्ति भी न लिखा यद्यपि मन में कभी कभी प्रबल इच्छा होती थी।

यहाँ के सभी साहित्यकारों से कोरोलेंको सदा ही अलग रहता था। यहाँ के लोगों को जो लेखक पसन्द थे, उनमें ज्लातोवरात्स्की प्रसिद्ध था। उसके विषय में एक ने मुझे बताया, 'ज्लातोवरात्स्की को पढ़ो, बहुत विद्वान, मैं व्यक्तिगत रूप से परिचित हूँ।'

वे लोग कारोनिन, माकलेत, जासोडिम्स्की, पोतापेन्को मामिन—साइबेरियाक पर जाते थे। तुर्गनेव, दास्तायवस्की और टाल्सटाय को बाहरी समझते थे।

कोरोलेन्को उनके लिये एकसिर दर्द था। वह निर्वासन भी सह चुका था, और जो कुछ लिखा था, उसे विवश होकर मानना पड़ा था। 'उसकी रचनाएँ केवल कल्पना की हैं,' एक ने कहा, 'लेकिन लोग हृदय की बात पढ़ना चाहते हैं।' फिर भी कोरोलेन्को को ऊँची श्रेणी के लोगों में काफी प्रसिद्धि मिली थी।

इन्हीं दिनों शहर के एक बैंक में बहुत बड़ा गबन हुआ जिसका बहुत ही भयानक और करुण अन्त हुआ। उस काण्ड का मुख्य व्यक्ति जेल में ही मर गया। उसकी पत्नी ने जहर खा लिया। उसे गाड़ा गया और उसके कब्र पर उसके प्रेमिक ने आत्म हत्या कर ली। और यह उत्तेजना अभी समाप्त भी

न हुई कि दो अन्य व्यक्तियों ने भी जो इस मामले में फंसे थे अपना जीवन समाप्त कर लिया। इन्हीं दिनों 'दि वोलगा हेराल्ड' में कोरोलोन्को ने बैंक के विषय में कई लेख प्रकाशित कराये। लोगों ने कहा कि कोरोलोन्को ने ही अपनी कलम से उन्हें मार डाला। लेनिन ने कोरोलोन्को का ही पक्ष लिया।

कोरोलोन्को के आसपास सदा ही कुछ प्रतिभावान लोग मंडराया करते। अनेन्स्की नामक जो अपने तेज दिमाग के लिये मशहूर था, इल्पाटिस्की नामक डाक्टर, आलोचक पिसारेव, सोवलोव, कारेलिन आदि लेखक सदा ही उसके आस पास रहा करते।

मेरा एक मित्र था, पीमेन व्लासोव, जो कैस्पियन के मछली का ठेकेदार था। उसका कहना था कि कोरोलोन्को का सीधा सम्बन्ध राजपरिवार से है। अनपढ़ पीमेन खुदा पर बहुत विश्वास करता था। एक शनिवार को हम और पीमेन एक होटल में खाना खाने गये। एकाएक पीमेन ने मुझे घूर कर कहा, 'रुको!' उसका हाथ काँप रहा था। गिलास उसने मेज पर रख दिया।

'क्या हुआ है तुम्हें?' मैंने पूछा।

प्यारे दोस्त! लगता है कि खुदा शीघ्र ही मुझे बुला लेगा!'

'तुम पागल हो रहे हो!'

'श···श ऐसा मत कहो।'

और उसके बाद वाले झोंके को वह कुचल कर मर गया।

अगर इसे अतिशयोक्ति न समझा जाय तो कहा जा सकता है कि १८८५ से १८९६ तक का युग का एक प्रकार से निज्नी में कोरोलोन्को का ही युग था।

उन्हीं दिनों मेरी मित्रता जारुविन से हुई जो निश्चय ही उस समय पचास से अधिक का था। उसने बताया, जब मैं बीमार था तभी मेरा भतीजा सीमन—जिसे निर्वासन हुआ था—मुझे देखने आया। तभी उसने मुझे 'मकर का सपना' पढ़ कर सुनाया। सच मानो मेरे आँखों में आँसू आ गये। उससे यह ज्ञात होता है कि एक व्यक्ति दूसरे के लिये कितना अनुभव कर सकता है। तब से मैं बिल्कुल बदल गया। मैंने अपने एक शराबी मित्र को बुलाकर कहा, 'ओ चुड़ैल के बच्चे, इसे पढ़। उसने पढ़ा। इसके कारण ही उससे सदा के लिये लड़ाई हो गई। मेरे व्यापार पर इसका असर पड़ा। मेरा व्यापार चौपट हो गया। मेरा दिवाला हो गया। तीन साल जेल में रहना पड़ा। छूटने पर सीधा मैं कोरोलोन्को के पास गया। वह शहर में नहीं था अतः मैं टाल्सटाय के यहां गया। उसने मेरे काम को ठीक ही बताया।

ऐसी कहानियाँ मुझे पसन्द हैं। उनका महत्व भी बहुत है।

१६०१ में मुझे कैद हुई। वह जेलर के पास आया और मुझसे मिलने की बात कही।

'क्या तुम उसके रिश्तेदार हो?'

'नहीं।'

'तो नहीं मिल सकते!'

उसके लाख कोशिश पर भी मुझसे भेंट न हो सकी। इन दिनों जब मैं निझनी में नहीं था तब कोरोलोन्को ने एक कलाकार व महान नागरिक के रूप में बहुत नाम पैदा किया। उसने दुर्भिक्ष के समय तो बहुत ही काम किया व यश कमाया। मैं समझता हूँ कि उसकी पुस्तक 'अकाल का वर्ष' भी उसी समय निकली थी।

निझनी के एक और सज्जन उसके बहुत विरोधी थे। मैंने पूछा, 'अच्छा एक लेखक की हैसियत से उसकी क्या जगह है?'

'कुछ नहीं।'

बाद में मैंने जाना वह व्यक्ति शराबी था।

सन १८६८ और १८६० में मैं उससे बिल्कुल न मिला। उन दिनों मैंने लिखना भी बन्द कर रखा था। कभी कभी मैं उसे सड़कों पर या भीड़ भाड़ में देख लेता। मेरे मित्रों में कुछ लोग मार्क्स के विचारों से प्रभावित थे कुछ केवल किस्से कहानी ही पढ़ते।

गर्मी के मौसम में एक रात को वोल्गा के किनारे मैं एक बेंच पर बैठा सामने के दृश्य देख रहा था—एक प्रकार से मैं उस समय दुनिया से खोया हुआ था कि अचानक कोरोलेन्को आकर मेरे बगल में बैठ गया। लेकिन मुझे उसकी उपस्थिति का तभी ज्ञान हुआ जब उसने मेरे कंधे पर हाथ रखा।

'किस विचार में खोये हुये हो?' उसने पूछा 'मैं तो तुम्हारा हैट गिराना चाहता था।'

कोरोलेन्को शहर के दूसरे छोर पर रहता था। काफी रात हो गई थी और वह बहुत थका सा दिखता था। उसका सिर नंगा था। उसे बेतरह पसीना छूट रहा था जिसे वह रूमाल से सुखा लेता था। फिर उसने कहा,

'क्या हाल चाल है? कर क्या रहे हो आज कल? सुना है कि तुम स्कोवोर्तोसोव के दल के सदस्य हो गये हो।'

स्कोवोर्तोसोव मार्क्सवादी विद्वान था। बहुत तेज और साहसी व्यक्ति। वह सारी दुनिया को मार्क्सवाद समझाने की

हिम्मत रखता था। वह सदा ही लम्बे बांस की पाइप में लगा कर सिगरेट पीता था जिसे वह छुरे की तरह अपने पेटी के नीचे खोंसे रहता।

मैंने उसे बताया कि मैं भी उस विचारधारा से प्रभावित हूँ। बड़ी देर तक वह मुझे बहुत सी बातें समझाता रहा। फिर वह जैसे बिल्कुल थक गया। बैठकर आकाश की ओर वह देखने लगा। फिर कहा, 'बहुत देर हो गई न! आज तो सबेरा होने वाला है। कहीं पानी न बरसे।'

मैं पास ही रहता था—वह दो मील दूर। मैंने उसके घर तक साथ देना स्वीकार किया।

'क्या तुम अब भी लिख रहे हो?'

'नहीं।'

'क्यों?'

'मुझे समय नहीं मिलता।'

'सचमुच बहुत बुरा है, अभाग्य! लेकिन मैं समझता हूँ कि लिखने का निश्चय हो तो समय मिल ही जाता है। मैं तो तुम्हारी प्रतिभा का कायल हूँ।'

तभी अचानक पानी आ ही गया और हम दोनों अपनी अपनी दिशा की ओर घूम पड़े।

—[illegible]—

मैं काफी दिनों से यह जानने को इच्छुक था कि जिस धरती पर रहता हूँ उसका इतिहास तो जान ही लूँ। मैं मित्रों से इसके सम्बन्ध में प्रश्न पूछता, कुछ तो हँसते, कोई कुछ पुस्तकें पढ़ने की राय देते।

इन्हीं दिनों हमारी मण्डली में एक व्यक्ति और आया—विद्यार्थी। जो फटा सा ओवरकोट, नीली जैकेट पहनता था। उसे दिखता कम था इससे चश्मा लगाता था। उसके बाल बड़े बड़े थे और दाढ़ी को वह बालों की तरह दो हिस्सों में बाँट लेता था। उसे देखकर क्राइस्ट के चित्र की याद आती थी।

हमारी दोस्ती बहुत गहरी हो गई। यद्यपि वह मुझसे चार वर्ष बड़ा था। उसका नाम था निकोलस वेसीलीव और वह रसायन शास्त्र का विद्यार्थी था। वह काफी पढ़ा लिखा और तेज दिमाग का व्यक्ति था।

उन दिनों ए० आई० लेनिन नामक एक वकील का मैं क्लर्क था। बहुत अच्छा और भला आदमी। एक दिन मैं जब दफ्तर पहुँचा तो बड़े क्रोध में उसने स्वागत किया फिर एक

अर्जी दिखा कर कहा, 'क्या तुम पागल हुये हो? देखो इस पर तुमने क्या लिख दिया है। एक नई प्रति तैयार करो। आज आखिरी तारीख है। यह क्या तुमने मजाक किया है—कुछ भी किया—बुरा किया है।'

मैंने भी गौर से देखा—सचमुच मेरे हाथ की ही एक कविता लिखी थी। मुझे खुद आश्चर्य था कि क्या वह मैंने ही बनाई है। शाम को लेनिन मेरे पास आकर बोला, 'भाई, उसके लिये माफ करना, मुझे बहुत आश्चर्य था। क्या बात है, कुछ दुबले लग रहे हो!'

'मुझे रात को नींद नहीं आती!'

'क्यों इसके लिये कोई इलाज करना होगा।'

सचमुच कुछ करना ही था।

कभी कभी एक स्त्री से मैं मिलता जो पीले ग्लोव्स पहनती और भूरे रंग का हैट लगाती। वह बैंच पर बैठी होती मैं उससे कहता, 'खुदा कहीं नहीं है।'

'तो मुझे क्या?' कह कर वह क्रुद्ध मुद्रा में वहाँ से उठकर चली जाती।

मैंने एक डाक्टर को अपने को दिखाया। मेरी पीठ थप-थपा कर उसने कहा, 'तू इतना जो पढ़ता है न, इससे नींद नहीं आती। तुम्हारे जैसे मजबूत देह वाले युवक को इस प्रकार की बीमारी हो यह कितने दुख की बात है। तुम्हें कुछ शारीरिक व्यायाम करना चाहिये। और तुम्हें किसी लड़की से भी मित्रता करनी चाहिये तेरे लिये यह आवश्यक है।' उसने मेरे लिये दवाइयाँ भी लिखीं परन्तु अन्त में जो कहा वह मुझे अक्षरशः याद है। उसने कहा, 'मैंने तुम्हारे बारे में काफी सुना है। जो मैं कहूँगा वह अवश्य ही तुम्हें बुरा लगेगा लेकिन मुझे

माफ करना। तुमने जो कुछ पढ़ा है, तुमने जो कुछ देखा है उसका तुम्हारे हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ा है। और वह वास्तविकता से बहुत भिन्न है।—खैर जाने दो। मेरी बात याद रखना—एक लड़की से गहरी मित्रता करो।'

कुछ दिनों बाद ही सिकविक्स के लिये मैं निभनी छोड़कर चल पड़ा।

दस

अपनी पढ़ाई में मैं एक नया अध्याय जोड़ने की कोशिश कर रहा था कि अचानक भाग्य ने मुझे जीवन के प्रथम प्रेम के चक्कर में डाल दिया। कुछ मित्रों ने ओक नदी में नाव पर एक दावत की व्यवस्था किया। मुझे खुशी थी—फ्रांस से आये एक नव दम्पत्ति भी उस दावत में शामिल होने वाले थे, जिनसे अभी तक मेरी भेंट न हुई थी। उसी शाम को सर्व प्रथम बार मैं उनके निवास स्थान पर गया। एक पुराने मकान का छोटा सा कमरा। मैं भीतर घुस गया।

एक लम्बा आदमी आकर दरवाजे पर खड़ा हो गया। उसकी छोटी छोटी आँखें व दाढ़ी अजीब भावना का सृजन करती थीं। उसने तनिक रूखे स्वर में पूछा, 'क्या चाहते हो? देखो घर में घुसने के पूर्व खटखटाना चाहिये।'

उस व्यक्ति के पीछे धुँधलापन था। मैं पहचान तो न न सका लेकिन लगा कि उस धुँधलके में कोई बहुत बड़ी सफेद चिड़िया हो। उसने बहुत मधुर और संगीतपूर्ण आवाज में कहा, '[illegible] जब किसी विवाहित परिवार में जाना पड़े।'

तनिक परेशानी में फँस कर मैंने पूछा कि क्या यही लोग 'वे' हैं । फिर जब उस व्यक्ति के भावों से यह ज्ञात हुआ कि वे ही हैं तो मैंने उन्हें सन्देश कह दिया ।

'वो' '...ने तुम्हें भेजा है !' कह कर उस व्यक्ति ने अपने हाथ बांधे और चिल्ला पड़ा, 'ओह ओल्गा !'

तभी उसके पास एक दुबली पतली जवान लड़की आई । अपनी नीची आँखों से ज्योति बिखेरते हुये वह अचानक हँस पड़ी । मैं घबड़ाया नहीं क्योंकि मैं जानता था कि मुझपर न हंसकर वह मेरे कपड़े पर हँसी होगी । पीले पैन्ट पर सफेद कोट, बन्द गले का ।

मुझे वह खींचकर कमरे में ले गई और एक कुर्सी पर बैठा कर कहा, 'कितना मजाक बना रखा है !'

'क्यों, कैसे ?'

'डरो नहीं ।' उसने कहा । भला ऐसी लड़की से भी कोई डरेगा ।

खाट पर बैठकर वह दाढ़ी वाला व्यक्ति अब तक कागज पर तमाखू लपेट रहा था । उसकी ओर इशारा करके मैंने लड़की से पूछा, 'तुम्हारा पिता है या भाई ।'

'पति !' उसने नाटकीय ढंग से बताया ।

क्षण भर उसे घूर कर मैंने कहा, 'माफ करना ।'

बस कुछ क्षणों में केवल इतनी ही बातें हुईं । उस लड़की के निचले ओंठ ऊपर के ओंठ से तनिक अधिक फूले थे । उसका चेहरा गोलाई लिये हुये तनिक लम्बा था । उसके हाथ अत्याधिक मासूम और सुन्दर थे क्योंकि जब वह दरवाजे पर थी तब मैंने बहुत अच्छी तरह उसे देख लिया था । उसने बहुत सादे पर लुभावने कपड़े पहने थे—एक सफेद ब्लाउज और

सफेद ही स्कर्ट ! और इन सबों से भी अजीब थीं उसकी आंखें जिन्हें देखकर बरबस दिलचस्पी पैदा होती थी।

'किसी भी क्षण तेज पानी बरस सकता है।' सिगरेट पीते हुए उसके पति ने कहा। मैंने खिड़की के रास्ते तारों से भरा साफ आकाश देखा। मुझे लगा जैसे उसे मेरी उपस्थिति पसन्द न हो अतः मैं चला आया।

उस रात भर मैं खेतों में टहलता रहा। रह रह कर मेरे सम्मुख वे तेज नीली आंखें चमक पैदा कर रहीं थीं। उसके पति की कल्पना कर के मुझे उस पर तरस आया। बेचारी ! दाढ़ी वाले भालू के साथ रहना पड़ रहा है।

दूसरे दिन नाव की सैर हुई। वह दिन इतना अच्छा लग रहा था जैसे सृष्टि के प्रारम्भ से इतना अच्छा दिन इसके पूर्व न आया हो। सूरज की चमक भी असाधारण थी। इस वातावरण से भी अधिक प्रभावित होने के कारण वे लोग और प्यारे लगे। वह व्यक्ति तो नाव पर न गया, पूरा एक जग दूध पीकर एक झाड़ी में घुसकर सो रहा और रात तक सोता रहा। मैं उस लड़की को नाव पर घुमाता रहा। मैं ही नाव चलाकर उसे किनारे पर लाया। उसने कहा, 'सचमुच तुम बहुत ताकतवर हो।'

मुझे खुशी हुई और मैंने कहा, 'मैं तुम्हें अपने बाहों में उठाकर पाँच मील तक शहर में चल सकता हूँ। सुनकर वह फिर हँस पड़ी। उसकी आँखें यों चमकी कि दिन भर मुझे याद आती रही—जैसे वे मेरे ही लिए हों।

मुझे शीघ्र ही पता चल गया कि वह मुझसे दस वर्ष बड़ी दिखाई पड़ी थी—और उसने पेरिस में रहकर काफी उच्च शिक्षा प्राप्त की है। उसकी माँ नर्स व दाई का भी काम करती थी। वह अपने सौंदर्य के लिए अपने कपड़े व हैट खुद ही

सीती थी। वह सिगरेट भी पीती थी—बहुत अच्छे ढंग से जैसे सिनेमा में कोई अभिनेत्री पिये। अपने विषय में वह बड़ी दिलचस्पी लेकर बताती, इस अवसर पर उसकी आँखें चमक उठतीं और उस चमक की गहराई में बच्चे की हँसी दिखाई पड़ती।

उसके व्यवहार से फौरन ही मैं समझ गया कि उसको मुझसे अधिक संसारी ज्ञान प्राप्त है। एक प्रकार वह अब तक मेरे जीवन में आई सभी स्त्रियों से सुन्दर थी। मैंने सोचा कि वह सब कुछ जानती है जिसके बारे में हमारे क्रान्तिकारी युवक बातें करते हैं।

जहाँ वह रहती थी वह दो कमरों में विभाजित था। एक छोटा कमरा, रसोईघर का काम देता—दूसरा बड़ा कमरा जिसमें पाँच खिड़कियाँ थीं। तीन सड़क की ओर खुलती थीं और दो भीतर। यह मकान किसी और के लिये चाहे ठीक होता लेकिन पेरिस में रह आई एक स्त्री के लिये कदापि ठीक न था। कमरे में लगाई गई तस्वीरें सजावट में भी अनोखापन था। मैं सब कुछ देखकर हैरान था। लेकिन शायद उसे यह ज्ञात नहीं हो पाया कि मैं उसके कारण कितना परेशान था।

वह सुबह से काफी रात गए तक काम करती रहती। पहले घर का काम करती, फिर पति का काम जो सरकारी नौकर था। पति की सहायता के लिये वह खिड़की के नीचे लगी टेबिल पर बैठ कर नक्शा बनाती। खुली खिड़की से गली की धूल आ कर उसके बालों पर जम जाती। रास्ते चलने वालों की परछाइयाँ कागज पर रेंगतीं। लेकिन काम वह पूरा अवश्य करती। जब बहुत थक जाती तब अपनी चार वर्ष की बच्ची के साथ खेल लेती। लेकिन इतना काम करके

भी वह बिल्कुल साफ सुथरी सफेद बिल्ली की तरह ही बनी रहती।

उसका आरामतलब पति अक्सर पूरा पूरा दिन बिस्तरे में ही घुसा रहता, केवल उपन्यास पढ़ता—विशेष कर ड्यूमा के। वह अजीब आदमी था। अक्सर अपनी लड़की को पढ़ाता,

'हेलेन, खाना खाते समय खूब चबाना चाहिये। इससे पचने में आराम रहता है।'

वह कभी भी अपने इस प्रकार के भाषणों पर पत्नी की हंसी को बुरा न मानता और सो जाता। मैंने उसकी स्त्री से मित्रता कर ली थी। वह अपने पति की बातों की अपेक्षा मेरी कहानियों में अधिक दिलचस्पी लेती। फलस्वरूप वह मुझसे जलने लगा था।

'पेशकोव, मुझे विरोध है। बच्चों के शिक्षा देने के विषय में शायद तुम्हें नहीं मालूम।' बोलोस्लाव कहता।

वह मेरी उम्र का दूना व्यक्ति लेकिन संसार की गतिविधि से जरा दूर ही रहता। अक्सर उससे मिलने कुछ ऐसे दिलचस्प लोग आते जिनकी विशेषता से वह खुद अधिक परिचित न रहता। यहीं मुझे क्रान्तिकारी साबूनेयेव का परिचय मिला।

एक दिन बोलोस्लाव के ही यहाँ, मैंने एक सुन्दर से छोटे सिर वाले व्यक्ति को देखा जो देखने में हज्जाम लगता था। उसने धारीदार कपड़े पहन रखे थे। मुझे रसोईघर में ले जाकर धीरे से बोलोस्लाव ने बताया, 'यह पेरिस से आ रहा है। कोरोलेन्को के पास कोई सन्देश ले जाना है। इनके भेंट का बन्ध कर।'

मैंने वायदा तो कर लिया लेकिन कोई मुझसे पहले ही कोरोलोन्को से उसके बारे में बता चुका था और उसने मिलने से इन्कार कर दिया था। बोलेस्लाव ने बुरा माना। दो दिन खर्च कर के उसने लम्बा सा पत्र कोरोलेंको को लिखा फिर उसे जला दिया।

इसके थोड़े दिन बाद ही मास्को, निझनी, ब्लाडीमीर और दूसरे केन्द्रों में गिरफ्तारी का तूफान आया। धारीदार कपड़े वाला व्यक्ति लैन्डेसमन हार्डिंग था।

उसकी पत्नी के प्रति मेरा प्रेम गहरा होता गया लेकिन मुझे अब ऊब लगने लगी। मैं घन्टों उसके पास बैठता लेकिन वह सिर झुकाए काम करती रहती। मैं कल्पना करता कि कैसे मैं इसे अपनी बाहों में उठाकर ले जाऊँ और इस चक्कर से छुट्टी दिला दूं। एक दिन मैंने बातें न करने की शिकायत की।

'अपने बारे में मुझे कुछ और बताओ।' उसने कहा। लेकिन कुछ ही मिनटों में वह कहती, 'लेकिन यह तुम्हारे जीवन की घटना नहीं हो सकती।'

उसी समय मैं सतर्क होकर सोचता तो पाता कि सचमुच वह घटना मेरे जीवन की नहीं थी मैं तो भावावेश में मन-गढ़न्त बातें करता जाता था। फिर मैं अपने विषय में सोचने लगता, मैं क्या हूँ ? मैं कौन हूँ ? और मुझमें या उसमें क्या है कि मैं उसे मन की इतनी गहराई से प्यार करता हूँ—चाहता हूँ।

मैं जो सपने देखा करता—उनका वर्णन सम्भव नहीं। लेकिन वे सपने देखकर मैं स्त्री-पुरुष के शारीरिक सम्बन्ध के बारे में गहराई से सोचने लगता। फिर अवसर मैंने सोचा कि

शायद इस दुनिया में मैं यही सब सोच सोच कर मर जाने को ही पैदा हुआ हूँ।

आदमी जो नहीं जानता उसके विषय में सोचता है। और सबसे अधिक ज्ञान आदमी को किसी स्त्री के प्यार से ही प्राप्त होता है। उसके सौंदर्य से ही विश्व के सौन्दर्य का बोध होता है। संसार में किसी भी पुरुष के लिये जो भी सौंदर्य है वह सब किसी न किसी स्त्री के प्यार के माध्यम से ही दिखाई पड़ता है।

एक दिन तैरते समय मैं डूब गया था। मेरे पाँव सेवार में फँस गये थे और सिर पानी में डूब गया था। लोगों ने कठिनाई से मुझे निकाला। कई दिनों तक मैं खाट पर रहा।

वह मेरे पास आई, बगल में बैठी—सभी बातें पूछा कि मैं कैसे डूबा था। अपने मुलायम प्यारे हाथों से वह मेरा सिर सहलाने लगी। उस समय उसकी काली आँखों से उसके अन्दर की परेशानी का अन्दाजा लगता था। मैंने पूछा कि क्या वह जानती है कि मैं उसे प्यार करता हूँ—

'हाँ।' हिचकिचाहट की मुस्कान के साथ उसने कहा।

उसके उत्तर से 'मुझे लगा जैसे धरती हिलने लगी और बाग में तूफान आ गया हो। उत्तर की आशा न थी। आत्म-विभोर होकर मैंने उसकी गोद में चेहरा छिपा लिया। उसकी कमर में दोनों हाथ डाला। उसने मुझे कसकर दबाया। मुझे लगा कि खुशी के मारे साबुन के बुलबुले की तरह कहीं मैं फूट न जाऊँ।

'देखो, हिलो मत। हिलना बुरा है।' मेरे सिर को वापस तकिये पर रखने की कोशिश करते हुये उसने कहा, 'तुम चुपचाप ही पड़े रहो नहीं तो मैं चली जाऊँगी। तुम पागल हुये हो क्या?'

इसके कई दिनों बाद मैं घास पर बैठा था। मैं सोच रहा था—उसने जो जो प्यारे शब्द कहे थे। हमारी उम्र का अन्तर, हमारी पढ़ाई की बातें और असमय में ही उसपर पत्नित्व व मातृत्व का जो भार पड़ गया। यह सभी शब्द उसने इस प्रकार स्नेह से कहे थे जैसे प्यार से कोई माँ कहे। उसकी बातें सुन कर मुझे थोड़ा रंज और अनन्त खुशी भी हुई थी।

मैं झाड़ियों में दूर तक आंखें गड़ा कर झाँकने की कोशिश कर रहा था। मैं मन ही मन उसके शब्दों का उसी प्रकार कोमलता से उत्तर देने की बात सोच रहा था—

'किसी निर्णय पर पहुँचने के पूर्व हमें हर बात को बहुत अच्छी तरह सोच लेना चाहिये।' उसने अपनी प्यारी आवाज में कहा, 'और यह भी स्वाभाविक है कि इसके लिये बोलोम्लाव से भी बातें करनी होंगी। उसे कुछ हमारे व्यवहारों की भनक मिली है और वह ऐसे अवसरों पर भावुक बन जाता है। मुझे ऐसी भावुकता से घृणा है।

यह सब काफी दुःखपूर्ण और सुन्दर भी था। अतः कुछ अच्छा या बुरा निर्णय होना ही था। मेरा पैन्ट बहुत चौड़ा बना था अतः नीचे मैं एक तीन इञ्च लम्बी पिन लगाकर उन्हें सिकोड़ लेता था। अचानक वह पिन पाँव में गड़ गई। मैंने खींचकर निकाल तो लिया लेकिन खून काफी मात्रा में बहकर पैन्ट को गीला कर रहा था।

मैंने चाहा कि यह दृश्य वह न देखे। तभी उसने कहा,

'अब चलो नहीं तो पानी आ जाएगा।'

'मैं यहां अभी रुकूँगा,' मैंने उत्तर दिया।

'क्यों ?'

अब मेरे पास कोई उत्तर न था।

'क्या मुझसे नाराज हो ?' उसने बहुत नम्रता से पूछा ।

'नहीं अपने से ।'

'नाराज होने का कारण क्या है ?' उसने पूछा । पर मैं उत्तर न दे सका और वह उठी । मैं भयभीत था कि खून देख कर कहीं वह चीख न पड़े । सो मैंने उससे जाने की प्रार्थना किया ।

वह चली गई । उसकी सुन्दर आकृति हिलती डुलती चली गई । और हमारे बिछोह की दूरी बढ़ती गई, बढ़ती गई । मैं अपने प्रथम प्रेम के इस दुःखान्त पर आश्चर्य चकित था ।

जब उसने अपने पति से बातें कीं तो बहुत भावुकता से वह आँसू गिराने लगा । पति के आँसुओं के सामने उसका धैर्य भी जाता रहा और उसने बाद में रोकर मुझे बताया, 'तुम इतने मजबूत हो और वह इतना असहाय । अगर उसे छोड़ दूँगी तो वह पौधे से अलग हुये फूल की तरह सूख जायगा ।'

पहले तो मुझे दुःख हुआ पर शीघ्र ही जाने क्या सोचकर मुझे हँसी आ गई ।

मुझे हँसता देख कर वह भी हँस पड़ी, 'मैं जानती हूँ कि यह तुम्हें बहुत हास्यास्पद लगा है । लेकिन वह भी बहुत असहाय है ।'

'मैं भी तो हूं ।'

'लेकिन तुम अभी जवान हो और ताकतवर भी ।'

और शायद तभी से मैं कमजोर दिल वालों को घृणा की दृष्टि से देखने लगा ।

मुझे इस घटना से इतनी मानसिक चोट लगी कि मैंने शीघ्र ही वह शहर छोड़ दिया और दो वर्ष तक लगातार

पोवोलभ्मे, डोन, युक्रेन, क्रीमिया और काकेशश में घूमता रहा। नये नये अनुभवों के साथ मुझे नए नए दृश्य देखने को मिले लेकिन अपने दिल की इस साम्राज्ञी, इस अपनी प्रेमिका की तस्वीर मैंने मन में सुरक्षित रखी। यद्यपि मुझे कुछ ऐसी स्त्रियाँ भी मिलीं जो विद्वता में और अन्य बातों में उससे अधिक थीं परन्तु कोई फल न हुआ।

तिफलिस में दो साल से अधिक बिताये। मझे पता लगा कि पेरिस से लौट आकर वह वहीं थी और यह सुनकर उसने अपार हर्ष प्रदर्शित किया कि मैं भी उसी शहर में था। मैं तब तेइस वर्ष का था और मेरे सामने ही मेरे जैसे युवक की आकृति मझे धुंधली होती सी दिखाई पड़ी। कुछ मित्रों ने यह सन्देश दिया कि वह मझसे मिलना चाहती है—यदि मैं खुद उसके पास नहीं जा सकता।

मैंने उसे पहले से अधिक सुन्दर और प्यारी पाया—उम्र बढ़ने से जैसे उस पर यौवन का अधिक प्रभाव पड़ रहा हो। उसके गाल, आँखें पहले से अधिक आकर्षक लगे। उसकी बेटी जो अब जरा बड़ी लड़की सी दिख रही थी—उसके साथ थी। उसका पति फ्रांस में ही रह गया था।

जिस दिन मैं उससे मिलने गया उस दिन गजब की बर्फीली हवा चल रही थी। पानी की बूंदें ऐसी लगतीं जैसे कोई ढेले मार रहा हो।

'ऐसा तूफान मैंने पहले नहीं देखा।' मेरी प्रेमिका के मुंह से अचानक ये शब्द निकल पड़े, 'क्या तुमने मेरे प्रति अपने मन में उपजी कोमलता पर विजय पा लिया?'

'नहीं!'

इसे सुनकर उसे शायद आश्चर्य हुआ, 'तुम कितने अजीब हो। तुम बिल्कुल भिन्न आदमी हो।' कह कर वह खिड़की के

ीछे की एक कुर्सी में दुबक गई। उसने कुछ परेशान होकर आँखें बन्द कर लिया और फुसफुसाहट के स्वर में कहा, लोग यहाँ तुम्हारे बारे में बहुत बातें करते हैं। तुम यहाँ क्यों ठहरे हो? इतने बरसों तक करते भी क्या रहे तुम?'

और मैं लगातार सोच रहा था—यह अब तक कितनी सुन्दरी बनी हुई है। मैं उस दिन आधी रात तक उसके पास रहा—गत वर्षों की सभी घटनायें विस्तार पूर्वक बताया। मैं देख रहा था कि जब मैं उसे बता रहा था तो आश्चर्य से उसकी आँखें फैली थीं और उसकी निगाह में एक प्रकार की उत्सुकता थी। बीच बीच में वह कहती थी, 'कितना अजीब है सब कुछ!' और जब मैं विदा हुआ तो भी बड़ी कोमलता से उसने विदा दिया। सर्दी से गलती हुई सड़क पर मैं चला, मेरा सिर खुशी के मारे नाच सा रहा था। दूसरे दिन मैंने एक कविता बनाकर उसके पास भेजी जिसे वह बाद में अक्सर गाया करती थी—जिसकी मुझे अब भी साफ स्मृति है। कविता का मतलब लगभग यह था—

'मेरी प्रेमिका, तुम्हारे हाथ के एक स्पर्श के लिये, तुम्हारी कोमल आँखों की एक झलक के लिये, मैं अपना सर्वस्व दे सकता हूँ—।'

इसे चाहे कविता न कहा जाय पर मैंने इसे बहुत प्रेम और हृदय की गहराई से लिखा था।

मैं फिर उसी चक्कर में पड़ गया। दुनिया में जिसे सब से अधिक प्यार करता था उसके सम्मुख फिर था। आज फिर वही मेरे लिये दुनिया की सबसे बड़ी आवश्यकता बन गई थी।

नीले कपड़ों में वह ऐसी लगती जैसे सुन्दर, खुशबूदार बादल! वह अपनी पेटी के फीते के साथ खेलती हुई साधारण

शब्दों में बातें कर रही थी पर वे शब्द शायद उसके कारण बहुत अर्थ भरे मुझे प्रतीत होते। मेरे मन में इतनी खुशी थी कि यदि मैं उसी प्रकार मर भी जाता तो भी कोई चिन्ता न थी। मैं सोचता कि यदि किसी तरह सम्भव हो सके तो मैं इस स्त्री को अपनी साँसों के साथ भीतर पी जाऊँ ताकि वह सदा के लिये मुझमें समा जाये। वह मेरे जीवन में संगीत की तरह प्रवेश कर चुकी थी। मैंने उसे अपनी सर्व प्रथम कहानी पढ़कर सुनाया। मुझे याद तो नहीं कि सुनकर उसने क्या कहा था लेकिन आश्चर्य अवश्य हुआ था।

'तो अब तुम गद्य लिखने लगे हो?'

एक बार उसने कहा, 'मैंने अक्सर तुम्हारे बारे में सोचा है। क्या तुमने यह सब मुसीबतें मेरे ही कारण उठाया है?'

मैंने उसे समझाया कि उसके साथ मैं जीवन में कभी कठिनाई अनुभव नहीं कर सकता।

'तुम बहुत प्यारे हो।' उसने कहा और मैं जैसे लुट गया।

मेरे मन में पागलपन की यह लालसा रही है कि मैं उसे अपनी बाहों में ले लूँ लेकिन कभी ऐसा किया नहीं। एक बार बहुत हिम्मत कर के कहा, 'आकर मेरे ही साथ रहो। कृपा कर के आओ।'

एक अजीब हँसी, तेज निगाह! वह चलकर कमरे के दूसरे सिरे पर जाकर खड़ी हुई और बोली, 'अच्छी बात है। तुम निकली जाओ। मैं यहीं रुक कर इसपर सोचूँगी फिर तुम्हें लिखूँगी।'

पुस्तकों में पढ़े हुये नायकों की तरह मैं बाहर चला आया।

फिर जाड़ों में वह अपनी बेटी के साथ मेरे पास निकली आ गई। 'गरीब आदमी की भी सुहागरात कितनी छोटी होती है !' यह कहावत कितनी सच लेकिन कितनी दुखदाई भी है। इसका प्रमाण मैं अपने ही अनुभवों से दे सकता हूँ।

दो रूबल प्रतिमाह पर हमने एक मकान किराये का लिया। एक पादरी के घर का पिछला हिस्सा। छोटा कमरा मैंने अपना बनाया। बड़े कमरे को मेरी पत्नी* ने ठीक से सजाया जो रहने के कमरे का भी काम देता था। लेकिन वह स्थान हम जैसे विवाहितों के रहने लायक नहीं था। हर ओर दीमक और शीत से सब नुकसान हो रहा था। रात को काम करने के लिये मैंने एक दरी का प्रबन्ध किया। मैं अपने को काफी ताकतवर समझता था फिर भी मुझे बुखार आने लगा।

रहने वाले कमरे को गर्म रखने के लिये स्टोव जला लेते थे लेकिन हमारी वह बेटी, नीले आँखों वाली गुड़िया को सिर दर्द रहने लगा।

वसन्त के साथ साथ कमरे भर में मकड़ी का जाला भर गया। माँ बेटी दोनों परेशान रहतीं। मैं घंटों सफाई में खर्च करता। कमरे में भी अँधेरा भरा रहता क्योंकि खिड़की के सामने भयंकर रूप से बेर की झाड़ी उग आई थी जिसे वह धर्मांध पादरी काटने न देता।

मुझे दूसरे अच्छे मकान भी आसानी से मिल सकते थे। लेकिन मैं मकान मालिक उस पादरी का कर्जदार बन चुका था—दूसरे जाने न क्यों पादरी चाहता था कि मैं उसी के घर में रहूँ। 'तुम्हें इस प्रकार के घर में रहने की आदत पड़ जायेगी।' उसने कहा, 'और नहीं तो तुम मेरे रुपये देकर जहाँ चाहना चले जाना।'

---

*मेरी यह प्रेमिका अब पूरी तरह मेरी पत्नी बन चुकी थी।

वह पादरी राक्षस की डील डौल का था और चेहरा लाल गुब्बारे की तरह था। शराब की आदत के कारण गिरजाघर बहुत कम जाता। एक लम्बी नाक वाली दरजिन से उसका प्रेम-व्यापार चल रहा था। उसके विषय में वह मुझे बता चुका था। उसने कहा, 'उसे देख कर मुझे स्वर्ग की देवी की याद आती है।'

मुझे न तो स्वर्ग पर विश्वास था न देवी पर, अतः वह मुझे समझाता, 'जैसे पानी के बाहर मछली नहीं रह सकती उसी तरह, गिरिजाघर के बाहर आत्मा भी नहीं रह सकती समझे! आओ इसी बात पर थोड़ा सा पिया जाय।'

'मैं नहीं पीता, मेरी तबियत ठीक नहीं रहती।'

मैं अपने आप पर बहुत दुःखी रहता। मैंने जिस मकान में लाकर अपनी पत्नी को रखा था वह इसके योग्य न था। न तो गरीबी के कारण मैं एक वक्त भी गोश्त खरीद पाता, न लड़की के लिये खिलौने। ऐसा जीवन भी क्या। अपनी इसी चिन्ता के कारण अक्सर रात रात भर मुझे नींद न आती। मैं व्यक्तिगत रूप से किसी भी हद तक तकलीफें उठा सकता था—इसमें भी मैं आनन्द ही लेता था लेकिन इस सुकुमार स्त्री और बच्ची के लिये ऐसा जीवन असह्य था, नरक था।

रात को, एक कोने में मेज पर बैठा मैं अपनी कहानियाँ लिखता। उस समय अपने आप पर ही मैं दाँत पीसता, मैं भी क्या हूँ—असफलता, फकीर, भार, अस्तित्व!

वह मुझसे इसी प्रकार व्यवहार करती जिस प्रकार एक माँ अपने बच्चे को कभी अपनी तकलीफें नहीं बताती। उसने कभी भी आज के इस कष्टमय जीवन का जिक्र न किया। जैसे जैसे तकलीफें बढ़ती जातीं उसकी हँसी निखरती जाती।

सुबह से रात तक वह पादरियों और उनकी पत्नियों के चित्र बनाती और नक्शे तैयार करती। उसके लिये उसे एक स्वर्ण-पदक भी मिल चुका था। जब चित्रों का कार्य समाप्त हो गया तो उसने तार व अन्य मामूली वस्तुओं से पेरिस हैट बनाना शुरू किया। वह खुद ही जब वे हैट पहन कर शीशे के सामने खड़ी होती तो हँसी के मारे लोट पोट हो जाती। फिर भी खरीद-दारों पर उन हैटों का जादू छा गया था।

मैं एक वकील की क्लर्की करता था और एक स्थानीय अखबार में कहानियां लिखता था। कहानियों पर दो कोपेक पर पंक्ति मिलता। शाम चा के समय जब कोई मेहमान न होता तो मेरी पत्नी दूसरे एलेक्जेंडर के विलोस्टोक स्कूल जाने की बातें बताती। मैं देखता कि पेरिस के उसके संस्करण उस पर शराब की तरह नशा करते। वह अपनी प्रेम कथायें ही बताती जिन्हें मैं बहुत ध्यान से सुनता। वह अपने प्रथम शादी की बात बताती, कि किस प्रकार उसका वह पति जो एक जनरल था—जार के पास तक जाया करता था। एक बार उसने कहा, 'फ्रांस के लोग प्यार को एक कला मानते हैं।'

एक दिन और उसने कहा, 'रूसी औरतें फल की तरह होती हैं और फ्रांस की औरतें फल के रस की तरह।'

मैंने उसे बहुत प्रेमातुर होकर स्त्री और पुरुषों के सम्बन्ध में अपने विचार बताये। यही विचार मैंने उसे शादी के दूसरे या तीसरे रात को बताये थे। 'क्या सचमुच तुम यही विश्वास करते हो?' उस नीली चांदनी में मेरी बाहों में पड़ी हुई उसने पूछा था।

उसकी पतली उंगलियाँ मेरे बालों में उलझी थीं। वह मुझे अपनी आश्चर्य से फैली आंखों से देख रही थी, रह रह कर वह मुस्करा पड़ती। तभी अचानक वह बिस्तरे पर से कूद कर

अलग हो गई। नंगे पाँव वह कमरे में उस ओर गई जहाँ केवल चाँद की रोशनी आ रही थी। पुन: मेरे पास वापस आकर उसने मेरे गालों को थपथपा कर कहा, 'तुम्हें किसी नई छोकड़ी से प्रेम करना चाहिये था—मुझसे नहीं।'

जब मैंने उसे अपनी गोद में खींच लिया तो वह रो पड़ी, 'जान लो तुम, कि मैं तुम्हें कितना प्यार करती हूँ तुम्हारे साथ से बढ़कर मैंने कभी सुख नहीं पाया। विश्वास करो कि मैं यह सब सच ही कह रही हूँ। प्यार मेरे लिये कभी इतना जोरदार, मासूम और आरामदेह नहीं था जितना अब है। मुझे तुम्हारे साथ अपार आनन्द का सुख मिलता है। लेकिन हमने एक गलती की है। तुम्हें जिसकी जरूरत है वह मुझमें नहीं। और मैं ही इसकी दोषी हूं।'

उसकी इस प्रकार की बातों से मुझे डर लगता। मैं कोशिश करता कि बात का रुख बदल जाये। लेकिन उसके ये शब्द मेरे दिल पर जमे रहे। शायद वह भी उनसे छुटकारा न पा सकी थी कि एक दिन आंखों में आंसू भर कर उसने कहा, 'काश कि मैं युवती होती !'

जहाँ तक मुझे याद है, उस रात बाग में तूफान आया था। चिमनी में लग कर हवा भेड़िये की तरह आवाज करती।

जब कभी कुछ रूबल आ जाते तो हम लोग मित्रों को दावत देते। गोश्त, वोदका, बियर और अन्य वस्तुयें। मेरी पत्नी को रूसी खाना पसन्द था। वह वहां के [illegible] समाज में काफी प्रतिष्ठा व आदर पाती थी।

'बहुत महान महिला हैं।' उस वकील के सहकारी की राय थी। कुछ नई उम्र के लड़के, कवितायें लिख लिखकर मेरी पत्नी के पास लाते।

'तुम क्यों उन्हें इतना आश्रय देती हो ?'

'इसमें मछली मारने जैसा ही मजा आता है।' उसने कहा, 'क्या तुम्हें जलन हो रही है ?'

मुझे बिल्कुल जलन नहीं थी। मुझे फिर भी ऐसे आदमी बहुत पसन्द न थे। मैं खुद भी एक खुश आदमी हूँ और हँसने वाले लोग ही मुझे अच्छे लगते हैं। मुझे तो हँसते हँसते आँसू निकल आयें तभी मजा आता है। कभी मेरी हँसी पर वह कहती, 'तुम तो नाटक में चले जाओ। बहुत सफल हास्य अभिनेता हो सकते हो।'

वह खुद भी रंगमंच की प्रेमिका थी। उसने कहा, 'मुझे रंग मंच पसंद है। लेकिन परदे के पीछे जो कुछ होता है उससे मुझे घृणा है।' उसमें एक बड़ी विशेषता थी कि वह जो अनुभव करती थी साफ साफ सीधे शब्दों में कह देती थी।

मुझसे उसे शिकायत थी, 'तुम कभी कभी बहुत अधिक दार्शनिक बन जाते हो। कठोरता जहाँ है वहीं वास्तविक जीवन है। अपने को अवास्तविकता में क्यों उलझाते हो ? यह सोचो कि जीवन की इस कठोरता को कैसे कम किया जाय, यही तुम करो तो मानवता का महाकल्याण हो ?'

अक्सर रात को काम करते करते मैं उठकर उसको देखता वह सोती होती—निद्रा में वह और भी प्यारी लगती। उसका शान्त सुन्दर चेहरा देखकर मुझे उस पर आने वाली सभी मुसीबतों का ख्याल हो आता और हमारे प्यार पर करुणा का परदा पड़ा होता।

हम दोनों की साहित्यिक रुचि में भी अन्तर था। मुझे बालजक और फ्लाउबर्ट पसन्द थे। उसे पाल केवल, ओक्ताव फुइलेट आदि। लेकिन हमारे संबंधों पर इसका प्रभाव न पड़ता।

बल्कि हम लोग एक दूसरे के विचारों में आनन्द लेते।

ज्यों ज्यों दिन बीतते गये! मैं पुस्तकों में फँसता गया। मैं काफी समय तक लिखता। हमारी मित्र मंडली भी काफी विस्तृत होती गई। हम दोनों जितना भी कमाते अधिकांश दावतों में ही खर्च होता।

मेरी पत्नी मेरे लिखने पर अधिक ध्यान न देती। लेकिन इस विषय में उसकी अवहेलना का भी मुझ पर कोई प्रभाव न पड़ता। यद्यपि मैं अपने को लेखक भी न मानता था फिर भी मेरे भीतर अब बहुत अधिक साहित्यिक प्रेरणायें उमड़ लेती थीं। एक दिन सुबह सुबह मैं उसे अपनी एक कहानी सुना रहा था जिसे उसी रात को मैंने लिखा था। सुनते सुनते वह सो गई। मुझे अधिक बुरा न लगा। पढ़ना बन्द करके मैं उसे निहारने लगा।

सोफा में उसका छोटा सा, प्यारा प्यारा सिर धरा था। उसका मुँह आधा खुला था और बच्चों की तरह साँस चल रही थी। बाहर की झाड़ी से छनकर सूरज की किरणें खिड़की की राह आ रही थीं।

उठ कर मैं आँगन में चला गया। जीवन भर मैं औरतों को जिस रूप में देखता आ रहा था वह सब मेरे लिये आश्चर्य का विषय था। लड़कपन में रानी मारगोट को देखा था—लेकिन वे अनुभव हमारी पत्नी के साथ मेल नहीं खाते थे। सचाई यह थी कि मैं अपने मन में उस स्त्री को उसी तरह प्यार करता था जिस तरह अपनी माँ को। उसकी तरफ मैं सदा इसी आशा से देखता था कि शायद जीवन की कठोरता कम हो सके।

तीस साल पहले की बात है। और आज मैं उसे जब याद करता हूँ तो हमारा रोम रोम पुलकित हो जाता है।

मैं इस बात पर विश्वास करता हूं कि किसी दुःखदायी घटना के विष [illegible] की जाये तो उस घटना [illegible]

[illegible] को ही बहुत अद्भुत मानता था—उसी को कठोरता की सीमा मानता था लेकिन मुझे उन्हीं दिनों युद्ध पर लिखी हुई ओल्डेनबर्ग की पुस्तक मिली। उसे पढ़ कर लगा कि उसके सामने हमारे जीवन की कठोरता नहीं के बराबर है।

मेरी पत्नी को जो युवक सुन्दर सुन्दर कागज पर कविताएं लिखकर दे जाते उनका उपयोग वह बिछाने के कागज के साथ में करती।

एक दिन उसने एक के बारे में कहा, 'उसके लिए मुझे दुःख है।' बिना अधिक जाने ही मैंने भी दुःख ही का अनुभव किया। एक कवि जो बहुत अधिक आता था वह मुझसे चार वर्ष बड़ा था। वह बहुत शान्त-प्रकृति का आदमी था और उसकी ऐसी आदत थी कि किसी भी स्थान पर वह घन्टों बैठा रहता था। एक बार दिन को दो बजे उसे खाने पर बुलाया और वह रात को दो बजे तक चुपचाप बैठा रहा। मेरी ही तरह वह भी एक वकील का लड़का था। वह पीता खूब था।

उसके कुछ रिश्तेदार उक्रेन में थे जो अमीर थे और प्रति माह उसे पचास रूबल भेजते थे। वह प्रति रविवार को मेरी पत्नी के लिये मिठाइयाँ लाता। उसकी वर्षगांठ पर उसने एक घड़ी भेंट में दिया था। वह घड़ी एक पेड़ के बीच में जड़ी थी और पेड़ पर एक उल्लू बैठा था।

एक बार जब मैंने उस व्यक्ति की बातें चलाईं तो पत्नी ने कहा, 'मुझे उसके प्रति कोई गहरी भावना नहीं। हाँ मैं, अनुभव करती हूँ किसी कारणवश उसकी आत्मा सो गई है और मैं सोचती हूँ कि शायद मैं उसे जगा सकूँ।'

यह मैं जानता था कि संसार में किसी भी सोते को जगाने में उसे आन्तरिक सुख मिलता था।

अक्सर मेरे कुछ मित्र मुझसे मिलने आते। इधर मेरे मन में सभी के प्रति एक रुखाई आ गई थी। मेरे कुछ मित्र मेरे रूखे व्यवहार से कभी कभी चिढ़ भी जाते। एक दिन पत्नी ने कहा, 'इस रुखाई से तुम्हें कुछ मिल नहीं सकता। इसका नतीजा होगा कि इधर उधर लोग गलत अफवाहें फैलावेंगे। तुम आजकल शायद ईर्षा की आग में जल रहे हो, क्यों?'

'मैं सोचता हूँ कि मैं अपनी जिन्दगी का रास्ता बदल दूँ।'

क्षण भर सोचकर उसने कहा, 'ठीक ही कहते हो। तुम्हारा जीवन आजकल कुण्ठित हो रहा है।'

मैं यह मानने लगा था कि संसार का हर व्यक्ति पापों से भरा है।

एक दिन रात को पत्नी को चुपचाप कलेजे से लगा कर मैं विदा हुआ। वह शहर ही छोड़ दिया। कुछ दिन बाद ही वह एक नाटक कम्पनी में शामिल हो गई। यही मेरे प्रथम प्रेम का अन्त था—यद्यपि अन्त बहुत दुखदाई था फिर भी……।

सुना है अभी हाल में वह मर गई।

उसके लिए मैं यही कहूँगा कि वह महान स्त्री थी। वह बड़े से बड़े अभावों में भी रह सकती थी। वह जीवन के

कष्टों को हँसकर उड़ा देती थी। ऐसा नहीं कह सकता कि वह पुरुषों को पसन्द करती थी लेकिन वह उन्हें पहचानने की कोशिश करती थी—वह कहती, प्यार और भूख—संसार में दो ही चीजें हैं बस।

सरकारी बैंक का एक अफसर लम्बा शरीर और चलता था बहुत धीरे धीरे। वह जब कभी आता तो हममें रसायन विज्ञान पर बहस होती। मैं चिढ़ जाता। उसके जाने के बाद पत्नी मेरे पास आकर कहती, 'तुम गम्भीर वादविवाद में चिढ़ क्यों जाते हो। लेकिन वह भी कितना मूर्ख है।'

कभी कभी मैं उसके गालों को थपथपाता तो वह अत्यन्त खुश होती। ऐसे अवसरों पर खुशी से वह आँखें बन्द कर लेती। कभी कभी अर्धनग्न हो शीशे के सामने खड़ी होकर वह, कहती, 'एक औरत भी क्या है! उसका शरीर भी क्या है!' फिर मुझसे कहती, 'अच्छे कपड़ों में अधिक स्वस्थ और अच्छी लगती हूँ न!'

दूसरी औरतें उसके कपड़ों की नकल करतीं। एक ने एक बार उससे कहा, 'मेरे कपड़ों में तुम्हारे से तिगुनी कीमत लगती है पर तुम्हारे कपड़े अधिक अच्छे दिखते हैं। तुम्हें देख कर मुझे ईर्षा होती है। एक बार एक लेडी डाक्टर ने बहुत चुपचाप मुझसे कहा, 'तुम इस औरत के मन को नहीं पहचान सकते। यह तुम्हारे शरीर के अन्तिम रक्त बूंद को भी चूस लेगी!'

कुछ भी हो इस प्रथम प्रेम में मैंने बहुत कुछ सीखा। मैं जीवन के विभिन्न पहलुओं को बहुत गम्भीरता से देखता। मैंने बहुत देखा भी है।

एक दिन मैंने देखा कि बाजार में एक सिपाही एक बूढ़े और काने यहूदी को पीट रहा है—जिस पर उसने चोरी का

अपराध लगाया था। दूसरे दिन भी मैंने उसी व्यक्ति को सड़क पर देखा—धूल से भरा हुआ। जाने क्यों आज तीस वर्ष बाद भी उसकी आकृति मुझे साफ दिखाई पड़ती है। एक आँख से ही आकाश को वह देखता जैसे आकाश में छेद कर देगा—

उसकी दृष्टि का जाने क्यों मुझ पर काफी असर पड़ा और घर आकर भी मैं उसी को सोचता रहा। मैंने उस घटना का जब पत्नी से जिक्र किया था तो उसने कहा था, 'तुम कितने कमजोर दिल के हो। तुम उसे अच्छा आदमी कहते हो पर कैसे हो सकता है जब वह एक आँख वाला ही है!'

आज जब वह मौत के गर्भ में खो गई है तो मैं कल्पना करता हूँ कि मृत्यु के समय भी वह भविष्य के लिये बहुत सतर्क रही होगी।

ग्यारह

जब मैं तिफलिस से वापस निझनी आया तब कोरोलेन्को सेन्टपिटर्सबर्ग* जा चुका था।

मेरे पास कोई काम नहीं था अतः मैंने कुछ कहानियाँ लिखी और 'वोल्गा हेराल्ड' को भेज दिया। कोरोलेन्को इसमें सदा ही लिखता था जिससे उस क्षेत्र में यह पत्र काफी प्रचलित था।

मैं अपनी कहानियों में अपना नाम 'एम० जी' या 'जी० आई०' ही लिखता था। लिखाई के फलस्वरूप प्रति माह मुझे लगभग तीस रूबल मिल जाते थे। लेकिन अपने मित्रों जैसे लेनिन व वेसीलोव तक से मैंने अपने लेखक होने की बात छिपा रखी थी। लेकिन प्रकाशक ने कोरोलेन्को से मेरा नाम बता दिया था। निझनी पुनः आने पर कोरोलेन्को ने मुझे बुलवाया।

वह अब भी शहर के बाहर एक छोटे से लकड़ी के मकान में रह रहा था। जब मैं गया तो एक बहुत छोटे से कमरे में बैठा वह चाय पी रहा था। उसकी पत्नी और बच्चों

*अब का लेनिनग्राड

ने चाय पी लिया था और घूमने चले गए थे। मुझे देखते ही उसने कहा,

'मैंने अभी ही तुम्हारी कहानी पढ़ी है—चिड़िया—तो तुमने अपनी रचनायें छपाना भी शुरू कर दिया। बधाई!'

अपनी आधी खुली आँख से देखकर वह कह रहा था। गहरे नीले रंग की वह कमीज पहने था। मैंने उसे बताया कि 'काकेशश' नामक एक अन्य कहानी भी मैंने लिखा है जो पत्रिका में छप चुकी है।

'तुम कुछ लाये नहीं। तुम्हारे लिखने का ढंग अपना है। काफी अपना लेकिन पढ़ने वालों को [illegible] है।'

अभी हाल मैंने उसकी एक कहानी 'गली का खेल' पढ़ा था जो मुझे महान रचना लगी। मैं उसकी तारीफ करने लगा। उसने आँखें बन्द कर लीं और सुनता रहा, फिर उठ खड़ा हुआ। फिर कहा, 'बताओ अभी तक तुम कहाँ क्या करते रहे?'

मैंने उसे अपनी यात्राओं के बारे में बताया।

दरवाजे तक आकर उसने बिदा किया। मैंने चलते चलते भी पूछा, 'क्या सचमुच मैं लिख सकता हूँ!'

'अवश्य! तुम लिख भी रहे हो, चीजें छप भी रही हैं। भला और क्या चाहिये।'

वहाँ से वापस आया तो मैं बहुत खुश था। मैं कोरोलेन्को को आदर देता था परन्तु मुझे उसके प्रति आकर्षण का अनुभव हुआ। यह शायद इसलिए कि मैं अब 'गुरु - चेला' ढोंग से ऊब गया था।

लगभग एक पखवारे के बाद मैं कुछ रचनाएँ लेकर गया। कोरोलेन्को घर पर न था अतः उन्हें छोड़ आया।

दूसरे दिन एक पत्र मिला—'आज शाम को आ जाओ। हम लोग बातें करेंगे।'

मैं गया लेकिन आज वह मुझे पहले से कुछ बदला सा लगा। अपने टेबिल से मेरी रचनाएँ उसने उठाया। बोला, 'मैं सब पढ़ गया। लेकिन जो कुछ तुमने लिखा है वह तुम्हारी आवाज नहीं लगती—। तुम बहुत अधिक भावुक नहीं हो—यथार्थवादी हो। समझे? और इसमें सभी व्यक्तिगत घटनाएं हैं?'

'हाँ लगभग व्यक्तिगत!'

'तो इन्हें निकालना होगा। व्यक्तिगत घटनायें व्यापक बनाकर ही लिखी जाएँगी!' कहकर उसने रचनाएं तो मेज पर रख दीं पर कुर्सी मेरी ओर निकट खींचकर कन्धे पर हाथ रखकर कहा, 'मैं एक बात साफ साफ कहूँ! मैं अधिक तो नहीं जानता लेकिन तुम्हारे पास काफी मसाला है। तुम ठीक से रहते नहीं। तुम्हें ठीक जगह मिलती नहीं। तुम फौरन किसी बढ़िया और सुन्दर लड़की से व्याह कर लो।'

'लेकिन मेरे पत्नी है।'

'यही तो सारी परेशानी है।'

मैंने कहा कि इस विषय पर बातें करना बेकार है। उसने कहा, 'तो माफ करना। हाँ तुमने सुना है कि नहीं कि रोमास जेल में है।'

'हाँ मुझे कल ही पता लगा है। एमोलेंस्क में वह क्या कर रहा था?

'पुलिस ने उसके यहाँ सब पता लगा लिया था—पूरा प्रेस और उसके पत्रिका का सारा सामान पुलिस ने जब्त कर लिया।

तभी उसके परिवार के लोग आ गये। बच्चों ने कमरा अपने सिर पर उठा लिया मैंने विदा लिया और तनिक हल्के दिल से वापस आया।

अब मुझे उस प्रान्त के लगभग सभी लोग जान गये थे। मैं उनके आदर का पात्र बन गया था परन्तु कोरोलेन्को सदा ही मुझे आगाह करता रहा, 'देखो अधिक इनके लालच में न पड़ना। ये तुम्हें गुमराह कर देंगे।'

कुछ विद्यार्थियों ने मुझे अपनी एक छोटी सी मंडली में भाषण देने को बुलाया। उन्होंने मेरे स्वागत में वोद्का और बियर दोनों ही मेरे गिलास में मिला दिया। मैंने उन्हें ऐसा करते देख लिया। वे मुझे शराब के नशे में देखना चाहते थे। क्यों सो मैं नहीं जानता।

कोरोलेन्को का शहर में काफी नाम था। कुछ लोग उसे अपनी व्यक्तिगत समस्याओं में भी शामिल करना चाहते थे।

एक दिन प्रातःकाल मैं एक खेत से वापस आ रहा था जहाँ मैं रात भर टहलता रहा। मैं कोरोलेन्को के यहाँ ठीक उसी समय पहुँचा जब वह कहीं जाने को निकल रहा था, 'कहाँ से आ रहे हो?' पूछा उसने 'घूमने निकला हूँ। कल की रात बहुत अच्छी थी। आओ न, साथ चलो।'

वह भी रात भर नहीं सोया था। उसकी आँखें जला रही थीं। उसकी दाढ़ी उलझी थी। उसने पूछा, 'तुम आते क्यों नहीं।'

उसे मैंने समझाया कि जब से उससे मैं तीन रूबल उधार माँग ले गया हूँ तब से [illegible] लगती है।

'लेकिन मुझे तो याद ही नहीं कि तुमने कब रुपये लिये थे। और हम सभी एक जैसे हैं। एक दूसरे को सदा ही समय पर हमें मदद करनी चाहिये।'

फिर क्षण भर चुप रह कर उसने कहा, 'क्या तुम्हें मालूम है कि रोमास के मामले में इसोमिना नाम की कोई लड़की भी थी?'

मैं उस लड़की को जानता था। मेरी उसकी भेंट वोल्गा के किनारे पर हुई थी। मैंने उसके बारे में बता दिया कोरोलेंको ने कहा, 'इस प्रकार बच्चों को ऐसे मामले में फँसाना भी एक प्रकार से गुनाह है।'

मैं खुद भी उस लड़की से चार वर्ष पूर्व मिला था लेकिन मेरी ऐसी कोई धारणा नहीं बनी जैसे तुम्हारी है। वह कहीं मास्टरनी बन सकती थी—क्रान्तिकारिणी नहीं।

वह बहुत तेजी से चल रहा था कि मुझे साथ देने में कठिनाई हो रही थी।

घर आकर मैं लिखने बैठ गया। निकोलायेव अस्पताल की एक नर्स पर मैंने कहानी लिखी—'पेलकास'। उसकी पहली प्रति ही कोरोलेन्को के पास भेज दी।

उसने कहानी पसन्द की और बधाइयाँ भिजवाईं। एक दिन मेरे कंधे पर हाथ रख कर कोरोलेन्को ने कहा, 'तुम इस शहर से चले क्यों नहीं जाते? चाहे समारा ही। मेरा एक मित्र समारा के एक अखबार में है। मैं लिखूंगा तो वह तुम्हें कोई काम भी देगा। कहो क्या राय है?'

'क्या यहाँ मैं किसी के रास्ते का रोड़ा बना हूं।'

'नहीं कुछ अन्य लोग तेरे रास्ते के रोड़े बने हैं।'

मुझे ज्ञात हुआ कि वह भी मेरे शराब पीने और दरिद्रता और मेरी कलंक कहानियों से भी वह परिचित है। सुनकर वह दुखी ही होता है।

'यहूदी ख्लामीदा' के उपनाम से मैं 'समारा गजट' का अच्छा खासा लेखक बन गया।

एक घटना हुई। स्कुकिन नामक एक कवि से मैं बहुत परेशान था। उसकी ढेरों कवितायें मेरे पास कार्यालय में आतीं। मैं उनके साथ उचित न्याय न कर पाता, फलस्वरूप उसके कारण मेरे प्रति काफी असंतोष फैला।

वहाँ मुझे कुछ ऐसे लोग भी मिले जिनके चरित्र पर निगाह डालनी ही पड़ी। एक पादरी—जिसने एक तातार लड़की को अपने चंगुल में फँसा लिया था। फलस्वरूप तातारों ने विद्रोह कर दिया था। वह पादरी भी अजीब था। एक झूठा मुकदमा चलवा कर अपने अनेक विरोधियों को उसने फँसा दिया था। उसकी खास बातें ये थीं—बहुत बुरे मौसम में गाड़ी हांक कर ले गया। रास्ते में गाड़ी टूट गई तो उसे एक किसान के यहाँ ठहरना पड़ा। वहीं से उसे कुछ विद्रोह की भनक मिली थी। फलस्वरूप उसने झूठा मुकदमा चलवाया था।

१८९७ के बसन्त में मैं पकड़ा गया और निझनी से निर्वासित पाकर तिफलिस भेजा गया। मेरा मुकदमा हो रहा था तब कर्नल कोनिस्की (सेंट पीटर्सबर्ग की पुलिस का प्रधान) ने कहा, 'तुम्हारे पास कोरोलोन्को के पत्र आते हैं। वह तुम लोगों का सबसे अच्छा लेखक है।'

वह अजीब आदमी था। उसने बताया, मैं कोरोलोन्को के ही गाँव का हूँ। हम दोनों वोल्हीनिया के हैं।'

हम लोग जिस कमरे में थे उसमें एक मेज पर कागज का अम्बार लगा था उसी में मुझे वह कागज भी दिखा जिस पर कभी मैंने कुछ अनोखे मुहावरे नोट कर रखे थे। मुझे लगा कि यदि वह इसके अर्थ पूछेगा तो मैं क्या कहूंगा।

पूरे ६ साल—१८९५ से १९०१ तक मैं कोरोलेन्को से न मिला। १९०१ में मैं सेंट पीटर्सबर्ग गया। एक रात को एक पुल पार करते समय दो व्यक्ति मिले—देखने में हजाम से लगते थे। उनमें से एक ने घूम कर मेरा चेहरा देखकर कहा, 'यह गोर्की है।' दूसरा भी रुका—मुझे ऊपर से नीचे तक देखा फिर आगे बढ़ गया बोला, 'कम्बख्त रबड़ के जूते पहन कर घूमता भी है।

एक बार एक पत्र के सम्पादक के कुछ मित्रों के साथ मैंने एक चित्र खिंचवाया। उन मित्रों में एक व्यक्ति गुरोविच नाम का था—वह पुलिस का भेदिया था। मैं इससे तो इन्कार कर नहीं सकता कि औरतों और लड़कियों की मुस्कान अब मुझे खींचने लगी थी।

पीटर्सबर्ग में सभी मकान पत्थर के थे लेकिन जाने कैसे यहाँ भी कोरोलेन्को ने काठ का एक मकान खोज ही लिया। अब वह पहले से बड़ा हो गया था। बाल पक गये थे। चेहरे पर कुछ झुर्रियाँ भी पड़ गई थीं। चाय की मेज पर बैठ कर उसने मेरी रचनाओं पर बातें शुरू किया। फिर अचानक पूछ बैठा, 'क्या तुम मार्क्सवादी हो गये हो?'

जब मैंने बताया कि उधर आकर्षित हो रहा हूं तो उसने कहा, 'अच्छा जाने दो। पीटर्सबर्ग कैसा लगा ?'

'यहाँ के आदमियों से यहाँ का शहर ही अच्छा है।'

'हाँ, यहाँ के आदमी रूसी नहीं योरोपियन अधिक हैं।'

बातों ही बातों में मुझे लगा कि मार्क्सवाद को वह एक मजाक समझता है।

'लाइफ' के सम्पादक बी० ए० पोस ने एक शाम को साहित्यिक गोष्ठी का आयोजन किया। सभी प्रकार की विचार धारा के लोगों को निमन्त्रण दिया। यह गोष्ठी महान लेखक 'चेरनेशाविस्की' की स्मृति में की गई थी।

इसके पहले ही मेरे पास तीन विद्यार्थी आये उनमें एक लड़की भी थी। उनका कहना था कि वे चेरनेशाविस्की के नाम पर होने वाले किसी भी जलसे में पोस को नहीं शामिल होने देंगे क्योंकि वह अपने अन्य सहयोगी सम्पादकों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करता।

पोस को मैं लगभग एक वर्ष से जानता था पर मुझे ऐसा अनुभव न था। यह अवश्य जानता था कि वह खुद भी घोड़े की तरह काम करता था और उसी प्रकार काम लेता भी था। मैंने उन्हें अपना दृष्टिकोण समझाना चाहा पर उनकी समझ में न आया। बाद में उन्होंने इस धमकी के साथ विदा लिया कि वे किसी को वहाँ बोलने न देंगे।

मुझे मीटिंग की सारी सूचना मिली। कोरोलोन्को ने मुझे आगाह किया कि इस प्रकार के चक्करों से मैं अपने को दूर ही रखूँ। इसके बाद हमारी उसकी भेटें तनिक कम हो गईं। कोरोलोन्को की हर बात, उसकी महानता की मुझे याद दिलाती।

जब टाल्सटाय की मृत्यु हुई तो कोरोलोन्को ने मुझे लिखा 'टाल्सटाय ने सोचने और पढ़ने वालों की संख्या खूब बढ़ाई है।'

दूसरों को ठीक रास्ते पर लाने के लिये ही कोरोलोन्को ने अपनी जीवन की आधी शक्ति नष्ट की थी।

१९०८ में उसने लिखा—'आज जहां भी जो कुछ हो रहा है—कुछ वर्षों बाद उसी का भयानक विस्फोट होगा। वे दिन बहुत भयानक होंगे।'

अपने जीवन भर कोरोलोन्को उस कठिन पथ का ही यात्री रहा जो किसी को भी महान बना दे और उसकी यही देन चिरस्मरणीय होगी।